वैदिक ज्योतिष श्रृंखला

प्रश्न शास्त्र

प्रश्न ज्योतिष का वैज्ञानिक उपयोग

भाग 1

दीपक कपूर

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

ॐश्री गणेशाय नमः॥ ॐश्री मंगलमूर्त्तये नमः॥ ॐश्री सरस्वत्यै नमः॥

वैदिक ज्योतिष श्रृंखला

प्रश्न शास्त्र

प्रश्न ज्योतिष का वैज्ञानिक उपयोग

भाग 1

दीपक कपूर

एम.एस.सी., पी.जी.डी.पी.एम., डी.एल.टी.

ज्योतिष विशारद

संकाय सदस्य

इन्स्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोलोजी,

भारतीय विद्याभवन, नई दिल्ली

विषय सूची

भाग 1

विषय सूची

भाग 2

आमुख

अनेक विशेषज्ञों ने बहुत ही शानदार तरीके और नाना प्रकार से ज्योतिष के अर्थ तथा उद्देश्य को समझाने का प्रयास किया है। घटित होने वाली घटनाओं को पहले ही जान लेने का तब तक कोई लक्ष्य प्रतीत नहीं होता जब तक घटनाओं का परिणाम यथार्थ चिंतन और मार्गदर्शन से संबंधित न हो। हमारे वर्तमान जीवन में अच्छे या बुरे कर्मो की क्रियाविधियों के अनुसार ही अन्ततोगत्वा हमारे अगले जन्म या जन्मों पर प्रभाव पड़ता है। यदि इस सत्यता को समझ लिया जाए और सलाह लेने वाले लोगों को भली भांति आश्वस्त कर दिया जाए, तो जीवन यापन के लिए इस संसार को एक खुशहाल स्थान बनाया जा सकता है। यह न केवल मानव के इसी जन्म रूपी अल्पवास को समझने, बल्कि समाज में हमारे व्यवहार के तौर-तरीकों को भी बदलने में सम्भव है। इसलिए, हर मनुष्य को यह महत्त्व समझना होगा कि सुखी सम्पन्न जीवन केवल भौतिक तथा परिवेशीय संसाधनों को अर्जित करने पर ही नहीं अपितु मानव सम्बन्धों तथा सदाचरण को बनाने पर भी निर्भर करता है। चरित्र का अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग हो सकता है। परन्तु चरित्र छः शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ईर्ष्या) के वशीभूत होने के कारण किसी भी व्यक्ति के विवेक को बिगाड़ सकता है।

इसलिए ज्योतिष का उद्देश्य सलाह देना भी है ताकि व्यक्ति दुष्कर्मों में लिप्त न होकर सद्धर्म के मार्ग का अनुसरण करता रहे। किसी भी मानव के दुःखी होने का कारण उसकी निरंतर सांसारिक यात्रा है। जिसे, अधर्म नामक अमंगल के पथ को त्याग कर समाप्त किया जा सकता है। ज्योतिष का उद्देश्य मनुष्यों में जन्मजात विद्यमान सद्गुणों को प्रकट कराना है।

इस प्रयास में आमतौर पर हमारे ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथों तथा विशेष रूप से प्रश्न ज्योतिष की पुस्तकों के रचयिताओं ने भविष्यवक्ता की शालीनता होते हुए भी अपने नामों का उल्लेख नहीं किया अपितु उन्होंने अपनी कृतियां

परमपिता परमात्मा के प्रति समर्पित कर दीं। 'प्रश्न मार्ग' का ही उदाहरण लें, जिसे किसी नम्बूद्री ब्राह्मण द्वारा सन् 1649 में लिखा गया था। लेकिन उनका वास्तविक नाम ज्ञात नहीं है। इसी प्रकार 'कृष्णीय शास्त्र' की रचना 'प्रश्न मार्ग' से भी पहले की मानी जाती है क्योंकि 'प्रश्न मार्ग' में 'कृष्णीयम' का कई स्थानों पर उल्लेख आता है। 'कृष्णीयम' के लेखक का नाम भी ज्ञात नहीं है। वराहमिहिर की महान शास्त्रीय रचना 'बृहत जातक' के 10 अध्यायों की टीका "दशाध्यायी" सम्भवतः 'प्रश्न मार्ग' से लगभग 100 वर्ष पहले रची गई। ये प्रश्न ज्योतिष से संबंधित अध्याय थे। यह कार्य इतना उच्च कोटि का माना गया कि इसके उपयोग के बिना असीम समुद्र रूपी ज्योतिष का पार पाना कठिन था। इसी उद्देश्य से इस मूल्यवान धरोहर को "नौका" (नाव) के नाम से प्रकाशित किया गया। इसका अन्तिम संस्करण श्री वेंकटेश्वर प्रेस द्वारा 1912 में प्रकाशित किया गया और तब से फिर मुद्रित नहीं हो पाया। "दशाध्यायी" के रचियता ने भी विनय और मर्यादा के कारण अपने नाम का उल्लेख नहीं किया। ऐसा करके उन महापुरुषों ने अपनी प्रामाणिक कृतियों से इस अथाह ज्ञान को और समृद्ध करने में अपना योगदान दिया।

इन सभी प्रेक्षणों की विभिन्न रूपों में प्रस्तुति एवं परीक्षण करने के साथ, ज्ञान का यह बहुमूल्य भण्डार कई प्रकार से संग्रहित हुआ। लेकिन कालांतर में विदेशी आक्रमणों का युग आने से इस महान समृद्धि का सर्वनाश हो गया। नालंदा का ही उदाहरण लें जो ज्ञान के संग्रहण के लिए विख्यात था। कहा जाता है कि आक्रमणों के दौरान जब नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में आग लगा दी गई थी तब उस पुस्तकालय में रखी पुस्तकें छः महीनों से भी अधिक समय तक जलती रहीं। हमारे समृद्ध अमूल्य ज्ञान तथा प्राचीन धर्मग्रन्थों का इस प्रकार घोर विनाश हुआ। यह वही समृद्ध ज्ञान था जिसे पिछली अनेक शताब्दियों से एकत्रित और संग्रहित किया गया लेकिन अल्प समय में ही ध्वस्त कर दिया गया। जहां तक ज्योतिष ज्ञान का संबंध है इस बारे में कहा जाता है कि कभी इसी विषय पर पांच करोड़ श्लोक अथवा सूत्र उपलब्ध थे जबकि आज मुश्किल से पांच लाख ही शेष हैं।

प्रश्न नामक ज्योतिष की बहुत ही उपयोगी इस विशिष्ट शाखा का उद्गम भी ज्योतिष शास्त्र के पदार्पण के समय से ही हुआ। उन सभी प्रश्न कर्ताओं के लिए, जिनके पास उनके जन्म समय के विवरण न हों और किसी विशेष समय पर तात्कालिक महत्त्व के विशेष प्रश्नों के बारे में प्रश्न करना चाहते हों तो उस समय विशेष की कुंडली बनाई जाती है। जो ऐसे स्पष्ट प्रमाण

प्रस्तुत करती है कि मानो एक व्यापक दृष्टि के माध्यम से अज्ञात भविष्य के रहस्यों को साफ-साफ व्यक्त कर रही हो। निःसंदेह यह इस प्रश्न ज्योतिष के व्यापक उपयोग और खूबी का ही परिणाम है।

इस वर्तमान ज्ञान-कोष को आज हमें उपलब्ध कराने में हमारी अनेक पूर्ववर्ती पीढ़ियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान पीढ़ी अपना अंशदान जोड़कर इस उन्नत विद्या को अपनी भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करेगी। इस ज्ञान को विस्तार से फैलाने के साथ-साथ किसी भी योग्य, अथवा सुपात्र कहे जाने वाले व्यक्ति को ज्योतिष की शिक्षा देने की यह एक पवित्र परम्परा रही है। यदि किसी ज्ञान को स्वच्छंदता से फैला दिया जाए तो वह अपने पैमाने और गहनता में बढ़ता ही जाता है। हमारी वर्तमान पीढ़ी का योगदान तभी सम्भव हो पायेगा यदि शोधकर्ताओं तथा चोटी के ज्योतिषियों द्वारा इस ज्ञान को अपने तक ही सीमित न रखा जाए।

प्रश्न ज्योतिष में शोध दो कारणों से एक कठिन क्षेत्र रहा है। प्रथमतः प्रश्न ज्योतिषीय सिद्धान्तों अथवा परिकल्पनाओं के व्यापक परीक्षणों को विशेष कुण्डलियों के अभाव के कारण मार्गदर्शित करना उतना सरल नहीं है जितना जन्म कुण्डली में सिद्धान्तों को लागू करना है। द्वितीय, आमतौर पर सलाह लेने वाले लोगों द्वारा गोपनीयता और ज्योतिषी की प्रश्नकर्त्ता से वास्तविक दूरी भी कमी का कारण रही है क्योंकि आजकल ज्योतिषीय परामर्श दूरभाष, फैक्स या इ-मेल आदि पर भी प्रायः होता है।

उपरोक्त उल्लिखित प्रेक्षणों के बावजूद भी, जो कभी निराशाजनक तो कभी उत्साहवर्धक हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखकर संतोष होता है कि ज्योतिषीय ज्ञान की नवचेतना जो, इस युग में फिर से प्रतिपादित हो रही है वह इस बात के साक्षी होने को सूचित करती है कि ज्योतिष में विश्वास की जड़ें वास्तविक रूप से मजबूत हो रही हैं न कि भ्रांति के कारण।

दीपक कपूर

प्रस्तावना

20वीं शताब्दी के अंत में किसी भी विषय पर पुस्तक लेखन सरल है, क्योंकि अब प्रारंभिक पुस्तकों के अनेक मानक आधार उपलब्ध हैं। यह इस कारण से भी है कि अमेरिका में, वे ऐसी पुस्तकों को 'कुक बुक्स' के रूप में वर्णित करते हैं। इन पुस्तकों में ज्योतिषीय योगों की शायद ही कोई अंतर्दृष्टि या सूक्ष्म व्याख्या है। जिनको कि हम शास्त्रीय पुस्तकों के समान मानते हैं, वे नूतन पुस्तकें सामंती युग के पुरातन ज्योतिषीय विश्वासों से पीड़ित हैं। हमें उनकी उपेक्षा किए बिना इनसे असहमत होने का साहस जुटाने के लिये जीवन पर्यंत कठिन परिश्रम की आवश्यकता है न कि दूसरी पुस्तकों के केवल शीघ्र अध्ययन तथा उन्हें भारतीय संगणकों की भाँति एकत्रित करने की।

प्रश्न पर रचित दीपक कपूर की पुस्तक 'कुक बुक' शैली का एक अपवाद है। एक 'कुक बुक' को प्रस्तुत करना या संस्कृत की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद, जिसका हिन्दी में अनुवाद हो चुका है, बुद्धिमता पूर्ण की गई धोखेवाजी और ज्योतिष की पुस्तकों के लेखकों की कायरता का अंश प्रतीत होती है। एक हिन्दी अनुवाद का लेखकों द्वारा संस्कृत, विशेषतः ज्योतिष के गुह्य व्याकरण की अच्छी पकड़ न होने पर उसका अंग्रेजी में व्याख्या करना प्रायः ज्योतिष पर लिखी गई पुस्तकों के नूतन लेखकों के कौशलपूर्वक किए गए छल से अधिक नहीं है। यही कारण है कि जैमिनी सूत्र अब भी हमारे लिए लगातार पहेलियाँ बने हुए हैं।

दीपक कपूर की पुस्तक की विशिष्टता का मूल्यांकन ज्योतिष-लेखन की इस समकालीन विचारधारा के विरूद्ध किया जाना चाहिए। इस पुस्तक का प्रारंभ एक अत्यंत उपयोगी परिचय से होकर पृथुयशस की 'षटपंचासिका' के 56 श्लोकों के सार को भी सम्मिलित करता है।

जो कोई व्यक्ति ज्योतिष की इस शाखा में निपुण होना चाहता है, उसे 'षट्पंचासिका' को आत्मसात करना ही पड़ेगा, जो कि प्रश्न पर अतिसूक्ष्म,

संक्षिप्ततम और सर्वाधिक देदीप्यमान पुस्तक है। इस प्रकार, यह पुस्तक संक्षेप में प्रश्न के प्रत्येक पक्ष को उजागर करती है।

यदि किसी के पास इन 56 श्लोकों की विभिन्न पुस्तकों और समुच्चयों में गहराई से अध्ययन करने का धैर्य है, तो सामान्य गणना के अनुसार, ये 200 से अधिक प्रश्नों का सटीक उत्तर दे सकेंगे।

लेखक ने ताजिक के सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए सिद्ध कर दिखाया है कि कैसे वे प्रश्न में प्रयुक्त होते हैं। सामान्यतः यह अत्यधिक अंतर्विरोधी व्याख्याओं का एक क्षेत्र है। इस ज्ञान को लेखक ने उलझन के जाल से निकाला है। लेकिन, पाठकों को उनके तरीकों का काफी समय तक अध्ययन करना चाहिए। उदाहरणार्थ, सामान्यतया 'सहमों' का प्रयोग अत्यधिक अंतर्विरोधी है तथा यह निश्चित किए जाने की आवश्यकता है कि क्या यह हमेशा प्रतिश्रुत परिणाम देते हैं या नहीं? पाठक प्रश्न पूछेंगे कि संक्षिप्त शास्त्रीय ग्रंथ 'षट्पंचासिका' में पाराशरी दृष्टियों का प्रयोग है। यदि ताजिक दृष्टियाँ विशेषतः इत्थसाल, रद्द आदि विभिन्न परिणामों को दिखाती है तो इस परिणामी भ्रम से बाहर आने का क्या मार्ग है। मैंने 1972 में अपने ढंग से, विभिन्न विधियों का आश्रय लेकर इस समस्या का समाधान किया लेकिन उसके बाद प्रश्न ज्योतिष का अधिक प्रयोग नहीं कर पाया।

एक प्रश्न का विश्लेषण और परिणामी सफलता या असफलता चन्द्रमा और इसके नक्षत्र पर आधारित है जो एक जटिल क्षेत्र है, लेकिन लेखक ने प्रश्न कुडंलियों में इसके प्रयोग पर बल दिया है वास्तव में लेखक ने पूर्ण विश्वास के साथ प्रश्न विश्लेषण में नक्षत्रों के प्रयोग का समर्थन किया है, जो अंधेरे में पर्दा सा पड़ा हुआ एक क्षेत्र है। क्या इस तथ्य पर अत्यधिक बल दिया जा सकता है? इसे केवल भावी शोधार्थी या समय ही बताएगा।

प्रश्न में शोध का सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र क्रमशः धातु, मूल, और जीव है। प्रश्न के दौरान एक ज्योतिषी की कीर्ति या अपकीर्ति का क्षेत्र यह है कि जब प्रश्नकर्ता अपना प्रश्न प्रस्तुत न करे तब वह मूक प्रश्न से कितना जान पाता है। ज्योतिषी इसे अपने ही विवेक से ज्ञात कर सकता है। यहाँ लेखक ने अत्यधिक मौलिकता का प्रदर्शन किया है।

चिकित्सा ज्योतिष के लिए भी प्रश्न सामान्यतया पूर्णतः उपयुक्त पाया गया है। लेखक ने अत्यंत उपयोगी संकेत दिए हैं कि कैसे इसे ज्ञात किया जा सके ? यह चिकित्सक के लिए है कि वह इसका गंभीरता से परीक्षण करे। सामान्यतः ग्रहों से संयुक्त रोगों की लंबी सूची नाजुक पायी जाती है। चिकित्सा ज्योतिष स्वयं में, अभी तक एक वर्जित क्षेत्र रहा है। त्रिस्फुट सिद्धान्त

में लग्न, चन्द्रमा और मांदि के जोड़ने से परिणामी नक्षत्र से दशा आदि की कतिपय सारणियों के द्वारा और अधिक व्याख्या करने की आवश्यकता है।

इस पुस्तक का सर्वाधिक विशिष्ट और सृजनात्मक अंश प्रश्न के परिणाम के समय-निर्धारण की विधि है। दीपक कपूर ने मुख्यतः ज्ञात, समय के सभी छह प्रकारों को उचित क्रम में दिखाया है जो कि अभी तक प्राप्त किसी भी पुस्तक में कहीं नहीं दिए गए। यह कैसे और क्यों होगा तथा किस प्रकार कार्य करेगा इसका कारण यह है कि इन तथ्यों के लिए उन्होंने सभी विधियों को शास्त्रीय आधार पर समय-समय पर किए गए परीक्षण से विवेचित किया है। यह पाठकों के लिए है कि वे विभिन्न तरीकों का प्रयोग करें और देखें कि कौन-सी विधि उत्तम कार्य करती है।

महर्षि पाराशर अनेक नक्षत्र दशाओं में से किसी एक का विवेचन करते समय कतिपय दूसरी विधि का भी संकेत करते हैं और जैमिनी ज्योतिष में भी घटनाओं के समय-निर्धारण के बारे में कतिपय संकेत उपलब्ध हैं, जिसका अर्थ है कि हिन्दू ज्योतिष के विशाल महासागर में से अति महत्वपूर्ण रहस्यों को खोज कर उनका उपयोग किया जा सकता है। इस दृष्टि से, दीपक कपूर ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया है।

दीपक कपूर ने प्रश्न में, हमारे अध्यापक कक्ष और कक्षाओं में, जिन्हें वह पढ़ाते हैं, अपनी सफलता के पर्याप्त प्रमाण दिए हैं। इसीलिये इस पुस्तक में उन्होंने प्रश्न के ज्ञान को सोदाहरण समझाया है। यह इस पुस्तक की सराहनीय उपलब्धि है।

इस पुस्तक के साथ दीपक कपूर ने स्वयं को ज्योतिष की अत्यधिक उपयोगी पुस्तकों के लेखक के रूप में सिद्ध कर लिया है।

के० एन० राव

एफ - 291, सरस्वती कुंज
पटपड़गंज, दिल्ली - 110092

1
ज्योतिष का परिचय

यद्यपि इस पुस्तक के विद्वान पाठक को अनुमानतः हिन्दू ज्योतिष की अवधारणाओं और सिद्धान्तों का आधारभूत ज्ञान है तथापि पुनरावृत्ति के तौर पर उनमें से कुछ आधारभूत अवधारणाओं और राशियों के कारकत्वों, ग्रहों, नक्षत्रों और भावों को प्रश्न में शीघ्र प्रयोग करने के लिए यहाँ स्पष्ट किया गया है, जो प्रश्न से संबंधित हैं।

प्रत्येक कुंडली 12 राशियों, 9 ग्रहों, 27 नक्षत्रों और 12 भावों को दर्शाती है। इनका यह परस्पर सम्बंध है जिस पर ज्योतिष का संपूर्ण प्रासाद निर्मित है। अतः पहला चरण उनकी विशेषताओं अथवा कारकत्वों को समझना है।

ज्योतिष का रहस्य एक विशिष्ट स्थिति में प्रदत्त महत्त्व को भी व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ, पाराशरी योगों के बल को निश्चित करने के लिए भावों के स्वामी पर ज़ोर दिया जाता है लेकिन प्रश्न शास्त्र में ग्रहों के कारकत्वों पर बल दिया जाता है। इन सूक्ष्म सिद्धान्तों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

भचक्र की राशियाँ

राशियाँ और उनके स्वामी

राशियाँ		*राशि का स्वामी*
मेष और वृश्चिक	:	मंगल
वृष और तुला	:	शुक्र
मिथुन और कन्या	:	बुध
कर्क	:	चन्द्रमा
सिंह	:	सूर्य
धनु और मीन	:	बृहस्पति
मकर और कुंभ	:	शनि

दोनों प्रकाश-पुंज चंद्रमा और सूर्य केवल एक-एक राशि के स्वामी हैं जबकि अन्य ग्रहों को दोहरा स्वामित्व प्राप्त है, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है। दक्षिण भारतीय कुंडली से यह देखा गया है कि इनका स्वामित्व सूर्य से बढ़ती दूरी और चंद्रमा से ग्रहों की बढ़ती नक्षत्रीय अवधि के ऊपर निर्भर एक निश्चित क्रम का अनुसरण करता है।

यद्यपि राहु और केतु को आंवटित राशियों के स्वामित्व के सम्बंध में विवाद है तथापि यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि कन्या और मीन क्रमशः राहु और केतु की अपनी राशियाँ हैं।

रूप-रंग और निवास

1. मेष : मेढ़ा, भेड़, बकरी जैसे अन्य चतुष्पाद पशुओं, घास के मैदानों, नहरों, झीलों आदि की भांति वन के बीच में रहता है। बहुमूल्य रत्नों और खनिजों से भरपूर इसका क्षेत्र है जो उनकी खानों, सर्प की बांबियों को शामिल करता है।
2. वृषभ : एक साँड, कृषि भूमियाँ, गौशालाएँ, वन, लेकिन वर्तमान संदर्भ में वे कस्बे, शहर, सुन्दर स्थान भी है जहाँ व्यापार होता है।
3. मिथुन : एक स्त्री और एक पुरुष तूर्य और वीणा पकड़े हुए हैं, गदा और वायलिन लिए हुए भी मानना चाहिए। कस्बे और शहर, बाग, जुआघर, पूजा स्थल, विलास भवन संगीत, नृत्य-कक्ष, सोफा-पलंग और विश्राम गृह (शयन कक्ष) हैं।
4. कर्क : केकड़ा, जल और वनों, पानी के निकटवर्ती स्थानों, तालाबों, नदियों मे निवास।
5. सिंह : शेर अथवा अन्य जंगली पशु, जो पर्वतों, गुफाओं और वनों में रहता है। शिकारियों द्वारा बसा हुआ स्थान तथा वह स्थान, जहाँ ऋषि रहते हैं।
6. कन्या : अनाज और दीपक लिए हुए एक स्त्री, जो चारागाह में पानी के निकट अथवा पानी और खाद्य फसलों, विलास-कक्षों, दुकान के निकट, मंदिर में निवास करती है।
7. तुला : एक व्यक्ति, जो अपने हाथों में समान वजन लिए हुए तथा जो व्यापार-स्थलों, बाजारों, मूल्यवान अथवा व्यापार की वस्तुओं, दुकान को संकेतित करता है।
8. वृश्चिक : एक बिच्छू या विषैले कीड़े जिनका आवास छिद्र, कोटर, विदरिका, बिल, बांबी, चट्टानी क्षेत्र हैं जो अंशतः जलीय या तालाब है।

9. धनु : एक घोड़े का शरीर और एक मनुष्य का चेहरा, जो धनुष और बाण लिए हुए है, हाथियों और घोड़ों से बसे हुए क्षेत्र, राजा के निवास स्थान, युद्ध क्षेत्र, दुर्ग में जिसका निवास है, साहसी और निष्णात है। आधुनिक संदर्भों में विश्रामालयों, सैन्य छावनियों, अग्नि-शस्त्रों में प्रवीण है।
10. मकर : एक हिरण का मुँह, एक सांड के कंधे, और एक हाथी की आँखें, जो वनों, नदियों, जलपूर्ण स्थानों, कुम्हारों से बसे हुए स्थानों, जनजातीय समूह के बीच रहता है।
11. कुंभ : एक व्यक्ति घड़ा पकड़े हुए अथवा एक घड़ा, जिसमें अचार रखा हुआ है, पानी, जुआघरों या कलादीर्घाओं में जिसका निवास स्थान है।
12. मीन : दो मछलियां, जिनमें से प्रत्येक का सिर दूसरे की पूंछ के निकट है, गहरी गुफाओं, पानी, मंदिरों और तीर्थस्थलों पर जिसका निवास स्थान है।

उदय होने की विधि

उदय होने की विधि		*भचक्र की राशियाँ*
शीर्षोदय (सिर के साथ उदय)	:	3, 5, 6, 7, 8, 11
पृष्ठोदय	:	1, 2, 4, 9, 10
उभयोदय	:	12

शुभ अथवा अशुभ

सामान्य पाराशरी नियम के अनुसार

सभी विषम राशियाँ अशुभ हैं	:	1, 3, 5, 7, 9, 11
सभी सम राशियाँ शुभ् हैं	:	2, 4, 6, 8, 10, 12

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि शुभ ग्रहों का स्वामित्व रखने वाली राशियाँ शुभ है और पाप ग्रहों का स्वामित्व रखने वाली राशियाँ अशुभ हैं। अतः स्वामित्व पर आधारित राशियाँ है :

अशुभ स्वामित्व रखने वाली अशुभ राशियाँ	:	1, 5, 8, 10, 11
शुभ स्वामित्व रखने वाली शुभ राशियाँ	:	2, 3, 4, 6, 7, 9, 12

बल

सभी विषम राशियों को दिन के समय और सभी सम राशियों को रात के समय बलवान माना जाता है। तथापि, दिन और रात्रि के समय राशियों के बल का निम्नलिखित वर्गीकरण अधिक स्वीकार्य है।

रात्रि के समय बली राशियाँ (रात्रिबली)	:	1, 2, 3, 4, 9, 10
दिन के समय बली राशियाँ (दिवाबली)	:	5, 6, 7, 8, 11, 12

रात्रिबली राशियाँ चंद्रमा द्वारा संचालित हैं और दिवाबली राशियाँ सूर्य द्वारा संचालित हैं।

चंद्र अथवा सौर

5, 6, 7, 8, 9 और 10 सौर राशियाँ हैं जबकि 4. 3. 2. 1. 12 और 11 चंद्र राशियाँ है। यहाँ दिनचर राशियों को सौर की भांति, और रात्रिचर राशियों को चंद्र की तरह मानने का दूसरा दृष्टिकोण भी है, जो निम्नलिखित हैं।

सौर राशियाँ	:	5, 6, 7, 8, 11, 12
चंद्र राशियाँ	:	1, 2, 3, 4, 9, 10

पुरुष अथवा स्त्री राशियाँ

सभी विषम राशियाँ पुरूष राशियाँ हैं	:	1, 3, 5, 7, 9, 11
सभी सम राशियाँ स्त्री राशियाँ हैं	:	2, 4, 6, 8, 10, 12

अंतर्निहित विशेषताएं (तत्त्व)

अग्नि	मेष, सिंह, धनु	:	1, 5, 9
पृथ्वी	वृष, कन्या, मकर	:	2, 6, 10
वायु	मिथुन, तुला, कुंभ	:	3, 7, 11
जल	कर्क, वृश्चिक, मीन	:	4, 8, 12

गतिशीलता की प्रकृति

चर	मेष, कर्क, तुला, मकर	:	1, 4, 7, 10
स्थिर	वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ	:	2, 5, 8, 11
द्विस्वभाव	मिथुन, कन्या, धनु, मीन	:	3, 6, 9, 12

चर राशियाँ गतिशीलता अथवा स्थिति का परिवर्तन बताती हैं जबकि स्थिर राशियाँ यथावत् स्थिति का संकेत देती हैं अथवा कोई बदलाव नहीं बतातीं। द्विस्वभाव राशियाँ दोनों के बीच आती हैं और प्रश्न के संदर्भ में, उदित अंश इसके चर अथवा स्थिर की ओर झुकाव का निर्धारण करते हैं। अतः 0 से 15 अंशों के साथ उदित द्विस्वभाव राशि स्थिर राशि के निकट है और तद्नुसार परिणाम देती है। दूसरी ओर, 15 से 30 अंशों के साथ उदित द्विस्वभाव राशि चर राशि के निकट है और चर राशि के परिणाम देती है।

दिशाएँ

लग्न में उदित राशि से दिशा निर्धारित की जाती हैं।

पूर्व	मेष, सिंह, धनु	:	1, 5, 9
दक्षिण	वृष, कन्या, मकर	:	2, 6, 10
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुंभ	:	3, 7, 11
उत्तर	कर्क, वृश्चिक, मीन	:	4, 8, 12

आरूढ़ लग्न के प्रयोजनार्थ, जिस दिशा से प्रश्नकर्त्ता ज्योतिषी के पास आता है उस अनुपात में दिशा आवंटित की गई है। मेष और वृष पूर्व का, मिथुन दक्षिण-पूर्व का, कर्क और सिंह दक्षिण का, कन्या दक्षिण-पश्चिम का, तुला और वृश्चिक पश्चिम का, धनु उत्तर-पश्चिम का, मकर और कुंभ उत्तर का तथा मीन उत्तर-पूर्व का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जाति

क्षत्रिय : 1, 5, 9

वैश्य : 2, 6, 10

शूद्र : 3, 7, 11

ब्राह्मण : 4, 8, 12

कांति अथवा दीप्ति

चमकीला : 3, 4, 7, 8, 11, 12

मलिन : 1, 2, 5, 6, 9, 10

गुण अथवा विशेषताएँ

सात्विक : 4, 5, 9, 12 (सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति द्वारा शासित राशियाँ)

राजसिक : 2, 7, 3, 6 (शुक्र और बुध द्वारा शासित राशियाँ)

तामसिक : 1, 8, 10, 11 (मंगल और शनि द्वारा शासित राशियाँ)

रूप-रंग

रूक्ष रूप-रंग : 1, 2, 5, 6, 9, 10

मृदु रूप-रंग : 3, 4, 7, 8, 11, 12

पैर पर आधारित

द्विपाद (दो पैर)	:	3, 6, 7, 9, 11 का पूर्वार्द्ध (लग्न में बली)
चतुष्पाद (चार पैर)	:	1, 2, 5, 9 का उत्तरार्द्ध, 10 का पूर्वार्द्ध (10वें भाव में बली)
सरीसृप (अनेक पैर)	:	4, 10 का उत्तरार्द्ध, 12 (चौथे भाव में बली), 8 (7वें भाव में बली), दूसरा दृष्टिकोण-वृश्चिक और मीन को कीट राशि अथवा भूमि सरीसृप माना जाता है, जबकि कर्क और मकर का उत्तरार्द्ध जलचर सरीसृप की भाँति माना जाता है

स्त्री के साथ संबंध

विरल संबंध	:	1, 5, 6, 7, 9, 10
मध्यम संबंध	:	2, 3, 11
अत्यधिक संबंध	:	4, 8, 12

राशिमान

लघु राशिमान	:	1, 6, 7, 12
मध्यम राशिमान	:	2, 5, 8. 11
दीर्घ राशिमान	:	3. 4. 9. 10

उदित लग्न की अवधि, राशि, अक्षांश और गोलार्द्ध के अनुसार अलग-अलग हो जाती है। ऊपर दी गई अवधि भूमध्य रेखा पर है जो अक्षांश में वृद्धि के साथ बदल जाती है। प्रत्येक स्थान के लिए किसी राशि के उदय होने की अवधि को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। इसे तिर्यक उदीयमान या राशिमान भी कहा जाता है।

उदाहरणार्थ दिल्ली में विभिन्न राशियों का राशिमान निम्नलिखित है :

लघु राशिमान	:	1, 2, 11, 12
मध्यम राशिमान	:	3, 10
दीर्घ राशिमान	:	4, 5, 6, 7, 8, 9

प्रकृति

निरंकुश और सत्तावादी	:	1, 2, 3, 6, 7
दार्शनिक और लोकोपकारी	:	4, 5, 9, 12
निश्चयात्मक और ऊर्जस्वी	:	8
आलसी और अकर्मण्य	:	10, 11

रंग

राशि	रंग	राशि	रंग
मेष	लाल	तुला	काला
वृष	सफेद	वृश्चिक	केसरी
मिथुन	हरा	धनु	सुनहरा
कर्क	गुलाबी	मकर	विविध रंग
सिंह	श्वेताभ	कुंभ	भूरा
कन्या	रंग बिरंगा	मीन	सफेद

संरचना

धातु	मूल	जीव
मेष	वृष	मिथुन
कर्क	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धनु
मकर	कुंभ	मीन

उदित राशि और नवांश पर आधारित धातु, मूल और जीव

लग्न में राशि	नवांश	
विषम	1, 4, 7	धातु
	2, 5, 8	मूल
	3, 6, 9	जीव
सम	1, 4, 7	जीव
	2, 5, 8	मूल
	3, 6, 9	धातु

सामान्यतः उपरोक्त वर्णित योजना स्वीकारणीय है। तथापि कृष्णाचार्य के मतानुसार, वर्गीकरण इस प्रकार है :

विषम	1, 6, 8	धातु
	2, 4, 9	मूल
	3, 5, 7	जीव
सम	1, 6, 8	जीव
	2, 4, 9	धातु
	3, 5, 7	मूल

दृष्टिकोण का यह अंतर, मूक प्रश्न में संभवतः इस विधि की असफलता का कारण हो सकता है, इसीलिए और परीक्षण एवं शोध की आवश्यकता है।

लग्न में स्थित किसी भी ग्रह और राशि के योग के अनुसार वस्तु का प्रकार जाना जा सकता है।

ग्रह	राशि	संकेतक
धातु	धातु	धातु
धातु	मूल	वृक्ष, पौधे
धातु	जीव	धातुओं से निर्मित पशुओं की प्रतिमाएँ
मूल	मूल	जड़
मूल	जीव	फल, फसल, जड़ें
मूल	धातु	दग्ध वनस्पति
जीव	जीव	प्राणी, जीवधारी
जीव	धातु	जानवरों का मलोत्सर्जन
जीव	मूल	बीज

दृष्टियों पर आधारित राशियाँ

ऊर्ध्वमुख	सूर्य से पीछे छोड़ी गई राशि और उसके त्रिकोण
अधोमुख	सूर्य द्वारा गृहीत राशि और उसके त्रिकोण
तिर्यकमुख	सूर्य से अगली/दूसरी राशि व उसके त्रिकोण
अग्रमुख	सूर्य से तीसरी राशि एवं उसके त्रिकोण

ग्रह

नैसर्गिक शुभ और अशुभ ग्रह

नैसर्गिक शुभ ग्रह   बृहस्पति, शुक्र, बुध और चंद्रमा

नैसर्गिक अशुभ ग्रह   सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु

नोट :

1. बुध तभी अशुभ माना जाता है जब वह अशुभ ग्रहों के साथ संबद्ध हो, अन्यथा नहीं।
2. चंद्रमा शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक शुभ है और कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक अशुभ है।
3. सूर्य क्रूर ग्रह है।

उच्च, नीच, मूल त्रिकोण

ग्रह	उच्च राशि	परमोच अंश	मूल त्रिकोण	नीच	परमनीच अंश
सूर्य	मेष	मेष 10°	सिंह 0°-10°	तुला	तुला 10°
चंद्रमा	वृष	वृष 3°	वृष 4°-30°	वृश्चिक	वृश्चिक 3°
मंगल	मकर	मकर 28°	मेष 0°-10°	कर्क	कर्क 28°
बुध	कन्या	कन्या 15°	कन्या 16°-20°	मीन	मीन 15°
बृहस्पति	कर्क	कर्क 5°	धनु 0°-10°	मकर	मकर 5°
शुक्र	मीन	मीन 27°	तुला 0°-15°	कन्या	कन्या 27°
शनि	तुला	तुला 20°	कुंभ 0°-20°	मेष	मेष 20°

राहु और केतु की उच्च तथा नीच राशियों के संबंध में विवाद हैं। यद्यपि यह व्यापक रूप से माना जाता है कि बुध की उच्च राशि राहु की स्वराशि है और बुध की स्वराशि राहु की उच्च राशि है। अतः मिथुन राहु की उच्च राशि और केतु की नीच राशि है। इसी प्रकार, धनु केतु की उच्च राशि और राहु की नीच राशि है। कन्या और मीन क्रमशः राहु और केतु की स्वराशियाँ हैं। राहु और केतु सौम्य राशियों अथवा शुभ राशियों में उत्तम परिणाम देते है, जो राशियाँ बुध, बृहस्पति और शुक्र द्वारा शासित हैं। इस संदर्भ में यह भी विश्वास किया जाता है कि राहु की उच्च राशि वृष है। यह दृष्टिकोण भी स्वीकार करने योग्य है और तदनुसार परिणाम देता है।

एक नीच ग्रह अपने स्वामित्व के साथ-साथ उस भाव के लिए, जहाँ वह स्थित है, संबंधित प्रतिकूल परिणाम देता है। नीच के भंग होने के अनेक योग हैं जो नीचे विवेचित किये गये हैं। ग्रह की इस स्थिति को नीच भंग राज योग कहा जाता है।

नीच भंग उस भाव के लिए परिणाम देता है जिसका स्वामित्व उक्त ग्रह को है।

1. जब नीच राशि का स्वामी चद्रंमा से केन्द्र में हो।
2. जब नीच ग्रह की उच्च राशि का स्वामी लग्न अथवा चंद्रमा से केन्द्र में हो।
3. जब नीच ग्रह लग्न अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित हो।
4. जब नीच ग्रह का राशीश नीच ग्रह से स्थिति अथवा दृष्टि द्वारा सम्बन्ध करे।
5. जब नीच ग्रह की नीच राशि का स्वामी और उच्च राशि का स्वामी परस्पर दृष्टि अथवा केन्द्र में हो।
6. ग्रह, जो नीच ग्रह की राशि में उच्च होता है वह लग्न अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित हो।

यद्यपि नीच भंग के इन सिद्धांतों को जन्म कुंडली के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है और प्रश्न कुंडलियों में प्रायः ही प्रयोग किये जाते हैं तथापि उन्हें प्रयुक्त करना चाहिए और एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए उनका परीक्षण करना चाहिए।

इसी प्रकार, उच्च के भंग के सम्बंध में भी विभिन्न दृष्टिकोण हैं। सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार एक उच्च वक्री ग्रह एक नीच ग्रह का परिणाम देता है जबकि एक नीच वक्री ग्रह एक उच्च ग्रह का परिणाम देता है।

यद्यपि प्रश्न में मेरी टिप्पणियों पर आधारित वक्री ग्रहों के विश्लेषण की विधि पूर्णतः भिन्न है। जिसे प्रश्न के सामान्य सिद्धांतों पर लिखित अध्याय में विवेचित किया गया है। तथापि, यह शोध का एक रुचिकर क्षेत्र है।

लिगं

स्त्री	:	चंद्रमा, शुक्र, राहु
पुरूष	:	सूर्य मंगल, बृहस्पति
नपुंसक	:	बुध, शनि, केतु
मानव	:	बृहस्पति, शुक्र

नोट : तटस्थ परिणाम देने में नपुंसक ग्रहों को देखना चाहिए। जब मिश्रित परिणाम प्राप्त होते है तब प्रभाव की अधिकता चोर का लिंग, जाति आदि का निर्णय करती है।

गतिशीलता

चर	:	चंद्रमा, मंगल, शुक्र, राहु
स्थिर	:	सूर्य, बृहस्पति, शनि
द्विस्वभाव	:	बुध

ग्रहों की अवस्था

अवस्था का नाम	*ग्रह की स्थिति*
1. दीप्त अवस्था	जब ग्रह अपनी उच्च राशि में हो।
2. स्वस्थ अवस्था	जब ग्रह अपनी स्व राशि में हो।
3. मुदित अवस्था	जब ग्रह अपनी मित्र राशि में हो।
4. शांत अवस्था	जब ग्रह शुभ ग्रहों के वर्गो में स्थित हो।
5. शक्त अवस्था	जब ग्रह दीप्तिमान हो, सहसूर्य उदय हो और अस्त नहीं हो।
6. पीड़ित अवस्था	जब ग्रह अस्त हो।
7. दीन अवस्था	जब ग्रह नीच राशि में हो।
8. खल अवस्था	जब ग्रह ग्रहीय युद्ध में पराजित हो।
9. विकल अवस्था	जब ग्रह क्रूर ग्रहों के साथ स्थित हो।
10. भीत अवस्था	जब ग्रह सूर्य से अस्त हो।

रंग

ग्रह	रंग	ग्रह	रंग
सूर्य	गहरा लाल	बृहस्पति	सुनहरा
चंद्रमा	सफेद	शुक्र	नीला
मंगल	हल्का लाल	शनि	काला
बुध	हरा	राहु, केतु	चितकबरा, काला

जाति

ब्राह्मण : बृहस्पति, शुक्र

क्षत्रिय : सूर्य, मंगल

वैश्य : चंद्रमा

शूद्र : बुध

अछूत अथवा मलेच्छ : शनि

दिन अथवा रात्रि के समय बल

दिन के समय बलवान (दिवाबली) : सूर्य, बृहस्पति, शुक्र

रात्रि के समय बलवान (रात्रिबली) : चन्द्रमा, मंगल, शनि

सर्वदा बलवान ग्रह (सर्वबली) : बुध

लग्न में और लग्न पर दृष्टि डालने वाले ये ग्रह घटना का समय बताते हैं क्योंकि निम्नलिखित ग्रह उनके आगे दिखाए समय में बलवान माने जाते हैं।

बुध और बृहस्पति : प्रातः

सूर्य और मंगल : दोपहर

शुक्र और चन्द्रमा : अपराह्न

शनि और राहु : सायं

पक्ष के दौरान बल

पाप ग्रह अंधेरे पक्ष अथवा कृष्ण पक्ष में बलवान होते हैं।

शुभ ग्रह प्रकाश पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष में बलवान होते हैं।

विभिन्न अयनों में बलवान

शुभ ग्रह उत्तरायण में बलवान होते हैं।

पाप ग्रह दक्षिणायन में बलवान होते है।

दिशापरक बल या दिग्बल

लग्न में	:	बृहस्पति और बुध
चौथे भाव में	:	चन्द्रमा और शुक्र
सातवें भाव में	:	शनि
दसवें भाव में	:	सूर्य और मंगल

ग्रहों का बल - अन्य विचार

वर्षाधिपति : चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, हिन्दू वर्ष के प्रथम दिन का स्वामी होने के नाते उस वर्ष के लिए विशेष महत्त्व रखता है और पूरे एक वर्ष के लिए बलवान है।

मासाधिपति : इसी प्रकार, शुक्लादि योजना में प्रत्येक माह की प्रतिपदा का स्वामी महत्ता प्राप्त करता है और पूरे माह के लिए बलवान है।

वाराधिपति : सप्ताह के प्रत्येक दिन का स्वामी जो सम्बन्धित वार के नाम का ग्रह हैं इस वार का स्वामी होता है।

होरा का अधिपति : प्रश्न में, होरा का स्वामी विशेष महत्त्व रखता है। इस पर प्रश्न की विविध विधियों पर आधारित अध्याय में विस्तार से वर्णन किया गया है।

ग्रहों द्वारा संकेतित आकार

चंद्रमा	:	गोल और मोटा
शुक्र	:	पतला लेकिन सुंदर
सूर्य और मंगल	:	वर्गाकार
बृहस्पति और बुध	:	गोल
शनि और राहु	:	लंबा

तत्त्व

ग्रह	*तत्त्व*	*ग्रह*	*तत्त्व*
सूर्य	अग्नि	बृहस्पति	आकाश
चंद्रमा	जल	शुक्र	जल
मंगल	अग्नि	शनि	वायु
बुध	पृथ्वी	राहु	वायु

ग्रहों द्वारा संकेतित आस्वाद

ग्रह	*आस्वाद*	*ग्रह*	*आस्वाद*
सूर्य, मंगल	कड़वा	बृहस्पति	मीठा
चन्द्रमा	नमकीन	शुक्र	खट्टा
बुध	कटु	शनि, राहु	तिक्त

वृक्ष

मजबूत और लंबे वृक्ष	:	सूर्य
वृक्ष जिसका पंक तरल है, जैसे राल	:	चन्द्रमा
झाड़ियां, रूक्ष और कटीले वृक्ष	:	मंगल
विसर्पी लता	:	चंद्रमा और शुक्र
खाने योग्य फलदार वृक्ष	:	बृहस्पति
फलहीन वृक्ष	:	बुध
फूलदार वृक्ष	:	शुक्र
कंटीले और अन्य अनुपयोगी वृक्ष	:	शनि
झाड़ियां, सूखे वृक्षों के पुंज	:	राहु और केतु

वात, पित्त और कफ को संकेत करने वाले ग्रह

जो ग्रह लग्न, लग्नेश, षष्ठ भाव अथवा षष्ठेश को प्रभावित करते हैं, वे इन तीन पदार्थों और इनके असंतुलन के कारण होने वाली बीमारियों को सूचित करते हैं :

ग्रह	*पदार्थ*	*इनके द्वारा संकेतित बीमारियाँ*
सूर्य अथवा मंगल	पित्त	ज्वर, अतिसार और पेचिस, पेट की अव्यवस्था
चन्द्रमा अथवा शुक्र	कफ	कफ और शीत, निमोनिया, श्वास सोघा, दमा, कब्ज
शनि अथवा राहु	वात	जठरीय रोग, लकवा, गठिया, शरीर और जोड़ों का दर्द
बुध अथवा बृहस्पति	सभी तीनों	इन तीन पदार्थों का असंतुलन अनेक बीमारियां देता है

उपचारी युक्तियाँ

वात, पित्त और कफ के असंतुलन के लिए हमारे शास्त्रीय आयुर्वेदिक ग्रंथों में उपचारी युक्तियाँ दी गई हैं। लेकिन ज्योतिषीय आधार से इन बीमारियों को दूर करने में ग्रहों के कारण होने वाले दोषों के प्रायश्चित के लिए मंत्र, तंत्र, रत्न, औषधि, दान, स्नान और उपवास जैसी युक्तियाँ प्रभावशाली मानी जाती हैं।

ग्रह	*मंत्र*	*रत्न*	*अर्पण अथवा दान*
सूर्य	ॐ सूर्याय नमः	माणिक्य	स्वर्ण, पीतल, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़
चंद्रमा	ॐ चं चंद्राय नमः	मोती	चाँदी, चावल, सफेद वस्त्र, चीनी, घी, दही
मंगल	ॐ मं भौमाय नमः	मूँगा	लाल वस्त्र, गेहूँ, स्वर्ण, ताँबा, मसूर
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः	पन्ना	हरा चना (साबुत), हरे वस्त्र
बृहस्पति	ॐ बृं बृहस्पताय नमः	पुखराज	स्वर्ण, पीला वस्त्र, इमली, चना
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः	हीरा	चाँदी, चावल, मिश्री
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः	नीलम	लोहा, सरसों का तेल, उड़द की दाल, तिल, भैंस, काला वस्त्र, कुल्थी
राहु	ॐ राँ राहवे नमः	गोमेद	कंबल, तिल, तेल, गेहूँ, नीला वस्त्र
केतु	ॐ कें केतवे नमः	लहसुनिया	उपकरण, तिल, काला वस्त्र, नारियल, सात अनाज उड़द, मूंगी, गेहूं, चना, जौ, तंदुल, कंगनी

विभिन्न ग्रहों के सूच्य देवता

ग्रह	देवता
सूर्य	शिव
द्विस्वभाव राशि के प्रथम द्रेष्काण में सूर्य	सुब्रह्मण्यम
द्विस्वभाव राशि के द्वितीय द्रेष्काण में सूर्य	गणेश
बलवान चंद्रमा	दुर्गा
बलहीन चंद्रमा	काली
मंगल की राशि में बलहीन चंद्रमा	चामुण्डा
सिंह अथवा धनु में मंगल	सुब्रह्मण्यम
मेष, मिथुन, तुला, कुंभ में मंगल	भैरव
किसी सम राशि में मंगल	चामुण्डा, काली
चर अथवा द्विस्वभाव राशियों में बुध	विष्णु अवतार*
स्थिर राशियों के प्रथम और दूसरे द्रेष्काण में बुध	कृष्ण
स्थिर राशि के तीसरे द्रेष्काण में बुध	विष्णु

*1. बुध उस ग्रह से संबंधित देवता का भी प्रतिनिधित्व करता है जिसके साथ वह संबद्ध है

*2. विष्णु के दस अवतार हैं - मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि

बृहस्पति	विष्णु
शुक्र	लक्ष्मी
सात्विक राशियों और अपने भाव में शुक्र	अन्नपूर्णा
राजसी राशियों और शुभ भावों में शुक्र	लक्ष्मी
तामसिक राशियों और अशुभ भावों में शुक्र	यक्षिणी
विषम भावों में पुरुष ग्रहों के साथ शुक्र	गणेश
शनि	अयप्पा*
* ईश्वर, जो शिव और विष्णु दोनों है	
राहु	नाग
केतु	गणेश

ग्रहों की विशेषतांए अथवा गुण

सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति : सात्विक, दार्शनिक अथवा लोकोपकारी

बुध और शुक्र : राजसिक

मंगल, शनि, राहु और केतु : तामसिक, आलसी

अनाज

ग्रह	अनाज	ग्रह	अनाज
सूर्य	गेहूँ	बृहस्पति	काबुली चना
चन्द्रमा	चावल	शुक्र	लोबिया
मंगल	दलहन, अरहर	शनि	तिल, काले अनाज
बुध	मूंग	राहु, केतु	काला चना, कुल्थी

समय

ग्रह		अवधि	ऋतु
सूर्य	:	एक अयन अथवा छह माह	ग्रीष्म
चंद्रमा	:	एक मुहूर्त्त (48 मिनट)	वर्षा
मंगल	:	दिन और रात (अहोरात्रि)	ग्रीष्म
बुध	:	ऋतु अथवा दो माह	हेमंत
बृहस्पति	:	एक माह	शरद
शुक्र	:	एक पक्ष	वसंत
शनि	:	एक वर्ष	शिशिर
राहु		8 माह	
केतु	:	3 माह	

आयु

सूर्य	:	50 वर्ष	बृहस्पति	:	30 वर्ष
चंद्रमा	:	70 वर्ष	शुक्र	:	20 वर्ष
मंगल	:	16 वर्ष	शनि	:	100 वर्ष
बुध	:	7 वर्ष	राहु	:	100 वर्ष

वस्त्रों का रंग

सूर्य	:	केसरिया	बृहस्पति	:	पीला
चंद्रमा	:	सफेद	शुक्र	:	सफेद
मंगल	:	लाल अथवा जला हुआ	शनि	:	काला, पुराना, फटा हुआ
बुध	:	हरा	राहु	:	काला अथवा चितकबरा

ग्रहों द्वारा इंगित ऋतुएं

सूर्य और मंगल	ग्रीष्म ऋतु
चन्द्रमा	वर्षा ऋतु
बुध	हेंमत ऋतु
शुक्र	वंसत ऋतु
बृहस्पति और शनि	शीत ऋतु

ग्रहों द्वारा इंगित दिशाएं

ग्रहों द्वारा इंगित विभिन्न दिशाएं निम्नलिखित हैं:

ग्रह	दिशा	ग्रह	दिशा
सूर्य	पूर्व	बृहस्पति	उत्तर-पूर्व
चंद्रमा	उत्तर-पश्चिम	शुक्र	दक्षिण-पूर्व
मंगल	दक्षिण	शनि	पश्चिम
बुध	उत्तर	राहु अथवा केतु	दक्षिण-पश्चिम

पद

सूर्य, चंद्रमा	राजा	बृहस्पति, शुक्र	मंत्री
मंगल	सेनाध्यक्ष	शनि	नौकर
बुध	सिंहासन का वारिस	राहु, केतु	सैनिक

ग्रहों की दृष्टियाँ

सभी ग्रह जहाँ वे स्थित हैं, उस स्थान से 7वें भाव को देखते हैं। इसके अतिरिक्त बृहस्पति, मंगल और शनि विशेष दृष्टियाँ भी रखते हैं, जिन्हें इस प्रकार विवेचित किया जा सकता है।

ग्रह	दृष्टि
बृहस्पति	5, 7, 9
मंगल	4, 7, 8
शनि	3, 7, 10
अन्य सभी ग्रह	सातवीं दृष्टि

ग्रह दिशा पर आधारित निम्नलिखित प्रकार की दृष्टियाँ भी रखते है :

ग्रह	दृष्टि	स्थान अथवा दृष्टि की दिशा
सूर्य, मंगल	ऊर्ध्व दृष्टि	ऊपर देखना, छत, ऊँचाई
शनि, राहु	अधो दृष्टि	नीचे देखना, भूमिगत, तहखाना
बुध, शुक्र	तिर्यक दृष्टि	तिरछी दृष्टि, टेढ़ी दिशा जैसे दीवार का कोना
चंद्रमा, बृहस्पति	सम दृष्टि/अग्र दृष्टि	सम दृष्टि, फर्श, भूमि के साथ समतल

ताजिक दृष्टियाँ

ताजिक ज्योतिष के अनुसार दृष्टियाँ निम्नलिखित हैं

मित्र दृष्टियाँ	प्रत्यक्ष मित्र	5, 9
	गुप्त मित्र	3, 11
शत्रु दृष्टियाँ	प्रत्यक्ष शत्रु	1, 7
	गुप्त शत्रु	4, 10
तटस्थ दृष्टियाँ	बिना दृष्टि जैसा मानना चाहिए	2, 12, 6, 8

कौन सी दृष्टियाँ प्रयोग करें, पाराशरी अथवा ताजिक

प्रश्न में कौन सी दृष्टियां प्रयोग में लाई जानी चाहिएं, पाराशरी अथवा ताजिक, इसके संबंध में विवाद है। इस संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि जब पहले ताजिक सिद्धांत प्रकाश में नहीं आए थे क्या प्रश्न के अत्युत्तम विश्लेषण में पाराशरी ज्ञान अपर्याप्त था? इस तथ्य को विश्लेषणात्मक विवेचन के चरण पर किसी भ्रम से बचने के लिए स्पष्टतः समझ लेना चाहिए। ताजिक दृष्टियां ताजिक योगों के निर्माण के लिए अनिवार्य मानक हैं। इस तथ्य के अलावा प्रश्न में ताजिक दृष्टियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रश्न के विश्लेषण में केवल पाराशरी दृष्टियों को प्रयोग करने की आवश्यकता है और इसे इस पुस्तक में यथास्थान सोदाहरण समझाया गया है।

मृत्यु का कारण

8वें भाव में स्थित ग्रह मृत्यु का कारण दिखाते हैं। इसके साथ ही 22वें द्रेष्काण, 64वें नवांश एवं 85वें द्वादशांश और उनके स्वामियों पर भी विचार करना चाहिए। यह जानने के लिए कि मृत्यु सुखद होगी अथवा दुखद, नवांश कुंडली में मांदि से 7वें भाव को देखें। यदि वहाँ शुभ ग्रह स्थित है तो मृत्यु शांतिपूर्वक होगी अन्यथा नहीं। अष्टम भाव पर निम्न ग्रहों का प्रभाव मृत्यु के कारण को निर्दिष्ट करता है।

ग्रह	*मृत्यु का कारण*	*ग्रह*	*मृत्यु का कारण*
सूर्य	अग्नि	बृहस्पति	बीमारी
चंद्रमा	डूबने से	शुक्र	प्यास/यौन रोग
मंगल	शस्त्र/दुर्घटना	शनि	भूख/अचानक मृत्यु
बुध	तेज़ ज्वर	राहु	विष/गलत दवा

ग्रहों की मित्रता

ग्रहीय मित्रता दो प्रकार की है- नैसर्गिक और तात्कालिक। नैसर्गिक मित्रता ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से मापी जाती है। ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से 2, 4, 5, 8, 9, 12 भावों के स्वामी उसके मित्र हैं और अन्य शत्रु हैं। जब

एक ग्रह एक स्वामी से मित्र बनता है और दूसरे से शत्रु, तब यह तटस्थ माना जाता है। तात्कालिक मित्रता और शत्रुता ग्रहों के स्थापन से देखी जाती है। किसी ग्रह से, जो ग्रह 10, 11, 12, 2, 3, 4 में स्थित हैं, उसके मित्र हैं और अन्य शत्रु हैं। नैसर्गिक और तात्कालिक मित्रता के बीच सम्बन्ध हमें पंचधा मैत्री देता है जिस पर सामान्यतः प्रश्न में विचार नहीं किया जाता। यहाँ हम समूह मित्रता को लेते है, जो इस प्रकार है।

प्रथम समूह : सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, केतु

द्वितीय समूह : बुध, शुक्र, शनि, राहु

एक ही समूह के ग्रह मित्र हैं और समूह से बाहर के ग्रह शत्रु हैं।

शरीर के अंग

ग्रह	शरीर का अंग	ग्रह	शरीर का अंग
सूर्य	हड्डियाँ	बृहस्पति	चर्बी
चंद्रमा	रक्त	शुक्र	वीर्य
मंगल	मज्जा	शनि	स्नायु और मांस पेशियाँ
बुध	त्वचा	राहु और केतु	हड्डियाँ और पैर

धातु, मूल अथवा जीव

कृष्णाचार्य के अनुसार

धातु अथवा खनिज	चंद्रमा, मंगल, राहु और शनि
मूल अथवा जड़	सूर्य और शुक्र
जीव अथवा प्राणी	बृहस्पति और बुध

इस वर्गीकरण में भी विभिन्न दृष्टिकोण हैं। बृहस्पति जीव है, सूर्य, मंगल और राहु धातु का प्रतिनिधित्व करते है, शनि मूल को बताता है। कुछ शनि और सूर्य को धातु तथा मूल दोनों के लिए मानते हैं। बुध जीव की तरह और शुक्र मूल की भाँति है। अन्य दृष्टिकोण के अनुसार, चंद्रमा धातु और जीव का प्रतिनिधित्व करता है जबकि बुध और शुक्र जीव और मूल दोनों को सूचित करते हैं। तथापि ऊपरलिखित कृष्णाचार्य का वर्गीकरण ही व्यापक रूप से मान्य है। इन ग्रहों में जो ग्रह लग्न को प्रभावित करते हैं, वे विशेषतौर पर धातु, मूल अथवा जीव की विशेष श्रेणी को संकेतित करते हैं।

धातु

पृथ्वी से उत्खनित सभी खनिज और धातु, धातुएं हैं। मूलतः ये दो प्रकार की हैं। प्रथम समूह स्वर्ण चाँदी जवाहरात आदि को शामिल करता

है जबकि दूसरा समूह मिट्टी, पत्थर, खनिज को। सुविधा के लिए, हम उन्हें बहुमूल्य और सस्ता समूह कहेंगे तथापि तकनीकी रूप से यह ऐसा नही है, क्योंकि कतिपय खनिज स्वर्ण और चाँदी की अपेक्षा अत्यधिक मूल्यवान है। इन्हें मुलायम अथवा सख्त धातुओं में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

लग्न को प्रभावित करने वाले ग्रह : चंद्रमा, मंगल, शनि, राहु में से कोई भी
पाप ग्रहों के नवांश में : बहुमूल्य समूह - सोना, चाँदी, जवाहरात
शुभ ग्रहों के नवांश में : सस्ता समूह - मिट्टी, पत्थर, खनिज

कार्येश के साथ संबंधित ग्रह	*धातु का प्रकार*
सूर्य	मोती
शुक्र और चंद्रमा	चाँदी
मंगल	पीतल, लाल पत्थर, मूँगा
बुध	स्वर्ण
बृहस्पति	स्वर्ण जड़ित जवाहरात
शनि	लोहा
राहु	हाथी दांत एवं हड्डियाँ

मूल

सब वनस्पति मूल हैं। ये भी दो प्रकार की हैं। जो वनस्पति भूमि पर उगती है उसे स्थलज मूल कहा जाता है और जो वनस्पति जल में उगती है, उसे जलज मूल कहा जाता है।

लग्न को प्रभावित करने वाले ग्रह : सूर्य अथवा शुक्र

जलीय राशियों (4, 8, 10, 11, 12) के नवांश में : जल में उत्पन्न, जलज मूल

दूसरी राशियों (1, 2, 3, 5, 6, 7, 9) के नवांश में : भूमि पर उत्पन्न मूल, स्थलज मूल

जीव

सभी जीवित चीजें जीव हैं। इन्हें आगे द्विपाद अथवा दो पैर, चतुष्पाद अथवा चार पैर, कीट अथवा कीड़ों में बाँटा गया है। यह वर्गीकरण उत्पत्ति के आधार पर भी है। अंडज जीव की उत्पत्ति अण्डे से है, जैसे पक्षी/कीट। जीव में कीड़े सम्मिलित हैं। पिंडज जीव अन्य प्राणी हैं जो उपरोक्त दोनों श्रेणियों में नहीं आते।

लग्न को प्रभावित करने वाले ग्रह	बुध अथवा बृहस्पति
कार्येश के साथ संयुक्त ग्रह	*जीव का प्रकार*
बृहस्पति अथवा शुक्र	द्विपाद
सूर्य अथवा मंगल	चतुष्पाद
पाप ग्रहों के प्रभाव में	जंगली पशु
शुभ ग्रहों के प्रभाव में	पालतू पशु
बुध अथवा शनि	पक्षी
जलीय राशियों में	जल के निकट रहने वाले पक्षी
दूसरी राशियों में	भूमि पर रहने वाले पक्षी
चंद्रमा अथवा राहु	कीड़े
पाप ग्रहों के प्रभाव में	विषैले कीड़े
शुभ ग्रहों के प्रभाव में	विष-विहीन कीड़े

मृत्यु भाग अथवा ग्रहों के भाग्य निर्णायक अंश

विभिन्न राशियों में ग्रहों के ये भाग्य-निर्णायक अंश मृत्यु भाग कहलाते है, जो अशुभ माने जाते हैं।

राशि	*सूर्य*	*चन्द्र*	*मंगल*	*बुध*	*बृ०*	*शुक्र*	*शनि*	*राहु*	*केतु*	*मांदि*	*लग्न*
मेष	20	8	19	15	19	28	10	14	8	23	1
वृष	9	25	28	14	29	15	4	13	18	24	9
मिथुन	12	22	25	13	12	11	7	12	20	11	22
कर्क	6	22	23	12	27	17	9	11	10	12	22
सिंह	8	21	29	8	6	10	12	24	21	13	25
कन्या	24	1	28	18	4	13	16	23	22	14	2
तुला	16	4	14	20	13	4	3	22	23	8	4
वृश्चिक	17	23	21	10	10	6	18	21	24	18	23
धनु	22	18	2	21	17	27	28	10	11	20	18
मकर	2	20	15	22	11	12	14	20	12	10	20
कुम्भ	3	20	11	7	15	29	13	18	13	21	24
मीन	23	10	6	5	28	19	15	8	14	22	10

ग्रहों की अन्य विशेषताएं : एक दृष्टि में

उपरोक्त व्याख्यायित विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएं हैं जिन्हें नीचे संबद्ध कालमों - धातु, मूल, जीव शरीर के अंग, दोष, स्थान, सम्बन्ध, योग्यताएं, सार-सूची, समाज और विविध में सारणीबद्ध किया गया है।

सूर्य

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
ताँबा, पीतल, स्वर्ण, जवाहरात, आभूषण, मोती, माणिक्य, रत्न, लाल मूँगा, पुखराज	इमारती लकड़ी, बादाम, मिर्च, घास, संतरा	मवेशी, चतुष्पाद, शेर, ऊन, हिरण, हंस	हृदय, हड्डियाँ, उदर, आँख, शरीर, चेहरा, अंतःकरण	पित्त, ज्वर अथवा जलन संबंधी शिकायतें, छिदरे बाल, आँखें, सिर, लाल आँखों की बीमारियाँ	किला, वन, नदी के किनारे, मंदिर, भव्य इमारतें और फ्लैट	पिता

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
जीवन-शक्ति, शक्ति अथवा क्षमता, साहस, कड़वा स्वाद, पराक्रम, मानसिक शुद्धता, ज्ञान का उद्‌बोधन, महत्त्वाकांक्षा, उत्साह, रोग से मुक्ति, छोटा कद, क्रोध, जो कि आसानी से शांत नहीं होता, खलता	ताप, शिव की पूजा, राजा की कृपा, मर्त्य संसार, यात्रा, सरकार अथवा राज्य के मामलों से संबंधित, मुक्त संचालन, दोपहर को बलवान, सात्विक स्वभाव, आत्मा	राजा, शासक, चिकित्सक, यज्ञ में बैठा धर्माचारी	कुछ भी शुभ, विशालकाय वृक्ष, आधा वर्ष, पहाड़ों पर घूमना-फिरना, वृत्ताकार रूप, रक्तिम लाल वस्त्र, शत्रु का अपहरण, केसर, मोटा सूत, यज्ञ, पर्वतारोहण

चन्द्रमा

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
चाँदी,	फल,	मत्स्य,	मन,	भावशून्य शरीर गठन	कुएं,	माता, स्वयं
मोती,	चीनी,	अन्य	मुख की आभा,	एवं स्वभाव,	तालाब,	
हीरा,	गेहूँ,	जलीय,	चेहरा,	मिरगी, नासूर,	पश्चिमाभिमुख,	
स्फटिक,	दलहन,	जातियाँ,	उदर	अम्लता, मलेरिया,	मध्य संसार,	
माणिक्य	शैवाल,	सर्प,		ज्वर, कंधों की	रसोईघर,	
	जौं,	सींगदार		बीमारियाँ	शौचालय,	
	फूल	पशु			मद्यनिर्माणशाला	

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
बुद्धि, स्वभाव,	बीमारी, आलसीपन,	ब्राह्मण,	समुद्र स्नान, मानसून का मौसम,
सुख-शांति,	निद्रा, उपभोग,	स्त्री,	इत्र, किले पर जाना,
निष्पक्ष दृष्टिकोण,	श्वेतता, मुहूर्त्त,	प्रेमी,	तरल, तीर्थयात्री, दोपहर,
छोटा कद,	पार्वती की पूजा, कृपा,	धोबी	कमरबंद, नमक, तपस्वी, रात्रि में
योग्यताएँ, स्फूर्ति,	पोषाहार,		बलवान, नमकीन, खाना,
दही का शौकीन, सुन्दरता,	भोग-विलास,		दूरस्थ स्थानों पर जाना
प्रसिद्धि, भूरी और नीली आंखें,	मध्य आयु, मन		दूध, झरना, कृषि, उत्तम भोजन
कोमल वाणी, सुकुमारता			छुरी-कांटे, चीनी के बर्तन

मंगल

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
राँगा, माणिक्य, गहने, स्वर्ण, टिन, ताँबा, धातुएँ, खनिज	वृक्ष, काजू, काफी, अदरक, कमल, मिर्च	चतुष्पाद, सर्प, मेढ़ा, सियार, बिल्ली, बंदर, चीता, गिद्ध, मांसाहारी पशु	रक्त, हड्डी, मज्जा	पुरूषत्व की कमी, पित्त, ताप, जख़्म, बीमारी	भूमि, शासक का दरबार, घर, रसोईघर, गुप्त स्थान, अपराधी-वर्ग, बूचड़खाना	भाई, रिश्तेदार

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
पराक्रम, क्षमता, क्रोध, परोपकारी स्वभाव, दृष्टि, अनुराग, स्थिरता, ठिंगना, यश, इच्छा, अंग की दृढ़ता, धनुर्विद्या में प्रवीण, शत्रु की शक्ति, दुर्बलता, वाणी क्रूरता, सामर्थ्य	शस्त्रों को ले जाना, जनता पर शासन, प्रतिपक्षी, युद्ध, कुहरा, गहरी लाल चीजों से स्नेह, शासकाधीन, नौकरी बाधाएं, यौवन, कड़वा स्वाद, ग्रीष्म ऋतु, ब्रह्मा, राजा की कृपा, स्वतंत्रता	राजा, चोर, मंत्री, स्वर्णकार, सेनाध्यक्ष, रसोइया	पुरातत्त्वविद्, दुराग्रही मूर्ख, तुरही की आवाज, विदेश जाना, समर्थक, अग्नि, विवाद, तर्क-वितर्क, दिन, आकाश, तलवार, भाला, जले हुए स्थान, मिट्टी के बर्तन, मांसाहारी भोजन खाना, अपशब्द बोलना, आदमी, कुल्हाड़ी, वन अधिकारी, ग्राम प्रधान, निजी वस्त्र, अफवाहें फैलाना, अपकीर्ति, अग्नि-शस्त्र, सामवेद, ग्रीष्म

बुध

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
आभूषण, यौगिक, तत्त्व	ताम्बूल, पत्तियाँ, घास, बिना फल वाले वृक्ष	घोड़ा, पक्षी, तोता	त्वचा, गर्दन, नाभि, गुप्तांग	त्वचा की बीमारियाँ, समान अनुपात में वात, पित और कफ	कोषागार, उत्तम स्थान, स्वर्ग, मंदिरों की मीनारें, बाग, पुस्तकालय, मंदिर	नाना, छोटे भाई-बहन

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
ज्ञान, वाणी, व्याख्यान देना, विनम्रता, भय, श्रद्धा, आत्मसंयम, हँसने की प्रवृत्ति, पुराणों में प्रवीण, विद्वान, विनोदपूर्ण भाषा, हितकारी स्वभाव, रत्न पारखी	शिक्षा, मूर्तिकला, गणित, ज्योतिष, वाणिज्य, वेदांत, तंत्र, दुःस्वप्न, आर्द्रता, संन्यास, धार्मिक अनुष्ठान, मौसम, नृत्य, समता, व्याकरण	पैदल सेना, नपुसंक, बालक, शूद्र, तांत्रिक, लिपिक	पटकथा, लेखन, नए वस्त्र, स्थानों का निर्माण, हरे रंग की घास, तीर्थयात्री, काला जादू, प्रातःकाल में बलवान, आड़े-तिरछे देखना, हेमन्त ऋतु (शीत ऋतु का प्रारंभ) हुण्डियां, धूल

बृहस्पति

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
बहुमूल्य रत्न, स्वर्ण, पुखराज, लहसुनिया	पीपल का वृक्ष, काला चना, फलों के पौधे	गायें, घोड़े, भैसें	मस्तिष्क, कोहनी, शरीर में मोटापा	पाचन तंत्र में अव्यवस्था, वायु-विकार, कफ, जलोदर	कोठियाँ, विशिष्ट भव्य स्थान	पुत्र, पौत्र, बड़ा भाई, दादा, प्रिय मित्र

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
न्याय-शास्त्र, लंबा शरीर, पराक्रम, यश, तर्क, प्रवीणता, उत्तम वाकपटुता, लंबा, बुद्धिमान, ग्रंथों का ज्ञान, कुलीन, सात्विक प्रकृति, अन्य व्यक्तियों के विचारों का अध्ययन, शुभता	धार्मिक और अन्य कार्य, ज्योतिष, शारीरिक स्वास्थ्य, परोपकार, धर्म, वृद्धावस्था, पीला रंग, निष्पक्षता, तपस्या, मंत्र, लंबी कविताएं	ब्राह्मण, शिक्षक, व्यापारी	रथ, जमा पूंजियाँ, खजाना, पवित्र जल, हाथियों का वैभव, इन्द्र, वेदांत, दर्शन, शीत ऋतु का उत्तरार्ध, तीर्थ स्थल, ब्रह्मा की मूर्ति, राजसिंहासन मधु, तेल, रेशम, तोंद

शुक्र

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
चांदी, मोती, बहुमूल्य रत्न, आभूषण, हीरा, अभ्रक	पुष्प, चैरी, कपास, विसर्पी, रसदार फल	द्विपाद, हाथी, घोड़े, मोर, रेशम	जननांग, मूत्रीय भाग	कफ	जलीय स्थान, रंगमंच, सिनेमा, होटल, नाचघर, वेश्यालय, हरम	पति, पत्नी

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
कुलीन, काम जीवन से सुख-शांति, छोटा कद, यश, यौवन, गर्व, राजसी प्रवृत्ति, दृढ़ता, सौन्दर्य, आनंद, प्रेम-परिहास, गंभीर, प्रतिष्ठित, सुनिर्मित	आय, अम्लीय स्वाद, प्रभुत्व, तिर्यक दृष्टि, अनूठी कविता, संगीत, कामुक, मनोहर वाणी, सुकुमारता, विवाह-समारोह, सम्मान, राज्य शाही सजावट	स्त्री, वैश्य, शासक व्यापारी, काल-गर्ल्स (वैश्या)	उत्तम वस्त्र, सफेद छाता, विवाह, वाहन, नमकीन स्वाद, पखवाड़ा, यजुर्वेद, अंगराग, नृत्य, मध्य आयु, तैराकी, भाग्य, भ्रमण, समानुपाती अंग, व्यापार, वसंत ऋतु, अनेक स्त्रियों से संबन्ध, संगीत-उपकरण, काम में प्रवृत्त, वीणा, बाँसुरी, भरत नाट्यम में दक्ष

शनि

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
बहुमूल्य रत्न, लोहा, सीसा, टिन (रांगा)	लकड़ी काला अनाज, तुच्छ अनाज	घोड़ा, गधा, हाथी, साँप, बकरी, पक्षी, कुत्ता, भैंस	त्वचा, नस, हड्डी, स्नायु	बीमारी	गंदा घर, युद्ध क्षेत्र, जहाँ श्रमिक वर्ग रहता है, कूडा कचरा, खण्डहर	चचेरे भाई, पिता (रात्रि समय जन्में व्यक्तियों के लिये)

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
विपत्ति, शत्रुता, अशुद्ध मन, घृणा, परोपकार, आयु, रोष, चिरस्थायी, प्रयास, क्रूरता, हिंसक, उदारता, कठोर, दासता	अस्वस्थता, रूकावट, मानक, मृत्यु, वृद्धावस्था, स्त्रियों से प्रसन्नता, असत्यभाषण, नौकर के कार्य, पाप, दुष्ट लोगों के साथ संबंध, नियति	अछूत, मालिक, नपुंसक, शूद्र, तामसिक विशेषताओं से युक्त, ब्राह्मण, लुहार	आयु, नौकर, विकृत अंगों वाले व्यक्ति वायु, अपरम्परागत कार्य, जंगलों में विचरण करना, सूर्यास्त के समय पर बलवान, एक निम्न स्त्री, व्यभिचार अथवा विधवा से उत्पन्न, गंदे वस्त्र, काला रंग, भस्म, एक वर्ष, कम्बल, चोरियां

राहु

धातु	मूल	जीव	अंग	दोष	स्थान	संबंध
गोमेद, लोहा, पन्ना	झाड़ियाँ, तिल	सर्प सरीसृप, मच्छर, खटमल, उल्लू, कीड़े	हड्डियाँ	गुप्त उदरीय नासूर, असाध्य ट्यूमर, तीव्र प्रसूति पीड़ा वायु-विकार और कफ फोड़े-फुंसियाँ नज़ला-जुकाम	दुसाध्य स्थान, घने जंगल, साँपों का संसार, सुरंगें, बाँबी, कब्रस्थान	नाना

योग्यताएं	सार-सूची	समाज	विविध
कटु वाणी, दोषपूर्ण तर्क, अस्वच्छ, महान पराक्रम, असमंजस, मिथ्यावादिता, चरित्रहीनता, समलैंगिकता, स्त्री समलिंग, कामुकता	जूआ, सूर्यास्त पर बली, चरित्रहीन स्त्रियों के साथ यौन संबंध, विदेश-गमन, स्वप्नों के संसार में रहना, वृद्धावस्था, भृष्टाचार, रिश्वतखोरी	मलेच्छ, शूद्र, अधर्मी व्यक्ति	दुष्ट औरत, अधोगामी दृष्टि, दक्षिणी पवन, छाता, वायु, यात्राएँ, एक मुहूर्त की अवधि, वाहन, पशुओं के साथ संबंध, विधर्मी, उर्दू अथवा फारसी भाषा, जहर, मानसिक परेशानियां, अस्त-व्यस्तता, सांप का काटना

केतु

धातु	*मूल*	*जीव*	*अंग*	*दोष*	*स्थान*	*संबंध*
रत्न	झाड़ी, कंटक	कुत्ता, गधा, गिद्ध, मुर्गा, सींगदार पशु	पैर	पीड़ादायक ज्वर, वायु-विकार, चोटें, पेट और आँख की बीमारियाँ, ग्रहणी नासूर (फोड़ा), चर्मरोग, चेचक, उद्‌गार	सुराख, सुरंगें, अंधेरा	दादा

योग्यताएं	*सार-सूची*	*समाज*	*विविध*
पीड़ा, शोक, शिकारियों के साथ मित्रता, अस्थिरता (मानसिक), महान तपस्या, अति संवेदनशीलता, भूख, मूर्खता, ब्रह्मज्ञान, सन्यास, पशुओं का ज्ञान, घटिया खाने की आदत	मोक्ष, व्यय, समृद्धि, मंत्र शास्त्र, झंडे के मस्तूल की भांति ऊंचाई प्राप्त करना, विलासिता, भाग्य, शत्रुओं से पीड़ा	चिकित्सक, शूद्र, सर्प, जादूगर, बौद्ध	वैभव, कोषागार, अंतिम मोक्ष, गंगा स्नान, प्राणी विज्ञान, मौन निरीक्षण वेदांत, शूद्रों के साथ संबंध, कारावास से छूटना

नक्षत्र

पुरुष अथवा स्त्री

पुरुष नक्षत्र : अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती

स्त्री नक्षत्र : आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती

नपुंसक : विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा

धातु, मूल और जीव

धातु	*मूल*	*जीव*
अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाती
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पूर्वभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	रेवती

भाव

भावों के स्थिर कारक

भाव	*कारक*	*भाव*	*कारक*
प्रथम भाव या लग्न	सूर्य	सप्तम भाव	शुक्र
द्वितीय भाव	बृहस्पति	अष्टम भाव	शनि
तृतीय भाव	मंगल	नवम भाव	सूर्य, बृहस्पति
चतुर्थ भाव	चन्द्रमा, बुध	दशम भाव	सूर्य, बृहस्पति, बुध, शनि
पंचम भाव	बृहस्पति	एकादश भाव	बृहस्पति
षष्ठ भाव	मंगल, शनि	द्वादश भाव	शनि

प्रथम भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
धन, वैभव		मवेशी, पालतू पशु	तन, अंग, बाल, त्वचा, सिर, तेजस्विता, अंगों का अनुपात, रूप-रंग	जन्म स्थान	स्वयं	सुख-शांति, अप्रसन्नता, स्वप्न, निद्रा, संन्यास, शांति, शिष्टाचार	आयु, वृद्धावस्था, उत्तम स्वास्थ्य, प्रश्न के उद्देश्य से संबंधित प्रयास

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर		
ज्ञान, यश, क्षमता, प्रतिष्ठा, आत्म सम्मान, लांछन, मर्यादा, प्रज्ञा, बुद्धिमानी, कार्य की योग्यता, प्रवीणता, व्यक्तिगत आकर्षण	आजीविका जूआ, अपमान, पूर्ववर्ती, मानहानि	नैतिक चरित्र, उत्तम व्यवहार	बारहवें भाव से दूसरा	-	अस्पताल, अदालती व्यय
			ग्यारहवें भाव से तीसरा	-	यात्राएं/मित्रों के सहोदर
			दसवें भाव से चौथा	-	व्यवसाय अथवा जीविका में प्राप्तियाँ
			नवें भाव से पंचम	-	पिता को सट्टे से लाभ
			आठवें भाव से छठा	-	जीवन-साथी के परिवार या रिश्तेदार की बीमारी
			सातवें भाव से सातवाँ	-	स्वास्थ्य, रूपरंग, जीवन साथी के संबंधी
			छठे भाव से आठवाँ	-	शत्रुओं और कर्जदारों की बाधाएँ
			पांचवे भाव से नवाँ	-	लंबी यात्राएँ और बच्चों का भाग्य
			चौथे भाव से दसवा,	-	माँ, परिवार, घर की प्रतिष्ठा
			तीसरे भाव से ग्यारहवाँ	-	भाइयों की प्राप्त उपलब्धियाँ
			दूसरे भाव से बारहवाँ	-	परिवार और भोजन की हानि

दूसरा भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
वैभव, हीरा तॉंबा, बहुमूल्य रत्न, मोती, धातुएं, कृत्रिम उत्पादन, नवरत्न	अनाज, खाद्य पदार्थ, नौ प्रकार के अनाज	घोड़ा	वाणी, नाखून, जिह्वा, दाहिनी आँख, नाक, चेहरा, मुँह, गाल, ठोढ़ी, दाँत		परिवार, निकट अनुयायी, मित्र, कृपणता, विश्वास	नियंत्रण अथवा निश्चय, अनुग्रह	समृद्ध और धनी रहन-सहन

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
धार्मिक ग्रंथों में विश्वास, उत्तम वाणी, वाकपटुता, सच, असत्य, छलकपट, मिथ्याचार, भोग विलास का आनंद, विद्या सीखना	आनंद की अपेक्षा संचय के उद्देश्य के लिए अधिकाधिक धन अर्जित करना, खाता नियंत्रित रखना	बातूनीपन, स्मृति, भव्यता, शालीनता, पारिवारिक अथवा घरेलू वस्तुओं में व्यापार, मित्रता, जनश्रुति,	प्रथम भाव से दूसरा	- धन से संबंधित प्रत्येक वस्तु
			बारहवें भाव से तीसरा	- गुप्त शत्रुओं की छोटी यात्राएँ
			ग्यारहवें भाव से चौथा	- मित्रों का घर
			दसवें भाव से पांचवां	- व्यवसाय में निवेश और सट्टा
			नवें भाव से छठा	- पिता के शत्रु और बीमारी
			आठवें भाव से सातवाँ	- पत्नी/पति की आकस्मिक उपलब्धियाँ
			सातवें भाव से आठवाँ	- जीवन साथी की मृत्यु
			छठे भाव से नवाँ	- माँ के परिचितों का भाग्य एवं यात्राएं
			पांचवें भाव से दसवाँ	- बच्चों की जीविका और व्यवसाय
			चौथे भाव से ग्यारहवाँ	- माँ की सामाजिक गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ
			तीसरे भाव से बारहवां	- हानियाँ, भाइयों/पड़ोसियों का अस्पताल जाना

तीसरा भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
आभूषण, कर्णाभूषण	फसल, जड़, कंद, फल, अनाज, मक्का, उत्तम/ अनुत्तम भोजन	सैनिक, नौकर	दाहिना कान, गला, अंगूठा और तर्जनी उंगुली के बीच का हाथ का भाग, हँसुली, कंधे की हड्डी शरीर की वृद्धि, स्नायु तंत्र, पैर	भूमि अथवा सड़क, स्वर्ग, पुस्तकालय, पर्यावरण, पास-पड़ोसी	भाई, निकटतम रिश्तेदार, मित्र, गुलाम, पड़ोसी, नौकरानी, परिचित	मानसिक अस्थिरता, धार्मिक कार्य	स्वस्थता, स्वच्छ भोजन लेना, पराक्रम, शरीर का भौतिक विकास, व्यक्तिगत क्षमता

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर		
साहस,	ईश्वर का	युद्ध, शोक का कारण	ग्यारहवें भाव से पाँचवाँ	-	मित्र के बच्चे
पराक्रम,	आवास,	भ्रमण, छोटे वाहन,	दसवें भाव से छठा	-	स्वयं की जीविका में मुकद्दमें बाजी
उत्तम	पैतृक संपत्ति	छोटी यात्राएँ,	नवें भाव से सातवाँ	-	पिता के व्यवसायिक सहयोगी
योग्यताएं,	का विभाजन	तीर्थ यात्री,	आठवें भाव से आठवाँ	-	मृत्यु का कारण
शिक्षा,		संवाददाता, महान	सातवें भाव से नवाँ	-	साझेदार/पति/पत्नी के पिता और उनकी लंबी यात्राएँ
आदतें		उत्तरदायित्व	छठे भाव से दसवाँ	-	शत्रु का व्यवसाय और जीविका
		विभाजन, प्रकाशन,	पाँचवें भाव से ग्यारहवाँ	-	बच्चों की उपलब्धियाँ
		सेना, अनैतिक, अभिप्राय	चौथे भाव से बारहवाँ	-	हानियाँ, स्वप्न, माँ का अस्पताल जाना

चौथा भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
मूर्तिकला, वैभव, कोषगार	कपड़े, कृषि फसलों की प्रचुरता, खाद्य, बाग, फसलों की उपज	भैसें, गाएँ, बैल, घोड़े, हाथी	हृदय, शरीर का वक्षीय क्षेत्र, स्तन, छाती, कंधा	भूमि, छोटा कुआँ, बाग, मंडप	मामा, माँ, मित्र, रिश्तेदार	विजय, गर्व	

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
शिक्षा, अच्छा नाम, श्रद्धा अथवा विश्वास, शुद्ध अथवा सुस्थिर बुद्धि, सुख-शांति	मिथ्या आरोप, वस्तुएँ जो पीड़ा देती हैं	राष्ट्रीय अथवा सरकारी कार्य, यात्राएँ, वाहन, जाति, दूध, दवा, इत्र, पैतृक संपत्ति कुओं का उत्खनन, जल, चोरी हुई वस्तु की दिशा	तीसरे भाव से दूसरा -	भाइयों का लाभ
			बारहवें भाव से पाँचवाँ -	गुप्त शत्रु की संतान, आकस्मिक उपलब्धियाँ
			ग्यारहवें भाव से छठा -	शत्रु और मित्रों का ऋण
			दसवें भाव से सातवाँ -	साझेदार की पत्नी/पति
			नवें भाव से आठवाँ -	पिता की पैतृक संपत्ति
			आठवें भाव से नवाँ -	आकस्मिक भाग्य, लाटरी, पुरस्कार, आय
			सातवें भाव से दसवाँ -	पति/पत्नी अथवा साझेदार की जीविका
			छठे भाव से ग्यारहवाँ -	शत्रुओं की उपलब्धियाँ
			पांचवें भाव से बारहवाँ -	सट्टे में हानि, बच्चों की बीमारी

पंचम भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
मूर्तिकला	कपड़े	राजा, मंत्री	उदर, पेट, हृदय, हाथ	पैतृक संपत्ति	बच्चे, प्रेम संबंध, प्रणय-निवेदन, प्रथम संतान, शिष्य, दूसरा सहोदर	मन, विवेक, दूरदृष्टि, गंभीरता, गोपनीय, विनम्रता, भावनाएँ, श्रद्धा-भक्ति	गर्भावस्था, प्रजनन-क्षमता, बाँझपन

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर
उत्तम चरित्र, शिक्षा, विवेक (अच्छे और बुरे के बीच का विभेद), कुशल-क्षेम बुद्धिमानी, प्रतिभा, प्रफुल्लता पिता के धार्मिक कार्य	मंत्र कविता की रचना, साहित्यिक कार्य, साहित्य में छात्रवृत्ति, कोई रूपरेखा अथवा योजना, साधन संपन्न, विदग्ध	छाता, शुभ दस्तावेज, निम्न स्त्रियों के साथ संबंध, धन-प्राप्ति के माध्यम, लाटरी, जूआ, जनवाणी, ऋण से मुक्ति, मंत्री, दूरदृष्टि, पूर्व पुण्य अथवा पिछले जन्म के परोपकार	चौथे भाव से दूसरा - माँ से आय, संपत्ति, वाहन तीसरे भाव से तीसरा - भाई के मित्र दूसरे भाव से चौथा - पारिवारिक संपत्ति, कार बारहवें भाव से छठा - गुप्त शत्रुओं की समस्याएँ, उनकी बीमारी ग्यारहवें से सातवाँ - साझेदार के साथ संपर्क दसवें भाव से आठवाँ - जीविका में हानि नवें भाव से नवाँ - दादा, पिता का भाग्य आठवें भाव से दसवाँ - पति/पत्नी के परिवार की सामाजिक पृष्ठभूमि सातवें भाव से ग्यारहवाँ - पत्नी, साझेदारी से उपलब्धियाँ छठे भाव से बारहवाँ - गुप्त शत्रु और गुप्त संबंध

छठा भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
	उबले हुए चावल, जड़ी-बूटी, अनाज	पशु, पालतू पशु घरेलू, जीव चतुष्पाद, गधा/ऊँट	मूत्रिय श्रेत्र पेट, कमर, नाभिक्षेत्र, बीमारी	जेल	मामा, चाचा, चचेरा संबंधी, नौकर	पागलपन, कृपणता मानसिक यंत्रणा अथवा चिंता, अनेकों से घृणित, उन्माद, थकावट	बीमारी, क्रूर बाधाएँ, रतिज फोड़े, चेचक, उद्गार आँख की बीमारियाँ गहरी श्वास

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर		
कंजूस,	कर्ज, छरहरा,	युद्ध करना,	पाँचवें भाव से दूसरा	-	बच्चों के परिवार
भुलक्कड़	शत्रुओं का हर्ष	भिक्षावृत्ति,	चौथे भाव से तीसरा	-	मां की तरफ के चाचा और चाची
उदास	लाभ, भर्त्सना	हथकड़ी,	तीसरे भाव से चौथा	-	पारिवारिक संपत्ति, कार
मन,	करना, कारावास,	विष, झगड़े,	दूसरे भाव से पाँचवाँ	-	गायन द्वारा भाग्योदय, वाणी, पारिवारिक व्यवस्था
क्रूर	भाइयों के साथ	शस्त्र, चोर,	बारहवें भाव से सातवाँ	-	शत्रु की प्रेयसी और संबंध
कार्य	गलतफहमी,	शत्रु, सूजन,	ग्यारहवें भाव से आठवाँ	-	मित्रों की कृपा
	विपत्ति, दुराचार,	शत्रुता, श्रमिक	दसवें भाव से नवाँ	-	स्थानांतरण, कार्यालयी यात्राएँ, प्रतिनियुक्ति
	अपमान,	वर्ग, उद्योग,	नवें भाव से दसवाँ	-	पिता की जीविका
	अंधविश्वासी	जन-स्वास्थ्य,	आठवें भाव से ग्यारहवाँ	-	मित्र की मृत्यु
		स्वास्थ्य	सातवें भाव से बारहवाँ	-	गुप्त शत्रु और जीवन साथी के संबंध

सातवां भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
	पान के पत्ते, पुष्प, दलहन, पसंद का भोजन	लोग अथवा जनता	वीर्य, जननांग गुदा, गुर्दे, हड्डियाँ, यौन-उत्तेजना	हवेली, अपना स्थान, विदेश अथवा दूरस्थ स्थान	दत्तक पुत्र, पत्नि अथवा पति, साझेदार, तीसरा, सहोदर	सद मार्ग से विचलन, स्मरण-शक्ति की कमी, इच्छाएं, तर्क वितर्क	विवाह, स्वच्छंद काम वासना का जीवन, लैंगिक संबंध, चोरी

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
पति की	प्रेम अथवा	इत्र रखना, संगीत	छठे भाव से दूसरा	- शत्रुओं की समृद्धि, जेल, अस्पताल, चिकित्सालय से लाभ
शुद्धता,	भावावेश में विजय,	और पुष्प, स्वादिष्ट	पाँचवें भाव से तीसरा	- प्रेयसी के भाई
पराक्रम,	यात्राएँ, वाणिज्य	भोजन, दही, कपड़े	चौथे भाव से चौथा	- माँ की संपत्ति, निवास-स्थान का परिवर्तन
शत्रु का	अथवा व्यापार,	रखना, दूध, अनाज	तीसरे भाव से पाँचवाँ	- भतीजे-भतीजियां
विनाश,	दूरस्थ स्थान	का भोजन, शत्रु की	दूसरे भाव से छठा	- पारिवारिक विवाद
कूटनीति,	से धन की प्राप्ति,	पराजय, विवाद,	बारहवें भाव से आठवाँ	- जुर्माना, दंड, शत्रुओं की मृत्यु
भावावेश	अनुबंध, समझौता,	सद् मार्ग से विचलन,	ग्यारहवें भाव से नवाँ	- पूर्ववर्ती मित्र और व्यापारिक उपलब्धियाँ
प्रेम, विजय	विदेश से	साहूकार, उधारदाता,	दसवें भाव से दसवाँ	- जीविका में अहर्ता, लड़ाइयों में विजय
	सम्मान प्राप्ति	कर्जदार, काला धन,	नवें भाव से ग्यारहवाँ	- पिता के निजी प्रभाव और उनकी उपलब्धियाँ
		व्यावसायिक साझेदारी	आठवें भाव से बारहवाँ	- चोर की खोज और कारावास

आठवां भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
दबा हुआ धन	नई फसल, भोजन का आनंद	विषैले कीड़े	अंगच्छेद, मलाशय, स्वास्थ्य	शत्रु का किला	गुलाम, मृत सम्बंधी, भाई की शत्रुता	प्रसन्नता, मृत्यु के बारे में चिंता, मानसिक दुविधा, बीमारी से उत्पन्न शोक, चिंताए, पानी से भय	आयु, आलस्य, भाइयों के बीच विवाद, कैंसर, प्राणदण्ड, सिर काटना

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
पाप, भयभीत	पराजय,	बीमा से धनागमन,	सातवें भाव से दूसरा	- दहेज, साझेदारों से आय
करने वाला	झगड़ों की	धन-हानि, सरकारी	छठे भाव से तीसरा	- शत्रुओं के समर्थक
शोक, क्रूर	अनुपस्थिति,	दण्ड, दीर्घ प्रतीक्षित	पांचवे भाव से चौथा	- बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण
कर्म, बेफ्रिक	कर्ज, लड़ाई,	अथवा अनर्जित	चौथे भाव से पाँचवां	- लेखन द्वारा सुख सौभाग्य प्राप्ति, साहित्यिक प्रतिभा
रहना, ऊंचाई	अपयश,	धन, दुर्घटनाएँ,	तीसरे भाव से छठा	- भाई के शत्रु और कर्ज
से गिरना, गुप्त	अशुद्धता,	पानी में मृत्यु,	दूसरे भाव से सातवां	- पत्नी अथवा पति की योग्यता
कार्य, गुफा,	क्रोध, दुर्भाग्य	मृत्यु का तरीका,	बारहवें भाव से नवां	- षडयंत्रकारियों का इतिहास
शोध		कसाई, शल्य-	ग्यारहवें भाव से दसवां	- मित्रों अथवा बड़े भाई का व्यवसाय
		चिकित्सक, मांगल्य	दसवें भाव से ग्यारहवां	- व्यवसाय से उपलब्धियां
			नवें भाव से बारहवां	- पिता का अस्पताल जाना, राजनीतिक कारावास

नवां भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
	औषधियाँ	घोड़े, हाथी, भैंसें	जाँघें	मंदिर, राज्याभिषेक भवन, सभा भवन, दूरस्थ स्थान	पिता, पौत्र, गुरु, आचार्य, मालिक	मन की शुद्धता, सीखने के प्रयास, वैभव	पराक्रम

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
परोपकार, धार्मिक कार्य, ईश्वर/बड़ों के प्रति श्रद्धा और सम्मान, सदाचार, कुलीनता, उदारता, करुणा, वैदिक यज्ञ, धार्मिक स्नान	तपस्या, राज्यशासन, अच्छी कहानियाँ सुनना, शुभता, भाग्य, विधि के मामले, आविष्कार, विज्ञान, विधि, धर्म	तीर्थयात्री, यात्रा अथवा परिवहन, सौभाग्य, समृद्धि, पैतृक संपत्ति, धन का वितरण, विदेश यात्राएँ, अप्रवास अथवा उत्प्रवास	आठवें भाव से दूसरा	- विरासत में प्राप्त उपलब्धियाँ
			सातवें भाव से तीसरा	- साझेदारी/पति/पत्नी के पत्र, छोटी यात्राएँ
			छठे भाव से चौथा	- शत्रुओं की संपत्ति
			पाँचवें भाव से पाँचवाँ	- दादा/बच्चे की अनिश्चित उपलब्धियाँ
			चौथे भाव से छठा	- माँ का स्वास्थ्य/कर्ज/कानून झगड़े
			तीसरे भाव से सातवाँ	- भाई की पत्नी अथवा बहिन का पति
			दूसरे भाव से आठवाँ	- आर्थिक हानि अथवा बाधाएँ
			बारहवें भाव से दसवां	- शत्रुओं के कार्य, षड़यंत्र
			ग्यारहवें भाव से ग्यारहवां	- मित्रों/बड़े भाई की उपलब्धियाँ
			दसवें भाव से बारहवां	- शत्रुओं की चालें और षडयंत्र

दसवाँ भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
	औषधियाँ, कृषि	घोड़ा	घुटना, जोड़, रीढ़ की हड्डी	आकाश, निवास स्थान	माँ, दत्तक पुत्र	आदेश देने की अभिरूचि	समृद्धि, उत्तम रहन-सहन, विलास-वस्तुएँ

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर		
यश, सद्मार्ग,	शासक की ओर	नौकरी, शिक्षण	नवें भाव से दूसरा	-	पिता की आय और परिवार
आत्म संयम,	से सम्मान,	मंत्रोच्चारण,	आठवें भाव से तीसरा	-	मेहनत/कर्म से अड़चनों का अन्त
उत्तम संचालन,	विशेषता,	ईश्वर, व्यवसाय,	सातवें भाव से चौथा	-	पति/पत्नी की माँ, घर
शिक्षण, योग्यता,	स्वामित्व,	शासक,	छठे भाव से पांचवाँ	-	नौकर अथवा किरायेदार के बच्चे
बलिदान,	यश, बुद्धिमानी	वाणिज्य,	पाँचवें भाव से छठा	-	शत्रुओं अथवा बच्चों के शत्रु
प्रभाव,	महत्त्वाकांक्षाएँ,	दूरस्थ स्थान का	चौथे भाव से सातवाँ	-	माँ की सार्वजनिक गतिविधियाँ/न्यास
व्यक्ति की	सफलता, शक्ति,	समाचार, कार्य के	तीसरे भाव से आठवाँ	-	भाइयों और बहनों की संपत्ति अथवा मृत्यु
क्षमताएँ	नैतिकता	लिए योग्यता,	दूसरे भाव से नवाँ	-	परिवार का सामान्य सौभाग्य
		प्रसन्नता, सूखा,	बारहवें भाव से ग्यारहवाँ	-	अशुभ चिंतक के मित्र और समर्थक
		वर्षा, सरकार	ग्यारहवें भाव से बारहवाँ	-	बड़े भाई का व्यय और हानियाँ

ग्यारहवाँ भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
मोती, स्वर्ण, आभूषण, प्रत्येक प्रकार की धन सम्पत्ति, जवाहरात	अनाज, मक्का	मवेशी	टाँगें, बायाँ कान, बायाँ हाथ पैर, दाहिना पैर		बड़ा भाई, चाचा पति/पत्नी का भाई, मित्र, निकट संबंधी, संतान की मृत्यु	बुरी इच्छाएँ, माँ की निर्भरता	अर्जन में प्रवीणता, आयु, अस्वस्थता से मुक्ति

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर
ईश्वर की पूजा/ सात्विक देवता, बुद्धिमानी, सुधार, सदाचार, बुरी इच्छाएँ, दूसरों पर दोषारोपण, इच्छाओं की प्राप्ति	दूसरों पर निर्भरता, मंत्री का पद, चित्रकला में प्रवीणता, उपलब्धियाँ, उद्देश्यों की उपलब्धि, प्रशंसा, संग्रहालय	उपलब्धियाँ, आय के सभी प्रकार, लाभ, भाग्योदय, उत्तम वापसी, पाककला, इच्छाएँ, पैतृक संपत्ति, महत्त्वपूर्ण कागज तथा दस्तावेज, अनेक पत्नियाँ, मूल धन और उधार दी गई राशि पर ब्याज	दसवें भाव से दूसरा - अपने प्रयासों से आय नवें भाव से तीसरा - चाचा, पिता की छोटी यात्राएँ/संदेश आठवें भाव से चौथा - विधि शिक्षा, गुप्त ज्ञान, मानसिक अस्थिरता सातवें भाव से पाँचवाँ - पति/पत्नी के संबंध छठे भाव से छठा - शत्रुओं के शत्रु, उनका कर्ज, बीमारी पाँचवें भाव से सातवाँ - पुत्र का विवाह अथवा पति/पत्नी के पुत्र/पुत्री चौथे भाव से आठवाँ - माँ की विरासत से उप्लब्धियाँ तीसरे भाव से नवाँ - भाई की लम्बी विदेश यात्राएँ दूसरे भाव से दसवाँ - पारिवारिक व्यवसाय, व्यापार/प्रतिष्ठा बारहवें भाव से बारहवाँ - हानियों का अंत और स्वास्थ्य प्राप्ति

बारहवां भाव

धातु	मूल	जीव	शरीर के अंग	स्थान	संबंध	मानसिक स्थिति	शारीरिक स्थिति
		हाथी, घोड़े, मवेशी, चतुष्पाद	पैर, बायीं आंख, विकलांग अथवा अंगच्छेद	शैया, जेल, अस्पताल, विदेशी भूमि, अशुभ घर	शत्रु	अनिद्रा, शत्रुओं से भय, जनता द्वारा घृणा किया जाना, वैवाहिक विघटन, क्रोध, मानसिक अंसतुलन	कारावास, स्वच्छन्द कामुक जीवन, शारीरिक व्याधियाँ, पति अथवा पत्नी की मृत्यु

योग्यताएं	सार-सूची	विविध	दूसरे भावों से संबंध होने पर	
हठ, चतुराई, संन्यासी जीवन, एकांत, भय, व्यस्कता, भयादोहन, गुप्त योजनाएँ ईर्ष्या, द्वेष, षड्यंत्र, विश्वासघात, धूर्तता	विपत्तियों से मुक्ति, स्वर्गारोहण, अधिकार-हानि विवाद, कर्ज से मुक्ति, रूकावटें, शोक, निर्वासन, भय, हीनभावना, भिक्षा प्राप्ति, दरिद्रता, हानियाँ	कर्ज से मुक्ति, पैतृक संपत्ति, अंत, दूरस्थ स्थान पर स्थानांतरण, सभी प्रकार का व्यय, दरिद्रता, हांनियाँ, मठ अथवा विहारों में जीवन, हथकड़ी, शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक	ग्यारहवें भाव से दूसरा	मित्रों से उत्तम भोजन के लिए आमंत्रण
			दसवें भाव से तीसरा	छोटी यात्राएँ/आजीविका से संबंधित प्रयास
			नवें भाव से चौथा	दादी, पैतृक भूमि,
			आठवें भाव से पाँचवाँ	संतान के लिए निवेश, बीमा
			सातवें भाव से छठा	पत्नी की बीमारी
			छठे भाव से सातवाँ	नौकरों/किरायेदारों के साथ विवाद, कर्ज चुकाना
			पाँचवें भाव से आठवाँ	बच्चों का अपहरण अथवा मृत्यु
			चौथे भाव से नवाँ	विदेशी निवास-स्थान
			तीसरे भाव से दसवाँ	भाई की जीविका अथवा व्यवसाय
			दूसरे भाव से ग्यारहवाँ	पारिवारिक व्यापार में उपलब्धि, मित्रों के संबंधी

राजतन्त्रों तथा लोकतंत्रों के लिए भावों के कारकत्व

12 भावों के कारकत्वों के संबंध में पिछले पृष्ठों में अत्यंत विस्तार से विवेचन किया गया है। उन्हें व्यावहारिकता और आसान संदर्भ के लिए विभिन्न शीर्षकों में समूह बद्ध करने का प्रयास किया गया है। सन् 1649 में केरल के नम्बूदरी ब्राह्मण द्वारा लिखित मूल प्रश्न मार्ग के छंद, भावों के कुछ विशिष्ट कारकत्वों को निर्देशित करते हैं। ये उस अवधि के संदर्भ में देखे जा सकते हैं जब ये लिखे गए थे अथवा तार्किक रूप से उस अवधि के संदर्भ में, जब इनका निरीक्षण, परीक्षण, शोधन, तुलना और प्रयोग किया गया था। राज-ज्योतिषी अपने सभी कार्यों को राजा और राजतंत्र तक सीमित रखता था। ये यहाँ वर्तमान संदर्भ में दिए गए हैं जिसमें ये कारकत्व प्रभावी ढंग से देशों, राजनीति, सांसारिक संबंधों आदि के प्रश्नों में उपयोग में लाए जा सकते हैं।

भाव संख्या	*प्राचीन संदर्भ (राज्यतंत्र)*	*वर्तमान संदर्भ (लोकतंत्र)*
1.	राजा अथवा शासक, उसकी शारीरिक स्थिति, रहन सहन	राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री
2.	समृद्धि, कोषागार, राज की वित्त व्यवस्था	देश की वित्त-व्यवस्था, बैंकिग
3.	सेना, राज्य के योद्धा, सेनाध्यक्ष	सैन्य बल, आधुनिक शस्त्र, देश की रक्षा, संचार
4.	भूमियाँ, वाहन	सरकार का स्थान, कृषि उत्पादन, भूमियाँ
5.	कूटनीति, शिक्षा-तंत्र	कूटनीति, साक्षरता का लक्ष्य, शिक्षा और उसकी तकनीकी प्रगति
6.	शत्रु	हिंसा, देश का ऋण (वाह्य ऋण और आंतरिक उधार)
7.	संचार*	नागरिक और सामाजिक अशांति
8.	आयु	शासन और सरकार की जीवन अवधि, भूमिगत समृद्धि, बीमा क्षेत्र
9.	राजा का मन	राष्ट्र का धार्मिक और नैतिक ढाँचा, न्यायपालिका, शासक/शासकों का मन और कार्य
10.	व्यापार और वाणिज्य	रोजगार, व्यापार, नौकरियाँ
11.	आय	आय एवं लाभ
12.	व्यय	विदेश नीति और विदेश संबंध, राजस्व और व्यय

*प्राचीन समय में 7वां भाव संचार को संकेतित करने वाला माना जाता था, क्योंकि वह केवल यात्रा को प्रकट करता था। लेकिन अब संचार का अत्यधिक विकसित और तकनीकी क्षेत्र तीसरे भाव से परिणाम देता प्रतीत होता है।

वाराहमिहिर ने बृहतजातक में भावों के आंतरिक और बाह्य कारकत्व स्पष्ट किए है तथा डा० बी.वी. रमण ने इस वर्गीकरण को अत्यंत सुंदर ढंग से परीक्षित किया है। उनके अनुसार, आंतरिक कारकत्व निराकार हैं और उन चीजों से संबंधित हैं जो वास्तविक नहीं हैं, जैसे गुण आदि। जबकि बाह्य कारकत्व भौतिक अस्तित्व, व्यक्तियों अथवा प्राणियों को बताते हैं। उदाहरणार्थ, तीसरे भाव के आंतरिक कारकत्व साहस और पराक्रम हैं जबकि इसके बाह्य कारकत्व का अर्थ सहोदर आदि होगा। किसी प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में, यदि भावाधिपति अनुकूल रूप से सुव्यवस्थित है अथवा यह अपने भाव पर दृष्टि डालता है, तब यह आंतरिक कारकत्वों को बताता है जो निराकार हैं अन्यथा यह बाह्य कारकत्वों अथवा भौतिक अस्तित्व को बताता है। तथापि यह क्षेत्र सावधानीपूर्वक मनन् और शोध की अपेक्षा रखता है।

2
प्रश्न का परिचय

प्रश्न ही क्यों ?

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों के असफल होने का सबसे बड़ा कारण निस्संदेह एक शुद्ध जन्म कुंडली का उपलब्ध न होना है। प्रारंभिक समय में या तो घड़ियाँ उपलब्ध नहीं थी अथवा जब उपलब्ध थीं तो कुछ लोग ठीक जन्म समय लिखने का कष्ट नहीं उठाते थे। अधिकतर बच्चों का जन्म घर पर होता था और चिकित्सक अथवा दाई, जन्म समय लिखने की अपेक्षा प्रत्यक्षतः बच्चे और माँ के जीवन को बचाने में व्यस्त रहते थे। अपने अन्य कार्यों से मुक्त होने के बाद वे अनुमानतः 10 या 15 मिनट अथवा उससे पहले का समय लिखते थे। इसके अतिरिक्त जन्म समय के सम्बंध में भी विभिन्न दृष्टिकोण हैं जिसमें प्रथम बार रोने का समय, सिर के प्रथम प्रकटन का समय, नाल काटने का समय, अथवा भू-स्पर्श - जमीन से शरीर का प्रथम स्पर्श शामिल है। उपर्युक्त सभी कारण हमें एक ऐसी स्थिति में ले जाते हैं जहाँ जन्म समय की विशुद्धता विवादास्पद रहती है। वर्तमान समय में अस्पतालों में होने वाले जन्म भी इसी प्रकार की कहानी बताते हैं।

कुछ मामलों में, उपलब्ध जन्म-विवरण के सम्बंध में दिन, मास अथवा यहाँ तक कि जन्म के वर्ष को लेकर पूरा भ्रम होता है। हम अक्सर परिवार में बुजुर्गों द्वारा याद की गई बातें सुनते हैं कि उस दिन बहुत गर्मी थी और वर्षा का मौसम शुरू होने वाला था अथवा चंद्रमा आधा या पूरा अथवा उसके आसपास था। यह पुनः हमें अधिकतर जन्म कुंडलियों के अनुमान पर आधारित होना बताता है। एक बालिका के विवाह के साथ अनेक सामाजिक कुरीतियां जुड़ी होती हैं जैसे, दहेज और बेईमान ज्योतिषयों की भूमिका, जो केवल मुद्रा प्राप्त करने के लिए लड़कियों की कुंडलियों में मिलान के दौरान त्रुटियां ढूंढते हैं और शादी की पूर्ण सफलता के लिए महँगी पूजाओं और ग्रहों के प्रायश्चित की सलाह देते हैं। इन तथ्यों के परिणाम स्वरूप प्राचीन समय में अधिकांश परिवारों ने लड़की के जन्म विवरणों को लिखना बंद कर दिया

जिससे ज्योतिष के ज्ञान में स्वतः अंतराल आ गया, क्योंकि कुंडलियाँ उपलब्ध नहीं थीं।

ऐसे मामलों में जहां जन्म समय उपलब्ध है। उपरोक्त कारणों से उसके ठीक होने का आश्वासन नहीं दिया जा सकता। जन्म समय को परिशुद्ध करने की प्रचलित विधियां न तो प्रभावी है और न लोकप्रिय। इन सबसे ऊपर हमारे पास ऐसे मामले है जहां जन्म-विवरण पूरी तरह ज्ञात ही नहीं है। क्या ऐसे सब व्यक्तियों को ज्योतिष के लाभ से वंचित रहना पड़ेगा। कुछ अनिवार्य अथवा आपात् स्थितियों में जब या तो जन्म कुंडली बनाने का समय नहीं होता अथवा समयाभाव के कारण उसे शुद्ध करना संभव नहीं होता तब ऐसे सब मामलों में प्रश्न कुंडली विस्मयकारी उचित परिणाम देती हैं। इसलिए यह पुस्तक ज्योतिष के उस आश्चर्यजनक क्षेत्र से संबंधित है जिसे सामान्यतया प्रश्न अथवा 'होरेरी ज्योतिष' के नाम से जाना जाता है।

ज्योतिष और प्रश्न

ज्योतिष वेदांग के छह अंगों में से एक है। ये हैं - शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद व्याकरण और ज्योतिष। ज्योतिष को फिर गणित, संहिता और होरा नामक तीन स्कंधों में विभक्त किया गया है। प्रथम स्कंध, गणित खगोल विज्ञान और गणितीय ज्योतिष से संबंधित है। इन्हें विभिन्न सिद्धांतों में संकलित किया गया जो प्राचीन समय में अट्ठारह सिद्धान्तों के रूप में प्रचलित थे। द्वितीय स्कंध, संहिता, प्राकृतिक तथ्य, जैसे भूकम्प, मौसम, अकाल, महामारी आदि से संबंधित है। तृतीय स्कंध, होरा अथवा जातक, जन्मकालीन फलित ज्योतिष से संबंधित है।

कालांतर में इस क्षेत्र में हुई प्रगति ने ज्योतिष को प्रांरभिक तीन स्कंधों के स्थान पर छह स्कंधों में वर्गीकृत कर दिया। ये थे गणित, संहिता, होरा, शकुन, मुहूर्त्त और प्रश्न। चतुर्थ स्कंध, शकुन या पूर्वाभास, भविष्य में घटने वाली घटनाओं अथवा तथ्यों के प्रभावों से संबंधित है। पंचम स्कंध, मुहूर्त्त, नक्षत्र, तिथि, वार आदि पर आधारित किसी कार्य से संबंधित अनुकूल समय ढूँढने से जुड़ा है और ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के साथ-साथ गोचर स्थिति से भी संबंधित है। षष्ठ स्कंध प्रश्न, घटना या विचार के समय का कुंडली निर्माण और इस पुस्तक की विषय वस्तु से संबंधित है। कोई भी स्कंध परस्पर भिन्न नहीं हो सकता। ज्योतिष उपर्युक्त सभी अंगों अथवा स्कंधों का पूर्ण सम्मिश्रण है।

जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली

जन्म कुंडली का महत्त्व कम नही आंका जा सकता। जब कोई घटना जन्मकुंडली में प्रत्याक्षित हो और प्रश्न कुंडली में उसकी पुनरावृत्ति होती

हो तो उसका घटित होना निश्चित है। इसका विपरीत सत्य नहीं हो सकता। जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली का अंतःसंबंध पिछले और वर्तमान कर्मों की स्थिति सूचित करता है। जन्म कुंडली जन्म के समय पर आकाश का मानचित्र है और इस जीवन के प्रारब्ध अथवा संचित कर्मों को भोगने की अनुमति देता है। जन्म कुंडली पर शुभ प्रभाव पिछले जन्म के अच्छे कर्मों की ओर संकेत करता है जबकि अशुभ प्रभाव बुरे कर्मों को बताता है। यह दृष्टिकोण कर्म और दुष्टात्माएँ वाले अध्याय में विस्तार से व्याख्यायित किया गया है।

जन्म कुंडली में एक अच्छी दशा और प्रश्न कुंडली में एक बुरा समय वर्तमान जीवन में प्रबल अशुभ कर्मों को दिखाता है। जन्म कुंडली में एक अशुभ दशा और प्रश्न कुडंली में अच्छा समय पुनः प्रबल होने वाले वर्तमान शुभ कर्मों को सूचित करता हैं। दोनों कुण्डलियों में शुभ अथवा अशुभ समय पिछले जन्म के अच्छे या बुरे दृढ़ कर्मों में संबंध बताएगा।

इसी प्रकार वर्ग कुंडलियों के विश्लेषण में, एक प्रासंगिक वर्ग कुंडली जन्म कुंडली के अध्ययन में केवल सहायक हो सकती है परन्तु उसकी जगह कभी नहीं ले सकती। जन्म कुंडली में किसी आश्वासन की अनुपस्थिति और वर्ग कुंडली में उपस्थिति फल नहीं दे सकती। ऐसा इसलिए कि महर्षि पराशर द्वारा विभिन्न वर्गों के 20 विंशोपक बल में से जन्म कुंडली को सर्वाधिक बिंदुओं का बल प्रदान किया गया है जबकि उसकी तुलना में अन्य वर्गों की कुंडलियों का बल बहुत कम है। इसी प्रकार प्रश्न कुंडली भी जन्म कुंडली की सहायक हो सकती है। यद्यपि फलित में असंख्य ऐसे क्षेत्र हैं जिनका उत्तर केवल प्रश्न द्वारा सर्वोत्तम रूप से दिया जा सकता है।

अतः जब जन्मकुंडली उपलब्ध है तो प्रश्न कुंडली के अतिरिक्त जन्मकुंडली को भी विवेकपूर्ण ढंग से देखें। ऐसे मामलों में जहाँ जन्मकुंडली उपलब्ध नहीं है तब प्रश्न कुंडली न केवल वर्तमान प्रश्न का उत्तर देती है बल्कि उसे विस्मयकारी उचित परिणाम प्राप्त करने के लिए जन्म कुंडली की तरह भी पढ़ा जा सकता है।

प्रश्न कुंडली का विशिष्ट उपयोग

जहाँ ठीक जन्म कुंडली उपलब्ध है वहाँ भी प्रश्नकर्त्ता की चिंताओं, आकस्मिक भविष्य को जानने अथवा आकस्मिक समस्याओं का समाधान करने जैसे अनेक पहलू हैं जिन्हें केवल प्रश्न कुंडली द्वारा ही हल किया जा सकता है। अतः प्रश्न कुंडली की भूमिका एक अच्छे सहायक की हो सकता है। उदाहरणार्थ, चोरी के मामले में, चोरी हुई संपत्ति की पुनः प्राप्ति, चोर की आकृति आदि। लापता व्यक्ति के मामले में, कि वह जीवित है या मर गया,

उसकी ठीक-ठीक वर्तमान शारीरिक स्थिति, बंदी स्थिति में है या नहीं, उसके छूटने की आशाएँ। बीमारी के मामले में क्या, पुनः ठीक होने की संभावना है, क्या दवा ठीक है ? क्या उपचार ठीक हैं? शादी के मामले में क्या व्यक्ति अपनी पसंद की लड़की प्राप्त करेगा : शादी की अनुकूलता और संभावना। संतान के मामले में, क्या स्त्री गर्भवती है ? बच्चे का लिंग क्या होगा ? इन जैसे असंख्य प्रश्नों में आश्चर्यजनक उचित परिणाम देने में केवल प्रश्न कुंडली पर ही विश्वास किया जा सकता है। ज्योतिष के इस क्षेत्र का महत्त्व इस बात से मापा जा सकता है कि कोई भी ज्योतिषी अपने आपको प्रश्न में गहराई से पैठ किए बिना फलित करने में सफल नही हो सकता। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार ब्राह्मण के रचयिता भगवान ब्रह्मा पालक विष्णु के पास पहुँचे और आकस्मिक भविष्य से संबध रखने वाली चिंताओं के समाधान हेतु प्रश्न सीखने की अपनी इच्छा व्यक्त की। इस प्रश्नशास्त्र की उत्पत्ति इतनी प्राचीन है।

प्रश्न का आधार

जन्म कुंडली बच्चे के जन्म के समय के लिए निर्मित की जाती है। उसी प्रकार प्रश्न कुंडली भी उसी समय के लिए निर्मित की जाती है जब प्रश्नकर्त्ता अपने भविष्य को जानने के लिए ज्योतिषी के पास आता है और जब व्यक्ति के मन में अनेक अंतर्द्वन्द्व हो सकते हैं जिनके विषय में ज्योतिषी को सावधानी से विश्लेषण करने की आवश्यकता है। इन निर्णयों को लेने में यद्यपि मनुष्य अत्यधिक योग्य होने पर भी बड़ी कठिनाई अनुभव करता है और इसीलिए वह सलाह और परामर्श के लिए ज्योतिषी के पास जाने के लिए लालायित रहता है।

ज्योतिष का प्रमुख प्रयोजन भविष्य सुनियोजन के लिए सही दिशा में सलाह देना और यथा शक्ति प्रयत्नों के लिए मार्ग बतलाना है तथा परामर्श, शक्तियों अथवा प्रयासों का माध्यम बनना है। हम अपने चारों ओर बहुत सी विषमताएं देखते हैं। बहुत से व्यक्ति हैं जो अपने प्रयासों को एक दिशा में कार्यरत रखते हैं, लेकिन सफल न होने पर अपना मार्ग बदलने पर विवश हो जाते हैं। अगर उन्हें पहले ही ज्योतिषीय परामर्श मिल जाता तो उनके जीवन का स्वरूप भिन्न ही होता।

अतः यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या एक व्यक्ति अपना भाग्य बदल सकता है। हाँ, उचित क्रिया, प्रयास अथवा कर्मों से। भाग्य कभी भी निर्धारित नहीं है। हमारे वर्तमान कर्म हमारे भाग्य को अदृढ़ कर्म फल की सीमा में बदल सकते हैं।

प्रश्न की क्षेत्र व्याप्ति और सीमाएं

प्रश्न कुंडली की व्याप्ति निकटस्थ भूत अथवा भविष्य से संबंधित घटनाओं तक विस्तृत है और अधिकतम एक वर्ष तक इसे विस्तार दिया जा सकता है। इसी प्रकार अन्य अनेक सीमाएँ हैं, जैसे लग्न का निर्धारण जिसके संबंध में आगे के पृष्ठों में विस्तृत वर्णन किया गया है।

एक ज्योतिषी की विशेषताएँ

वराहमिहिर ने बृहत् संहिता में एक ज्योतिषी की विशेषताएँ दी हैं जिसमें दूसरी चीजों के साथ गणितीय और फलित ज्योतिष का गहरा ज्ञान, एक धार्मिक और सदाचारी मनोवृत्ति, सत्यवादी, विनीत, अनुशासित, अति संयमी और ईश्वर में विश्वास रखना शामिल है। महर्षि व्यास ने महाभारत में कहा है कि प्रत्येक आदमी एक शूद्र के रूप में जन्म लेता है। यह उसके कर्म ही हैं जो उसे एक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र बनाते है। यहाँ तक कि हमारे हिन्दू समाज में ज्योतिष अथवा धार्मिक ग्रंथों का अपरिमित ज्ञान रखने वाले म्लेच्छों अथवा यवनों को ब्राह्मणों की तरह उच्च सम्मान दिया गया है। यदि कोई ब्राह्मण के रूप में जन्म ले और उपरोक्त वर्णित विशेषताओं को रखे तो एक ज्योतिषी के रूप में जनता में उसका सम्मान और प्रभुत्व सुनिश्चित है।

उपरोक्त वर्णित विशेषताओं में अति संयम, विनम्रता और ईश्वर में विश्वास शामिल है। ईश्वर में विश्वास एक ज्योतिषी को ईश्वरीय कृपा दृष्टि प्रदान करता है। कुंडली में बृहस्पति की दूसरे भाव में अथवा द्वितीयेश से युति या दृष्टि किसी ज्योतिषी के लिए ईश्वर का उपहार है। दूसरा स्थान वाक्स्थान या वाणी का घर है। बृहस्पति की युति या दृष्टि द्वारा प्राप्त वाक्सिद्धि और दैवीय कृपा के बिना कोई भी ज्योतिषी उचित फलित नहीं कर सकता भले ही वह ज्योतिष में पूर्णतः प्रवीण हो।

एक ज्योतिषी को किसी को धोखा देने का इरादा रखे बिना रहन-सहन और सोच-विचार में आडम्बरहीनता का अनुयायी होना चाहिए और वेद, मंत्र और तंत्र में निष्णात होना चाहिए। प्रश्न का संपूर्ण संचालन और उसका परिणाम ईश्वरीय कृपा पर निर्भर करता है, जो एक ज्योतिषी को ईश्वर का एक उपहार है। इसके लिए उसे अवश्य ईश्वर में प्रचुर विश्वास रखना चाहिए और एक धार्मिक जीवन का अनुगमन करना चाहिए। इस प्रकार के एक ज्योतिषी का कोई भी कहा गया शब्द असत्य नहीं हो सकता। एक ज्योतिषी के लिए वर्णित विशेषताओं का मूल भाव समर्पण और विनम्रता है।

कुछ आधुनिक ज्योतिषियों में आत्मप्रशंसा की प्रवृत्ति है जबकि परम्परागत ज्योतिष का ज्ञान नाम ख्याति की इच्छा की भावना के बिना और विनम्रता के माध्यम से विकसित हुआ। इस सन्दर्भ में दशाध्यायी पर लिखी गई 'नौका' अथवा 'प्रश्नमार्ग' या 'कृष्णीयम' को लिया जा सकता है। इन विख्यात कार्यों के यशस्वी लेखकों ने अपने नामों को छिपाए रखना उचित समझा। उन्होंने अपना संपूर्ण कार्य ईश्वर को समर्पित किया। हमारे प्राचीन विद्वानों में अपने लेखन को अपने गुरु, देवता अथवा सर्वोच्च प्रभु को समर्पित करने और रचना में त्रुटियों और संदेहों के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानने की यह परंपरा रही है। विनम्रता का ऐसा स्तर ईश्वरीय ज्ञान के साथ हमें अपने पूर्वजों से मिला। ईश्वर की इच्छा के बिना एक ज्योतिषी अपने फलित में प्राप्ति का क्या दावा कर सकता है। यह ज्योतिष में गुरु-शिष्य परंपरा और हमारे शास्त्रीय ज्ञान का सार है।

हमें ज्योतिष शास्त्रियों के विनम्रता के इस दर्शन को न केवल जीवन में ग्रहण करना है बल्कि दूसरों को अनुसरण करने के लिए प्रेरित करना है।

एक ज्योतिषी से कैसे परामर्श करें

एक प्रश्नकर्त्ता को चितांओं के निवारण के लिए प्रश्न पूछने की प्रबल इच्छा होती है, जो उस समय उस को परेशान कर रही हैं। वह अवश्य एक अनुकूल तिथि, नक्षत्र आदि चुने और अपने ईश्वर, इष्ट देवता अथवा स्थान देवता को प्रणाम करने के बाद प्रातःकाल ज्योतिषी के पास जाए। यह अनिवार्य नहीं है कि वर्तमान समय में प्रश्नकर्त्ता अनुकूल तिथि, नक्षत्र आदि के बारे में जागरूक हो। एक अशुभ समय भी प्रश्न का परिणाम बताएगा। अतः आधुनिक सन्दर्भ में प्रश्नकर्त्ता को ज्योतिषी का परीक्षण करने अथवा उपहास उड़ाने की किसी धारणा से मुक्त होकर सच्चाई और ईमानदारी के साथ ज्योतिषी के पास जाना चाहिए। एक प्रश्नकर्त्ता को ज्योतिषी के पास उसे अर्पित करने के लिए कुछ फलों और फूलों को लेकर अधिमानतः प्रातःकाल में जाना चाहिए। पूर्व दिशा में खड़े होकर तथा ज्योतिषी के सम्मुख होकर करबद्ध हाथों से ईश्वर की प्रार्थना करके एक प्रश्न पूछें, जो उस समय उसकी प्रमुख चिंता है।

एक ज्योतिषी को फल-फूल अर्पण करने का उद्देश्य उसे अवश्य ज्ञात होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि एक प्रश्नकर्त्ता को एक ज्योतिषी के पास रिक्त हाथ नहीं जाना चाहिए। किसी एक व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी कार्य क्रियामान कर्म का अंग है जो संचित के रूप में प्राप्त होता है और

प्रारब्ध के रूप में व्यक्त होता है। यदि एक ज्योतिषी अपने प्रयासों द्वारा कोई कर्म कर रहा है तो उसके ऋण का बोझ प्रश्नकर्त्ता को अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए और इसलिए कुछ भी भेंट - फलों अथवा फूलों के रूप में अवश्य देनी चाहिए। इस संदर्भ में, यह भी कहा जाता है कि जो व्यक्ति एक ज्योतिषी के पास खाली हाथ जाता है, वहाँ से खाली हाथ ही लौटता है।

झूठा या सच्चा प्रश्न

ज्योतिषी द्वारा ऐसे प्रश्नकर्त्ता का स्वागत नहीं किया जाना चाहिए जो अपने प्रस्ताव में गंभीर नहीं है अथवा अपनी समस्याओं का निवारण करने के लिए भविष्य जानने की उत्कट इच्छा नहीं रखता हो। प्रश्न कुंडली में कपट दिखाई देने के कुछ योग निम्नांकित हैं :

1. जब चंद्रमा लग्न में हो, शनि केंद्र में हो और बुध अस्त हो।
2. लग्न में चंद्रमा, बुध और मंगल से दृष्ट हो।
3. सप्तमेश बिना किसी शुभ युति के, बृहस्पति, बुध अथवा सप्तमेश के शत्रु ग्रह से दृष्ट हो।

ये योग एक झूठ प्रश्न को बताते है। यहाँ एक व्यक्ति प्रश्न भी कर सकता है कि क्या उसका प्रश्न निष्कपट है या नहीं। ऐसे मामलों में लग्न में एक शुभ ग्रह एक वास्तविक प्रश्न को सूचित करता है और लग्न में एक अशुभ ग्रह बताता है कि व्यक्ति गंभीर नहीं है। यदि लग्न अथवा सप्तम भाव चंद्रमा, बृहस्पति और बुध से दृष्ट हों तो भी प्रश्न कर्त्ता की ईमानदारी दिखाई देती है। सामान्यतया निष्कपट प्रश्नों में प्रश्न का लग्न या चंद्रमा जन्म कुंडली के लग्न या चन्द्रमा से मेल खायेगा। ऐसे में कभी-कभी प्रश्न का उदय लग्न ही आरूढ़ या छत्र लग्न हो जाता है।

एक ज्योतिषी को तब क्या करना चाहिए जब कोई बेईमान व्यक्ति उसका परीक्षण करने अथवा ज्योतिष का उपहास उड़ाने के लिए उसके पास आए। यदि कोई बिना आदर, अपमान जनक भाषा में यों ही प्रश्न पूछता है तब उसे कोई उत्तर न देकर उससे किसी अन्य समय आने के लिए कहिए।

प्रश्न का संचालन

प्रश्न का वास्तविक संचालन एक बहुत ही धार्मिक क्रिया है और इसके अनुकूल तथा पवित्र निष्पादन के लिए ज्योतिषियों को हमारी शास्त्रीय पुस्तकों में निर्धारित ईश्वरीय प्रक्रिया का अनुगमन करना चाहिए। प्रातः नौ ग्रहों की स्तुति करके सर्वशक्तिमान को प्रणाम, समर्पण के बाद पूर्वाभिमुख होकर

एक तेल के दीपक में अग्नि प्रदीप्त करके प्रश्नकर्त्ता के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

अग्नि अथवा लौ हिन्दू धर्म और विश्वास से संबंधित अनेक पवित्र षोडश कर्मों में अति प्राचीन समय से प्रमुख मानी गई है। वैदिक अनुष्ठानों में अग्नि उपासना का माध्यम है और सर्वशक्तिमान तक हमारी भेंटों और प्रार्थनाओं को ले जाने अथवा पहुँचाने का साधन मानी जाती है।

प्रश्न के संचालन के समय दीपक का उपयोग ईश्वर का एक प्रतीकार्थ है और भविष्य को सूचित करता है। जिस पात्र में दीपक का तेल है, वह प्रश्नकर्त्ता का घर संकेतित करता है, तेल शरीर को, बत्ती आत्मा को बताती है और लौ आयु को बताती है। लौ का चमकीलापन अथवा एकरूपता अच्छे भविष्य और खुशहाली को बताती है जबकि टिमाटिमाती और धीमी लौ बीमारी और विपत्ति बताती है। एक बराबर प्रवाहित द्युतिमान, शांत, स्थिर, सीधी और रमणीय रंग रखने वाली लौ प्रश्नकर्त्ता की समृद्धि को सूचित करती है। दूसरी ओर द्युतिहीन, टिमटिमाती और दो विभिन्न भागों में विभाजित होती हुई लौ प्रतिकूल और हानिकर परिणामों को बताती है। इसी प्रकार, यदि पर्याप्त तेल के होते हुए लौ अकस्मात बुझ जाए अथवा लौ बार-बार कोशिश करने पर भी न जले तो आयु के संबंध में अशुभ सूचित करती है। तेल में मक्खियों का होना शरीर में कीड़े बताता है। अगर दो बत्तियाँ एक साथ बंधी हो तब वहाँ श्वसन समस्याएँ हैं। अगर किसी बत्ती की गंदी अथवा दूसरी अशुद्ध वस्तुओं, जैसे बाल के साथ मिलावट हो तो ये बताती है कि व्यक्ति अपने बुरे कर्मों अथवा आत्माओं से पीड़ित है। एक दीपक का तेल उसके किनारों से टपक रहा हो अथवा छलक रहा हो तो जल स्त्रोत से संबंधित प्रश्नों में प्रचुर जल होने को सूचित करता है। हवा के स्वाभाविक प्रभाव की दिशा की ओर लौ का झुकाव और बत्ती की स्थिति भी बहुत कुछ दर्शाती है। सामान्यतः दक्षिण, दक्षिण-पूर्व अथवा दक्षिण-पश्चिम दिशाओं की ओर लौ का होना अशुभ है :

घड़ी की विपरीत दिशा मे गतिशील	विपत्तियाँ
दक्षिण पूर्व की ओर लौ	आग से दुर्घटना
दक्षिण की ओर लौ	मृत्यु
दक्षिण पश्चिम की ओर लौ	मानसिक बीमारी अथवा उन्माद

प्रांरभिक समय में ज्योतिषी परामर्श और मंत्रणाएँ खुले में अथवा एक वृक्ष के नीचे बैठ कर किया करते थे, जहाँ हवा लौ को शांत अथवा तीव्र

रूप में प्रतिक्रया हेतु निर्मित करती थी और उसके द्वारा क्रमशः निर्विघ्न/शांत अथवा अनिश्चित भविष्य को सूचित किया जाता था। जबकि वर्तमान समय में ज्योतिषी कमरों की बंद दीवारों में मंत्रणा करते हैं जहाँ न तो हवा और न ही प्राकृतिक शकुन ज्योतिषी को कुंडली पढ़ने में सहायक होते है। प्रारंभिक दिनों में यदि प्रश्नकर्त्ता अपना दीपक लाता था तो दीपक अथवा पात्र का आकार और विशेषता उसके घर का आकार और विशेषता बताता था। यदि वह अपना दीपक हिलाता था, तब उसकी गतिविधि अथवा घर के परिवर्तन की भविष्यवाणी की जाती थी। लेकिन अब कोई प्रश्नकर्त्ता दीपक नहीं लाता और इसीलिए ये संकेत हालांकि प्राचीन समय में असीम मूल्य रखते थे अब इन्होंने अपना महत्त्व खो दिया है।

वर्तमान समय में इन परम्परागत तकनीकों में कुछ सुधारों की आवश्यकता है जो विविध विधियों के अध्याय में शकुनों के सन्दर्भ में दिये गये है। इस तथ्य के बावजूद कि इन दिनों विद्युत रोशनियां उपयोग की जाती हैं दीपक और लौ के महत्त्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती। फिर भी, प्रश्न के संचालन के समय ज्योतिषी के आगे रखा एक जलता हुआ दीपक उसे ईश्वरीय कृपा से संयुक्त करता है। यह देखा गया है कि विद्युत में घटाव-बढ़ाव बाधाओं को सूचित करता है। इसी प्रकार, यदि अकस्मात बिजली चली जाए तो प्रश्न के इच्छित परिणामों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। कुछ स्थान हैं जहाँ पर बिजली घटती-बढ़ती अथवा फेल नहीं होती और इसलिए बिजली का यह उदाहरण केवल दिखाता है कि प्रश्न के संचालन के दौरान कोई अप्राकृतिक घटना घटित हो रही है या नहीं, जैसे, निमित्त अथवा शकुन। अतः निश्चित संदर्भों में अधिक उदारवादी दृष्टिकोण से प्राचीन शास्त्रीय पुस्तकों के शाब्दिक अर्थ को बदलना होगा और तदनुसार परिणामों की व्याख्या करनी होगी।

स्वयं से प्रश्न

इस पर अक्सर विवाद किया जाता है कि एक ज्योतिषी को अपने प्रश्न का विश्लेषण करना चाहिए अथवा नहीं। जब भी कोई प्रतिकूल योग जैसे, तिथि, नक्षत्र आदि चल रहा हो, तो ज्योतिषी अपने प्रश्न को स्थगित करने में लालायित रहता है, इससे बचना चाहिए। अतः यदि सच्चाई और ईमानदारी से स्वयं से प्रश्न किया जाए तो वह निश्चित रूप से उपयोगी होता है।

लग्न और आरूढ़ का महत्त्व

किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली उस जन्म तिथि समय और स्थान पर आकाश का मानचित्र है। बिल्कुल इसी तरह यह विचार, प्रक्रिया अथवा भावना का

जन्म है जिसमें प्रश्न पूछा जाता है, जो प्रश्न का परिणाम बताता है। जन्म कुंडली का क्षेत्र व्यक्ति की संपूर्ण जिंदगी तक विस्तृत है। यद्यपि, महर्षि पाराशर ने व्यंजित किया है कि एक व्यक्ति की वर्तमान जिंदगी से पूर्व और मृत्यु पश्चात का जीवन भी जन्म कुंडली से देखा जा सकता है। लेकिन किसी सबूत और इस संबंध में शोध की संभावना की अनुपस्थिति में ये संकेत अधिकांशतः उपेक्षित हुए हैं। अतः प्रश्न कुंडली का क्षेत्र व्यक्ति के आकस्मिक भूत और आकस्मिक भविष्य तक ही सीमित है। प्रश्न पूछते समय जिस प्रश्न कुंडली के विश्लेषण और फलित के संदर्भ में विश्लेषण किया जा रहा है वह सामान्यतः एक वर्ष तक के लिए लिया जा सकता है।

जन्म कुंडली में उदित राशि सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों ओर एक कुंडली का संपूर्ण स्वरूप बुना जाता है। इसी प्रकार प्रश्न में भी उदित राशि या उदय लग्न महत्त्वपूर्ण है। उदय लग्न को आगे चलकर हम लग्न ही कहेंगे। जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली दोनों में लग्न व्यक्ति का शरीर है जबकि चंद्रमा का स्थापन उसका मन है जो उसकी इच्छाओं का झुकाव प्रदर्शित करता है।

प्राचीन समय में, ज्योतिषी प्रायः ऋषि अथवा संत थे जो पूर्णतया ज्योतिष को पढ़ने, व्याख्याओं, सार और शोध में समर्पित थे। कोई भी टीका-टिप्पणी एक ऐसे अनुमान की ओर ले जाती है जिसे जब हजारों कुंडलियों पर प्रयुक्त किया जाए तो प्रत्युत्तर, परिणाम देना शुरू कर देते हैं और तब ये अनुमान सिद्धांतों में बदल जाते हैं। किसी योजना के लिए ज्ञान अथवा उपलब्धि का विवेक तीन चरणों का अनुसरण करता है। ये हैं अध्ययन, चिंतन और मनन। यदि कोई ज्योतिषी निपुणता के स्तर तक पहुंचना चाहे तब उसे चिंतन और मनन की ओर ले जाने वाले चरणों का अनुसरण करना पड़ता है। केवल तभी ज्योतिषी में दैवीय शक्ति प्रकट होती है।

प्राचीनकाल के ऋषि सांसारिक अथवा पारिवारिक बंधनों में बंधे व्यक्ति नहीं थे और न हमारे आधुनिक ज्योतिषियों की भांति इच्छाएँ रखते थे। वे दिन अथवा रात का अपना सारा समय परामर्शों के लिए समर्पित करते थे। राजघरानों में राजा किसी भी समय पर राज-ज्योतिषी को बुला सकता था और प्रश्न पूछ सकता था जो किसी विशेष क्षण में उसके मस्तिष्क को सता रहा था। इन सब अवसरों पर उदय लग्न, जन्म लग्न की भांति ज्ञान का भंडार दर्शाता है तथा भविष्य का रहस्योद्घाटन करता है।

अब हम आधुनिक युग के ज्योतिषियों की स्थिति पर आते हैं जो अपनी सब इच्छाओं और असफलताओं से जुड़े पारिवारिक व्यक्ति हैं। ये ज्योतिषी किसी नौकरी, व्यवसाय अथवा व्यापार में रत हैं और इसीलिए उनके पास

ज्योतिष की गंभीर खोजों और परामर्शों को समर्पण करने के लिए बिल्कुल समय नहीं है। अधिक से अधिक वे मुश्किल से संध्या में कुछ घंटे समर्पित कर पाते हैं जबकि उदय लग्न उन दो घंटों में लगभग एक महीने तक वही रहता है। क्या हमारे कहने का अर्थ यह है कि उन सभी व्यक्तियों के लिए परिणाम समान होगा, जो पूरे एक महीने ज्योतिषी के पास जाते हैं। इन सभी मामलों मे आरूढ़ लग्न अनिवार्य है।

प्रारंभिक समय में दो लग्नों, उदय और आरूढ़ का परिकलन किया जाता था। आरूढ़ उदित लग्न से अलग एक लग्न है जो अनेक विधियों से निर्धारित किया जाता है। जैमिनी ज्योतिष में लग्न और लग्नाधिपति के बीच की दूरी की जब आगे लग्नेश की स्थिति से गणना की जाती है तब लग्न आरूढ़ प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, यदि लग्नाधिपति तीसरे भाव में बैठा है तब तीसरे घर से तीन गिनें, तो हम पाँचवें घर पर आते हैं, जिसे लग्नारूढ़ कहते हैं। यह विधि जैमिनी में नियोजित है, प्रश्न में इसकी कोई भूमिका नहीं है।

प्रांरभिक समय में आरूढ़ लग्न व्यक्ति द्वारा प्रश्न पूछने की दिशा से निर्धारित किया जाता था। वर्तमान समय में ज्योतिषी एक वृक्ष के नीचे खुले में नहीं बैठते जिससे कि प्रश्नकर्त्ता के आगमन से आरूढ़ लग्न का निर्धारण किया जा सके।

इन दिनों ज्योतिषी एक छोटे कमरे में सीमित रहते हैं जहाँ प्रश्नकर्त्ता को अपना स्थान अथवा दिशा चुनने के लिए कोई विकल्प नही है। अतः समय के परिवर्तन के साथ आरूढ़ लग्न को निश्चित करने की प्रक्रिया भी बदल गई है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, वर्तमान समय में आरूढ़ लग्न का महत्त्व अत्यधिक माना गया है। जब एक व्यक्ति ज्योतिषी के पास केवल परामर्श के लिए बिना समय लिए हुए और आधुनिक ज्योतिषियों द्वारा निर्धारित समय का अनुसरण न करते हुए आता है तब उदय लग्न सर्वाधिक संतोषजनक और आश्चर्यजनक परिणाम देता है। अक्सर ऊपरलिखित शर्तें पूरी नहीं होती हैं और ज्योतिषी को आरूढ़ लग्न पर निर्भर करना पड़ता है।

छत्र लग्न

उदय लग्न और आरूढ़ लग्न के अतिरिक्त एक और महत्त्वपूर्ण लग्न, छत्र लग्न है। छत्र लग्न अथवा राशि की परिगणना निम्नलिखित तीन चरणों को शामिल करती है।

प्रथम चरण - वीथी राशि की गणना : यदि सूर्य वृष, मिथुन कर्क अथवा सिंह में है (2, 3, 4 और 5) तो वीथी राशि मेष है। यदि सूर्य वृश्चिक, मकर

अथवा कुंभ (8, 10 अथवा 11) में है तो वीथी राशि मिथुन है। यदि सूर्य शेष राशियों मेष, कन्या, तुला, धनु या मीन (1, 6, 7, 9 अथवा 12) में से किसी में है तो वीथी राशि वृष है। इसे इस प्रकार सारणी बद्ध किया जा सकता है।

राशियों में सूर्य	*वीथी राशि*
2, 3, 4, 5	1 (मेष)
1, 6, 7, 9, 12	2 (वृष)
8, 10, 11	3 (मिथुन)

द्वितीय चरण - प्रश्न के समय पर उदय लग्न और आरूढ़ लग्न का निर्धारण करें। आरूढ़ से उदय लग्न तक गिनें। मान लीजिए धनु आरूढ़ है और मीन उदय लग्न है, तब धनु से मीन तक गिनें, हमने 4 प्राप्त किया, इसे 'क' कहेंगें।

तृतीय चरण - प्रथम चरण में प्राप्त राशि से द्वितीय चरण में प्राप्त संख्या 'क' तक गिनिये। मान लीजिये कि एक प्रश्न कुंडली में सूर्य मेष में है तो वीथी राशि वृष हुई। अब वृष से 4 आगे तक गिनने से (ऊपर दिये गये उदाहरण से) हमें सिंह प्राप्त हुआ जो छत्र लग्न है।

यह विश्वास किया जाता है कि प्रश्न में उदय लग्न, आरूढ़ लग्न और छत्र लग्न उत्तम परिणाम देते हैं। इसके अतिरिक्त, ऊपर व्याख्यायित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उदय और आरूढ़ लग्न के बीच एक निर्णय लिया जाना है। प्रश्न में छत्र लग्न का एक विशिष्ट प्रयोग है जिसके संबंध में इस पुस्तक में उपयुक्त स्थानों पर विचार किया गया है। फिर भी शास्त्रीय ग्रंथों में छत्र लग्न को अन्य लग्नों के समान महत्त्व प्रदान किया गया है। इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके प्रयोग में खोज और परीक्षण की आवश्यकता है।

आरूढ़ निर्धारित करने की प्राचीन विधियाँ

1. दिशा : जिस दिशा से व्यक्ति ज्योतिषी के पास आता है वह दिशा आरूढ़ लग्न दर्शाती है। इन दिशाओं को यहां आगे दिखाया गया है।

2. सोना अथवा स्पर्श : जब एक व्यक्ति किसी विशेष दिशा से प्रश्न नहीं पूछता है अथवा जब दिशा निश्चित् करना कठिन है, उदाहरणार्थ, चलते हुए, ऊपर या नीचे जाते हुए, जब एक प्रश्न किया जाता है तब उससे एक स्वर्ण का टुकड़ा रखने को कहा जाता है अथवा चार्ट को किसी बिंदु पर छूने को कहा जाता है।

उत्तर पूर्व | पूर्व | दक्षिण पूर्व

उत्तर | दक्षिण

उत्तर-पश्चिम | पश्चिम | दक्षिण-पश्चिम

विधि इस प्रकार है :

एक साफ स्थान पर या एक कागज के ऊपर इस चार्ट को बनायें। पानी, चंदन की लेई, अनाजों, चावल और फूलों से इसे ढक दें। तब केवल उससे एक स्वर्ण का टुकड़ा रखने के लिए अथवा स्थान को छूने को कहें जो आरूढ़ लग्न की एक राशि को इंगित करेगा। स्वर्ण का टुकड़ा जीव का

			I			II			III				
	7	8	9	1	6	7	7	8	9	1	6	7	
XII	6	5	4	2	5	8	6	5	4	2	5	8	
	1	2	3	3	4	9	1	2	3	3	4	9	
	9	4	3							3	2	1	IV
XI	8	5	2							4	5	6	
	7	6	1			आरूढ़ नवांश				9	8	7	
	7	8	9			चक्र				1	6	7	
X	6	5	4							2	5	8	V
	1	2	3							3	4	9	
	9	4	3	3	2	1	9	4	3	3	2	1	
IX	8	5	2	4	5	6	8	5	2	4	5	6	VI
	7	6	1	9	8	7	7	6	1	9	8	7	
			VIII					VII					
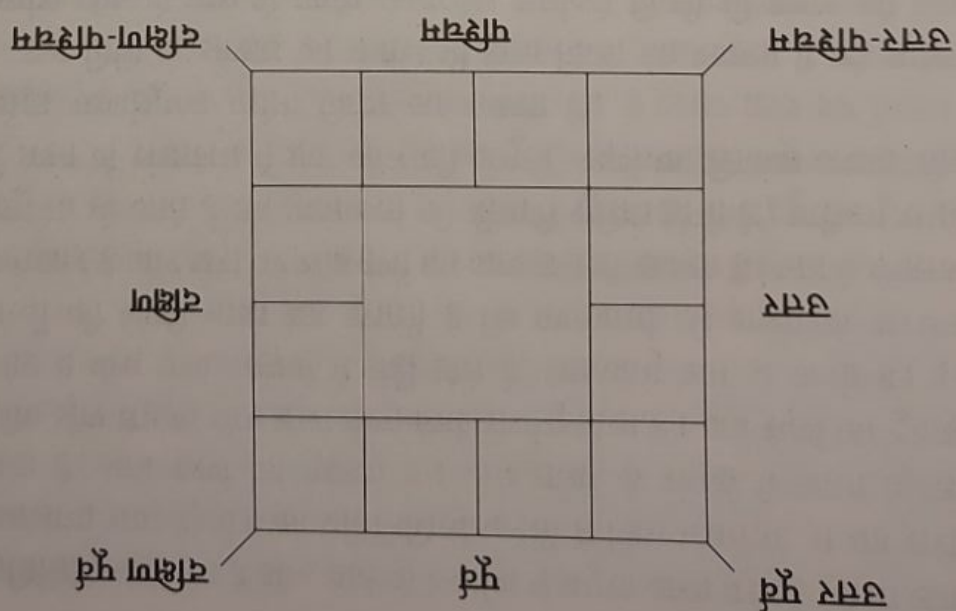
प्रतिनिधित्व करता है और चार्ट के निर्माण में प्रयुक्त अन्य वस्तुएँ (जैसा ऊपर बतलाया गया है) देह का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन पंचतत्वों से यह शरीर बना है। जब स्वर्ण का टुकड़ा इन पांच तत्वों के संपर्क में आता है, तब जीव और देह के योग द्वारा प्रश्नकर्त्ता दीर्घायु होता है। जब स्वर्ण का टुकड़ा और ये पाँच तत्त्व सम्पर्क में नहीं होते है, तब आयु कम हो जाती है। इन तत्त्वों की थोड़ी मात्रा यह बताती है कि प्रश्नकर्त्ता की शारीरिक संरचना कमजोर है और उस पर संक्रमणों का आक्रमण हो सकता है। जब ये पंचतत्त्व प्रदूषित हो जाते हैं तब प्रश्नकर्त्ता की बीमारी सूचित होती है। वर्तमान समय में प्रश्न के संचालन में एक सोने की अंगूठी, स्वर्ण का सिक्का अथवा कोई छोटा स्वर्णाभूषण प्रयोग किया जा सकता है।

इस विधि से आरूढ़ का नवांश भी ज्ञात किया जा सकता है जो आरूढ़ नवांश चक्र के नाम से जाना जाता है। चार्ट के किसी भी स्थान को छूना अथवा विशेष छोटे वर्ग पर स्वर्ण का टुकड़ा रखना आरूढ़ का नवांश निश्चित् करता है। जो चार्ट यहाँ दिया गया है, उसके बाहरी ओर राशियों के 1 से 12 नम्बर नहीं लिखे जाते लेकिन ज्योतिषी को इनका पता रहता है।

3. अष्टमंगल प्रश्न : यह विशेषतया केरल राज्य में अनुसरित प्रश्न की एक सुपरिष्कृत पद्धति है। जैसा कि नाम से सूचित है कि यह आठ वस्तुओं को शामिल करती है, जो हैं - दीप, स्वर्ण, दर्पण, दही, दूध, फल, पुस्तक और सफेद वस्त्र। पूजा अथवा उपासना से संबंधित अन्य वस्तुएं है - सफेद फूल, चंदन का लेप, केले की पत्तियाँ, चावल आदि।

आठ वस्तुएँ शिक्षा की देवी "सरस्वती" की प्रतीक हैं। दीप बुद्धि के देवता, भगवान "गणेश" का प्रतीक है और लौ भाग्य और समृद्धि की देवी, "लक्ष्मी" की प्रतीक है। पूजा में इन वस्तुओं का प्रयोग प्रश्न के अनुकूल संचालन, अज्ञान को प्रकाश में लाने और प्रश्नों की अनुकूल पूर्ति के लिए इन देवताओं का आह्वान करने का प्रतीक है। एक काष्ठपट पर चावल के चूर्ण से चार्ट खीचें, केंद्र में चार कमल दल रखें। सोने का सिक्का जीव का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरी वस्तुएँ देह का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका सम्मिश्रण और तदनंतर विश्लेषण व्यक्ति का स्वास्थ्य और आयु सूचित करता है। एक विस्तृत पूजा अनुष्ठित की जाती है जिसमें भचक्रीय राशियों, ग्रहों, मांदि और उनके अधीनस्थ देवताओं की उपासना की जाती है। सोने का सिक्का और 108 कौड़ियाँ पवित्र जल से शुद्ध की जाती हैं और चंदन लेप, फूलों और चावल के साथ मिश्रित की जाती हैं। इन 108 कौडियों द्वारा अज्ञात को खोलने और भविष्य को देखने के लिए ईश्वरीय अनुमोदन प्राप्त करने के लिए ग्रहों, नक्षत्रों (क्योंकि कुल 108 नक्षत्र पद हैं) और पूर्वजों की पूजा की जाती है।

एक किशोर बालक को ईश्वर के अवतार रूपी दीपक की पूजा करने को कहा जाता है। चार्ट की परिक्रमा करने और पूर्वाभिमुख होने के बाद चार्ट की किसी एक राशि पर उसे सोने का सिक्का, फूल और चावल रखने के लिए कहा जाता है। इससे आरूढ़ लग्न की स्थापना होती है। इस बीच प्रश्नकर्त्ता खड़े होकर, बराबर पूजा करते हुए विश्वास और सतत चिंतन के साथ अपने प्रश्न के उद्देश्य के बारे में सोचता है।

ज्योतिषी मुट्ठी भर कौडियों को उठाकर अपने सामने बायीं ओर रख देता है। दूसरी मुट्ठी भर के मध्य में और शेष अपनी दाहिनी ओर रख देता है। प्रचलित शकुनों और सांस की परीक्षा भी आवश्यक है। कौड़ियों को तीन स्थानों पर रखा जाता है और आठ के गुणक को छोड़कर केवल शेषफल को ध्यान में रखा जाता है। इसके विश्लेषण की दो विधियाँ हैं। प्रथमतः जो संख्या बायीं ओर है, वह सौ की इकाई है, जो संख्या सामने है, वह दस की इकाई है और जो संख्या दाहिनी ओर है वह एक की इकाई है।

यह तीन अंकीय संख्या अष्टमंगल संख्या के रूप में जानी जाती है और कुंडली के विश्लेषण में प्रयोग की जाती है। सौवाँ अंक भूत को सूचित करता है।, दसवाँ अंक वर्तमान को और पहला अंक भविष्य को द्योतित करता है। दूसरे प्रकार से ये अंक इन तीन स्थानों पर ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शेषफल	ग्रह	शेषफल	ग्रह
1	सूर्य	5	शुक्र
2	मंगल	6	शनि
3	बृहस्पति	7	चंद्र
4	बुध	8	राहु

तब ये ग्रह योनियों, जन्तुओं और पाँच तत्त्वों से संबंधित होते हैं जैसा कि चार्ट में दिया गया है।

संख्या	ग्रह	योनि	पशु	तत्त्व
1	सूर्य	पताका	गरूड़	पृथ्वी
2	मंगल	धुआँ	बिल्ली	अग्नि
3	बृहस्पति	शेर	शेर	पृथ्वी
4	बुध	कुत्ता	कुत्ता	आकाश
5	शुक्र	बैल	सर्प	जल
6	शनि	गधा	चूहा	वायु
7	चंद्र	हाथी	हाथी	जल
8	राहु	कौआ	खरगोश	आकाश

केरल राज्य में इन को विश्लेषित करने की एक विस्तृत विधि नियोजित है। शेषफल द्वारा संकेतित संख्या सौवें, दसवें और पहले स्थान पर संबद्ध ग्रह और योनि को सूचित करती है और इन ग्रहों के बलाबल पर आधारित निम्न लिखित परिणाम देती है।

ग्रह

1. सूर्य : इच्छाओं की पूर्ति और अनुकूल परिणामों को देता है विशेषतया अधिकार, सम्मान और विजय प्राप्त करने के लिए।
2. मंगल : विवाद, झगड़े और दुर्घटना से भय, आग, चोरी, शस्त्र आदि।
3. बृहस्पति : समृद्धि और संतान की अनुकूल उपलब्धि और बड़ों की अन्य दुआएं (आशीर्वाद)।
4. बुध : त्वचा, बीमारियाँ, विश्लेषणात्मक बुद्धि लेकिन चलायमान मस्तिष्क, विपत्तियाँ और व्यथाएँ।
5. शुक्र : रत्न जड़ित आभूषण, कपड़े, भौतिक एवं शारीरिक रूप से पुष्ट, वैवाहिक परमानन्द की प्राप्ति के लिए उत्तम (यदि अप्रभावित हो)।
6. शनि : विपत्तियाँ, हानियाँ और रोगों से खतरा, चोरियाँ, दूसरी अनपेक्षित बुराइयाँ।
7. चन्द्रमा : सुख, समृद्धि, अच्छा भोजन, पेय एवं धन-धान्य।
8. राहु : लंबी और असाध्य बीमारियाँ, अनकहा भय, विष से खतरा, विवाद।

योनियाँ

विभिन्न योनियों के परिणाम हैं:

1. पताका : धन-प्राप्ति, सामान्य रहन-सहन और संतान के लिए अनुकूल।
2. धुआँ : शत्रुओं की ओर से विपत्तियाँ, बीमारियाँ, अरिष्ट।
3. शेर : धन, संतान तथा अन्य विशेषताओं की उपलब्धि।
4. कुत्ता : बीमारियाँ, हानियाँ और विवाद।
5. बैल : वैवाहिक परमानंद, स्वास्थ्य और समृद्धि।
6. गधा : स्थिति (पद) और धन की हानि, उत्तरदायित्वों में असफलता।
7. हाथी : समृद्धि, खुशहाली, प्राप्तियाँ और सम्मान।
8. कौआ : मित्रों, पद और जीवन की हानि, शोक, शत्रु।

अष्टमंगल प्रश्न की पूरी प्रक्रिया सम्पूर्ण होने में अनेक घंटों से लेकर कुछ दिन लेती है। जिसमें विस्तृत उपासना से एकाग्रता आ जाती है। इस ईश्वरीय कृपा से प्राप्त एकाग्रता कभी किसी ज्योतिषी को सही फलित कथन करने में निराश नहीं करती।

4. प्रथम उच्चारित शब्द : प्रश्नकर्त्ता द्वारा उच्चारित प्रथम शब्द आरूढ़ लग्न को निश्चित करता है। हिन्दी वर्णमाला के स्वरों और व्यंजनों को, जो विभिन्न ग्रहों को आवंटित किए गये हैं, निम्नलिखित पांच तत्त्वों में भी वर्गीकृत किया गया है।

	वायु Air	अग्नि Fire	पृथ्वी Earth	जल Water	आकाश Ether
मंगल	क ka	ख kha	ग ga	घ gha	ङ gna
शुक्र	च cha	छ chha	ज ja	झ jha	ञ nya
बुध	ट ta	ठ tha	ड da	ढ dha	ण na
बृहस्पति	त ta	थ tha	द da	ध dha	न na
शनि	प pa	फ pha	ब ba	भ bha	म ma
चन्द्र	य ya ष sha	र ra स sa	ल la ह ha	व va लृ lri	श sha क्ष ksa
सूर्य	ए e ऐ ai	उ u ऊ oo	अ a आ aa	इ i ई ee	ओ o औ ow

सूर्य को आवंटित किए गए स्वरों के लिए अन्य दृष्टिकोण हैं। ह्रस्व स्वर पृथ्वी या मृण्मय तत्त्व को सूचित करता है और दीर्घ स्वर जलीय तत्त्व को सूचित करता है। स्वरों को जीव और व्यंजनों को शरीर में वर्गीकृत किया गया है।

विधि 1 : ग्रहों पर आधारित : आरूढ़ को निश्चित करने के लिए प्रश्नकर्त्ता द्वारा उच्चारित प्रथम शब्द को और उससे संबंधित ग्रह को देखें। विषम स्थानों 1, 3, 5, पर स्थित अक्षर ग्रहों की विषम राशियों को सूचित करते हैं और सम स्थितियां ग्रह की सम राशियाँ सूचित करती हैं। यह सूर्य और चंद्र, जिनकी, प्रत्येक की अपनी एक राशि है को छोड़ कर शेष सभी ग्रहों के लिए लागू है।

मान लो एक व्यक्ति 'चलो' उच्चारण करता है तब च के लिए नियंत्रण ग्रह शुक्र है। सारणी में पहला अक्षर होने पर यह एक विषम संख्या है तो आरूढ़ शुक्र द्वारा नियंत्रित विषम राशि तुला होगी। यदि प्रश्नकर्त्ता द्वारा उच्चारित प्रथम अक्षर एक शुभ ग्रह सूचित करे तब अनुकूल परिणाम मिलेंगे। जबकि एक अशुभ ग्रह को सूचित करने वाला अक्षर प्रतिकूल परिणाम देगा।

विधि 2 : तत्त्वों पर आधारित : एक प्रश्नकर्त्ता द्वारा उच्चारित प्रथम शब्द के तत्त्वों पर आधारित प्रश्न के सामान्य परिणाम इस प्रकार हैं।

प्रथम उच्चारित शब्द	*परिणाम*
स्वर (जीव)	अस्वस्थ शरीर
वायु	बुरा
अग्नि	बुरा और उग्र
आकाश	बहुत बुरा
पृथ्वी	साधारण परिणाम
जल	बहुत अच्छा

केवल स्वरों पर विचार करने और उन्हें तत्त्वों से संबंधित करने का एक दूसरा दृष्टिकोण है। यदि एक प्रश्नकर्त्ता प्रथम शब्द उच्चरित करता है, जैसे 'री' तब संगत स्वर और तत्त्व इ अथवा जल है। इस प्रकार जो व्यंजन उच्चरित होता है, उसका ध्यान किए बिना उसका परिणाम संबंधित स्वरों और उसके तत्त्वों से बता दिया जाता है।

आरूढ़ निर्धारित करने की आधुनिक विधियाँ

1. संख्या 108 द्वारा

आधुनिक युग में जहाँ न ज्योतिषी और न ही प्रश्नकर्त्ता के पास समय है वहां उदय लग्न के स्थान पर आरूढ़ लग्न का प्रयोग किया जाता है। किन परिस्थितियों में आरूढ़ लग्न लेना चाहिए वह पहले ही वर्णित किया जा चुका है। आरूढ़ 1 से 108 के बीच कोई संख्या पूछ कर निर्धारित की जाती है इस संख्या को 9 से भाग करें। भागफल राशि को बताता है जो बीत चुकी

है। आरूढ़ लग्न प्राप्त करने के लिए भागफल में 1 जोड़ें। शेषफल उदित हो रहे नवांश को सूचित करता है। अब हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लो, उच्चारित संख्या 57 है। 57 को 9 से भाग दिया, हमने भागफल 6 और शेषफल 3 प्राप्त किया। 6 में 1 जोड़ा अथवा तुला आरूढ़ है जिसका तीसरा नवांश चल रहा है इसका अर्थ यह है कि आरूढ़ लग्न 6°40' से 10° अंशों के बीच तुला है। इसी आधार पर नवांश लग्न की गणना की जा सकती है।

2. स्पर्श द्वारा

प्रारंभिक बिंदु अथवा मेष राशि सूचित किए बिना दक्षिण भारतीय शैली में एक कुंडली बनाएँ, लेकिन मेष राशि के इस प्रारंभिक बिंदु को ज्योतिषी द्वारा मस्तिष्क में रखना चाहिए। व्यक्ति से चार्ट की किसी एक राशि को छूने के लिए कहें, जो आरूढ़ लग्न होगी। नवांश निश्चित करने के लिए आरूढ़ नवांश चक्र प्रयोग किया जा सकता है। दूसरी विधि है कि नीचे दिखाए गए आरेख के अनुसार रेखाओं के अंत में राशियों की संख्या लिखे बिना
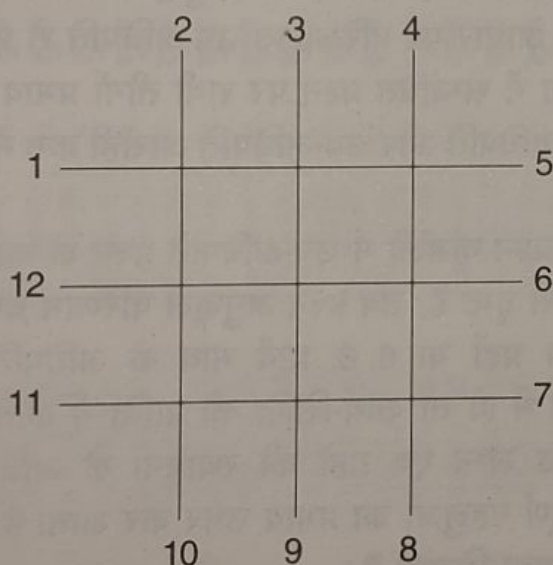
तीन ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएं खीचें। आरूढ़ दिखाने के लिए व्यक्ति को रेखा के किसी अंत पर स्पर्श करने को कहें जैसा कि आरेख में दिखाई गई राशियों की योजना है।

3. संख्या द्वारा अष्टमंगल

आधुनिक समय में अष्टमंगल क्रिया करने के लिए ज्योतिषियों के पास समय नहीं है। 111 और 888 के बीच एक तीन अंकीय संख्या अष्टमंगल रूप को निश्चित करने के लिए पूछी जाती है जैसा कि अष्टमंगल क्रिया में कौड़ियों के आठ के गुणक को छोड़कर शेष को लिया जाता है।

4. संख्या 249 द्वारा

यह विधि के.एस. कृष्णमूर्ति द्वारा प्रतिपादित की गयी है। भचक्र में 27 नक्षत्र हैं, जिसमें प्रत्येक का 13°20' विस्तार है। ये नक्षत्र केतु, शुक्र, सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि और बुध की विंशोत्तरी दशा के क्रम में 9 ग्रहों द्वारा नियंत्रित किए गए हैं। विभिन्न नक्षत्रों के ऊपर विभिन्न ग्रहों का स्वामित्व "ज्योतिष के सामान्य नियम" अध्याय में दिया गया है।

आरूढ़ निश्चित करने की विधि में व्यक्ति से 1 और 249 के बीच कोई संख्या पूछना शामिल है तब इस संख्या पर आधारित आरूढ़ राशि पता लगाने के लिए यहाँ सारणियाँ दी गई हैं। यह प्रश्न चार्ट के परिणाम पर तीन ग्रहों राशि अधिपति, नक्षत्रपति और उप-अधिपति के प्रभाव को दिखाता है।

इस विधि के अनुसार, लग्न अथवा कुंडली में स्थित एक ग्रह अपने ऊपर तीन मुख्य प्रभावों को रखता है। राशि, जहाँ ग्रह स्थित है, वह अपने अधिपति से प्रभावित होता है। जिस नक्षत्र में यह स्थित है, पुनः उसके अधिपति से प्रभावित होता है और अंततः विशुद्ध प्रभावों के लिए आनुपातिक विंशोत्तरी दशा के आधार पर परिकलित उप-अधिपति से प्रभावित होता है। यद्यपि इस योजना में सम्बंधित प्रश्न पर सभी तीनों प्रभाव रखते हैं तथापि राश्यधिपति, नक्षत्राधिपति और उप-अधिपति आरोही क्रम में प्रश्न पर अपना प्रभाव डालते हैं।

मान लीजिये, प्रश्न कुंडली में उप-अधिपति प्रश्न के कार्य भाव में स्थित है और शुभ ग्रहों से दृष्ट है, तब प्रश्न अनुकूल परिणाम दर्शाता है। जबकि उप-अधिपति पाप ग्रहों या 6, 8, 12वें भाव के अधिपतियों से प्रभावित होकर अशुभ भाव में हो तो कार्य-सिद्धि की प्राप्ति में कठिनाई होगी। इस विधि द्वारा आरूढ लग्न एवं ग्रहों की स्थापना के अतिरिक्त तीन अन्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पहलुओं का प्रभाव उभर कर आता है जिससे प्रश्न के विश्लेषण में सहायता मिलती है।

पुस्तक में वर्णित विवेचन में केवल लग्न शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसमें आरूढ़ की अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है, जो इस तथ्य पर आधारित है कि ऊपर अभिव्यक्त सीमाओं पर आधारित लग्न किस प्रकार का है।

मेष -Aries

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
1.	मंगल	केतु	केतु	00-00-00	00-46-40
2.	मंगल	केतु	शुक्र	00-46-40	03-00-00
3.	मंगल	केतु	सूर्य	03-00-00	03-40-00
4.	मंगल	केतु	चन्द्रमा	03-40-00	04-46-40
5.	मंगल	केतु	मंगल	04-46-40	05-33-20
6.	मंगल	केतु	राहु	05-33-20	07-33-20
7.	मंगल	केतु	बृहस्पति	07-33-20	09-20-00
8.	मंगल	केतु	शनि	09-20-00	11-26-40
9.	मंगल	केतु	बुध	11-26-40	13-20-00
10.	मंगल	शुक्र	शुक्र	13-20-00	15-33-20
11.	मंगल	शुक्र	सूर्य	15-33-20	16-13-20
12.	मंगल	शुक्र	चन्द्रमा	16-13-20	17-20-00
13.	मंगल	शुक्र	मंगल	17-20-00	18-06-40
14.	मंगल	शुक्र	राहु	18-06-40	20-06-40
15.	मंगल	शुक्र	बृहस्पति	20-06-40	21-53-20
16.	मंगल	शुक्र	शनि	21-53-20	24-00-00
17.	मंगल	शुक्र	बुध	24-00-00	25-53-20
18.	मंगल	शुक्र	केतु	25-53-20	26-40-00
19.	मंगल	सूर्य	सूर्य	26-40-00	27-20-00
20.	मंगल	सूर्य	चन्द्रमा	27-20-00	28-26-40
21.	मंगल	सूर्य	मंगल	28-26-40	29-13-20
22.	मंगल	सूर्य	राहु	29-13-20	30-00-00

वृष -Taurus

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
23.	शुक्र	सूर्य	राहु	00-00-00	01-13-20
24.	शुक्र	सूर्य	बृहस्पति	01-13-20	03-00-00
25.	शुक्र	सूर्य	शनि	03-00-00	05-06-40
26.	शुक्र	सूर्य	बुध	05-06-40	07-00-00
27.	शुक्र	सूर्य	केतु	07-00-00	07-46-40
28.	शुक्र	सूर्य	शुक्र	07-46-40	10-00-00
29.	शुक्र	चन्द्रमा	चन्द्रमा	10-00-00	11-06-40
30.	शुक्र	चन्द्रमा	मंगल	11-06-40	11-53-20
31.	शुक्र	चन्द्रमा	राहु	11-53-20	13-53-20
32.	शुक्र	चन्द्रमा	बृहस्पति	13-53-20	15-40-00
33.	शुक्र	चन्द्रमा	शनि	15-40-00	17-46-40
34.	शुक्र	चन्द्रमा	बुध	17-46-40	19-40-00
35.	शुक्र	चन्द्रमा	केतु	19-40-00	20-26-40
36.	शुक्र	चन्द्रमा	शुक्र	20-26-40	22-40-00
37.	शुक्र	चन्द्रमा	सूर्य	22-40-00	23-20-00
38.	शुक्र	मंगल	मंगल	23-20-00	24-06-40
39.	शुक्र	मंगल	राहु	24-06-40	26-06-40
40.	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
41.	शुक्र	मंगल	शनि	27-53-20	30-00-00

मिथुन –Gemini

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
42.	बुध	मंगल	बुध	00-00-00	01-53-20
43.	बुध	मंगल	केतु	01-53-20	02-40-00
44.	बुध	मंगल	शुक्र	02-40-00	04-53-20
45.	बुध	मंगल	सूर्य	04-53-20	05-33-20
46.	बुध	मंगल	चन्द्रमा	05-33-20	06-40-00
47.	बुध	राहु	राहु	06-40-00	08-40-00
48.	बुध	राहु	बृहस्पति	08-40-00	10-26-40
49.	बुध	राहु	शनि	10-26-40	12-33-20
50.	बुध	राहु	बुध	12-33-20	14-26-40
51.	बुध	राहु	केतु	14-26-40	15-13-20
52.	बुध	राहु	शुक्र	15-13-20	17-26-40
53.	बुध	राहु	सूर्य	17-26-40	18-06-40
54.	बुध	राहु	चन्द्रमा	18-06-40	19-13-20
55.	बुध	राहु	मंगल	19-13-20	20-00-00
56.	बुध	बृहस्पति	बृहस्पति	20-00-00	21-46-40
57.	बुध	बृहस्पति	शनि	21-46-40	23-53-20
58.	बुध	बृहस्पति	बुध	23-53-20	25-46-40
59.	बुध	बृहस्पति	केतु	25-46-40	26-33-20
60.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	26-33-20	28-46-40
61.	बुध	बृहस्पति	सूर्य	28-46-40	29-26-40
62.	बुध	बृहस्पति	चन्द्रमा	29-26-40	30-00-00

कर्क – Cancer

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
63.	चन्द्रमा	बृहस्पति	चन्द्रमा	00-00-00	00-33-20
64.	चन्द्रमा	बृहस्पति	मंगल	00-33-20	01-20-00
65.	चन्द्रमा	बृहस्पति	राहु	01-20-00	03-20-00
66.	चन्द्रमा	शनि	शनि	03-20-00	05-26-40
67.	चन्द्रमा	शनि	बुध	05-26-40	07-20-00
68.	चन्द्रमा	शनि	केतु	07-20-00	08-06-40
69.	चन्द्रमा	शनि	शुक्र	08-06-40	10-20-00
70.	चन्द्रमा	शनि	सूर्य	10-20-00	11-00-00
71.	चन्द्रमा	शनि	चन्द्रमा	11-00-00	12-06-40
72.	चन्द्रमा	शनि	मंगल	12-06-40	12-53-20
73.	चन्द्रमा	शनि	राहु	12-53-20	14-53-20
74.	चन्द्रमा	शनि	बृहस्पति	14-53-20	16-40-00
75.	चन्द्रमा	बुध	बुध	16-40-00	18-33-20
76.	चन्द्रमा	बुध	केतु	18-33-20	19-20-00
77.	चन्द्रमा	बुध	शुक्र	19-20-00	21-33-20
78.	चन्द्रमा	बुध	सूर्य	21-33-20	22-13-20
79.	चन्द्रमा	बुध	चन्द्रमा	22-13-20	23-20-00
80.	चन्द्रमा	बुध	मंगल	23-20-00	24-06-40
81.	चन्द्रमा	बुध	राहु	24-06-40	26-06-40
82.	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
83.	चन्द्रमा	बुध	शनि	27-53-20	30-00-00

सिंह –Leo

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
84.	सूर्य	केतु	केतु	00-00-00	00-46-40
85.	सूर्य	केतु	शुक्र	00-46-40	03-00-00
86.	सूर्य	केतु	सूर्य	03-00-00	03-40-00
87.	सूर्य	केतु	चन्द्रमा	03-40-00	04-46-40
88.	सूर्य	केतु	मंगल	04-46-40	05-33-20
89.	सूर्य	केतु	राहु	05-33-20	07-33-20
90.	सूर्य	केतु	बृहस्पति	07-33-20	09-20-00
91.	सूर्य	केतु	शनि	09-20-00	11-26-40
92.	सूर्य	केतु	बुध	11-26-40	13-20-00
93.	सूर्य	शुक्र	शुक्र	13-20-00	15-33-20
94.	सूर्य	शुक्र	सूर्य	15-33-20	16-13-20
95.	सूर्य	शुक्र	चन्द्रमा	16-13-20	17-20-00
96.	सूर्य	शुक्र	मंगल	17-20-00	18-06-40
97.	सूर्य	शुक्र	राहु	18-06-40	20-06-40
98.	सूर्य	शुक्र	बृहस्पति	20-06-40	21-53-20
99.	सूर्य	शुक्र	शनि	21-53-20	24-00-00
100.	सूर्य	शुक्र	बुध	24-00-00	25-53-20
101.	सूर्य	शुक्र	केतु	25-53-20	26-40-00
102.	सूर्य	सूर्य	सूर्य	26-40-00	27-20-00
103.	सूर्य	सूर्य	चन्द्रमा	27-20-00	28-26-40
104.	सूर्य	सूर्य	मंगल	28-26-40	29-13-20
105.	सूर्य	सूर्य	राहु	29-13-20	30-00-00

कन्या–Virgo

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
106.	बुध	सूर्य	राहु	00-00-00	01-13-20
107.	बुध	सूर्य	बृहस्पति	01-13-20	03-00-00
108.	बुध	सूर्य	शनि	03-00-00	05-06-40
109.	बुध	सूर्य	बुध	05-06-40	07-00-00
110.	बुध	सूर्य	केतु	07-00-00	07-46-40
111.	बुध	सूर्य	शुक्र	07-46-40	10-00-00
112.	बुध	चन्द्रमा	चन्द्रमा	10-00-00	11-06-40
113.	बुध	चन्द्रमा	मंगल	11-06-40	11-53-20
114.	बुध	चन्द्रमा	राहु	11-53-20	13-53-20
115.	बुध	चन्द्रमा	बृहस्पति	13-53-20	15-40-00
116.	बुध	चन्द्रमा	शनि	15-40-00	17-46-40
117.	बुध	चन्द्रमा	बुध	17-46-40	19-40-00
118.	बुध	चन्द्रमा	केतु	19-40-00	20-26-40
119.	बुध	चन्द्रमा	शुक्र	20-26-40	22-40-00
120.	बुध	चन्द्रमा	सूर्य	22-40-00	23-20-00
121.	बुध	मंगल	मंगल	23-20-00	24-06-40
122.	बुध	मंगल	राहु	24-06-40	26-06-40
123.	बुध	मंगल	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
124.	बुध	मंगल	शनि	27-53-20	30-00-00

तुला –Libra

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
125.	शुक्र	मंगल	बुध	00-00-00	01-53-20
126.	शुक्र	मंगल	केतु	01-53-20	02-40-00
127.	शुक्र	मंगल	शुक्र	02-40-00	04-53-20
128.	शुक्र	मंगल	सूर्य	04-53-20	05-33-20
129.	शुक्र	मंगल	चन्द्रमा	05-33-20	06-40-00
130.	शुक्र	राहु	राहु	06-40-00	08-40-00
131.	शुक्र	राहु	बृहस्पति	08-40-00	10-26-40
132.	शुक्र	राहु	शनि	10-26-40	12-33-20
133.	शुक्र	राहु	बुध	12-33-20	14-26-40
134.	शुक्र	राहु	केतु	14-26-40	15-13-20
135.	शुक्र	राहु	शुक्र	15-13-20	17-26-40
136.	शुक्र	राहु	सूर्य	17-26-40	18-06-40
137.	शुक्र	राहु	चन्द्रमा	18-06-40	19-13-20
138.	शुक्र	राहु	मंगल	19-13-20	20-00-00
139.	शुक्र	बृहस्पति	बृहस्पति	20-00-00	21-46-40
140.	शुक्र	बृहस्पति	शनि	21-46-40	23-53-20
141.	शुक्र	बृहस्पति	बुध	23-53-20	25-46-40
142.	शुक्र	बृहस्पति	केतु	25-46-40	26-33-20
143.	शुक्र	बृहस्पति	शुक्र	26-33-20	28-46-40
144.	शुक्र	बृहस्पति	सूर्य	28-46-40	29-26-40
145.	शुक्र	बृहस्पति	चन्द्रमा	29-26-40	30-00-00

वृश्चिक –Scorpio

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
146.	मंगल	बृहस्पति	चन्द्रमा	00-00-00	00-33-20
147.	मंगल	बृहस्पति	मंगल	00-33-20	01-20-00
148.	मंगल	बृहस्पति	राहु	01-20-00	03-20-00
149.	मंगल	शनि	शनि	03-20-00	05-26-40
150.	मंगल	शनि	बुध	05-26-40	07-20-00
151.	मंगल	शनि	केतु	07-20-00	08-06-40
152.	मंगल	शनि	शुक्र	08-06-40	10-20-00
153.	मंगल	शनि	सूर्य	10-20-00	11-00-00
154.	मंगल	शनि	चन्द्रमा	11-00-00	12-06-40
155.	मंगल	शनि	मंगल	12-06-40	12-53-20
156.	मंगल	शनि	राहु	12-53-20	14-53-20
157.	मंगल	शनि	बृहस्पति	14-53-20	16-40-00
158.	मंगल	बुध	बुध	16-40-00	18-33-20
159.	मंगल	बुध	केतु	18-33-20	19-20-00
160.	मंगल	बुध	शुक्र	19-20-00	21-33-20
161.	मंगल	बुध	सूर्य	21-33-20	22-13-20
162.	मंगल	बुध	चन्द्रमा	22-13-20	23-20-00
163.	मंगल	बुध	मंगल	23-20-00	24-06-40
164.	मंगल	बुध	राहु	24-06-40	26-06-40
165.	मंगल	बुध	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
166.	मंगल	बुध	शनि	27-53-20	30-00-00

धनु –Sagittarius

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
167.	बृहस्पति	केतु	केतु	00-00-00	00-46-40
168.	बृहस्पति	केतु	शुक्र	00-46-40	03-00-00
169.	बृहस्पति	केतु	सूर्य	03-00-00	03-40-00
170.	बृहस्पति	केतु	चन्द्रमा	03-40-00	04-46-40
171.	बृहस्पति	केतु	मंगल	04-46-40	05-33-20
172.	बृहस्पति	केतु	राहु	05-33-20	07-33-20
173.	बृहस्पति	केतु	बृहस्पति	07-33-20	09-20-00
174.	बृहस्पति	केतु	शनि	09-20-00	11-26-40
175.	बृहस्पति	केतु	बुध	11-26-40	13-20-00
176.	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	13-20-00	15-33-20
177.	बृहस्पति	शुक्र	सूर्य	15-33-20	16-13-20
178.	बृहस्पति	शुक्र	चन्द्रमा	16-13-20	17-20-00
179.	बृहस्पति	शुक्र	मंगल	17-20-00	18-06-40
180.	बृहस्पति	शुक्र	राहु	18-06-40	20-06-40
181.	बृहस्पति	शुक्र	बृहस्पति	20-06-40	21-53-20
182.	बृहस्पति	शुक्र	शनि	21-53-20	24-00-00
183.	बृहस्पति	शुक्र	बुध	24-00-00	25-53-20
184.	बृहस्पति	शुक्र	केतु	25-53-20	26-40-00
185.	बृहस्पति	सूर्य	सूर्य	26-40-00	27-20-00
186.	बृहस्पति	सूर्य	चन्द्रमा	27-20-00	28-26-40
187.	बृहस्पति	सूर्य	मंगल	28-26-40	29-13-20
188.	बृहस्पति	सूर्य	राहु	29-13-20	30-00-00

मकर –Capricorn

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
189.	शनि	सूर्य	राहु	00-00-00	01-13-20
190.	शनि	सूर्य	बृहस्पति	01-13-20	03-00-00
191.	शनि	सूर्य	शनि	03-00-00	05-06-40
192.	शनि	सूर्य	बुध	05-06-40	07-00-00
193.	शनि	सूर्य	केतु	07-00-00	07-46-40
194.	शनि	सूर्य	शुक्र	07-46-40	10-00-00
195.	शनि	चन्द्रमा	चन्द्रमा	10-00-00	11-06-40
196.	शनि	चन्द्रमा	मंगल	11-06-40	11-53-20
197.	शनि	चन्द्रमा	राहु	11-53-20	13-53-20
198.	शनि	चन्द्रमा	बृहस्पति	13-53-20	15-40-00
199.	शनि	चन्द्रमा	शनि	15-40-00	17-46-40
200.	शनि	चन्द्रमा	बुध	17-46-40	19-40-00
201.	शनि	चन्द्रमा	केतु	19-40-00	20-26-40
202.	शनि	चन्द्रमा	शुक्र	20-26-40	22-40-00
203.	शनि	चन्द्रमा	सूर्य	22-40-00	23-20-00
204.	शनि	मंगल	मंगल	23-20-00	24-06-40
205.	शनि	मंगल	राहु	24-06-40	26-06-40
206.	शनि	मंगल	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
207.	शनि	मंगल	शनि	27-53-20	30-00-00

कुम्भ –Aquarius

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
208.	शनि	मंगल	बुध	00-00-00	01-53-20
209.	शनि	मंगल	केतु	01-53-20	02-40-00
210.	शनि	मंगल	शुक्र	02-40-00	04-53-20
211.	शनि	मंगल	सूर्य	04-53-20	05-33-20
212.	शनि	मंगल	चन्द्रमा	05-33-20	06-40-00
213.	शनि	राहु	राहु	06-40-00	08-40-00
214.	शनि	राहु	बृहस्पति	08-40-00	10-26-40
215.	शनि	राहु	शनि	10-26-40	12-33-20
216.	शनि	राहु	बुध	12-33-20	14-26-40
217.	शनि	राहु	केतु	14-26-40	15-13-20
218.	शनि	राहु	शुक्र	15-13-20	17-26-40
219.	शनि	राहु	सूर्य	17-26-40	18-06-40
220.	शनि	राहु	चन्द्रमा	18-06-40	19-13-20
221.	शनि	राहु	मंगल	19-13-20	20-00-00
222.	शनि	बृहस्पति	बृहस्पति	20-00-00	21-46-40
223.	शनि	बृहस्पति	शनि	21-46-40	23-53-20
224.	शनि	बृहस्पति	बुध	23-53-20	25-46-40
225.	शनि	बृहस्पति	केतु	25-46-40	26-33-20
226.	शनि	बृहस्पति	शुक्र	26-33-20	28-46-40
227.	शनि	बृहस्पति	सूर्य	28-46-40	29-26-40
228.	शनि	बृहस्पति	चन्द्रमा	29-26-40	30-00-00

मीन –Pisces

संख्या	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	पद स्वामी	से ° ' "	तक ° ' "
229.	बृहस्पति	बृहस्पति	चन्द्रमा	00-00-00	00-33-20
230.	बृहस्पति	बृहस्पति	मंगल	00-33-20	01-20-00
231.	बृहस्पति	बृहस्पति	राहु	01-20-00	03-20-00
232.	बृहस्पति	शनि	शनि	03-20-00	05-26-40
233.	बृहस्पति	शनि	बुध	05-26-40	07-20-00
234.	बृहस्पति	शनि	केतु	07-20-00	08-06-40
235.	बृहस्पति	शनि	शुक्र	08-06-40	10-20-00
236.	बृहस्पति	शनि	सूर्य	10-20-00	11-00-00
237.	बृहस्पति	शनि	चन्द्रमा	11-00-00	12-06-40
238.	बृहस्पति	शनि	मंगल	12-06-40	12-53-20
239.	बृहस्पति	शनि	राहु	12-53-20	14-53-20
240.	बृहस्पति	शनि	बृहस्पति	14-53-20	16-40-00
241.	बृहस्पति	बुध	बुध	16-40-00	18-33-20
242.	बृहस्पति	बुध	केतु	18-33-20	19-20-00
243.	बृहस्पति	बुध	शुक्र	19-20-00	21-33-20
244.	बृहस्पति	बुध	सूर्य	21-33-20	22-13-20
245.	बृहस्पति	बुध	चन्द्रमा	22-13-20	23-20-00
246.	बृहस्पति	बुध	मंगल	23-20-00	24-06-40
247.	बृहस्पति	बुध	राहु	24-06-40	26-06-40
248.	बृहस्पति	बुध	बृहस्पति	26-06-40	27-53-20
249.	बृहस्पति	बुध	शनि	27-53-20	30-00-00

3
प्रश्न के सामान्य सिद्धांत

प्रारम्भ में यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि प्रश्न सामान्य फलित ज्योतिष से भिन्न नहीं है। वास्तव में, यह उसका उन्नत रूप है जहाँ ज्योतिष के समस्त सिद्धांत और विशिष्टता संपूर्णता में संगठित होती है। प्रश्न के विश्लेषण में सभी अवधारणाओं और प्रणालियों का उपयोग किया जाता है और तभी एक व्यापक, विस्तृत एवं नवीन विचार धारा ही सफल भविष्यवाणियों की ओर ले जाती है।

इस तथ्य के बावजूद कि प्रश्न में ज्योतिष के सभी सिद्धांत प्रयोग किए जाते हैं; तथापि प्रश्न कुंडलियों के विश्लेषण के कुछ अतिरिक्त विशिष्ट सिद्धांत भी हैं। उनमें से कुछ आधारभूत नियम निम्नलिखित हैं जबकि विभिन्न प्रकार के प्रश्नों में प्रयुक्त विशिष्ट नियमों के संबंध में संबंधित अध्यायों में विस्तार से विवेचन किया गया है।

बहुविध प्रश्न

यह उल्लेख किया जा चुका है कि एक प्रश्नकर्त्ता से अपेक्षा की जाती है कि वह प्रार्थनाओं तथा दानादि की एक नियत प्रक्रिया का अनुसरण करके एक सुयोग्य ज्योतिषी से गंभीरता पूर्वक एक प्रश्न पूछे। यद्यपि वर्तमान समय में, कोई प्रश्नकर्त्ता स्वयं को एक प्रश्न तक सीमित नहीं रखता। वह एक ही परामर्श में अपने जीवन की सम्पूर्ण घटनाओं को जानने की इच्छा रखता है, चाहे यह प्रश्न की प्रक्रिया के सिद्धांतों के खिलाफ ही क्यों न हो। शास्त्रीय रूप से, यह सुझाव दिया जाता है कि निम्नलिखित विधि से एक से अधिक प्रश्नों का उत्तर भी दिया जा सकता हैं।

पहला प्रश्न	लग्न से देखें
दूसरा प्रश्न	चंद्रमा से देखें
तीसरा प्रश्न	सूर्य से देखें
चौथा प्रश्न	बृहस्पति से देखें

पांचवाँ प्रश्न	प्रश्न कुंडली में शुक्र अथवा बुध में से जो बलवान हो, उससे देखें
छठा प्रश्न	प्रश्न कुंडली में शुक्र अथवा बुध में से जो बलहीन हो, उससे देखें

यद्यपि दक्षिण भारत में, कुछ ज्योतिषी बहुविध प्रश्नों का विश्लेषण प्रश्न कुंडली में ग्रहीय स्थिति और इसके नवांश के प्रयोग द्वारा करते हैं और तब उन्हें इस योजना में संगठित कर देते हैं, जैसा कि निम्नलिखित है।

प्रश्न	कहां से देखें	प्रश्न	कहां से देखें
1	लग्न	7	बृहस्पति
2	नवांश लग्न	8	नवांश बृहस्पति
3	चंद्रमा	9	शुक्र अथवा बुध में जो बलवान हो
4	नवांश चंद्रमा	10	नवांश शुक्र अथवा बुध में जो बलवान हो
5	सूर्य	11	बुध अथवा शुक्र में जो बलहीन है
6	नवांश सूर्य	12	नवांश बुध अथवा शुक्र में जो बलहीन है

इसलिए एक कुंडली से छह प्रश्नों के उत्तर देने के स्थान पर वे एक व्यक्ति के 12 प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। क्या अब भी यह प्रश्न के संचालन की हमारी वर्तमान समस्याओं का समाधान कर सकता है, जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है। शास्त्रीय पुस्तकें जो इस पद्धति का सुझाव देती हैं, इसके प्रयोग के बारे में मौन हैं। क्या हम एक व्यक्ति को छह प्रश्न पूछने के बाद रोक सकते हैं?

इस से संम्बन्धित एक और समस्या यह है कि एक प्रश्न को दूसरे प्रश्न से पृथक कैसे करें, ताकि प्रश्नों की संख्या का पता लगाया जा सके। कोई भी परामर्श एक निरंतर चलने वाला संवाद है जहाँ एक प्रश्न दूसरे प्रश्न से जुड़ा हुआ होता है। प्रश्नों को क्रमबद्ध उपखंड़ों में नहीं बैठाया जा सकता। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति अपनी पदोन्नति के बारे में पूछता है। ज्योतिषी सुझाव देता है कि पदोन्नति थोड़े ही समय में होने वाली है। व्यक्ति कहता है कि इसमें अनेक बाधाएँ हैं, जैसे उसके विरुद्ध एक जाँच का मामला लटका पड़ा है तो क्या मामला सुलझ जाएगा और पदोन्नति हो पाएगी। ज्योतिषी इसका उत्तर सकारात्मक देता है। व्यक्ति कहता है कि उसकी पदोन्नति उसके स्थानांतरण को पूर्व और पश्चिम-दो दिशाओं में ले जा सकती है तब कौन सी दिशा उपयुक्त रहेगी, यदि वह पदोन्नत किया जाता है। इस वार्तालाप में क्या हमें इसे पदोन्नति से संबंधित एक प्रश्न अथवा वहुविध प्रश्नों के रूप में लेना है? यह कहना कठिन है।

इस समस्या का एक हल यूं है। जब कोई व्यक्ति आपके पास प्रश्न के लिए पहुँचे तो एक कुंडली खीचें और उसके सभी प्रश्नों का विश्लेषण केवल लग्न से करें। क्योंकि उसके विविध प्रश्नों के लिये हमारे पास विभिन्न भाव, कार्येश और कारक हैं। मोटे तौर पर विभिन्न विश्लेषणात्मक विधियाँ विस्तार से हमें हमारे विश्लेषण में सहायता करती हैं। जब उसी उदय लग्न में दूसरा प्रश्नकर्त्ता आए तो हम उसके प्रश्न को चंद्रमा से विश्लेषित कर सकते है। एक तीसरा व्यक्ति उसी लग्न में ज्योतिषी के पास पहुंचे तब सूर्य से विश्लेषित कर सकते है और इसी ढंग से आगे बृहस्पति, शुक्र अथवा बुध में बलवान से इसी प्रकार आगे भी कर सकते है। मुझे पूरा विश्वास है कि कोई भी ज्योतिषी लग्न के कुल दो घंटे की अवधि में ईमानदारी से छह प्रश्नों से अधिक नहीं निपटा सकता। यदि आरूढ़ लग्न निर्धारित हो तब किसी मामले में यह समस्या नहीं होगी। मैंने इस विधि को बहुविध प्रश्नों में उत्तम परिणाम देते पाया है। तथापि इसका निर्णय मैं अपने साथी ज्योतिषियों के ऊपर छोड़ता हूँ कि विभिन्न विधियों में कौन सी विधि अधिक उपयोगी है।

लग्न निर्धारण की समस्याएँ

पिछले अध्याय में पहले ही लग्न और आरूढ़ लग्न तथा उनकी सीमाओं, जिसके अंतर्गत लग्न का निर्धारण महत्त्वपूर्ण होता है, पर विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। अब हम इस क्षेत्र में अनेक नौसिखियों द्वारा सामना की जाने वाली कुछ व्यावहारिक समस्याओं को लेते हैं। विद्वान पाठकों और ज्योतिषियों का अवलोकन भिन्न हो सकता है। फिर भी मैं अपने सीमित ज्ञान से कुछ बातें नीचे प्रस्तुत करता हूँ:

1. मुम्बई में जन्में एक व्यक्ति का मामला लीजिए जो दिल्ली में प्रश्न पूछता है। प्रश्न कुंडली और जन्म कुंडली में सहसंबंध देखा जाना चाहिए। प्रश्न लग्न उस स्थान के लिए लिया जाना चाहिए जहाँ पर प्रश्न किया गया है। जैसे, इस मामले में दिल्ली है।

2. अगर प्रश्नकर्त्ता अपने मन में विचार आने के समय को लिख ले और परामर्श के दौरान उस समय को व्यक्त करे तो यह स्थिति एक बच्चे के गर्भाधान एवं प्रसव जैसी है। अतः हमें उस समय के लग्न की गणना करनी चाहिये जब वह प्रश्नकर्त्ता वास्तविक रूप से ज्योतिषी के पास आए।

3. मान लीजिये आप घर पर उपस्थित नहीं हैं। आपकी अनुपस्थिति में घर पर प्रश्नकर्त्ता का फोन (दूरभाष) आता हैं और आपका पुत्र उस समय को लिख लेता है। आपके लौटने पर वह उस फोन के संदर्भ में आपको

बताता हैं। इस स्थिति में भी उसी समय का लग्न निर्धारित करें जब पहले फोन आया था।

4. एक प्रश्नकर्त्ता न्यूयार्क से पत्र लिखे और उसके शीर्ष पर वह इन विवरणों - स्थान - न्यूयार्क, दिनांक 4 जुलाई 1996, समय सायं 4.30 ZST लिख दे तो आप लग्न का कैसे निर्धारण करेंगे यदि आपको वह पत्र 9 जुलाई 1996 को भारतीय समयानुसार दोपहर 2:30 पर नई दिल्ली में प्राप्त हुआ हो। एक दूसरी स्थिति लेते हैं। यदि आपके द्वारा प्राप्त किए पत्र पर कोई तिथि अथवा समय, जैसा ऊपर वाले पत्र में है, नहीं लिखा गया हो तब लग्न की प्रक्रिया भिन्न होगी अथवा नहीं। इन जैसे मामलों में लग्न का निर्धारण उस समय, तिथि और स्थान का होगा जब ज्योतिषी पत्र प्राप्त करे। जैसा कि इस मामले में भारतीय समयनुसार सायं 2:30, 9 जुलाई 1996, नई दिल्ली है।

5. आपने एक कॉल लंदन से प्राप्त की और व्यक्ति आपसे सीधा प्रश्न पूछता है, मानो वह आपके सामने बैठा है। इस मामले में भी लग्न उसी स्थान के लिए निर्धारित होगा जहाँ ज्योतिषी रहता है और न कि लंदन के लिए।

6. एक व्यक्ति दूरभाष पर आपसे मिलने का समय मांगता है। तब कॉल का समय लिखें और उस समय के लिए लग्न और प्रश्न कुंडली की गणना करें। इस बात की चिंता किए बिना कि आपने दो दिन बाद का मिलने का समय दिया है।

7. कम समय के निर्धारित घंटों में परामर्श के मामलों में, जैसे प्रतिदिन सायं 6.00 से 8.00 बजे तक, आरूढ़ लग्न को महत्त्व दें, उदय लग्न को नहीं, जैसा कि पहले व्याख्यायित किया गया है।

भूत, वर्तमान और भविष्य

लग्नेश की अन्य ग्रह के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि तीन प्रकार की होती है। इशराफ, इत्थसाल और पूर्ण इत्थसाल। इशराफ एक पिछली घटना सूचित करता है, इत्थसाल भविष्य की ओर और पूर्ण इत्थसाल वर्तमान को प्रतिबिम्बित करता है। इन दो ग्रहों के बीच अंशीय दूरी समय को संकेतित करती है और इसके संबंध में घटनाओं के समय वाले अध्याय में विस्तार से विचार किया गया है। एक इशराफ सूचित करता है कि कुछ न कुछ घटित हो चुका है। यदि चंद्रमा का कार्येश के साथ इशराफ हो तब व्यक्ति अपने मन में कुछ निश्चित करके ज्योतिषी के पास आता है। प्रश्न कुंडली में विभिन्न भावों में ग्रह भूत, वर्तमान और भविष्य को सूचित करते हैं।

भाव	9, 10, 11, 12	:	भूत
	1, 2, 3, 4	:	वर्तमान
	5, 6, 7, 8	:	भविष्य

इस संबंध में मतभेद है। कुछ ज्योतिषी 5 भाव से 10 भाव को भूत काल तथा 11 भाव से 4 भाव को भविष्य को दर्शाता हुआ मानते हैं। तथापि यह सारी योजना विवादास्पद हैं।

श्वास अथवा सांस

अनुभवी ज्योतिषी प्रश्न कुंडली के परिणामों को सूचित करने के लिए बायीं अथवा दाहिनी नासारन्ध्र से प्रभावित होने वाली सांस को अत्यंत महत्व देते हैं। सामान्यतया सांस की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता सप्ताह के दिन से संबंधित बायीं अथवा दाहिनी नासिका से प्रवाहित होने वाली श्वास पर निर्भर करती है।

दिन	*बायीं नासिका से आने वाले सांस*	*दाहिनी नासिका से आने वाले सांस*
रविवार	प्रतिकूल	अनुकूल
सोमवार	अनुकूल	प्रतिकूल
मंगलवार	प्रतिकूल	अनुकूल
बुधवार	अनुकूल	प्रतिकूल
गुरूवार	अनुकूल	प्रतिकूल
शुक्रवार	अनुकूल	प्रतिकूल
शनिवार	प्रतिकूल	अनुकूल

यह देखा जा सकता है कि उस दिन के फलित किए जाने के अनुकूल परिणाम हेतु शुभ ग्रहों द्वारा नियंत्रित दिनों में श्वास बायीं नासिका से प्रवाहित होनी चाहिए और अशुभ ग्रहों द्वारा नियंत्रित दिनों में श्वास दाहिनी नासिका से प्रवाहित होनी चाहिए।

बायीं श्वास अनुकूल चीजों जैसे, विवाह, यात्रा, विवादों की समाप्ति, नये कपड़े पहनने आदि के लिए उत्तम है। जबकि दाहिनी श्वास क्रूर कर्मों जैसे, जूआ, झगड़े, विवादों और खाने, नहाने, व्यापार आदि के लिए उत्तम है। श्वास का परीक्षण विशिष्ट प्रश्नों जैसे, बीमारी, मरीज़ की बीमारी का उपचार, चोरी हुई संपत्ति, विवादों, झगड़ों आदि में अधिक प्रयुक्त किया जाता है। कुछ सामान्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. बायीं नासिका एक स्नायु रखती है जिसे इड़ा अथवा चंद्र नाड़ी कहा जाता है, दाहिनी नासिका पिंगला अथवा सूर्य नाड़ी रखती है और दोनों के

मध्य में एक स्नायु है, जिसे सुषुम्ना कहा जाता है, जो दोनों नासिकाओं से समान प्रवाहित होती है। कार्य की सफलता के लिए जब आप किसी कार्य को शुरू करने के लिए घर से निकलें, तब श्वास इड़ा या बायीं नासिका से प्रवाहित होनी चाहिए। लेकिन जब आप उस स्थान पर पहुँचे तब यह पिंगला अथवा दाहिनी नासिका से प्रवाहित होनी चाहिए। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य, जैसे कचहरी जाने के लिए, लड़ाई के मैदान आदि के लिए यह सच है।

2. निम्न लिखित सिद्धांत किसी व्यक्ति की बीमारी से सम्बन्धित प्रश्नों का परिणाम दर्शाते हैं।

श्वास की नासिका	*प्रश्न की दिशा*	*परिणाम*
दाहिनी नासिका	दाहिनी	बीमारी से मुक्ति
बायीं नासिका	बायीं	बीमारी में वृद्धि
दाहिनी नासिका	बायीं	मुश्किल से रोग मुक्ति
बायीं नासिका	दाहिनी	मुश्किल से रोग मुक्ति

किसी स्त्री मरीज के लिये ऊपरलिखित संकेत विपरीत हो जाते हैं उदाहरणार्थ, बायीं ओर से प्रश्न और श्वास रोगमुक्ति के लिए उत्तम है जबकि दाहिनी ओर से श्वास एवं प्रश्न बीमारी की वृद्धि दर्शाते हैं। जब ज्योतिषी श्वास ले रहा है तब प्रश्न पूछा जाए तो यह रोगमुक्ति दर्शाता है और जब श्वास छोड़ रहा हो तब यह मरीज की मृत्यु दर्शाता है।

लग्न का परीक्षण

किसी भी विश्लेषण के लिए लग्न प्रांरभिक बिन्दु है और सफलतम भविष्यवाणियों के लिए इसका सूक्ष्म परीक्षण अत्यंत अनिवार्य है। यह न केवल प्रश्न के लिए बल्कि जन्मकालीन फलित ज्योतिष के लिए भी उतना ही सत्य है। विचारणीय सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1. लग्न में उदित होने वाली राशियों के तीन प्रकार हैं- शीर्षोदय, पृष्ठोदय और उभयोदय। शीर्षोदय राशियाँ 3, 5, 6, 7, 8 और 11 हैं। ये सामान्यतया प्रश्न की सफलता यानि कार्यसिद्धि के लिए अनुकूल हैं जबकि लग्न में पृष्ठोदय राशियाँ समस्याओं, बाधाओं और सामान्यतः प्रश्न की असफलता दर्शाती हैं, विशेषतः जब यह एक अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट हों। पृष्ठोदय राशियाँ 1, 2, 4, 9 और 10 हैं। लग्न में एक उभयोदय राशि (जो 12 है) दोनों के बीच मध्यम फल देती है। यह प्रायः शीर्षोदय की भाँति उत्तम मानी जाती है लेकिन परिणाम प्रश्नकर्त्ता के अत्यधिक प्रयासों से संपादित होते हैं। प्रायः मैने ऐसा पाया है कि शीर्षोदय लग्न में सामान्यतया खुशहाली अथवा आशा वाले

प्रश्न होते हैं जबकि पृष्ठोदय लग्न सामान्यतया प्रश्नकर्त्ता के दुःख, निराशा और विपत्तियों वाले प्रश्नों को दर्शाता है।

2. प्रश्न में उदित एक चर लग्न सूचित करता है कि वर्तमान स्थिति परिवर्तित होने वाली है, वर्तमान स्थिति अथवा परिस्थिति में परिर्वतन। उदाहरण के लिए, "क्या मैं विदेश जाऊँगा ?" के प्रश्न के उत्तर में एक चर लग्न परिवर्तन और यात्रा होने को संकेतित करता है। एक प्रश्न क्या रोगी ठीक होगा या नहीं ? पुनः चर लग्न में उसकी बीमारी की वर्तमान स्थिति के परिवर्तित होने और उसके ठीक होने को बताता है। शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट चर लग्न बताता है कि परिवर्तन होने वाला है जबकि अशुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट चर लग्न संकेत करता है कि व्यक्ति की परिवर्तन की मात्र आशाएं है, जो पूरी नहीं होने वालीं। दूसरी ओर एक स्थिर लग्न किसी परिवर्तन अथवा यथा पूर्व स्थिति में कोई बदलाव नहीं सूचित करता जैसे, व्यक्ति विदेश नहीं जाएगा और रोगी ठीक नहीं होगा। प्रश्न के स्वरूप से उसका विश्लेषण भी बदल जाता है। द्विस्वभाव लग्न को दो प्रकार से देखा जा सकता है। प्रथमतः यह देरी और कठिनाइयाँ सूचित करता है। द्वितीय हमें उदित द्विस्वभाव लग्न के अंशों को देखना है। यदि अंश 0° से 15° के बीच हैं तब यह स्थिर की ओर है और देरी और कठिनाइयों के बावजूद यह स्थिर लग्न की भाँति परिणाम देगा। दूसरी ओर यदि द्विस्वभाव लग्न में उदित राशि के अंश 15° से 30° के बीच हैं तब यह चर लग्न के निकटतम है और तदनुसार परिणाम देगा। एक द्विस्वभाव लग्न चाहे वे चर के निकट हों अथवा स्थिर के, सामान्यतः देरी एवं प्रयत्न के बाद कार्यसिद्धि दर्शाता है बशर्ते कि प्रश्न के सम्पूर्ण विश्लेषण में कार्यसिद्धि इंगित हों।

चर, स्थिर अथवा द्विस्वभाव लग्न का विश्लेषण प्रश्न के संदर्भ से परिवर्तित हो जाता है उदाहरणार्थ हम बीमारी अथवा रोगी की रोगमुक्ति के एक प्रश्न को लेते हैं। प्रश्न के प्रारूप पर उसका विश्लेषण निर्भर करेगा, इसे सोदाहरण देखा जा सकता है।

प्रश्न	*चर अथवा स्थिर लग्न*	*परिणाम*
रोगी ठीक होगा कि नहीं	चर	हाँ
वही	स्थिर	नहीं
रोगी मर जाएगा कि नहीं	स्थिर	नहीं
वही	चर	हाँ

ऊपरलिखित उदाहरण में एक ही तरह के प्रश्न को विभिन्न तरीकों से पूछने पर विभिन्न परिणाम मिलते हैं। एक मामले में समान चर लग्न में रोगी ठीक हो जाएगा और दूसरे में रोगी मर जाएगा। इस नियम के सदैव कुछ अपवाद

हैं। एक स्थिर लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं देता तथापि नौकरी की प्राप्ति, एक घर को खरीदने अथवा कुछ ऐसे ही स्थिर कार्यों से संबंधित प्रश्नों में एक स्थिर लग्न सदैव अनुकूल है। इसीलिए एक प्रश्नकुंडली के विश्लेषण में इन सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक उपयोग अत्यावश्यक है क्योंकि एक कुंडली का सम्पूर्ण स्वरूप और उसका विश्लेषण इन पर निर्भर करता है।

3. सामान्यतया लग्न में एक शुभ ग्रह प्रश्न के लिए अच्छा है और लग्न को बल प्रदान करता है जबकि एक अशुभ ग्रह प्रश्न के लिए अच्छा नहीं है। यद्यपि प्रश्नों के कुछ निश्चित प्रकार हैं जहाँ लग्न में एक अशुभ ग्रह अत्यंत वांछनीय है। उदाहरणार्थ विवादों, झगड़ों, न्यायालय के मामलों आदि में लग्न में एक अशुभ ग्रह अनुकूल है। अब हम इस सिद्धांत को विस्तार से समझ लेते हैं।

लग्न प्रश्नकर्त्ता है जबकि 7वाँ भाव प्रतिपक्षी है। विवादों में लग्न में एक शुभ ग्रह 7वे भाव को देखेगा और 7वें भाव को बल प्रदान करेगा। इसी प्रकार 7वें भाव में एक शुभ ग्रह प्रतिपक्षी के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि वहाँ से यह लग्न को देखता है। इसे दूसरे रूप में समझा जा सकता है। ऐसे मामले में, जिसमें लग्न में बृहस्पति है, अपने स्वाभाविक कारकत्व के अनुसार यह व्यक्ति को उदारता की प्रवृत्ति देते हुए अनावश्यक विवादों में नहीं पड़ने देगा। पैतृक संपत्ति पर भाइयों के विवाद में बृहस्पति अपने प्राकृतिक स्वभाव के चलते व्यक्ति स्वयं को यह विश्वास दिला देता है कि आखिरकार यह सम्पति उसके भाइयों को ही मिल रही है, अतः विवाद खड़ा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

लग्न में बैठकर यह बृहस्पति 7वें भाव को देखता है और इस प्रकार प्रतिपक्षी के लिए अनुकूल परिस्थिति निर्मित करता है।

लग्नेश और कार्येश में संबंध

एक प्रश्न की कार्यसिद्धि तभी संभव है जब लग्नेश और कार्येश एक दूसरे से परस्पर संबंधित हों। वस्तुतः, जब एक भावेश दूसरे भावेश से सम्बन्ध स्थापित करे तब दोनों भाव फलदेय हो जाते हैं। लग्नाधिपति को लग्नेश तथा सम्बन्धित कार्य भाव के स्वामी को कार्येश कहा जाता है। लग्नेश और कार्येश के संबंध को निम्नलिखत योगों अथवा युत्तियों के द्वारा देखा जा सकता है।

1. लग्नेश और कार्येश लग्न में स्थित हों।
2. लग्नेश और कार्येश कार्य भाव में स्थित हों।
3. लग्नेश कार्य भाव में हो और कार्येश लग्न में हो, अर्थात दोनों के बीच परिवर्तन हो।
4. लग्नेश लग्न को देखता हो और कार्येश अपने भाव को देखता हो।

5. कार्येश लग्न में स्थित होकर लग्नेश को देखता हो।
6. लग्नेश कार्य भाव में स्थित होकर कार्येश को देखता हो।
7. लग्नेश कार्य भाव को देखता हो और कार्येश लग्न पर दृष्टि डालता हो।
8. लग्नेश कार्येश को देखता हो और कार्येश लग्नेश को देखता हो अर्थात दोनों की परस्पर दृष्टि हो।
9. यदि ऊपरलिखित सभी योगों के अतिरिक्त चंद्रमा की युति हो तो कार्य सिद्धि सुनिश्चित है।
10. लग्नेश और कार्येश एक दूसरे से निकटस्थ ताजिक दृष्टि से युत हों।

एक प्रश्न की सफलता अथवा कार्यसिद्धि

प्रश्न कुंडली में ऐसे योगों की उपस्थिति से सफलता सूचित होती है जो किसी प्रश्न की अनुकूल पूर्ति अथवा कार्यसिद्धि में परिवर्तित हों। इस तथ्य के बावजूद कि ज्योतिषी मूक प्रश्न के सिद्धांतों से प्रश्न की विषयवस्तु को जान जाएगा, तथापि प्रश्नकर्त्ता की इच्छाओं को भी कभी-कभी जान लेना अनिवार्य हो जाता है। प्रश्न इस संदर्भ में विशिष्ट है कि प्रश्नकर्त्ता की इच्छाएँ अवश्य जाननी चाहिए चाहे मूक प्रश्न के सिद्धान्तों से अथवा प्रश्नकर्त्ता से पूछ कर। अब हम एक उदाहरण लेते हैं। एक विशेष कुंडली में हम देखते है कि प्रश्न कुंडली का दसवां भाव सक्रिय हो रहा है और वहां व्यक्ति का स्थानांतरण अथवा कुछ गतिविधि हैं। प्रश्नकर्त्ता पूछता है कि उसकी नौकरी में उसके स्थानांतरण की संभावना है कि नहीं। यह सूचित करना ज्योतिषी के लिए संभव है कि स्थानांतरण है या नहीं। यदि है तो क्या अनुकूल होगा या नहीं। कुछ मामलों में, प्रश्नकर्त्ता से यह पूछना अनिवार्य है कि वह स्थानांतरण चाहता है अथवा नहीं। दूसरे शब्दों में, हम प्रश्नकर्त्ता को अपने मुहँ से प्रश्न बोलने को कहते हैं, यह जानने के लिए कि उसकी इच्छा क्या है और क्या उसकी इच्छाओं की पूर्ति हो रही है या नहीं। प्रश्न का सम्पूर्ण स्वरूप उसकी इच्छाओं के इर्द-गिर्द घूमता है उसी प्रकार जिस प्रकार प्रश्नकुंडली का विश्लेषण प्रश्न की प्रकृति पर बहुत निर्भर करता है। किसी व्यक्ति की इच्छाएं उसकी मानसिक अभिरूचि से जुड़ी होती हैं जिनकी पूर्ति के लिए वह अपने कर्मों द्वारा प्रयास करता है। जब तक मन में ज्वलन्त इच्छा है तब तक उसकी पूर्ति के लिए समान उद्यमशील प्रयासों एवं कर्मों का प्रकटन होता है।

यह ठीक कहा गया है कि जिंदगी में कुछ प्राप्त करने के लिए एक जुनून, एक पागलपन, दीवानगी की हद तक एक अभिलाषा अथवा लालसा होनी चाहिए।

प्रश्नकर्त्ता से सीधा पूछने पर अथवा मूक प्रश्न के सिद्धांतों द्वारा उसकी इच्छा जानने के बाद उसके प्रश्न की कार्यसिद्धि को परखना सरल हो जाता है। कार्य सिद्धि के कुछ आधार भूत नियम इस प्रकार हैं

1. सामान्यतया एक प्रश्न की कार्यसिद्धि के लिए शीर्षोदय लग्न अनुकूल है।

2. लग्न, लग्नेश और चंद्रमा बलवान होने चाहिएं और वह प्रश्न कुंडली में शुभ भावों में स्थित हों।

3. लग्न या तो लग्नेश अथवा शुभ ग्रहों द्वारा, बल प्रदान करने के लिए ग्रहित अथवा दृष्ट होना चाहिए। यह लग्न और कार्य-सिद्धि के लिए शुभ सिद्ध होगा।

4. केद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह हों। अशुभ ग्रह केद्रों और त्रिकोणों के अतिरिक्त भावों में स्थित हों और 8वें भाव तथा 12वें भाव में भी न हों, जहाँ वे प्रतिकूल सिद्ध होते हैं। 3, 6, 11वें भाव में अशुभ ग्रह बहुत अनुकूल है। 8 वाँ भाव और 12वाँ भाव अशुभ प्रभावों और अशुभ दृष्टियों से मुक्त होने चाहिए।

5. केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रहों अथवा किसी भाव के स्वामी की स्थिति को उस भाव के सन्दर्भ में भी देखना चाहिए। उदाहरणार्थ चौथे भाव के परिणाम देखने के लिए चतुर्थेश, चौथे भाव को अवश्य गृहीत करे अथवा देखे और चौथे भाव के अनुकूल परिणामों को प्रदान करने के लिए चौथे भाव से केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह हों।

6. लग्नेश अथवा अन्य भावेश जब शुभ ग्रहों के बीच होते हैं तो शुभ कर्तरी योग कहा जाता है। ये उस भाव के अनुकूल परिणामों को प्रदान करने के लिए बल देते हैं।

7. 3, 5, 7, 11 भावों में शुभ ग्रह अच्छा परिणाम देते हैं। वास्तव में, 11वें भाव में प्रत्येक ग्रह अनुकूल है।

8. शुभ ग्रह द्विपाद राशियों 3, 6, 7 और 11 में स्थित होने चाहिए।

9. छठे भाव में शुभ ग्रह शुभ सिद्ध होता है, क्योंकि यह शत्रुओं पर विजय दिलाता है, जबकि अष्टम भाव और बारहवाँ भाव किसी भी ग्रह से रहित होना चाहिए।

10. उच्च, मित्रक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण राशि में स्थित ग्रह उस भाव के कारकत्वों को बढ़ाता है जहाँ वह स्थित है और अनुकूल परिणाम देता है।

11. उपरोक्त इन सभी योगों में कार्यसिद्धि के लिए किसी भाव में स्थित होने की अपेक्षा ग्रह की दृष्टि अधिक शक्तिशाली मानी गई है।

12. सप्तम भाव अथवा दशम भाव में पद अथवा नियुक्ति के लिए शुभ ग्रह उत्तम हैं।

13. 1, 2, 5वें भावों में शुभ ग्रह, सम्मान और समृद्धि के लिए उत्तम हैं।

14. लग्न में ऊर्ध्वमुख राशि इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनुकूल हैं।

प्रश्न की असफलता

1. पृष्ठोदय लग्न अशुभ है विशेषतः जब एक अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट हो।

2. यदि प्रश्न कुंडली में लग्न, लग्नेश अथवा चंद्रमा बलहीन हैं तो यह प्रश्न की असफलता की ओर ले जाता है।

3. 6, 8, 12वें भाव में लग्नेश की स्थिति प्रश्न की असफलता बताती है। इसी प्रकार लग्न में 6, 8, 12वें भाव के स्वामी की स्थिति भी अनुकूल नहीं है। अब इस सिद्धांत को प्रत्येक भाव से विस्तार से देखते हैं। किसी भाव का स्वामी अपने स्थान से 6, 8,12 अथवा उस भाव से 6. 8, 12वें भाव के स्वामी उस भाव में स्थित हों तो उस भाव से संबंधित कारकत्वों के लिए प्रश्न प्रतिकूल है। लग्नेश अथवा चंद्र के राशीश का 6, 8, 12वें भाव में स्थित होना भी असफलता बताता है। 8वाँ भाव और 12वाँ भाव अशुभ प्रभावों और दृष्टियों से मुक्त होने चाहिए।

4. केवल झगड़ों एवं न्यायालयों के मामलों आदि को छोड़कर लग्न में क्रूर ग्रहों का उदय होना ठीक नहीं है। लग्न में एक अशुभ ग्रह अत्यंत लड़ाकू प्रवृत्ति देता है अतः यह स्थिति विवाद को जीतने के लिए अत्यावश्यक हैं।

5. लग्न अथवा संबंधित भाव से केंद्रों और त्रिकोणों में अशुभ ग्रहों की स्थिति विपत्तियां एवं उस भाव के कारकत्वों के विनाश का संकेत करती हैं। 8वें अथवा 12वें भाव पर अशुभ प्रभावों अथवा दृष्टियों का होना प्रश्न के लिए प्रतिकूल है।

6. लग्न, लग्नेश, कार्य भाव अथवा कार्येश जब अशुभ ग्रहों से घिरे हों तो पाप कर्तरी योग कहा जाता है। यह प्रश्न की असफलता की ओर ले जाता है।

7. किसी भाव में स्थित एक नीच, अस्त अथवा शत्रु ग्रह उस भाव के कारकत्वों का विनाश करता है।

8. ग्रह-युद्ध में अशुभ ग्रह द्वारा पराजित ग्रह भी प्रतिकूल परिणाम देते हैं। दो ग्रह, युद्ध में कहे जाते हैं जब वे एक-दूसरे से 1° अंश भोगांश में हों और कम भोगांश वाला ग्रह जीतता है।

9. अपने उच्च, मूलत्रिकोण अथवा स्वराशि से 7वें भाव में स्थित कोई ग्रह कमजोर है और अच्छे परिणाम देने में असमर्थ है। यहाँ कुछ व्याख्या अपेक्षित है। अपने भाव से सप्तम भाव में स्थित ग्रह अपने भाव पर दृष्टि

डालेगा और उसे बल प्रदान करेगा। परन्तु कमजोर होने के कारण उस भाव के फल देने में सक्षम नहीं होगा जहाँ वह स्थित है।

10. सामान्यतः प्रश्न लग्न में चंद्रमा अनुकूल नहीं है।

11. यदि उदय अथवा आरूढ़ लग्न जन्म लग्न से 8वें भाव में है तब यह अशुभ है।

12. इसी प्रकार, प्रश्न के चन्द्रमा का, जन्म के चंद्र से 8वें भाव में होना अशुभ है।

13. जब लग्नेश और कार्येश में कोई संबंध नहीं है, तब कार्य सिद्धि संभव नहीं है और प्रश्नकर्त्ता की इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती।

14. लग्न में एक तिर्यक मुख (तिरछा देखने वाली) अथवा एक अधोमुख (अधोगामी देखने वाली) राशि अनुकूल नहीं है जब तक वह अपने स्वामी अथवा शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट न हों।

15. लग्नेश अथवा कार्येश की एक वक्री ग्रह से निकट दृष्टि घटना की असफलता दर्शाती है। लग्न पर वक्री ग्रह की दृष्टि रुकावटों को संकेतित करती है।

प्रश्न कुंडली से अरिष्ट का भविष्य कथन

प्रश्न कुंडली में उन ग्रहों को चिह्नित कीजिए जो विपत्तियों की धुरी उत्पन्न करते हैं। किसी कुंडली में कोई विशेष धुरी पीड़ित हो सकती है, उदाहरण के लिए, यह धुरी क्रूर प्रभाव अथवा शत्रु दृष्टि के कारण 5/11, 4/10 इत्यादि हो सकती है।

एक राशि में ग्रह का प्रवेश

प्रश्न कुंडली से देखें कि क्या कोई ग्रह अभी-अभी एक राशि में गया है। इस गोचर का अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिणाम विभिन्न तथ्यों पर निर्भर करेगा जैसे, स्थिति, स्वामित्व अथवा दृष्टि। उदाहरणार्थ एक ग्रह का गोचर और राशि में प्रवेश विपत्ति को सूचित कर सकता है और जब तक वह ग्रह उस राशि में संचरण करेगा तब तक विपत्ति बनी रहेगी और कोई विराम नहीं होगा।

वक्री ग्रह

लग्नेश अथवा कार्येश का एक वक्री ग्रह के साथ निकटतम दृष्टि-संबध प्रश्न की असफलता दर्शाता है जबकि लग्न पर एक वक्री ग्रह की सिर्फ दृष्टि प्रश्नकर्त्ता की बाधाओं को संकेतित करती है। इसी प्रकार किसी भाव में एक वक्री ग्रह उस भाव के कारकत्वों के लिए रुकावटें लाता है। यद्यपि वक्री ग्रहों की भूमिका विस्तार में समझने की आवश्यकता है।

प्रश्न में एक वक्री ग्रह के लग्नेश, कार्येश अथवा किसी भावाधिपति से संबंध को विश्लेषित करने के चार व्यापक वर्ग हो सकते हैं।

वक्री ग्रह	*परिणाम*
एक शुभ भाव के स्वामी के रूप में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह	कार्य की पुनरावृत्ति-उदाहरणार्थ, तरक्की, साक्षात्कार की प्रक्रिया, वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट, अनुदेश आदि की पुनरावृत्ति की जाती है और वहां प्रश्न की अनुकूल पूर्ति है।
एक शुभ भाव के स्वामी के रूप में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह	कार्य की पुनरावृत्ति के अतिरिक्त वहाँ बाधाएं और तनाव हैं और फिर भी वहाँ प्रश्न की अनुकूल पूर्ति है।
6, 8 अथवा 12वें भाव के स्वामी के रूप में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह	कार्य की पुनरावृत्ति के अतिरिक्त, प्रश्न की अनुकूल पूर्ति समस्याओं और बाधाओं के चलते संदिग्ध है।
6, 8, 12वें भाव के स्वामी के रूप में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह	तनाव, बाधाएं अथवा किसी घटना का निराकरण प्रश्न की असफलता दर्शाता है।

कार्य भाव से विश्लेषण

एक प्रश्न कुंडली का कार्य भाव से भी अवश्य विश्लेषण किया जाना चाहिए। परम्परागत ज्योतिषी प्रत्येक भाव को लग्न मानकर बारह कुंडलियां बनाते हैं और केवल तभी वे उस विशेष भाव की कार्य सिद्धि अथवा सफलता के लिए उस भाव की कुंडली का विश्लेषण करते हैं। उस भाव के स्वामी की स्थिति, उस भाव से केन्द्र एवं त्रिकोणों पर शुभ अथवा अशुभ ग्रहों का प्रभाव जैसे सभी सिद्धांत जो जन्म एवं प्रश्न कुंडली के सूक्ष्म निरीक्षण के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे किसी भी भाव के विश्लेषण में भी उपयोग किए जाते हैं।

ताजिक योग

यह उल्लिखित किया जा चुका है कि ताजिक योग भूत, वर्तमान और भविष्य की घटनाओं को सूचित करते हैं। एक कुंडली की सफलता अथवा असफलता विभिन्न प्रकार के कुंडली में बनने वाले अनेक अनुकूल अथवा प्रतिकूल योगों द्वारा उद्घाटित की जाती है। कोई जन्म कुंडली अथवा प्रश्न कुंडली कुछ शुभ और कुछ अशुभ प्रभाव प्रकट करेगी क्योंकि जीवन आरोह और अवरोह, सफलता और असफलता का सम्मिश्रण है। प्रश्न कुंडली में कोई एक ग्रह भी मौन पर्यवेक्षक नहीं है बल्कि प्रत्येक ग्रह ईश्वर के इस अतिनाटकीय रहस्यात्मक खेल की योजना में एक खिलाड़ी है। प्रश्न के

इस अत्यंत रुचिकर क्षेत्र, ताजिक योगों पर एक अलग अध्याय में व्यवस्था की गई है।

ग्रहों के समीपतम अंश

प्रश्न कुंडली में समीपतम अंशों पर ग्रहों की स्थिति से एक बहुत ही पेचीदा सम्बन्ध स्थापित होता है जो बहुत कुछ दर्शाता है। समीपतम अंश और ताजिक योगों के प्रकार से एवं ग्रहों के कारकत्व, उनकी स्थिति, स्वामित्व एवं दृष्टि से वर्तमान, भूत एवं भविष्य का अनुमान होता है। यदि कोई ताजिक दृष्टि न हो अतः ताजिक सम्बन्ध न बने तो भी किसी नक्त या यमया योग से सम्बन्ध उत्पन्न हो ही जाता है। जब ऐसा कोई सम्बन्ध भी न हो तो भी समीपतम अंश एक ऐसा सह सम्बन्ध उत्पन्न करते हैं जिसके सूक्ष्म परीक्षण की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण का प्रश्न में घटनाओं के समय पर अत्यधिक प्रभाव है। इस शोध आधारित क्षेत्र को "घटनाओं का समय" नामक अध्याय में विस्तार से विवेचित किया गया है।

राहु और केतु

ज्योतिष की शास्त्रीय पुस्तकें प्रश्न कुंडली में राहु और केतु की भूमिका का विश्लेषण करने के विषय में पूर्णतया मौन हैं। जब राहु और केतु लग्नेश अथवा कार्येश के साथ स्थिति अथवा अंशों की निकटता द्वारा संबंध बना लेते हैं तब यह सामान्यतः प्रतिकूल परिमाण देता है और प्रश्न की असफलता दर्शाता है। राहु और केतु की भूमिका के संबंध में सभी अध्यायों में उदाहरण सहित विवेचन किया गया है।

नक्षत्र

राहु और केतु की भाँति, शास्त्रीय पुस्तकें प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में नक्षत्रों की भूमिका के विषय में भी मौन हैं। लग्न अथवा किसी ग्रह पर पड़ने वाले प्रमुख प्रभाव में एक प्रभाव उसके नक्षत्र स्वामी, उसके स्थापन, युति अथवा दृष्टियों का भी है।

नक्षत्रों के प्रयोग की उपेक्षा नहीं की जा सकती भले ही यह जन्म कुंडली हो अथवा प्रश्न कुंडली। इस प्रकार विश्लेषण करने का कोई प्रयास वैसा ही होगा जैसे बिना आत्मा के शरीर। नये संदर्भों का वास्तविक, सूक्ष्म और अदृश्य बल तभी उभरता है जब कुंडली के विश्लेषण में नक्षत्रों को समाहित किया जाए। इन सभी विधियों को सम्मिलित करने से प्रश्न कुंडली बहुत रोचक, विश्वसनीय और रोमांचक हो जाती है।

जीव, मृत्यु और रोग सूत्र

महान शास्त्रीय ग्रंथ "प्रश्न मार्ग", सूत्र पर आधारित प्रश्न के विश्लेषण के एक दूसरे आयाम को उद्घाटित करता है।

1. सामान्य सूत्र : उदय लग्न अथवा आरूढ़ लग्न से गणना करें।

उदय लग्न/आरूढ़	*बीमारी में*	*कार्य सिद्धि में*	*आयु में*
दोनों चर अथवा एक स्थिर, दूसरा द्विस्वभाव	जीव	सफलता	पूर्ण आयु
दोनों स्थिर अथवा एक चर, दूसरा द्विस्वभाव	मृत्यु	असफलता	अल्पायु
दोनों द्विस्वभाव अथवा एक चर, दूसरा स्थिर	रोग	बाधाएँ शोक	मध्यम आयु

2. अधिपति सूत्रः उदय लग्न और आरूढ़ लग्न केस्वामियों से गणना करें।

समान अथवा परस्पर मित्र	*जीव*	*सफलता*
शत्रु	मृत्यु	असफलता
तटस्थ	रोग	बाधाएँ

दो ग्रहों की मित्रता को निश्चित करने में पंचधा मैत्री प्रयोग की जा सकती है।

मित्र	+	मित्र,	मित्र	+	तटस्थ,	तटस्थ	+	मित्र	=	जीव
तटस्थ	+	तटस्थ,	मित्र	+	शत्रु,	शत्रु	+	मित्र	=	रोग
शत्रु	+	शत्रु,	शत्रु	+	तटस्थ,	तटस्थ	+	शत्रु	=	मृत्यु

3. नवांश सूत्र : इसकी गणना लग्न और आरुढ़ के नवांश से की जाती है। नवांश लग्न के स्वामी और आरुढ़ नवांश के स्वामी की तुलना अधिपति सूत्र की भांति करें। आरुढ़ नवांश को प्राप्त करने के लिए आरुढ़ की गणना 108 संख्या से करें जिसे अध्याय 2 में वर्णित किया गया है।

4. नक्षत्र सूत्र : उदय लग्न के नक्षत्र और जन्म नक्षत्र से गणना करें। प्रश्न कुंडली के उदय लग्न नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनें और उसे 3 की संख्या से विभाजित करें, यदि :

शेषफल 1	जीव	सफलता
शेषफल 2	रोग	बाधाएँ
शेषफल 3	मृत्यु	असफलता

5. महासूत्र : आरूढ़ लग्न राशि और उससे दशम विचारणीय है।

दोनों चंद्र, यानि रात्रि बली	जीव	सफलता
दोनों सौर, यानि दिवा बली	मृत्यु	असफलता
एक चंद्र और दूसरा सौर	रोग	बाधाएँ

दोनों चंद्र या रात्रि बली राशियां हों, यह मेष या कर्क आरूढ़ लग्न होने पर ही संभव है तथा दोनों सौर या दिवा बली राशियाँ हों, यह वृश्चिक या कुंभ आरूढ़ लग्न होने पर ही संभव है।

प्रारंभिक समय में सभी शास्त्रीय ग्रंथ सूत्र के रूप में लिखे गए थे जिनके विस्तार से ज्योतिष के नियम प्राप्त होते थे। यहाँ तक कि ज्योतिषीय शिक्षा इन सूत्रों को रटाकर, प्रदान की जाती थी। इन सूत्रों की नामावली - जीव, रोग और मृत्यु कोई शाब्दिक अर्थ नहीं रखती। बीमारी से संबंधित प्रश्नों में इसका अर्थ बीमारी, कष्ट और मृत्यु से मुक्ति हो सकता है। लेकिन सामान्य प्रश्नों में वे क्रमशः इच्छाओं की पूर्ति और समृद्धि, बाधाएं और प्रश्न की असफलता दर्शाते है। नक्षत्र और अधिपति सूत्र वर्तमान को सूचित करते हैं, सामान्य सूत्र, भूत को और नवांश तथा महासूत्र भविष्य को सूचित करते हैं।

सूत्रों के और वर्गीकरण तथा बीमारी से संबंधित प्रश्नों में उनकी उपयुक्तता का "अस्वस्थता, बीमारी और रोगी का स्वास्थ्य लाभ" वाले अध्याय में विवेचन किया गया है।

4
षट्पंचासिका-संक्षेप में

इसवी सन् 7वीं शताब्दी में पृथुयशस द्वारा 56 श्लोकों वाली षट्पंचासिका लिखी गई। पृथुयशस अपने समय के महान खगोल शास्त्री/ज्योतिषी और ज्योतिष की कुछ श्रेष्ठ पुस्तकों 'बृहत संहिता' तथा 'बृहत जातक' के रचयिता वराहमिहिर के यशस्वी पुत्र थे। वराहमिहिर विक्रमादित्य के दरबार के नव रत्नों में से एक थे। अपने पिता की भांति, पृथुयशस ने ज्योतिष की मशाल को आगे बढ़ाया और प्रश्न में विशिष्टता प्राप्त की। पृथुयशस नाम लेखक का उपयुक्त चित्र खींचता है। इसका अक्षरशः अर्थ है - यश अथवा प्रसिद्धि, जो संपूर्ण पृथ्वी या जगत में फैल जाए, पृथ्वी+यश, और इसीलिए लेखक को प्रश्न का सर्वप्रथम विद्वान ठीक ही कहा जाता है जिसकी प्रसिद्धि दूर और विस्तृत रूप से फैली।

षट्पंचासिका के 56 श्लोक प्रश्न शास्त्र के संपूर्ण स्वरूप को एक बहुत व्यापक और सुस्पष्ट रूप में समेटे हुए हैं और इसके अतिरिक्त बहुत गहरा अर्थ सम्प्रेषित करते हैं। प्रश्न पर हुए परवर्ती सभी कार्यों में षट्पंचासिका से व्यापक मात्रा में सहायता ली गई। पृथुयशस के पुत्र भट्टोत्पल द्वारा रचित 'प्रश्न ज्ञान' भी प्रश्न पर एक महान कृति है, लेकिन यह अधिकांशतः षट्पंचासिका पर ही आधारित है। वास्तव में, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज भी प्रश्न अधिकांशतः षट्पंचासिका पर ही आधारित है तथा इसीलिए इस कार्य का संदर्भ दिए बिना प्रश्न पर लिखने का कोई प्रयास अपने ज्ञान और तत्व में पूर्ण नहीं होगा। मैं, इसलिये दो दृष्टिकोणों से, संक्षेप में षट्पंचासिका प्रस्तुत करता हूँ। प्रथम भाग श्लोकों के संदर्भ के साथ संक्षिप्त टिप्पणी को सूचीबद्ध करता है। दूसरा भाग विभिन्न शीर्षकों अथवा विधियों से संबंधित है और श्लोकों के अन्योन्य संदर्भों को प्रदान करता है।

अध्याय I – *होरा अध्याय* – सामान्य सिद्धांत

श्लोक जिससे संबंधित है	*टिप्पणियाँ*
1. प्रार्थना	अपने इष्ट भगवान सूर्य को शिरोनत प्रणाम करके संसार के कल्याण के लिए यह कार्य प्रस्तुत है।
2. स्थानांतरण, च्युति, व्यवधान अथवा स्थिति से गिरावट	लग्न में चर राशि और लग्न पर शुभ प्रभाव। यदि लग्न में अशुभ प्रभाव से मुक्त स्थिर राशि है तब कोई च्युति, स्थान-परिवर्तन अथवा स्थान से गिरावट नहीं
समृद्धि, सफलता	4 भाव में शुभ ग्रह - सफलता और समृद्धि।
संचरण, गमन या यात्रा	10 भाव से गमन अथवा विदेश यात्रा देखें। 10 भाव में चर राशि और क्रूर ग्रह यात्रा देते हैं अन्यथा उनकी अनुपस्थिति से नहीं समझें।
यात्री की वापसी	शुभ प्रभाव के साथ 7 भाव में चर राशि वापसी देती है, स्थिर लग्न अथवा अशुभ प्रभाव वापसी नहीं देते।
3. भाव का बलाबल	यदि भाव अपने स्वामी अथवा शुभ ग्रह से गृहीत हो तो भाव को बल मिलता है। अशुभ ग्रह विनाश का कारण हैं। छठे भाव में शुभ ग्रह शत्रु का विनाश करते हैं 8वें अथवा 12वें भाव में कोई ग्रह अच्छा नहीं है।
4. सफलता अथवा असफलता	शीर्षोदय लग्न अथवा नवांश, अथवा लग्न में एक शुभ ग्रह-सफलता। पृष्ठोदय लग्न अथवा नवांश, अथवा लग्न में एक अशुभ ग्रह - असफलता। मिश्रित - कठिनाई के बाद सफलता। शीर्षोदय राशियाँ - 3, 5, 6, 7, 8 और 11, पृष्ठोदय राशियाँ 1, 2, 4, 9, 10 और उभयोदय राशि 12 ।
5. लापता वस्तु की पुनः प्राप्ति	लग्न में शुभ चंद्रमा बृहस्पति अथवा शुक्र द्वारा दृष्ट हो। 11वें भाव में बलवान शुभ ग्रह। चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक शुभ है।
6. प्रश्न की विषयवस्तु	अपने नवांश में स्थित ग्रह 1, 5, 9वें भाव में अपने नवांश को देखें - *धातु* दूसरे के नवांश में स्थित ग्रह 1, 5, 9वें भाव में अपने नवांश को देखें - *जीव* दूसरे के नवांश में स्थित ग्रह 1, 5, 9वें भाव में दूसरे के नवांश को देखें - *मूल*
7. प्रश्न की विषयवस्तु	लग्न में उदित विषम राशि में नौ नवांश क्रम से धातु, मूल और जीव को तथा लग्न में उदित सम राशि में नौ क्रम से जीवन, मूल और धातु को संकेतित करते हैं।

अध्याय II – *गम-आगम अध्याय* – यात्रा और वापसी

श्लोक जिससे संबंधित है	*टिप्पणियाँ*
1. उदित स्थिर राशि	न पद अथवा स्थान की प्राप्ति, न यात्रा न वापसी। न मृत्यु और न ही संपत्ति की हानि। न उपचार और न ही पराजय वर्तमान पद अथवा स्थिति बरकरार रहेगी।
2. उदित चर अथवा द्विस्वभाव राशि	लग्न में चर राशि, उपरोक्त का विपरीत होगा। द्विस्वभाव राशि में सम्मिश्रित परिणाम होगें।
सफलता अथवा असफलता	लग्न अथवा चंद्रमा पर शुभ दृष्टि सफलता की ओर तथा अशुभ दृष्टि असफलता की ओर ले जाती है।
3. शत्रु की हार और वापसी	5वें और 6ठे भाव में क्रूर ग्रह हों तो शत्रु यात्रा के मध्य से वापस लौटता है। 4थे भाव में क्रूर ग्रह होने से शत्रु पराजय से पीड़ित होकर वापस लौटता है।
4. शत्रु की पराजय	चतुर्थ भाव में 4, 8, 12 और 11वीं राशि हो - शत्रु की हार। जब चतुर्थ भाव में 1, 2, 5 या 9वीं राशि का उत्तरार्ध हो तो शत्रु अपने पांव भाग खड़ा होता है।
5. यात्रा प्रारंभ करने वाले व्यक्ति की सफलता अथवा असफलता	शुभ ग्रह के साथ चर लग्न - सफलता अशुभ ग्रह के साथ चर लग्न - असफलता अशुभ ग्रह के साथ स्थिर लग्न यदि स्वक्षेत्री, उच्च, मूलत्रिकोण अथवा मित्रक्षेत्री राशि में हो तब सफलता, नहीं तो असफलता।
6. शत्रु आएगा कि नहीं	चर लग्न, स्थिर राशि में चंद्रमा - शत्रु नहीं आएगा। स्थिर लग्न, चर राशि में चंद्रमा - शत्रु आएगा।
7. शत्रु की वापसी	स्थिर लग्न, द्विस्वभाव राशि में चंद्रमा, आगे बढ़ा हुआ शत्रु वापस लौट जाएगा।
8. शत्रु की वापसी	द्विस्वभाव लग्न, चर राशि में चंद्रमा-शत्रु आधे रास्ते से लौट जाएगा।
9. युद्ध के लिए अपने राजा का प्रस्थान	सूर्य, शनि, बुध अथवा शुक्र में से किसी भी ग्रह द्वारा गृहीत चर लग्न - अपने राजा का युद्ध के लिए प्रस्थान। यदि इनमें से कोई ग्रह (सूर्य के अतिरिक्त) वक्री हो तो राजा प्रस्थान नहीं करेगा।
10. प्रस्थान अथवा आगमन की कोई भविष्यवाणी नहीं	बृहस्पति अथवा शनि द्वारा दृष्ट स्थिर लग्न - कोई भविष्यवाणी नहीं।
शत्रु के साथ द्वंद्व	जब उपरोक्त योग में 3, 5, 6 भावों में अशुभ ग्रह हों - द्वंद्व

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
शत्रु का पीछे हटना	जब उपरोक्त योग में 4थे भाव में अशुभ ग्रह हों - शत्रु पीछे हटेगा।
11. शत्रु की सेना का आगमन	4थे भाव में सूर्य और चंद्र - शत्रु नहीं आएगा। 4थे भाव में बुध, शुक्र, बृहस्पति - शत्रु शीघ्र ही आएगा।
12. शत्रु का पीछे हटना	लग्न अथवा 4थे भाव में 1, 2, 5, 9 राशि उदित हो - शत्रु पीछे हटेगा
13. क्या शत्रु आएगा ?	शनि अथवा बृहस्पति से युत स्थिर लग्न-शत्रु युद्ध के लिये प्रस्थान किए जाने के बावजूद आगे नहीं बढ़ पाएगा। सूर्य अथवा बृहस्पति से युत चर लग्न - शत्रु आएगा।
14. यात्री/सेना की वापसी का समय	लग्न से बलवान ग्रह की स्थिति तक गिनें। उतने महीनों में युद्ध अथवा विदेश गया व्यक्ति लौट आएगा।
15. यात्री/सेना की वापसी का समय	उपर्युक्त योग में, जब चर नवांश में बलवान ग्रह है तो उतने महीनों में, स्थिर नवांश में महीनों को दुगुना तथा द्विस्वभाव नवांश में महीनों का तिगुना करें।
16. यात्री/सेना की वापसी का समय	जब सप्तमेश गोचर में वक्री होगा - तब यात्री लौटेगा।
17. यात्री/सेना की वापसी	लग्न से चंद्र जितना दूर है उतने महीनों में, बशर्ते लग्न और चन्द्र के बीच कोई मध्यवर्ती ग्रह न हो।

अध्याय III – *जय-पराजय अध्याय* – विजय अथवा पराजय

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
1. विजय और पराजय	यदि बाहर से आक्रमण हो तो 1, 7, 10वें भाव में शुभ ग्रह शासक की विजय बताते हैं। 9वें भाव में मंगल और शनि - पूर्ण रूप से पराजय। 9वें भाव में बुध, बृहस्पति, शुक्र - विजय।
2. नागरिकों को संकेतित करने वाले भाव	3रे भाव से 8वें भाव तक-उस नगर अथवा देश के नागरिक जिस पर आक्रमण किया गया हो। 9वें भाव से 2रे भाव तक - आक्रमणकारी
विजय अथवा पराजय	3रे भाव से 8वें भाव तक शुभ ग्रह - नगर के शासक की विजय। 9वें भाव से 2रे भाव तक शुभ ग्रह - आक्रमणकारियों के लिए विजय। क्रूर ग्रहों से इसके विपरीत।
3. युद्ध अथवा शांति संधि	11, 12 अथवा प्रथम भाव में द्विपाद राशियों में (3, 6, 7, 9 का पूर्वार्द्ध, 11) शुभ ग्रह - शांति संधि। 11, 12, 1 में द्विस्वभाव राशियों में क्रूर ग्रह - युद्ध।

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
4. युद्ध अथवा शांति संधि	केंद्र में द्विपाद राशियों में शुभ ग्रह, शुभ ग्रहों से दृष्ट हों - शांति। केंद्र में अशुभ ग्रह, अशुभ ग्रहों से दृष्ट हों - युद्ध
5. यात्री अथवा सेना की वापसी	दूसरे अथवा तीसरे भाव में बृहस्पति अथवा शुक्र - शीघ्र वापसी।

अध्याय IV – *शुभाशुभ लक्षण अध्याय* – शुभ और अशुभ लक्षण

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
1. प्रश्न में इच्छाओं की पूर्ति	केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह, 8वें भाव को छोड़कर, अन्य भावों में क्रूर ग्रह - इच्छाओं की पूर्ति अन्यथा नहीं।
2. वही	3, 5, 7, 11वें भाव में शुभ ग्रह - प्राप्तियाँ। लग्न में द्विपाद राशियां (3, 6, 7, 9 का पूर्वार्द्ध 11) प्राप्तियों और प्रश्न की पूर्ति के लिए अनुकूल।
3. पद, नियुक्ति, सम्मान और समृद्धि की प्राप्तियाँ	7वें और 10वें भाव में शुभ ग्रह - नियुक्ति अथवा पद 1, 2, 5वें भाव में शुभ ग्रह - सम्मान और समृद्धि 11, 12वें भाव में क्रूर ग्रह - प्रतिकूलता लग्न में क्रूर चंद्र अशुभ 10वें भाव में क्रूर चंद्र - शुभ
4. लाभ अथवा हानि, सफलता अथवा असफलता	2, 3, 6, 7, 11वें भाव में बृहस्पति द्वारा दृष्ट चंद्र - एक स्त्री की सहायता से लाभ और प्रसन्नता। 1, 3, 5, 8, 9वें भाव में क्रूर ग्रह - हानि, असफलता, डर 1, 3, 5, 8, 9वें भाव में शुभ ग्रह - लाभ, सफलता
5. रोगी का स्वास्थ्य	1, 5, 7, 8वें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट शुभ ग्रह और 3, 6, 10, 11वें भाव (उपचय) में चंद्रमा - रोगी का ठीक होना।

अध्याय V – *प्रवास चिंता अध्याय* – यात्री अथवा विदेश गया व्यक्ति

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
1. यात्री की वापसी	2, 3, 5वें भाव में सभी ग्रह अथवा शुभ ग्रह - लापता वस्तु की पुनः प्राप्ति अथवा शीघ्र वापसी
2. यात्री की शीघ्र वापसी	6ठे भाव अथवा 7वें भाव में कोई ग्रह और केन्द्र में बृहस्पति अथवा त्रिकोण में बुध और शुक्र

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
3. लाभ के साथ शीघ्र वापसी	क्रूर ग्रहों से रहित केन्द्र और 8वें भाव में चंद्रमा
4. सजा और यंत्रणा	क्रूर ग्रहों से दृष्ट पृष्ठोदय लग्न
आगे अन्य देश को जाना	पृष्ठोदय लग्न, 3रे भाव में बिना शुभ प्रभाव के क्रूर ग्रह
चोरों द्वारा लूटा जाना	पृष्ठोदय लग्न और 6ठे भाव में बिना किसी शुभ प्रभाव के क्रूर ग्रह
5. वापसी का समय	लग्न से पहले ग्रह द्वारा गृहीत राशि तक गिनें। यदि ग्रह वक्री है तो उतने महीनों में, यदि ग्रह मार्गी है तो महीनों को 12 से गुणा करें।

अध्याय VI – नष्ट प्राप्त अध्याय – लापता वस्तु की पुनः प्राप्ति

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
1. अपने पारिवारिक सदस्य द्वारा चोरी	स्थिर लग्न अथवा नवांश अथवा वर्गोत्तम लग्न - अपने पारिवारिक सदस्य द्वारा चोरी
2. लापता वस्तु का स्थान (द्रेष्काण से)	लग्न में प्रथम द्रेष्काण - घर के अगले भाग में दूसरा द्रेष्काण - मध्य भाग तीसरा द्रेष्काण - पिछला भाग
3. चोरी हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति	निम्न में से एक 1 – लग्न में बलवान चंद्र 2 – शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत अथवा दृष्ट शीर्षोदय लग्न 3 – एक बलवान शुभ ग्रह द्वारा गृहीत 11वाँ भाव
4. चोरी हुई वस्तु की दिशा	केंद्र में सबसे बलवान ग्रह से निर्धारित करें। पूर्व से प्रारंभ होने वाली 8 दिशाओं को सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र, बुध, बृहस्पति द्वारा सूचित किया गया है। यदि केंद्र में कोई ग्रह नहीं है तब लग्न राशि से मेष, वृष क्रम से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर आदि दिशा होगी।
चोरी हुई वस्तु की दूरी	लग्न 5 नवांश तक - वस्तु लगभग 1 योजन अथवा 14 किलोमीटर के घेरे में है। लग्न 5 नवांश से आगे - प्रत्येक नवांश के लिए 1 योजन जोड़ें।
5.(i) चोरी हुई वस्तु का प्रकार	अध्याय 1 के अनुसार उदित नवांश से षट्पंचासिका का श्लोक 6, 7 - विषम लग्न में नौ नवांश क्रमशः धातु, मूल, जीव। सम लग्न में नौ नवांश क्रमशः जीव, मूल, धातु।
वस्तु का रंग	क्रम से लग्न में विभिन्न राशियाँ लाल, सफेद, हरा, गुलाबी, सफेद अथवा धूमिल, चितकबरा, काला, पीला,

	श्लोक जिससे संबंधित है	*टिप्पणियाँ*
		मिश्रित, चितकबरा, गहरा भूरा और हल्का नीला।
	वस्तु का आकार	नवांश में उदित राशि से 1, 2, 11, 12 - लघु 3, 4, 9, 10 - मध्यम 5, 6, 7, 8 - दीर्घ
	वस्तु का स्पर्श	यदि उदित नवांश का स्वामी बलवान - कड़ी वस्तु उदित नवांश का स्वामी बलहीन - कोमल वस्तु नोट - यहाँ उदित नवांश का स्वामी प्रश्न चार्ट में देखें।
	वस्तु का नाश	यदि उदित नवांश का स्वामी नीच है अथवा प्रश्न कुंडली में 7वें भाव में है - वस्तु सदा के लिए खो गई
(ii)	चोर का रूप रंग अथवा विवरण	उदित द्रेष्काण से देखें। चोर का स्वरूप जानने के लिए भचक्र के 36 द्रेष्काणों से संबंधित अध्याय "द्रेष्काण स्वरूप" को देखें।
(iii)	चोरी का समय	लग्न में उदित राशि से देखें - 1, 2, 3, 4, 9, 10 रात्रिबली राशियाँ है, अतः चोरी रात में हुई। 5, 6, 7, 8, 11 दिनबली राशियाँ है अतः चोरी दिन के समय हुई। 12 राशि सर्व बली है।
(iv)	चोरी हुई वस्तु की दिशा	1, 5, 9 राशियाँ - पूर्व 2, 6, 10 राशियाँ - दक्षिण 3, 7, 11 राशियाँ - पश्चिम 4, 8, 12 राशियाँ - उत्तर
(v)	चोरी हुई वस्तु रखने के स्थान का विवरण	उदित लग्न के कारकत्वों पर निर्भर करता है। (भचक्र की राशियों के कारकत्वों का "ज्योतिष का परिचय" अध्याय में निर्देश किया गया है।
(vi)	चोर की आयु	यदि लग्नेश सूर्य है - 50 से 60 वर्ष का वृद्ध चंद्र - 3 से 5 वर्ष का विल्कुल छोटा बच्चा (कुछ इसे 50 से 60 वर्ष का वृद्ध मानते हैं) मंगल - 10 से 12 वर्ष का लड़का बुध - 16 से 20 वर्ष का एक किशोर बृहस्पति - 35 से 50 वर्ष का व्यस्क शुक्र - 20 से 35 वर्ष का युवा शनि - 70 से 80 वर्ष का अत्यंत वृद्ध
(vii)	चोर की जाति	लग्नेश द्वारा संकेतित जाति से - बृहस्पति और शुक्र - ब्राह्मण मंगल और सूर्य - क्षत्रिय चंद्र - वैश्य, बुध - शूद्र, शनि - चांडाल

अध्याय VII – *मिश्र अध्याय* – विविध

श्लोक जिससे संबंधित है		*टिप्पणियाँ*
1.	नर अथवा मादा बच्चा	लग्न के अतिरिक्त विषम भावों में शनि - नर बालक सम भावों में शनि - मादा बालक
	विवाह अथवा स्त्री की प्राप्ति	सम भावों में शनि - हाँ विषम भावों में शनि - नहीं
2.	विवाह	1. 3, 5, 6, 7 अथवा 11वें भाव में बृहस्पति, सूर्य अथवा बुध द्वारा दृष्ट चंद्रमा 2. केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह
3.	वर्षा के मौसम में वर्षा का आगमन	1. चंद्र और सूर्य से 7वें भाव में क्रमशः शुक्र और शनि 2. 2, 3, 4 अथवा 8वें भाव में शुक्र और शनि
4.	वर्षा	1. लग्न में 4, 10, 11, 12 जलीय राशियों में चंद्रमा। 2. शुक्ल पक्ष में 1, 2, 3, 4, 7, 10वें भाव में जलीय राशियों में शुभ ग्रह।
5.	नर अथवा मादा बच्चा	वर्गों के लग्न में बली पुरूष राशियां, पुरूष ग्रहों द्वारा दृष्ट - नर बालक। वर्गों के लग्न में स्त्री राशियां, स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट - मादा बालक। विषम राशियाँ पुरूष तथा सम राशियाँ स्त्री राशियाँ मानी जाती हैं। राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वाद्वशांश, और त्रिंशांश षडवर्ग कहलाते हैं। लग्न बलवान होता है जब लग्नेश, बृहस्पति अथवा बुध से युत या दृष्ट हो। सूर्य, मंगल, बृहस्पति पुरुष ग्रह है। चंद्र, शुक्र स्त्री ग्रह हैं तथा बुध, शनि सम या तटस्थ ग्रह हैं।
	स्त्री गर्भवती	लग्न में बुध।
6.	प्रश्न की विषयवस्तु	लग्न पर दृष्टि डालता हुआ ग्रह युवा चन्द्र अथवा बुध - एक लड़की के बारे में शनि - वृद्ध स्त्री सूर्य अथवा बृहस्पति - एक स्त्री, जिसका हाल ही में प्रसव हुआ है मंगल अथवा शुक्र - कठोर, रूक्ष अथवा सुडौल स्त्री पुरूषों के लिए भी समान परिणाम हैं शुक्ल पक्ष की 1 से 10 तिथि तक चंद्रमा युवा है। शुक्ल पक्ष की 11वीं से कृष्ण पक्ष की 5वीं तिथि तक चंद्रमा व्यस्क है और कृष्ण पक्ष की 6ठी तिथि से अमावस्या तक चंद्रमा वृद्ध है।

श्लोक जिससे संबंधित है	टिप्पणियाँ
7&8. प्रश्न की विषयवस्तु अथवा वह जिसके बारे में प्रश्नकर्ता वर्तमान में सोच रहा है	एक बली ग्रह लग्न में - किसी करीबी व्यक्ति के बारे में 3सरे भाव में - अपने भाई-बहन के बारे में 4थे भाव में - माँ अथवा बहिन 6वें भाव में - शत्रु 7वें भाव में - पत्नी 9वें भाव में - ऐसे व्यक्ति के बारे में जो किसी शुभ कार्य में जुटा है 10वें भाव में - अध्यापक अथवा गुरू। यदि नवांश का स्वामी लग्न में स्थित हो तो अपने बारे में यदि नवांश का स्वामी प्रश्न लग्नेश का मित्र है तो मित्र के बारे में यदि नवांश का स्वामी प्रश्न लग्नेश का शत्रु है तो शत्रु के बारे में यदि उपरोक्त में दो या अधिक ग्रह हों तब उनमें से बलवान से निर्णय करें।
9. विदेश गये व्यक्ति और उसकी वापसी के बारे मे	चर लग्न और नवांश 6, 7, 8, 9वां उदित नवांश - विदेश गये व्यक्ति के बारे में प्रश्न यदि ग्रह 7वें भाव से 6ठे भाव में पदावनत और वक्री अवस्था में है तब कोई वापसी नहीं। यदि पदावनत ग्रह मार्गी है तब वापसी। ऐसा ग्रह जो वक्री अवस्था में चलते हुये पिछले भाव में पदावनत हो जाये उसे हीन ग्रह कहते हैं।
10. किस प्रकार की स्त्री से मिलन	7वें भाव में स्थित ग्रह से सूर्य, शुक्र अथवा मंगल - दूसरे आदमी की पत्नी बृहस्पति - अपनी पत्नी बुध अथवा चंद्र - वेश्या शनि - निम्न जाति की स्त्री चंद्रमा की आयु से स्त्री की आयु की गणना करें (जो उपरोक्त 6ठे श्लोक में व्याख्यायित है)
11. यात्री की स्थिति	9वें भाव में बिना किसी शुभ प्रभाव के शनि एक क्रूर ग्रह के साथ - यात्री बीमार 8वें भाव में उपरोक्त के साथ शनि - यात्री की मृत्यु
12. पिता जो कि विदेश में है, उसी स्थान पर है कि नहीं	8वें भाव में शुभ ग्रहों से युत सूर्य - देश छोड़ दिया और दूसरे देश चला गया। अन्यथा वह उसी स्थान पर है।

षट्पंचासिका की अनुक्रमणिका

5
ताजिक योग और विश्लेषण की विधियां

प्रश्न कुंडली उतनी प्राचीन नहीं है जितना कि परम्परागत ज्योतिष परन्तु यह उन व्यक्तियों के लिए विकसित हुई प्रतीत होती है जिनका जन्म विवरण या तो अनुपलब्ध था या गलत था। लेकिन प्रश्न का वास्तविक विकास 1500 से 2000 वर्ष पूर्व हुआ प्रतीत होता है जब राजा अपनी जीत, राज्य और सिंहासन की सफलता आदि के परिणाम जानना चाहते थे। यह कहना ठीक होगा कि प्रश्न पर सुव्यवस्थित लेखन 1500 वर्ष पूर्व से प्राप्त है जिसका कारण यह हो सकता है कि इस समय से पहले की लेखन-सामग्रियां ही उपलब्ध नहीं हैं। उपनिषद धार्मिक चिंतन का लोकसाहित्य है और पीढ़ियों से हमें नेक जीवन का मार्ग दिखा रहा है। इसी प्रकार पारिवारिक परम्परा में फले पनपे ज्योतिष का निश्चित रूप तभी सम्भव हो सका जब किताबों का सुव्यवस्थित लेखन तथा श्लोकों का सार संग्रह प्रारम्भ हुआ। इस ज्ञान में तब और वृद्धि हुई जब परवर्ती पीढ़ियों ने अपने अनुभव को जोड़कर इन लेखों पर टीकाएं लिखीं तथा अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

सम्भवतः प्रश्न के विकास का प्रमुख युग 1500 वर्ष पहले के लगभग हो सकता है जब वराहमिहिर के यशस्वी पुत्र पृथुयशस ने 56 श्लोकों का सार लिखा, जिसे षट्पंचासिका कहा गया। भट्टोत्पल द्वारा रचित प्रश्न ज्ञान, कृष्णीयम द्वारा रचित दशाध्यायी एवं अन्य परवर्ती पुस्तकें जैसे प्रश्नमार्ग, प्रश्न चंडेश्वर, प्रश्न चिंतामणि, प्रश्न शिरोमणि आदि ने उस ज्ञान में योग दिया।

प्रश्न के विकास के बारे में अति सनसनीखेज तथ्य यह है कि वर्षफल अथवा वार्षिक जन्मपत्री का विकास समकालीन तथा परस्पर सम्बद्ध रहा होगा। राजाओं के दरबार में सदैव एक राज ज्योतिषी होता था जो पूर्ण रूप से राजा की समस्याओं और राज्य को ज्योतिषीय परामर्श देने में समर्पित था। इस संकेंद्रित प्रयास से ही प्रश्न और वर्षफल प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त

हुआ। प्राचीन भारत की उत्तर और उत्तर-पश्चिम सीमाओं पर हमले इस तथ्य के लिए उत्तरदायी हैं कि यह दोहरा ज्ञान केवल देश के उत्तरी क्षेत्र में विकसित हुआ। इसके विस्मयकारी विशुद्ध फलित के कारण आक्रमणकारी सैनिक इस ज्ञान से अवगत हो गये और उनके माध्यम से यह ज्ञान भूमध्य सागरीय देशों, फारस, ईरान, अफगानिस्तान आदि में पहुंचा। वहाँ वर्षफल और विकसित हुआ और अनेक ताज़िक योगों के परिचय के साथ परिष्कृत हुआ। यह परिष्कृत पाठान्तर भारत वापस आया और इसलिए हम फारसी और उर्दू की पारिभाषिक शब्दावली को ताजिक योगों में देखते हैं, जैसे इकबाल, इशराफ, रद्द, इत्थसाल आदि, जो आज वर्षफल में सामान्यतः प्रयोग किए जाते हैं।

इस वर्णन का यह अर्थ कदापि नहीं है कि ताजिक योगों के बिना प्रश्न में किसी प्रकार की कमी थी। प्रश्न पर शास्त्रीय ग्रंथों में उल्लिखित पाराशरी सिद्धांत, ताजिक विधियों अथवा ताजिक योगों के प्रयोग के बिना भी अपने आप में संपूर्ण थे। यद्यपि ज्ञान चाहे जिस रूप अथवा नाम में हो, यदि यह सामान्य उद्देश्य को पूरा करता है तो संपूर्णता में संघटित होना चाहिए।

इस प्रकार, ताजिक ज्ञान सामान्य रूप से ज्योतिष में और विशेष रूप से प्रश्न में अत्यंत रमणीयता से समाहित हो गया। ताजिक योगों को यहां विस्तार से व्याख्यायित किया गया है और उनके प्रयोग की सभी अध्यायों में सोदाहरण पर्याप्त विवेचना की गई है। कुल 16 ताजिक योग हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश केवल एक अथवा अन्य योगों के परिवर्तित रूप हैं। प्रश्न में हम उन प्रमुख योगों का उपयोग करेंगे जिन्हें यहाँ व्याख्यायित किया गया है। इस अध्याय के अंत में सभी सोलह योगों को सारणीबद्ध करके स्पष्ट किया गया है।

ताजिक योगों के विस्तृत विश्लेषण में, लग्नेश का कार्येश (संबंधित भावों के ऊपर निर्भर करने वाली विशेष घटना के कारक, यानि उस कार्य भाव के स्वामी) के साथ सम्बन्ध देखा जाता है। यद्यपि इस अध्याय के अंत में ताजिक योगों की सारणी में, 'लग्नेश और कार्येश' शब्दों को प्रयोग करने के स्थान पर 'दो ग्रह' शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ये दो ग्रह एक विशिष्ट घटना को संकेतित करने वाले किन्हीं दो भावों के स्वामी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों से संबंधित घटनाओं का विश्लेषण करने के दो तरीके हैं

1. बच्चों की रुकावटों को पंचमेश और अष्टमेश के बीच संबंध से अनुमानित किया जा सकता है।

2. यहाँ बाधाएँ देखी जा सकती हैं यदि हम 5वें भाव को लग्न मान लें तथा पंचमेश और द्वादशेश के बीच परस्पर संबंध देखें (जो पंचम से आठवां है)। इस मामले में पंचमेश लग्नेश हो जाता है और अन्य भाव का स्वामी कार्येश हो जाता है। इसलिए लग्नेश और कार्येश नाम प्रयोग करने के स्थान पर जिनका अक्षरशः अर्थ लग्नेश और प्रश्न कुंडली का कार्येश होगा, एक अत्यधिक उदार पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है जिसमें कोई दो ग्रह प्रश्न से संबंधित भाव के परिणामों को उद्घाटित करेंगे।

ताजिक योगों का विश्लेषण करते समय अन्य विचारणीय बातें इस प्रकार हैं।

(क) हमारी शास्त्रीय पुस्तकों में राहु और केतु का प्रयोग स्पष्ट रूप से अनुपलब्ध हैं। यद्यपि, हमें राहु और केतु के विश्लेषणात्मक प्रयोग का शोध एवं अवलोकन जारी रखना चाहिए फिर भी मैंने इन्हें आश्चर्यजनक परिणाम देते पाया है। राहु और केतु सामान्यतया प्रतिकूल परिणाम ही देते हैं।

(ख) किसी भी योग के फलीभूत होने के लिए, चाहे वह ताजिक योग हो या पाराशरी, लग्न, लग्नेश एवं चन्द्रमा बलवान होने चाहिएं। अन्यथा ऐसे योग को वस्तुतः अनुपस्थित ही मानना चाहिए।

इकबाल योग

यह योग तब बनता हे जब सभी ग्रह केन्द्र (1, 4, 7, 10) और पणफर भावों (2,5,8,11) में हों। यह योग शुभ परिणाम प्रदान करता है और जन्म कुंडली, वर्ष कुंडली और प्रश्न पर समान रूप से प्रयुक्त किया जा सकता है। हालाँकि, मेरी राय में 8वें भाव को इस योग से बाहर निकाल देना चाहिए क्योंकि 8वें भाव में कोई भी ग्रह प्रश्न की कार्यसिद्धि में बाधाओं और रुकावटों का ही कारण बनता है। यहाँ तक कि, उस स्थिति में शुभ ग्रह भी वांछनीय नहीं हैं और क्रूर ग्रह और भी खराब हैं। सामान्यतः जब अधिकांश ग्रह केन्द्र और पणफर (सिवाय 8वें भाव के) में स्थित हों तो योग के अनुकूल परिणाम व्यक्त होंगे।

इकबाल योग का एक परिवर्तित रूप है:

कुत्थ योगः यह इत्थसाल योग के साथ इक्बाल योग का सम्मिश्रण है और प्रश्न के अनुकूल परिणाम प्रदान करता है।

इंदुवार योग

यह योग तब निर्मित होता है जब सभी ग्रह आपोक्लिम भावों (3, 6, 9 और 12) में स्थित हों। सभी अथवा अधिकांश ग्रहों की यह स्थिति प्रश्न के लिए

प्रतिकूल अथवा विपरीत परिणाम दर्शाती है। पुनः, मेरी दृष्टि में, सामान्यतः 9वें भाव में ग्रह अच्छे परिणाम देते हैं। अतः इस अपवाद को उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

इत्थसाल योग

यह व्यापक रूप से वर्षफल और प्रश्न में सर्वाधिक प्रमुख और पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त होने वाला ताजिक योग है। इत्थसाल योग के निर्माण में शामिल चरण हैं:

i) शीघ्र गति ग्रह, मंद गति ग्रह के पीछे हो।

ii) दोनों ग्रहों (लग्नेश और कार्येश) में परस्पर ताजिक दृष्टि हो।

iii) ये दोनों ग्रह अपने दीप्तांश सीमा की औसत के भीतर हों।

अब हम इन तीन शर्तों को समझते हैं। ग्रहों का उनकी घटती हुई आनुपातिक गति का क्रम है - चंद्र, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि। यद्यपि शास्त्रीय रूप से राहु और केतु शामिल नहीं किये गए हैं, तथापि राहु और केतु की आपेक्षिक गति बृहस्पति और शनि के बीच मानी जा सकती है।

ताजिक दृष्टियाँ इस प्रकार हैं।

1. प्रत्यक्ष मित्र — 5, 9
2. गुप्त मित्र — 3, 11
3. प्रत्यक्ष शत्रु — 1, 7
4. गुप्त शत्रु — 4, 10
5. तटस्थ अथवा सम — 2, 12, 6, 8

ग्रहों की एक-दूसरे से 3, 5, 9 अथवा 11 स्थानों पर दृष्टियाँ मित्र दृष्टियाँ हैं और 1, 4, 7 और 10 स्थानों पर शत्रु दृष्टियाँ हैं। तटस्थ दृष्टियों को दृष्टि नहीं माना जाता और जब हम कहते है कि लग्नेश और कार्येश में परस्पर दृष्टि होनी चाहिए तो इसका अर्थ है कि तटस्थ दृष्टि के अतिरिक्त उनमें कोई दृष्टि अवश्य होनी चाहिए।

सभी ग्रहों का अपना प्रभाव-क्षेत्र है जिसे दीप्तांश कहा जाता है। इसके लिए दोनों ग्रहों की एक ही राशि में स्थिति अनिवार्य नहीं है। मान लो, चद्रंमा 3°20' पर है और मंगल 4°30' पर जो एक-दूसरे से 1°10' की दूरी पर, एक-दूसरे से 3, 5, 9, 11 अथवा 1, 4, 7, 10 स्थितियों पर हों, तब वे अपने दीप्तांश की सीमा में परस्पर दृष्टि में स्थित हैं। प्रत्येक ग्रह के दीप्तांश इस प्रकार हैं:

ग्रहों की दीप्तांश (अंशों में)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
दीप्तांश (प्रभाव क्षेत्र)	15	12	8	7	9	7	9

विभिन्न लेखकों द्वारा एक-दूसरे पर दोनों ग्रहों के प्रभाव की व्याख्या विभिन्न विधियों से की गई है। इत्थसाल का आधार है कि शीघ्र गति ग्रह जो मंद गति ग्रह से अंशों में पीछे है, मंद गति ग्रह को पकड़ने में समर्थ है। इस प्रकार ये दो ग्रह एक-दूसरे को कांति और बल संप्रेषित करते हैं। दोनों ग्रहों के अलग-अलग दीप्तांश जोड़ें और दोनों के बीच की औसत ज्ञात करें। ऊपर उद्धृत उदाहरण में, चंद्रमा के दीप्तांश 12 और मंगल के 8 हैं। दोनों के बीच की औसत 12 + 8 ÷ 2 = 10 है। यदि ये दोनों ग्रह अन्य शर्तों को पूरा करने पर एक-दूसरे से 10° के भीतर हैं तब दोनों के बीच इत्थसाल योग है। सामान्यतया यह योग भविष्य में घटित होने वाली घटना सूचित करता है और इन दोनों ग्रहों के बीच की दूरी समय की अवधि सूचित करती है जिसके बाद घटना घटेगी। एक इत्थसाल प्रायः शुभ परिणाम देता है, लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। लग्नेश और अष्टमेश के बीच इत्थसाल विपत्तियों, रुकावटों, यहाँ तक कि मृत्यु को भी दर्शाता है। इसी प्रकार लग्नेश और दशमेश के बीच इत्थसाल जीविका, पदोन्नति, सम्मान और भौतिक जीवन में प्रगति देता है। अतः इत्थसाल के संभावित सुस्पष्ट परिणामों के लिए, ग्रहों की प्रकृति, उनका स्थापन और स्वामित्व देखा जाना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के इत्थसाल योग निम्नलिखित हैं-

i) *वर्तमान इत्थसाल :* यह कुंडली में प्रस्तुत एक सामान्य इत्थसाल योग है जिसे ऊपर दिए गए उदाहरण में व्याख्यायित किया है। यह एक घटना की भावी स्थिति बताता है।

ii) *पूर्ण इत्थसाल :* जब लग्नेश और कार्येश इत्थसाल योग में हों और उनके भोगांश एक अंश के भीतर हों, तब पूर्ण इत्थसाल होता है। यह एक घटना की वर्तमान स्थिति व्यक्त करता है जो अत्यंत भूत अथवा निकट भविष्य में हो सकती है।

iii) *भविष्यत इत्थसाल :* जब इत्थसाल अभी न बन रहा हो, लेकिन निकट भविष्य में निर्मित होने वाला हो तो वह भविष्यत इत्थसाल कहलाता है और देरी से परिणाम देता है। उदाहरणार्थ, एक ग्रह

परस्पर दृष्टि में नहीं होकर एक राशि के अंतिम अंशों पर है, लेकिन आगामी राशि में प्रवेश करते हुए अन्य शर्तों को पूरा करने पर परस्पर दृष्टि बनाकर एक इत्थसाल योग निर्मित करेगा। दूसरा प्रकार यह है जब ग्रह दीप्तांश सीमा में नहीं है और तीव्र गति ग्रह अपनी तीव्र गति के कारण दीप्तांश सीमा में प्रवेश करने वाला है। इसमें, हालांकि यह निश्चित कर लेना चाहिए कि दोनों अपने-अपने दीप्तांशों के योग से दूर न हों। यदि ऐसा है तो इत्थसाल पूर्ण रूप से अनुपस्थित माना जाएगा। यह एक अत्यधिक उदार दृष्टिकोण है। मेरी राय में, इस प्रकार का भविष्यत इत्थसाल केवल तभी स्वीकार करना चाहिए जब दोनों ग्रहों की दूरी अपने दीप्ताशों की औसत से 1° से अधिक न हो। उदाहरण में चंद्रमा और मंगल के बीच इत्थसाल है जैसा कि ऊपर बताया गया है। उनके दीप्तांश का औसत 10 है। यहाँ भविष्यत इत्थसाल तब माना जा सकता है जब उनकी परस्पर दूरी 10 और 11 अंशों के बीच हो।

इत्थसाल योग के कुछ निम्नलिखित प्रकार हैं-

(क) *मणऊ योग :* यह तब उत्पन्न होता है जब लग्नेश और कार्येश के बीच इत्थसाल हो और शीघ्र गति ग्रह एक पाप ग्रह द्वारा दीप्तांश सीमा के भीतर युति अथवा दृष्टि द्वारा पीड़ित हो। यह इत्थसाल का स्थगन और प्रश्न की असफलता दर्शाता है।

(ख) *दुष्फाली कुत्थ योग :* लग्नेश और कार्येश के बीच एक इत्थसाल में, यदि शीघ्र गति ग्रह की अपेक्षा मंद गति ग्रह बलवान हो तब इत्थसाल अधिक अनुकूल है और शुभ परिणाम देता है।

(ग) *दुत्थोत्थ-दविर योग :* जब एक इत्थसाल में भाग लेने वाले दोनों ग्रह कमजोर हों और उनमें से एक किसी बलवान ग्रह के साथ इत्थसाल करे तब यह योग बनता है। इस प्रकार बलवान ग्रह, बलहीन इत्थसाल को शक्ति प्रदान करता है तथा किसी और की सहायता से प्रश्न की पूर्ति की ओर इशारा करता है।

(घ) *तंबीर योग :* जब लग्नेश और कार्येश दृष्टि अथवा इत्थसाल में नहीं हों और उनमें से एक राश्यंत पर हो और अगली राशि में प्रवेश करने पर यह एक इत्थसाल बनाए। यह भविष्यत इत्थसाल का एक प्रकार है जिसे राश्यंत इत्थसाल कहा जाता है और देरी से परिणाम देता है।

इशराफ़ योग

यह इत्थसाल का विपरीत योग है और इस योग के निर्माण के लिए निम्नलिखित शर्तें अवश्य होनी चाहिएं -

1. शीघ्र गति ग्रह मंद गति ग्रह से 1° से आगे होना चाहिए।
2. योग बनाने वाले दोनों ग्रह परस्पर दृष्ट होने चाहिए।
3. दोनों ग्रह अपने दीप्तांश सीमा की औसत में होने चाहिए।

सामान्यतः यह योग एक पिछली घटना को संकेतित करता है, जिसमें दो ग्रहों के बीच अंशीय दूरी समय को सूचित करती है। यह योग प्रायः प्रश्न की अनुकूल पूर्ति नहीं दर्शाता क्योंकि यह कुंडली में एक प्रतिकूल योग है। जब भाग लेने वाले ग्रह अशुभ हैं अथवा वे 6, 8 अथवा 12वें भाव के स्वामी हैं और जब वे वक्री भी हैं तब यह योग बहुत अशुभ है। मैंने इस योग को भविष्य की घटना को भी सूचित करते पाया है। इस असंगति को समझने के लिए और शोध की आवश्यकता है।

नक्त योग

जब लग्नेश और कार्येश के बीच कोई परस्पर दृष्टि न हो और ये दोनों एक तीसरे ग्रह से संयुक्त हों जिसकी लग्नेश और कार्येश से उनकी दीप्तांश सीमा के भीतर परस्पर दृष्टि हो। यहाँ शर्त है कि तीसरा अंतः संयुक्त ग्रह उन दोनों ग्रहों की अपेक्षा तीव्र गति होना चाहिए। यह एक स्थिति है, जिसमें अंतः संयुक्त ग्रह दो योगों से नक्त योग बनाता है। तीन प्रकार के परिणामी योग हो सकते हैं। एक दुहरा इत्थसाल, एक इशराफ एक इत्थसाल और एक दुहरा इशराफ।

इस योग का एक प्रकार यह है।

(क) *यमया योग :* अन्य सभी शर्तें लगभग वही होंगी। जब अंतः संयुक्त ग्रह दो परस्पर दृष्टि से रहित ग्रहों की अपेक्षा मंद गति हो, तब यह एक यमया योग कहा जाता है। एक नक्त योग जल्दी ही अनुकूल परिणाम देता है जबकि एक यमया योग मंद संयोजन के कारण देरी और कठिनाइयों के साथ प्रतिकूल परिणाम देता है। एक अन्य प्रकार भी है जिसका ताजिक योगों में उल्लेख नहीं मिलता लेकिन जिससे व्यवहार में सामना होता है। जब तीसरा अंतः संयुक्त ग्रह एक की अपेक्षा तीव्र गति और अन्य ग्रह की अपेक्षा मंद गति है तब यह कठिनाइयों के साथ अनुकूल

और किसी दूसरे की सहायता से परिणाम देता प्रतीत होता है। जिसमें तीव्र अनुबंध के द्वारा दो तरह के संयोजक का संकेत शामिल है।

6. कम्बूल योग

प्रश्न कुंडली में, इत्थसाल के बाद यह एक अन्य महत्वपूर्ण योग है जब युवा चन्द्र अथवा लग्नेश और कार्येश के बीच एक इत्थसाल योग है और चन्द्रमा इत्थसाल में भाग ले रहे अकेले अथवा दोनों ग्रहों से योग करता है, तब एक कम्बूल योग बनता है। यह इत्थसाल के अनुकूल और निश्चित परिणामों को दर्शाता है। इत्थसाल में चन्द्रमा का भाग लेना प्रश्न की पूर्ति के लिए अत्यंत सकारात्मक माना गया है। इस योग के विभिन्न प्रकार हैं :

(क) *गैर-कंबूल योग :* दो ग्रह इत्थसाल में हों और चंद्रमा एक राशि के अंतिम अंशों में हो। अगली राशि में प्रवेश करने पर यह कम्बूल योग निर्मित करेगा। वास्तव में, गैर-कंबूल योग एक भविष्यत कंबूल योग है, जो निकट भविष्य में बनने जा रहा है। यह कुछ देरी के साथ कंबूल के परिणामों को देता है।

(ख) *ख़ल्लासार योग :* लग्नेश और कार्येश इत्थसाल में हों, लेकिन उनमें से किसी के साथ चंद्रमा शामिल न हो। यह कंबूल का विपरीत है और इत्थसाल योग का एक प्रकार भी कहा जा सकता है। यह योग इत्थसाल के साथ-साथ कंबूल के विनाश को बताता है और प्रश्न की असफलता दर्शाता है।

7. रद्द योग

इस योग में लग्नेश और कार्येश इत्थसाल में हों और उनमें से कोई एक वक्री, अस्त, नीच 6, 8, 12वें भाव आदि में हो। इत्थसाल योग के द्वारा किसी प्रश्न का विश्लेषण करते समय किसी घटना के स्थगन के लिए रद्द योग की उपस्थिति भी देखी जानी चाहिए। उदारहण के लिए, पदोन्नति से संबंधित प्रश्नों में, पदोन्नति की प्रक्रिया स्वयं स्थगित हो सकती है अथवा एक क्रिया पुनः दोहरायी जा सकती है। यह एक बहुत प्रमुख योग है। यदि एक रद्द योग शुभ भावों में बनता है तब प्रारंभिक उत्क्रमण के बाद इच्छित प्रश्न का फल सामने आ सकता है। दूसरी ओर यदि रद्द योग 6, 8, 12वें भाव से अथवा 6, 18, 12वें भाव के स्वामी के साथ बनता है तब घटना का स्थगन स्थायी हो जाएगा। रद्द का एक प्रकार यह है :

(क) *दुरफ़ योग :* इस योग में इत्थसाल बनाने वाले ग्रह 6, 8, 12 भावों में स्थित वक्री, अस्त अथवा अन्य प्रकार से बलहीन हों। यह प्रश्न की असफलता और अशुभ परिणाम दर्शाता है।

सरलता से समझने हेतु एक जैसे योग

	योग	*प्रकार*
1.	इकबाल योग	कुत्थ योग
2.	इंदुवार योग	
3.	इत्थसाल योग	मनऊ योग, दुष्काली-कुत्थ योग, दुत्थोत्थ दविर योग, तंबीर योग
4.	इशराफ योग	
5.	नक्त योग	यमया योग
6.	कंबूल योग	गैर-कंबूल योग, ख़ल्लासार योग
7.	रद्द योग	दुरफ़ योग

सहम

ये प्रश्न अथवा वर्ष कुंडली में गणितीय ढंग से परिकलित सूक्ष्म बिन्दु हैं जिन्हें घटनाओं की पुष्टि के लिए जन्म कुंडली पर भी परिकलित करना चाहिए। जीवन में प्रत्येक प्रमुख घटना के लिए एक सहम है जो सहम के स्वामी के स्थापन, दृष्टि, युति और ऐसे ही प्रभावों द्वारा अनुकूल तथा प्रतिकूल परिणामों को उद्घाटित करता है। केवल प्रमुख सहम यहाँ विस्तार से व्याख्यायित किए गए हैं। दिन के समय अथवा रात्रि के समय शर्तें क्रमशः सूर्योदय से सूर्यास्त और सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच का समय सूचित करती है।

सहम	*दिन के समय प्रश्न*	*रात के समय प्रश्न*
1. पुण्य सहम शुभता के लिए	चंद्र - सूर्य + लग्न	सूर्य - चंद्र + लग्न
2. गुरु/ज्ञान/विद्यासहम उच्च शिक्षा/ज्ञान के लिए	सूर्य - चंद्र + लग्न	चंद्र - सूर्य + लग्न
3. यश सहम प्रसिद्धि के लिए	बृहस्पति - पुण्य सहम + लग्न	पुण्य सहम - बृहस्पति + लग्न
4. राज अथवा पितृ सहम राजकीय अनुग्रह अथवा पिता के लिए	शनि - सूर्य + लग्न	सूर्य - शनि + लग्न

सहम	दिन के समय प्रश्न	रात के समय प्रश्न
5. मातृ सहम माँ के लिए	चन्द्र - शुक्र + लग्न	शुक्र - चंद्र + लग्न
6. पुत्र सहम बच्चों के लिए	बृहस्पति - चंद्र + लग्न	दिन और रात के लिए समान
7. रोग सहम बीमारी के लिए	शनि - चंद्र + लग्न	चंद्र - शनि + लग्न
8. कर्म सहम व्यवसाय के लिए	मंगल - बुध + लग्न	बुध - मंगल + लग्न
9. मृत्यु सहम मृत्यु के लिए	8वां भाव मध्य - चन्द्र + शनि	दिन और रात के लिए समान
10. धन सहम समृद्धि के लिए	2रा भाव मध्य - 2रे भाव का स्वामी + लग्न	वही
11. लाभ सहम उपलब्धियों के लिए	11वां भाव मध्य - 11वें भाव का स्वामी + लग्न	वही
12. विवाह सहम विवाह के लिए	शुक्र - शनि + लग्न	वही
13. सिद्धि सहम सफलता के लिए कार्य	शनि - सूर्य + सूर्य की राशि का स्वामी	शनि - चंद्र + चंद्र की राशि का स्वामी
14. प्रीति सहम प्रेम संबंधो के लिए	विद्या सहम - पुण्य सहम + लग्न	दिन और रात के लिए समान
15. बंधन सहम जेल अथवा नजरबंदी के लिए	पुण्य सहम - शनि + लग्न	शनि - पुण्य सहम + लग्न

सहम की गणना

सहम की गणना में उपरोक्त भोगांशों को घटा दें अथवा जोड़ दें जैसा कि मामले में संभव हो। किसी सहम की गणना के तीन पैरामीटर हैं जिसे a - b + c के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यदि c, b और a के बीच आता है तो सहम परिणाम द्वारा सूचित किया जाता है। यदि c, b और a के बीच नहीं आता है तब सहम का परिणाम प्राप्त करने के लिए 30° अथवा एक राशि जोड़ें। अब हम एक उदाहरण लेते हैं।

उदाहरण संख्या : 1

लग्न 23°40'	सहम की गणना के लिए उदाहरण		
			चन्द्र 3°42'
सूर्य 9°12'		पुण्य सहम 18°10'	

दिन के प्रश्न के लिए पुण्य सहम प्रस्तुत किया जाता है : चंद्र (a) - सूर्य (b) + लग्न (c)

माना इनके मूल्य हैं :

चंद्र	4रा	3°	42'
सूर्य	8रा	9°	12'
लग्न	10रा	23°	40'

पुण्य सहम होगा

	चंद्र	4रा	3°	42'	घटाने के लिए 12 राशियां जोड़ें
(-)	सूर्य	8रा	9°	12'	
		7रा	24°	30'	
(+)	लग्न	10रा	23°	40'	जोड़ें
पुण्य सहम		6रा	18°	10'	(12 राशियां घटा दें)

अब ऊपर व्याख्यायित शर्त के अनुसार c, b और a के बीच आना चाहिए। यहां यह शर्त मिलती है जैसा कि कुंडली में दिखाया गया है अतः पुण्य सहम 9वें भाव में तुला पर 18°10' है। मान लो सूर्य 4थे भाव में हो और चंद्रमा 7वें भाव में हो, तब c, b और a के बीच नहीं आ पाएगा, ऐसी स्थिति में 30° अथवा एक राशि को पुण्य सहम प्राप्त करने के लिए जोड़ना पड़ेगा।

सहम का विश्लेषण

सहम के विश्लेषण में हम सहम के स्वामी के बल और बलहीनता को लेते हैं कि यह उच्च, स्वराशि, नीच, मित्र, शत्रु आदि राशि में है। सहम के विश्लेषण के सामान्य नियम इस प्रकार हैं:

1. क्या सहम और सहम के स्वामी पर दृष्टियाँ शुभ अथवा अशुभ हैं।
2. एक सहम जो अपने स्वामी द्वारा स्थित अथवा दृष्टि से युत है, बलवान होकर अच्छे परिणाम देता है।
3. सामान्यतः 6, 8, 12वें भावों में स्थित सहम उस घटना के लिए अशुभ परिणाम देता है जो घटना सहम निर्दिष्ट करता है।
4. प्रतिकूल सहम जैसे रोग, मृत्यु, बंधन आदि कमजोर होने चाहिएं।
5. दूसरी ओर शुभ सहम जैसे, पुण्य सहम, धन सहम, कार्य सिद्धि सहम आदि प्रश्न कुंडली में बलवान होने चाहिएं।

ताजिक द्वारा प्रश्न का विश्लेषण करने के सामान्य सिद्धांत

प्रश्न कुंडली में उन ग्रहों को सदैव देखना चाहिए जो लग्नेश और कार्येश को निर्दिष्ट करते हैं। लग्नेश लग्नाधिपति है और कार्येश कार्य भाव का स्वामी है। उदाहरणार्थ व्यवसाय, पदोन्नति, व्यापार, आदि से संबंधित प्रश्नों में दशमेश कार्येश है। बच्चों से संबंधित प्रश्नों में पंचमेश कार्येश है।

एक प्रश्न की पूर्ति के लिए लग्नेश और कार्येश निम्न में से किसी के द्वारा संयुक्त होने चाहिए।

1. लग्नेश लग्न में और कार्येश अपने भाव में हो।
2. लग्नेश कार्य भाव में और कार्येश लग्न में हो, जैसे दोनों के बीच परिवर्तन।
3. लग्नेश और कार्येश एक साथ स्थित हों।
4. लग्नेश और कार्येश परस्पर दृष्टि में हों।
5. लग्नेश और कार्येश एक अनुकूल इत्थसाल अथवा कंबूल योग में हों (घटना के फलन के लिए)।
6. दोनों के बीच बनने वाले योग वक्री, अस्त अथवा नीच ग्रहों अथवा 6, 8, 12वें भावों अथवा स्वामियों से मुक्त हों।
7. योग निर्मित करने वाले ग्रह राहु/केतु के अक्ष अथवा राहु/केतु के साथ निकटतम अंशों की युति से भी मुक्त होने चाहिएं।

जब लग्नेश और कार्येश सम्बद्ध न हों अथवा वह किसी इशराफ या रद्द योग में हों, 6, 8, 12वें भावों अथवा भावाधिपतियों से सम्बद्ध हों, राहु/केतु के अक्ष में हों अथवा अंशों में निकटता आदि हो, तब प्रश्न की पूर्ति सम्भव नहीं है।

यहां चंद्रमा के सहयोग के संबंध में मेरी टिप्पणियां उल्लेखनीय हैं। चंद्रमा एक प्रश्न की पूर्ति की ओर एक मानसिक अभिरुचि अथवा इच्छा को सूचित करता है। यदि लग्नेश और कार्येश के बीच चंद्रमा या तो दृष्टि, युति अथवा कंबूल योग द्वारा एक सकारात्मक संबंध कायम करता हो तो प्रश्न के परिणामों के अनुकूल निष्पादन के लिए अच्छा है।

चंद्रमा का केवल कार्येश के साथ संबंध जहाँ लग्नेश शामिल न हो, अथवा लग्नेश के साथ चन्द्रमा का संबंध जहां कार्येश शामिल न हो, प्रश्न की इच्छित पूर्ति नहीं कर सकता।

ताजिक योगों की सारणी

योग का नाम	*कैसे बनता है*	*परिणाम*
1. इकबाल योग	सभी ग्रह केंद्रों और पणफरों में हों, जैसे- 1, 4, 7, 10 और 2, 5, 8 और 11 भावों में।	शुभ, प्रश्न की पूर्ति के लिए अच्छा है।
2. इंदुवार योग	सभी ग्रह अपोक्लीम में हों, जैसे- 3, 6, 9 और और 12 भावों में।	अशुभ, प्रश्न के वांछनीय परिणामों की असफलता।
3. इत्थसाल योग	तीन शर्तें हैं : 1. तीव्र गति ग्रह, मंद गति ग्रह के पीछे हो। 2. दोनों ग्रहों में परस्पर ताजिक दृष्टि हो। 3. ये दो ग्रह अपने अलग-अलग दीप्तांश सीमा की औसत में हों।	प्रश्न के अनुकूल परिणामों के लिए एक महत्त्वपूर्ण योग, जो लग्नेश और कार्येश अथवा एक भाव और अन्य भावाधिपति आदि के स्थापन स्वामित्व आदि पर निर्भर करता है। दोनों ग्रहों की आपसी दूरी एवं उनकी भाव/राशियों में स्थिति आदि से भविष्य की घटना को दर्शाता है।
	तीन प्रकार	
	(क) वर्तमान इत्थसाल	उपरोक्त तीनों शर्तों को पूरा करने वाला योग। निकट भविष्य में घटना को सूचित करता है।

योग का नाम	कैसे बनता है	परिणाम
	(ख) पूर्ण इत्थसाल	जब दो ग्रह एक दूसरे से ± 1° के भीतर इत्थसाल बनाएं। घटना की त्वरित संभावना सूचित करता है।
	(ग) भविष्यत इत्थसाल	एक स्थिति जिससे निकट भविष्य में इत्थसाल योग बने। विभिन्न संभावनाएँ, कुछ देरी के बाद घटना घटित होना सूचित करता है।
4. इशराफ योग	तीन शर्तें हैं : 1) तीव्र गति ग्रह, मंद गति ग्रह से आगे हो। 2) दोनों ग्रह परस्पर दृष्टि में हों। 3) दोनों ग्रह अपने दीप्तांशों की सीमा की औसत में हों।	सामान्यतः पिछली घटना बताता है। समयावधि निर्भर करती है उन अशों पर जो दोनों ग्रहों को 1° के पार अलग करते हैं। प्रश्न की असफलता और अशुभ परिणाम देता है। बहुत खराब होता है जब वे क्रूर, वक्री, अस्त ग्रह हों अथवा ये क्रूर ग्रह 6, 8 अथवा 12वें भावों के स्वामी हों।
5. नक्त योग	1) दोनों ग्रह परस्पर दृष्टि में नहीं हों। 2) इन दोनों की अपेक्षा एक तीव्र गति का ग्रह उनकी दीप्तांश सीमा के औसत के भीतर दृष्टि द्वारा दोनों को संयुक्त करे। नक्त योग निम्न प्रकार के योग बना सकता है।	किसी की सहायता के साथ तीव्र संयोजन के कारण यह योग शीघ्र परिणाम देता है। सफलता अथवा असफलता ग्रहों के स्थापन और स्वामित्व पर निर्भर करती है। यदि संयुक्त करने वाला ग्रह बलवान, शुभ और शुभ स्वामित्व रखता है तो अनुकूल परिणाम।
	(क) एक दुहरा इत्थसाल (ख) एक इत्थसाल, एक इशराफ (ग) एक दुहरा इशराफ	ये निर्मित योग के आधार पर निर्भर होकर परिणाम देगा।

योग का नाम	कैसे बनता है	परिणाम
6.यमया योग	1) दो ग्रह परस्पर दृष्टि में न हों। 2) एक मंद गति ग्रह (उपरोक्त दोनों ग्रहों की अपेक्षा मंद गति) इन दो ग्रहों को दृष्टि और दीप्तांश सीमा में संयुक्त करे।	एक मंद गति संयोजन के कारण देरी अथवा कठिनाई के साथ परिणाम देता है। पुनः सफलता अथवा असफलता ग्रहों की भूमिका, उनकी स्थिति और स्वामित्व आदि पर निर्भर करती है।
7. मणऊ योग	दो ग्रहों-लग्नेश और कार्येश के बीच इत्थसाल। इन दोनों में से तीव्र गति ग्रह को एक अन्य पाप ग्रह अपनी युति, दृष्टि एवं दीप्तांश सीमा में प्रभावित करे।	इत्थसाल योग का स्थगन सूचित करता है। प्रश्न में निराशा और घटनाओं की असफलता देता है।
8. कंबूल योग	1) दो ग्रहों में इत्थसाल हो 2) चंद्रमा एक अथवा उनमें से दोनों के साथ इत्थसाल करे।	इत्थसाल के अनुकूल और निश्चित परिणाम देता है। कार्य के निष्पादन के लिए एवं त्वरित प्रयासों के लिए मानसिक अभिरूचि दिखाता है।
9. गैर-कबूल योग	1) दो ग्रह इत्थसाल में हों 2) चंद्रमा एक राशि के अंतिम अंशों में हो और अगली राशि में प्रवेश करते हुए लग्नेश और/अथवा कार्येश से इत्थसाल बनाए।	इसे भविष्यत कंबूल योग कहा जा सकता है और कंबूल योग की भांति कुछ देरी के साथ अनुकूल परिणाम देता है।
10. ख़ल्लासार योग	1) दो ग्रह इत्थसाल में हों 2) चंद्रमा एक अथवा दोनों के साथ शामिल न हो।	चंद्रमा की अनुपस्थिति में इत्थसाल, इत्थसाल योग के विनाश की ओर इशारा करता है और इसीलिए प्रतिकूल परिणाम देता है।
11. रद्द योग	1) दो ग्रह इत्थसाल में हों 2) उनमें से एक अस्त,	इत्थसाल के स्थगन को दर्शाता है। सामान्यतः जब

योग का नाम	कैसे बनता है	परिणाम
	वक्री, नीच, 6, 8, 12 अथवा शत्रु भावों में हो।	भाग लेने वाला एक ग्रह वक्री है, तब रद्द योग बनता है अन्यथा यह एक कमजोर इत्थसाल योग देता है।
12. दुष्फाली-कुत्थ योग	1) दो ग्रह इत्थसाल में हों। 2) मंदगति ग्रह स्व-राशि, उच्च आदि के द्वारा तीव्र गति ग्रह से बलवान हो।	एक इत्थसाल योग जहाँ बल का तुलनात्मक निर्णय किया जाता है। एक बलवान मंदगति ग्रह इस इत्थसाल को अधिक बलवान बनाता है और शुभ परिणाम देता है।
13. दुत्थोत्थ-दविर योग	1) दो ग्रह इत्थसाल में कमजोर हों। 2) उनमें से एक ग्रह किसी अन्य बलवान ग्रह के साथ इत्थसाल करे।	इस योग में बलवान ग्रह एक कमजोर इत्थसाल को बल प्रदान करता है अतः किसी की सहायता से प्रश्न का शुभ फल देता है।
14. तंबीर योग	1) लग्नेश और कार्येश इत्थसाल अथवा दृष्टि में न हों। 2) उनमें से एक राश्यंत पर हो। 3) अगली राशि में प्रवेश करने पर यह लग्नेश और एक बलवान ग्रह से इत्थसाल निर्मित करेगा।	भविष्यत इत्थसाल का एक प्रकार, जो प्रयासों और देरी के बाद, किसी की सहायता से परिणाम देता है।
15. कुत्थ योग	1) केन्द्र अथवा पणफर में स्थित दो ग्रहों में इत्थसाल हो। 2) वे बिना किसी अशुभ प्रभावों के शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हों।	इकबाल योग के साथ इत्थसाल का एक योग। कार्य सिद्धि के लिए अनुकूल परिणाम देता है।
16. दुरफ़ योग	दो ग्रह इत्थसाल में 6, 8, 12वें भावों में वक्री अथवा अस्त होकर बलहीन हों।	रद्द योग का एक प्रकार जो प्रश्न की असफलता दर्शाता है और अशुभ परिणाम देता है।

6
मूक और मुष्ठी प्रश्न

हमारे मनीषी उन कारणों को कहने के योग्य थे जिनके लिए प्रश्नकर्ता उनके पास पहुँचता था। जब कोई व्यक्ति परामर्श के लिए किसी ज्योतिषी के पास पहुंचता था, एक विद्वान ज्योतिषी को उसके आने से पूर्व ही उस विशिष्ट प्रश्न एवं चिन्ता का प्रारूप मालूम हो जाता था। प्रश्न कुंडली के आश्चर्य इतने विस्मयकारी हैं कि प्रश्न कुंडली के विश्लेषण के विशिष्ट नियमों द्वारा कोई भी ज्योतिषी आश्चर्यजनक विशुद्धता के साथ मूक प्रश्न का संचालन कर सकता है।

मूक का तात्पर्य मौन है। एक प्रश्नकर्ता जो मौन रहता और खुले रूप से अपनी तात्कालिक चिंता को सूचित नहीं करता। जब ज्योतिषी द्वारा इसे प्रश्न की संभावनाओं को समझ कर उसका विश्लेषण किया जाए, तो इस विधि को मूक प्रश्न कहा जाता है। अब हम सबसे पहले प्राचीन सिद्धांतों से प्रारम्भ करके उसके बाद प्रश्न में अत्याधुनिक प्रगति के अनुसरण द्वारा और अंततः अनुमानों को संकेत करने वाली उदाहरण सहित टिप्पणियों और मेरे द्वारा अवलोकित नियमों को सुव्यवस्थित रूप से समझेंगे।

व्यापक रूप से, इन सिद्धांतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - शास्त्रीय सिद्धांत और आधुनिक सिद्धांत।

शास्त्रीय सिद्धांत

प्रश्न किसी एक से अथवा इन निम्नलिखित स्त्रोतों में से एक से अधिक योगों से संबंधित होता है :

1. धातु - वे सभी वस्तुएँ जो पृथ्वी से प्राप्त अथवा खुदाई करने से मिलती हैं, जैसे धातुएँ अथवा खनिज।
2. मूल - वे सभी वस्तुएँ जो पृथ्वी से उगती हैं जैसे, जड़ें, सब्जियाँ, लकड़ी आदि।

3. जीव - वे सभी जीवित चीजें जो पृथ्वी से जुड़ी हुई नहीं हैं जैसे, पशु, मनुष्य, जलीय जीवन आदि।

मूक प्रश्न अथवा प्रश्न के उद्देश्य पर हमारा प्रथम कार्य प्रश्नकर्ता की चिंता को जानने से संबंधित है, जो इनमें से कोई एक हो सकती है।

उदित राशि पर आधारित सिद्धांत

1. लग्न में मेष, सिंह अथवा वृश्चिक राशि उदित हो और अपने स्वामी (मंगल अथवा सूर्य) द्वारा दृष्ट अथवा युत हो तो प्रश्न धातु अथवा खनिज से संबंधित है (धातु चिंता)।
2. लग्न में मिथुन, मकर अथवा कुंभ राशि उदित हो और अपने स्वामी (बुध अथवा शनि) द्वारा दृष्ट अथवा युत हो तो प्रश्न कुछ उद्भिज्ज स्रोतों से संबंधित है (मूल चिन्ता)।
3. लग्न में वृष, तुला धनु, मीन अथवा कर्क राशि उदित हो और अपने स्वामी (शुक्र, बृहस्पति अथवा चन्द्र) से दृष्ट अथवा युत हो तो प्रश्न कुछ जीवित प्राणियों से संबंधित है (जीव चिंता)।

उदित चर राशि

उदित चर राशि	*नवांश*	*विषय से संबंधी प्रश्न*
मेष, कर्क, तुला अथवा मकर	6, 7, 8 अथवा 9	लंबी यात्रा अथवा गुमशुदा व्यक्ति

उदित विषम अथवा सम राशि

लग्न में विभिन्न नवांशों के साथ उदित विषम अथवा सम राशि नीचे सारणीबद्ध है :

लग्न राशि	*नवांश*	*विषय संबंधी प्रश्न*	
विषम	1, 4, 7	धातुएँ	धातु चिंता
विषम	2, 5, 8	वनस्पतियाँ	मूल चिंता
विषम	3, 6, 9	जीवित प्राणी	जीव चिंता
सम	1, 4, 7	जीवित प्राणी	जीव चिंता
सम	2, 5, 8	वनस्पतियाँ	मूल चिंता
सम	3, 6, 9	धातुएँ	धातु चिंता

उदित द्रेष्काण

लग्न में उदित द्रेष्काण	*विषय से संबंधी प्रश्न*
प्रथम द्रेष्काण	धातु
द्वितीय द्रेष्केण	मूल
तृतीय द्रेष्काण	जीव

ग्रह का नवांश और उनकी दृष्टि

जिसमें ग्रह स्थित है	*लग्न, 5 भाव, 9 भाव में दृष्टि*	*विषय से संबंधी प्रश्न*
स्व नवांश	स्व नवांश	धातु चिंता
अन्य के नवांश (अपना नहीं)	स्व नवांश	जीव चिंता
अन्य के नवांश (अपना नहीं)	अन्य नवांश	मूल चिंता

अब हम इसे आगे समझते हैं :

1. एक ग्रह अपने नवांश में स्थित होकर अपने नवांश को देखे। उदाहरणार्थ, मकर लग्न हो, मंगल 10वें भाव में तुला में 5° पर अपने द्वारा शासित वृश्चिक नवांश में होकर लग्न को देखता हो। मान लीजिए लग्न का भोगांश 13° होकर मेष नवांश में ही है। यह पुनः मंगल द्वारा शासित है। यहां अपने नवांश में स्थित ग्रह लग्न में अपने नवांश को देख रहा है अतः पहली शर्त की व्याख्या करता है। इसी प्रकार शेष दो शर्तों को भी समझा जा सकता है।
2. ग्रह, लग्न, 5वें भाव अथवा 9वें भाव को देखे। मान लीजिए लग्न में 13° भोगांश उदित है, तब 5वें भाव और 9वें भाव में भी 13° भोगांश उदित होगा। अतः जब एक ग्रह अपने अथवा दूसरे के नवांश में स्थित होकर लग्न, 5वें भाव अथवा 9वें भाव में अपने अथवा दूसरे के नवांश में देखे तब उपरोक्त तीन शर्तों से कोई एक पूर्ण होगी।

यदि एक से अधिक ग्रह इन शर्तों को पूरा करें, तो उनमें से सर्वाधिक बली ग्रह को महत्त्व देना चाहिये।

ग्रहों पर आधारित सिद्धांत

1. जब एक ग्रह लग्न को पूर्ण पाराशरी दृष्टि से देखे और लग्न के अंशों से अंशों में अत्यधिक निकट हो तब उस ग्रह के कारकत्वों से

अथवा उस ग्रह के स्वामित्व से संबंधित प्रश्न होता है। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है जो प्रश्न के बारे में तुरंत संकेत देता है।

2. *लग्न में ग्रह या लग्न पर दृष्टि*	*प्रश्न संबंधित है*
चन्द्र, बुध	किशोर (अविवाहित) लड़का या लड़की
शनि	वृद्ध आदमी या महिला
सूर्य, बृहस्पति	प्रौढ़
शुक्र	युवा

3. 7वें भाव में ग्रह स्त्री के प्रकार को संकेतित करता है जिसके बारे में प्रश्नकर्त्ता सोच रहा है

7वें भाव में ग्रह	*प्रश्न*
सूर्य, शुक्र अथवा शनि	एक स्त्री के बारे मे, अपनी पत्नी नहीं
बृहस्पति	अपनी पत्नी के बारे में
चंद्र अथवा बुध	व्यभिचारिणी स्त्री के बारे में
शनि, राहु अथवा केतु	निम्न जाति की स्त्री के बारे में

जब कोई ग्रह वक्री अवस्था में पदावनत (हीन) होके 7वें भाव में प्रवेश करे तो विदेश गया व्यक्ति लौटता है। यदि यह ग्रह 7वें भाव से आगे है और मार्गी है तब व्यक्ति नहीं लौटता।

4. *प्रश्न में व्यक्ति की आयु ज्ञात करने की विधि*

आयु चंद्रमा के भोगांश से निर्धारित की जा सकती है।

चन्द्र का भोगांश	*स्वरूप*	*लगभग आयु*
0° - 6°	किशोर	12 वर्ष तक
6° - 12°	अविवाहित युवा	12 - 20 वर्ष
12° - 18°	वयस्क	20 - 40 वर्ष
18° - 24°	प्रौढ़	40 - 60 वर्ष
24° - 30°	वृद्ध	60 वर्ष से अधिक

मेरे विचार में प्रश्न कुंडली में सूर्य की स्थिति से आयु का अच्छा कथन किया जा सकता है।

सूर्य की स्थिति	*आयु*
लग्न से 10वें भाव तक	बाल्यावस्था से बढ़ते हुए 20 वर्ष तक
9वें भाव से 7वें भाव तक	20 वर्ष से बढ़ते हुए 40 वर्ष तक
6ठे भाव से 4थे भाव तक	40 वर्ष को बढ़ते हुए 60 वर्ष तक
4थे भाव से 2रे भाव तक	60 वर्ष से अधिक

अनुमानतः प्रत्येक भाव के लिए 6 वर्ष की अवधि बढ़ाई जा सकती है। मैंने प्रायः ऐसा पाया हैं कि जिन कुंडलियों में आरुढ़ लग्न को प्राथमिकता दी जा रही है, उसमें भी आयु के लिए उदित लग्न से ही विश्लेषण करना चाहिए।

5. *ग्रहों का बल*

प्रश्न कुंडली में बलवान ग्रह	*विषय से संबंधी प्रश्न*
मंगल	स्वयं
बृहस्पति	पत्नी अथवा कोई स्त्री
चन्द्र	माँ
शुक्र	अपने परिवार
बुध	भाई
सूर्य	पिता
शनि अथवा राहु/केतु	अपने शत्रुओं

6. *विभिन्न भावों में बलवान ग्रह*

किसी भाव में एक बलवान ग्रह की स्थिति, उस भाव द्वारा संकेतित किए जाने वाले व्यक्ति से सम्बन्धित प्रश्न को दर्शाती है।

भाव में बलवान ग्रह	*विषय संबंधी प्रश्न*
लग्न	अपने बारे में, अपने जैसा कोई अथवा नजदीकी के बारे में
3 भाव	भाई
4 भाव	माँ अथवा बहन
5 भाव	बच्चे
6 भाव	शत्रु
7 भाव	पत्नी
9 भाव	पिता, धर्म, भाग्य
10 भाव	गुरू, व्यवसाय, कर्म

ऊपर विवेचित प्रश्न की विषय वस्तु केवल संकेतात्मक है और प्रश्न उस भाव के कारकत्वों में से किसी एक से संबंधित हो सकता है जहां बली ग्रह स्थित है। ग्रह का बल उसकी नवांश में स्थिति से निर्धारित किया जा सकता है।

चंद्रमा पर आधारित सिद्धांत

लग्नेश अथवा एकादशेश में से जो बलवान हो उस ग्रह से उस भाव की संख्या तक गिनें जहाँ प्रश्न कुंडली में चंद्रमा स्थित है। तब प्रश्न की

विषय-वस्तु उस भाव संख्या से संबंधित होती है। मान लीजिए, लग्नेश और एकादशेश में एकादशेश बलवान है और अपने भाव 11वें भाव में स्थित है, जबकि चंद्रमा तीसरे भाव में है जो कि एकादशेश से पंचम है। इस मामले में प्रश्न की विषयवस्तु प्रश्न कुंडली के 5वें भाव से संबंधित है।

इस सिद्धांत का भी एक परिवर्तित रूप है। यदि चंद्रमा, लग्नेश अथवा एकादशेश की अपेक्षा अधिक बलवान हो तब चंद्रमा से लग्नेश तक भावों को गिनों। तब प्रश्न की विषयवस्तु उस भाव से संबंधित होती है जो बलवान चंद्रमा और लग्नेश के बीच की दूरी द्वारा संकेतित है।

लग्न के नक्षत्र पर आधारित प्रश्न

27 नक्षत्रों को चक्रीय क्रम में धातु, मूल और जीव में बाँटा गया है।

नक्षत्र			*विषय से संबंधी प्रश्न*
अश्विनी	मघा	मूल	धातु अथवा कर्म (कार्य)
भरणी	पू० फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	मूल अथवा भोग (भोग)
कृत्तिका	उ० फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	जीव अथवा नाश (विनाश)
रोहिणी	हस्त	श्रवण	धातु अथवा कर्म (कार्य)
मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा	मूल अथवा भोग (भोग)
आर्द्रा	स्वाति	शतभिषा	जीव अथवा नाश (विनाश)
पुनर्वसु	विशाखा	पू० भाद्र.	धातु अथवा कर्म (कार्य)
पुष्य	अनुराधा	उ० भाद्र.	मूल अथवा भोग (भोग)
आश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती	जीव अथवा नाश (विनाश)

भचक्र की राशियाँ भी इसी प्रकार चक्रीय क्रम का अनुसरण करती हैं।

राशियां				*विषय से संबंधी प्रश्न*
मेष	कर्क	तुला	मकर	धातु अथवा कर्म (कार्य)
वृष	सिंह	वृश्चिक	कुंभ	मूल अथवा भोग (भोग)
मिथुन	कन्या	धनु	मीन	जीव अथवा नाश (विनाश)

आधुनिक सिद्धांत

चंद्र और उसके नक्षत्र

प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा की किसी भाव में स्थिति, उस भाव से एवं अपने स्वामित्व के भाव से प्रश्न सूचित करती है। यह विधि, इससे अगले अनुच्छेद में व्याख्यायित की गई विधि, और लग्न पर एक ग्रह की पूर्ण पाराशरी दृष्टि, जैसा कि शास्त्रीय सिद्धांत में वर्णन किया गया है, अच्छे परिणाम देती है। चन्द्रमा के नक्षत्र के स्वामी की भी स्थापना देखें जो प्रश्न की विषयवस्तु

सूचित करता है। यद्यपि विश्लेषण में न केवल चंद्रमा के नक्षत्रेश का विश्लेषण करना अनिवार्य है बल्कि गहन विश्लेषण के लिए लग्न, कार्येश अथवा अन्य किसी ग्रह के नक्षत्रेश को भी देखना चाहिये।

एक राशि में ग्रह का प्रवेश

एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत, जो मेरी दृष्टि में विस्मयकारी परिणामों को देता है, उस ग्रह की भूमिका है जिसने अभी-अभी एक राशि में प्रवेश किया है। एकमात्र तथ्य यह है कि ग्रह के एक राशि में प्रवेश या संचरण करते समय पूछा गया प्रश्न एक अर्थ रखता है और उस भाव से संबंधित तथा उस ग्रह के शासित भावों से संबंधित प्रश्न को दर्शाता है।

जब तक ग्रह उस राशि में संचार करता है तब तक प्रश्न के परिणाम पर उस संचरण के शुभ अथवा अशुभ कारकत्वों का प्रभाव लगातार बना रहता है।

लग्नेश और ताजिक संबंध

मूक प्रश्न के विषय को प्राप्त करने की यह एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधि है। इसके चरण निम्न प्रकार से हैं :

(क) प्रश्न कुंडली में लग्नेश के भोगांश को देखें।

(ख) प्रश्न कुंडली में लग्नेश का किसी दूसरे ग्रह से निर्मित निकटतम ताजिक संबंध को देखें।

(ग) यह संबंध तीव्र गति अथवा मंदगति ग्रह पर निर्भर करता है और यह या तो एक इत्थसाल अथवा इशराफ योग हो सकता है। (विस्तार के लिए ताजिक योगों पर लिखे अध्याय को देखें)।

(घ) लग्नेश और उस ग्रह की स्थिति और स्वामित्व को देखें जिनकी परस्पर निकटतम दृष्टि है। यहां दृष्टि का तात्पर्य ताजिक दृष्टि है जो दीप्तांश सीमा के भीतर हों।

(च) प्रश्न की विषयवस्तु इस प्रकार देखी जा सकती है

- एक इत्थसाल योग अधिकांशतः भविष्य से संबंधित प्रश्न की विषयवस्तु बताता है।
- एक इशराफ योग प्रायः कुछ पिछली घटना सूचित करता है।
- इन दोनों ग्रहों के बीच 1° की दूरी या अत्यधिक निकट दृष्टि संबंध होने के नाते, प्रश्न की विषयवस्तु की वर्तमान घटना सूचित करती है।

(छ) पुनः, लग्नेश की स्थिति, निकटतम दृष्टि रखने वाले ग्रह की स्थिति एवं स्वामित्व प्रश्न की विषयवस्तु सूचित करती है।

बिना दृष्टि के ग्रहों के निकटतम अंश

दूसरा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अवलोकन है, जिसे मैंने हजारों प्रश्न कुंडलियों पर कार्य करने के बाद परिणाम स्परूप निकाला है, कि यदि दो ग्रहों के बीच उनकी 2, 12, 6, 8 परस्पर स्थितियों के कारण कोई ताजिक दृष्टि नहीं है (भले ही यह लग्नेश, कार्येश अथवा कोई दूसरा ग्रह हों) तथापि यदि राशि की उपेक्षा करके दो ग्रह निकटतम अंशों में स्थित हैं तब उक्त निकट ग्रह प्रश्न और उसके परिणामों के बारे में अवश्य उद्घाटन करते हैं। इस सिद्धांत के आधार को समझा जाना चाहिए। दो ग्रह बिना किसी ताजिक दृष्टि के निकट अंशों में निर्विवाद रूप से या तो नक्त योग अथवा यमया योग द्वारा संयुक्त होते हैं। इसीलिए क्रमशः या तो किसी की सहायता अथवा एक बाह्य स्त्रोत के संयोग से अनुकूल परिणाम देते हैं अथवा प्रयासों के बावजूद असफलता दर्शाते हैं। जहां कोई ऐसा संयोजन न भी हो तो भी बिना ताजिक दृष्टि के ग्रहों के समीप अंश एक ऐसा परस्पर सम्बन्ध बनाते हैं जिसे परखा जाना आवश्यक है।

राहु और केतु

प्रश्न कुंडली पर मेरी टिप्पणियाँ एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष भी खोलती हैं जिस पर प्रश्न पर लिखे विविध ग्रंथ मौन हैं। यह राहु और केतु की भूमिका से संबधित है। मेरे विचार में इन दो अशुभ ग्रहों को अत्यधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए यदि वे लग्नेश, चन्द्रमा अथवा कार्येश से स्थिति, दृष्टि अथवा अंशों की निकटता द्वारा संबंधित हों। इसका महत्त्व इस तथ्य से भी संबंधित हो सकता है कि यदि चन्द्रमा का नक्षत्रेश राहु अथवा केतु है तब भी उन्हें प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

चन्द्रमा से, इसके नक्षत्रेश से, प्रश्न में बलवान ग्रह से, लग्न पर पूर्ण पाराशरी दृष्टि रखने वाले ग्रह से, निकटतम ताजिक दृष्टि रखने वाले ग्रह से अथवा ऊपर विवेचित अन्य आधुनिक सिद्धांतों से जब प्रश्न की विषयवस्तु मालूम हो जाए तब प्रश्न के भाव के स्वामी को कार्येश के रूप में जाना जाता है। तब प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में कार्येश का अन्य ग्रहों के साथ संबंध जैसे निकटतम ताजिक संबंध आदि देखें।

कितने प्रश्न

एक प्रश्नकर्त्ता कोई प्रश्न पूछ रहा है लेकिन उसके मन में कुछ और है। इन स्थितियों में मूक प्रश्न के सिद्धांत मदद करते हैं। मान लीजिए लग्नेश और चन्द्रमा किसी प्रश्न को सूचित करते हैं और व्यक्ति बिल्कुल दूसरा प्रश्न पूछ रहा है, तब कोई बड़ी आसानी के साथ कह सकता है कि उसके मन में कुछ और चल रहा है। दूसरा अनुसरण करने वाला सिद्धांत है कि जब एक ग्रह एक साथ लग्न, लग्नेश और चंद्रमा को देखता है तब वहाँ क्रमशः एक दो अथवा तीन प्रश्न होते हैं। इन बहुविध प्रश्नों की प्रकृति को ऊपर उल्लिखित सिद्धांतों से निश्चित किया जा सकता है।

क्या प्रश्न शुभ है अथवा अशुभ

यदि एक क्रूर ग्रह लग्न में स्थित है अथवा लग्न पर उसकी दृष्टि है अथवा क्रूर ग्रह के साथ लग्नेश की निकटतम दृष्टि है तब प्रश्न अशुभ प्रकृति का है।

ऊपर विवेचित सिद्धांतों को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरण संख्या : 1

मूक प्रश्न

	चन्द्र 4°20' मंगल 15°19' केतु 29°58'	सूर्य 20°27'	बुध 12°26' शुक्र 20°27'
शनि 18°23'	उदाहरण : 1 प्रातः 8:32 5 जून 1994 नई दिल्ली		लग्न 2°20'
		बृहस्पति(व) 12°3' राहु 29°58'	

उदित लग्न कर्क है जिसका स्वामी चंद्रमा 10वें भाव में स्थित है। लग्न पर 10वें भाव से दशमेश मंगल की पूर्ण पराशरी दृष्टि भी पड़ रही है जो 10वें भाव अथवा कर्म स्थान से संबंधित प्रश्न को सूचित कर रहा है। चंद्रमा केतु के नक्षत्र में है जो 10वें भाव में दशमेश मंगल के साथ व्यवसाय से संबंधित प्रश्न सूचित कर रहा है।

उदित लग्न सम है और पहले नवांश में जीव चिंता दिखा रहा है।

लग्नेश चंद्रमा बृहस्पति के साथ निकट दृष्टि में है जो षष्ठेश और भाग्येश (नवमेश) होकर 4थे भाव में स्थित है और 10वें भाव, दशमेश और लग्नेश चन्द्र को देख रहा है। ताजिक योग से लग्नेश चन्द्र, नवमेश बृहस्पति और दशमेश मंगल के बीच दृष्टि द्वारा यह निकट संबंध व्यवसाय से संबंधित इच्छाओं की पूर्ति के लिए एक बहुत बलवान राजयोग है। चन्द्रमा की दूसरी निकटतम दृष्टि बुध के साथ है जो द्वादशेश होकर 12वें भाव में है और एकादशेश शुक्र के साथ स्थित होकर विदेशी स्रोतों से उपलब्धियां सूचित कर रहा है। यह व्यक्ति अपना भविष्य और एक अनुबंध से होने वाली प्राप्तियों को जानना चाहता था जो उसे मिलने वाली हैं। उसकी चिंता इस तथ्य से भी प्रकट होती है कि यह कार्य लगभग 3000 किलोमीटर दूर स्थित है जो हमारे उद्देश्य के लिए विदेश समान ही है।

कार्येश मंगल द्वादशेश बुध के साथ निकट दृष्टि से एक इत्थसाल योग बना रहा है जो भावी घटना को दिखा रहा है और षष्ठेश वक्री बृहस्पति के साथ इशराफ योग बना रहा है जो एक पिछली घटना दिखा रहा है। समय की अवधि में, वक्री बृहस्पति के साथ इशराफ योग प्रतियोगी निविदा प्राप्त करने में कुछ क्रिया की पुनरावृत्ति के साथ तीन दिन बताता है। उसने स्वीकार किया कि उसे निविदा तीन दिन पूर्व दुबारा जमा करनी पड़ी और इसीलिए कार्य की पुनरावृत्ति हुई। घटनाओं के समय की विधि और वक्री ग्रहों की भूमिका को इस पुस्तक में अन्यत्र व्याख्यायित किया गया है। कार्येश मंगल का द्वादशेश बुध के साथ इत्थसाल तीन महीनों की समयावधि की भावी घटना बताता है। केंद्र और चर राशि में मंगल दिनों को और अपोक्लीम तथा द्विस्वभाव राशि में बुध वर्षों को बताता है। एक चर लग्न के साथ परिणामी समय महीनों में है।

बुध एकादशेश शुक्र के साथ स्थित होकर दोनों के बीच एक इत्थाल बना रहा है। उसको बताया गया कि अब से तीन महीने बाद उसके कार्य की उपलब्धियाँ सामने आने लगेंगी। उसको यह भी बताया गया कि लगातार प्रयासों के बावजूद उसे केवल ठेके का आंशिक अनुबंध ही मिल सकेगा। क्योंकि केतु ने अभी-अभी 10वें भाव में प्रवेश किया है। कार्येश दशमेश मंगल और 10वां भाव भी अष्टम भाव से अष्टमेश शनि द्वारा दृष्ट होकर पुनः कष्ट का कारण बन रहा है। उसने बाद में स्वीकार किया कि आधा कार्य उसे मिला और दूसरा आधा कार्य किसी बहुराष्ट्रीय संस्था को दिया गया।

मूक प्रश्न में नक्षत्रों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। लग्नेश चन्द्रमा केतु के नक्षत्र में स्थित होकर 10वें भाव में दशमेश के साथ व्यवसाय से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है। मंगल दशमेश होकर 10वें भाव से लग्न को पूर्ण पाराशरी

दृष्टि से देख रहा है तथा व्यवसाय से संबंधित प्रश्न बता रहा है। दशमेश मंगल एकादशेश शुक्र के नक्षत्र में है। यह व्यवसाय से उपलब्धियां मिलने से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है। कार्येश मंगल बुध के साथ भी निकट दृष्टि में है जो एकादशेश शुक्र के साथ स्थित होकर पुनः एक विदेशी स्रोत द्वारा व्यवसाय की प्राप्तियों से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है।

मुष्ठी प्रश्न

कभी-कभी एक प्रश्नकर्त्ता ज्योतिषी से अपनी बंद मुट्ठी में रखी वस्तु के बारे में पूछता है। इसका उत्तर निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रख कर दिया जा सकता है। एक बंद मुट्ठी, मुष्ठी के रूप में जानी जाती है और इसीलिए इस प्रकार के प्रश्न को मुष्ठी प्रश्न कहा जाता है।

केंद्र में बलवान ग्रह	*वस्तु का तत्व*
सूर्य अथवा मंगल	धात्विक वस्तु (धातु)
बुध अथवा शनि	उद्भिज्ज वस्तु (मूल)
चंद्र, बृहस्पति अथवा शुक्र	जीवित प्राणी (जीव)
जातक पारिजात के अनुसार	
मंगल अथवा सूर्य	धात्विक वस्तु (धातु)
चंद्र अथवा शनि	उद्भिज्ज वस्तु (मूल)
शुक्र अथव बृहस्पति	जीवित प्राणी (जीव)
बुध	सम्मिश्रित
भुवन दीपक के अनुसार	
शनि, चंद्र, राहु अथवा मंगल	धात्विक वस्तु (धातु)
सूर्य अथवा शुक्र	उद्भिज्ज वस्तु (मूल)
बुध अथवा बृहस्पति	जीवित प्राणी (जीव)

खनिजों, उद्भिज्ज अथवा जीवित प्राणियों (धातु, मूल अथवा जीव) की तीनों श्रेणियों को आगे क्रमशः इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

धातु

खनिज अथवा धातुएँ दो प्रकार की हैं, महंगी और सस्ती। यदि कोई ग्रह एक क्रूर ग्रह के नवांश में धातुओं अथवा खनिजों को सूचित कर रहा हो, तब ये बहुमूल्य धातुओं और खनिजों, जैसे स्वर्ण, चाँदी आदि बताता है, जो लोचदार धातुओं की श्रेणी में भी आती हैं। यदि ये शुभ ग्रहों के नवांश में हैं तब ये सस्ती धातुओं और खनिजों जैसे, मृतिका, कोयला, चट्टान आदि को बताता है, जो अलोचदार धातुओं की श्रेणी में आती हैं। धातुओं की लोचता पर

आधारित शास्त्रीय वर्गीकरण अधिक तार्किक है, क्योंकि कुछ धातुएं अलोचदार होने पर भी बहुमूल्य होती हैं।

मूल

इसके भी दो प्रकार हैं। भूमि पर उगने वाले तथा पानी में उगने वाले मूल। यदि एक उद्भिज्ज वस्तु को संकेतित करने वाला ग्रह एक जलीय नवांश में है (कर्क, वृश्चिक, मकर, कुंभ अथवा मीन या 4, 8, 12 राशियों और शनि द्वारा शासित राशियों 10 और 11) तब यह जल में उगने वाली उद्भिज्ज वस्तुओं अथवा जलज मूल को सूचित करता है। यदि ग्रह शेष राशियों 1, 2, 3, 5, 6, 7 और 9 के नवांशों में है तब यह भूमि पर उगने वाली वस्तुओं अथवा स्थलज मूल को बताता है।

जीव

इसके तीन प्रकार हैं द्विपाद, चतुष्पाद और कीड़ों सहित रेंगने वाले प्राणी। यह जान लेने के बाद कि प्रश्न एक जीवित प्राणी से संबंधित है, तो उस बलवान ग्रह को देखें जो लग्न को स्थिति, दृष्टि अथवा युति द्वारा प्रभावित कर रहा है।

लग्न को प्रभावित करने वाला बलवान ग्रह	*जीवित प्राणियों की श्रेणी*
बृहस्पति अथवा शुक्र	द्विपाद
मंगल अथवा सूर्य	चतुष्पाद
चंद्र अथवा राहु	रेंगने वाले कीड़े
बुध अथवा शनि	उड़ने वाले पक्षी

पुनः जब वे शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों तब एक चतुष्पाद, एक पालतू पशु हो सकता है, और क्रूर ग्रहों के प्रभाव में हों तब एक खतरनाक अथवा हिंसक पशु हो सकता है। इसी प्रकार दूसरी श्रेणियों के लिए भी शुभ अथवा अशुभ ग्रहों का प्रभाव दूसरे जीवित प्राणियों को सूचित करता है।

वस्तु की प्रकृति

क्या वस्तु की प्रकृति धातु, मूल या जीव की है। इसे पहले व्याख्यायित सिद्धांतों के अनुसार देखना होगा।

वस्तु का आकार

प्रश्न लग्न पर सर्वाधिक प्रभाव रखने वाला ग्रह मुट्ठी में रखी वस्तु के आकार को सूचित करता है।

ग्रह	*आकार*
चंद्र	गोल अथवा खोखला
शुक्र	पतला अथवा कमजोर, लेकिन आकर्षक
सूर्य अथवा मंगल	वर्गाकार
बृहस्पति अथवा बुध	अंडाकार अथवा ठोस
शनि अथवा राहु	दीर्घ अथवा लम्बा

वस्तु का रंग

लग्न को प्रभावित करने वाला ग्रह	*रंग*
मंगल	लाल अथवा रक्तिम लाल
बृहस्पति	सुनहरा अथवा सुनहरा पीला
बुध	हरा
सूर्य	चमकीला अथवा रक्तिम
चंद्र	सफेद
शुक्र	चमकीला और सफेद
शनि	गहरा अथवा काला
राहु/केतु	काला

7
अस्वस्थता, बीमारी और रोगी का स्वास्थ्य लाभ

प्रश्न के क्षेत्रों में एक सर्वप्रमुख क्षेत्र अस्वस्थता, बीमारी और रोगी के स्वास्थ्य लाभ का विश्लेषण है। जीवन में वास्तविक सुख-शान्ति, व्यक्ति और उसके परिवार जनों आदि के रोग मुक्त और शांतिपूर्ण अस्तित्व में निहित है। प्रत्यक्षतः व्यक्ति की कोई चिन्ता उसे न केवल उसके चिकित्सक के पास ही पहुंचाती है बल्कि उसके ज्योतिषी के पास भी, जो कुंडली का बहुत सावधानी से अध्ययन कर बीमारी का परिणाम सूचित करता है और कुछ चिकित्सा अथवा उपायों को सुझाता है जो परिस्थितियों के अंतर्गत उपयुक्त हो सकते हैं।

किस भाव से क्या देखें

प्रश्न कुंडली में लग्न चिकित्सक है, चौथा भाव चिकित्सा है, सप्तम भाव बीमारी है और दसवां भाव रोगी है। इस प्रकार चारों केन्द्र इस विश्लेषण में महत्व प्राप्त कर लेते हैं। लग्न का तात्पर्य न केवल चिकित्सक है बल्कि उससे उसकी प्रत्येक चीज, उसकी योग्यता, रोग-निरुपण उसकी समझ आदि जुड़ी होती है। इसी प्रकार अन्य केन्द्रों को क्रमशः चिकित्सा, बीमारी और रोगी के लिए देखना चाहिए। चिकित्सा में दवाई सम्मिलित है और बीमारी में बीमारी की प्रचंडता अथवा पुरानी बीमारी की जटिलता, उसके उपचार की संभावनाएं शामिल है और अंततः रोगी में उसका सहयोग अथवा इच्छा-शक्ति, दवाइयां और सावधानियां लेना शामिल है। मैं मानता हूँ कि दसवां भाव स्वयं रोगी की अपेक्षा रोगी के व्यवहार और इच्छा-शक्ति को बताता है। यह एकमात्र तथ्य किसी बीमारी और उसके उपचार के अंतिम परिणाम में अनेक विभिन्नताएं पैदा कर सकता है।

शरीर के अंग

शरीर में बीमारी का स्थान रखने वाले अंगों की पहचान के लिए दो विधियां प्रयुक्त की जाती हैं। द्रेष्काण की पहली विधि जन्मकालीन फलित

ज्योतिष के साथ-साथ प्रश्न में भी प्रयुक्त की जाती है जबकि दूसरी विधि केवल प्रश्न में ही प्रयुक्त की जाती है। दोनों असीम गुण रखती हैं और इसलिए दोनों को विस्तार से समझने की आवश्यकता है।

प्रथम विधि : बारह भावों पर आधारित

कुंडली के बारह भाव शरीर के विभिन्न अंगों को व्यक्त करते हैं। शरीर के किस अंग में बीमारी है, यह जानने के लिए निम्न को देखें :

1. किसी भाव पर क्रूर ग्रहों की स्थिति, दृष्टि अथवा युति द्वारा पड़ने वाला प्रभाव।
2. किसी भाव के स्वामी पर क्रूर ग्रहों की स्थिति, दृष्टि अथवा युति द्वारा पड़ने वाला प्रभाव, जैसा ऊपर है।
3. प्रश्न पूछते समय व्यक्ति द्वारा छूने वाला शरीर का अंग।
4. पहले व्याख्यायित विधियों में से किसी के द्वारा निर्धारित किया गया आरुढ़ लग्न।
5. भाव, जहां पीड़ित लग्नेश स्थित है।
6. भाव, जहां पीड़ित चन्द्रमा स्थित है।
7. भाव, जहां अशुभ प्रभाव से पीड़ित षष्ठेश स्थित है।

ये सभी भाव बीमारी के स्थान को सूचित करते हैं और इन संकेतों को समझने के लिए संपूर्ण एवं विवेकपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

शरीर के अंग, जो रोगग्रस्त हो सकते हैं, इस विधि के अनुसार निम्नलिखित हैं :
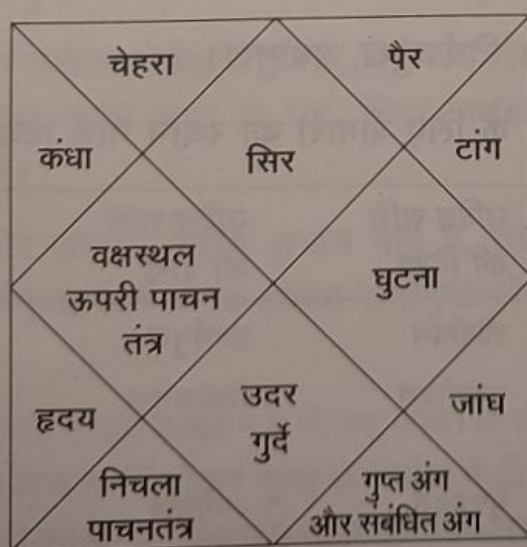
इसके अतिरिक्त ये भाव निम्नलिखित अंगों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं :

प्रथम भाव	:	सिर, मस्तिष्क, स्नायु तंत्र।
द्वितीय भाव	:	चेहरा, गला, कंठ, गर्दन, आंखें।
तृतीय भाव	:	कंधे, छाती, फेफड़े, श्वास, नसें और बाहें।
चतुर्थ भाव	:	स्तन, ऊपरी आन्त्र क्षेत्र, अथवा ऊपरी पाचन तंत्र।
पंचम भाव	:	हृदय, रक्त, पीठ, रक्तसंचरण तंत्र।
षष्ठ भाव	:	निम्न उदर अथवा निम्न पाचन तंत्र, आंतें, अंतड़ियां, कमर, यकृत।
सप्तम भाव	:	उदरीय गुहिका, गुर्दे।
अष्टम भाव	:	गुप्त अंग, स्रावी तंत्र, अंतड़ियां, मलाशय, मूत्राशय और मेरुदण्ड।
नवम भाव	:	जाँघें, नितम्ब और धमनी तंत्र (धमनियां)।
दशम भाव	:	घुटने, हड्डियां और जोड़।
एकादश भाव	:	टांगें, टखने और श्वास।
द्वादश भाव	:	पैर, लसीका तंत्र और आंखें।

द्वितीय विधि : लग्न की राशि पर आधारित

इस विधि में हम प्रश्न के समय पर उदित राशि को तीन परिवर्तनीय तथ्यों के अनुसार वर्गीकृत करते हैं।

अ) चर, स्थिर अथवा द्विस्वभाव।

ब) शीर्षोदय, पृष्ठोदय अथवा उभयोदय।

स) ऊर्ध्वमुख, तिर्यकमुख, अधोमुख।

इन तीन योगों के लिए बीमारी का स्थान नीचे दिया गया है।

उदित राशि की प्रकृति	*उदित राशि की दिशा*	*उदित राशि की दृष्टि*	*बीमारी का स्थान*
चर	शीर्षोदय	ऊर्ध्वमुख	कंठ से ऊपर
स्थिर	उभयोदय	तिर्यकमुख	कंठ से नीचे और कमर से ऊपर
द्विस्वभाव	पृष्ठोदय	अधोमुख	कमर से नीचे

उभयोदय राशि कभी भी स्थिर राशि नहीं हो सकती क्योंकि केवल मीन राशि ही उभयोदय है जो कि द्विस्वभाव राशि है। क्या शास्त्रीय योग लग्न के उदित अंशों पर चर अथवा स्थिर राशि की ओर झुकाव से निर्मित होता है, यह शोध का विषय है। यहां लग्न की राशि में तीन परिवर्तन प्रदान किए गए हैं। यदि सभी तीनों परिवर्तन, क्रमशः चर, शीर्षोदय और ऊर्ध्वमुख राशि लग्न में है तब बीमारी का स्थान ऊपर सूचित के अनुसार है। जब वे मेल नहीं खाते तब इन तीन परिवर्तन शर्तों के बीच भेद करने के लिए निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

दृष्टि के आधार पर राशियां तीन प्रकार की हैं ऊर्ध्वमुख, तिर्यंकमुख और अधोमुख।

i) ऊर्ध्वमुख : सूर्य से पीछे छूटी राशि और उसके त्रिकोण ऊर्ध्वमुख हैं। अब हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए सूर्य प्रश्न कुंडली में मेष राशि में है जिसका अर्थ है कि सूर्य ने मीन राशि को पीछे छोड़ा है इसीलिए मीन और उसके त्रिकोण, कर्क और वृश्चिक ऊर्ध्वमुख राशियां हैं। दूसरे शब्दों में सूर्य और उसके त्रिकोणों से 12वीं राशियां ऊर्ध्वमुख है।

ii) तिर्यंकमुख : सूर्य द्वारा भविष्य में ग्रहीत होने वाली राशि तिर्यंकमुख है। हमारे उदाहरण में, सूर्य मेष में है। यह वृष में प्रवेश करेगा और इसीलिए वृष और उसके त्रिकोण, कन्या और मकर तिर्यंकमुख राशियां है। दूसरे शब्दों में, सूर्य और उसके त्रिकोणों से दूसरी राशि तिर्यंकमुख है।

iii) अधोमुख : सूर्य द्वारा गृहीत राशि और उसके त्रिकोण अधोमुख हैं। हमारे उदाहरण में सूर्य मेष में है और इसीलिए मेष और उसके त्रिकोण सिंह और धनु अधोमुख राशियां हैं।

1. यदि लग्न और उसका नवांश समान है, जैसे चर, स्थिर अथवा द्विस्वभाव, तब बीमारी का स्थान लग्न के चर, स्थिर अथवा द्विस्वभाव होने से देखा जाता है।

2. यदि लग्न और उसका नवांश समान नहीं है, तब बीमारी का स्थान लग्न के ऊर्ध्वमुख, तिर्यंकमुख अथवा अधोमुख होने के अनुसार देखा जाता है।

3. यदि प्रश्न कुंडली में सूर्य बलहीन है तो यह कन्या के तीसरे द्रेष्काण अथवा तुला के प्रथम द्रेष्काण में होकर तुला के नवांश में ही स्थित होगा। दूसरी शर्त केवल तभी संभव है, यदि सूर्य तुला के प्रथम नवांश 0°00' से 3°20'

के बीच में है, जब यह प्रश्न कुंडली और नवांश दोनों में नीच होगा। अतः जब प्रश्न कुंडली में सूर्य बलहीन है तब बीमारी का स्थान लग्न के शीर्षोदय, पृष्ठोदय अथवा उभयोदय होने से निर्धारित किया जाता है।

इस विधि द्वारा निर्दिष्ट शरीर के अंग तृतीय विधि में दिए गए आरेखों में दिए गए है। क्योंकि यह विधि सुसंगत परिणाम नहीं देती इसलिए इस क्षेत्र में और शोध की आवश्यकता है। ज्योतिषियों को ऐसे योगों के परीक्षण करने में सक्रिय रुचि रखनी होगी ताकि हमारी पीढ़ी भी इस विशाल ज्ञान की वृद्धि में अपना योगदान दे सके।

तृतीय विधि : लग्न के द्रेष्काण पर आधारित

यदि उदित लग्न प्रथम द्रेष्काण में है तो शरीर का रोगग्रस्त अंग कंठ से ऊपर है। यदि दूसरे द्रेष्काण में है तो शरीर का रोगग्रस्त अंग कंठ और कमर के बीच है और यदि तीसरे द्रेष्काण में है तो कमर से नीचे है।

इस योजना में, शरीर के अंगों को तीन भागों में बांटा गया है जैसा कि नीचे आरेखों में दिखाया गया है। लग्न का व्यतीत हिस्सा शरीर के बाएं हिस्से को दिखाता है जबकि अभी उदित लग्न शरीर का दाहिना भाग सूचित करता है। अब हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए कि, लग्न 8° पर होने पर प्रथम द्रेष्काण में है (कंठ से ऊपर) तब 0° से 8° सिर के बायें भाग का प्रतिनिधित्व करेगा जबकि 8° से 30° सिर के दाहिने भाग का प्रतिनिधित्व करेगा। अब यदि पीड़ित षष्ठेश अपने 0° से 8° के बीच लग्न

कंठ से ऊपर

दाहिनी आंख
दाहिना कान
सिर का दाहिना भाग
दाहिनी नासिका
दाहिना गाल
मुंह का दाहिना भाग
दाहिनी ठोढ़ी
बांयीं आंख
सिर का बांया भाग
बांया कान
बांयीं नासिका
मुंह का बांया भाग
बांया गाल
बांयी ठोढ़ी
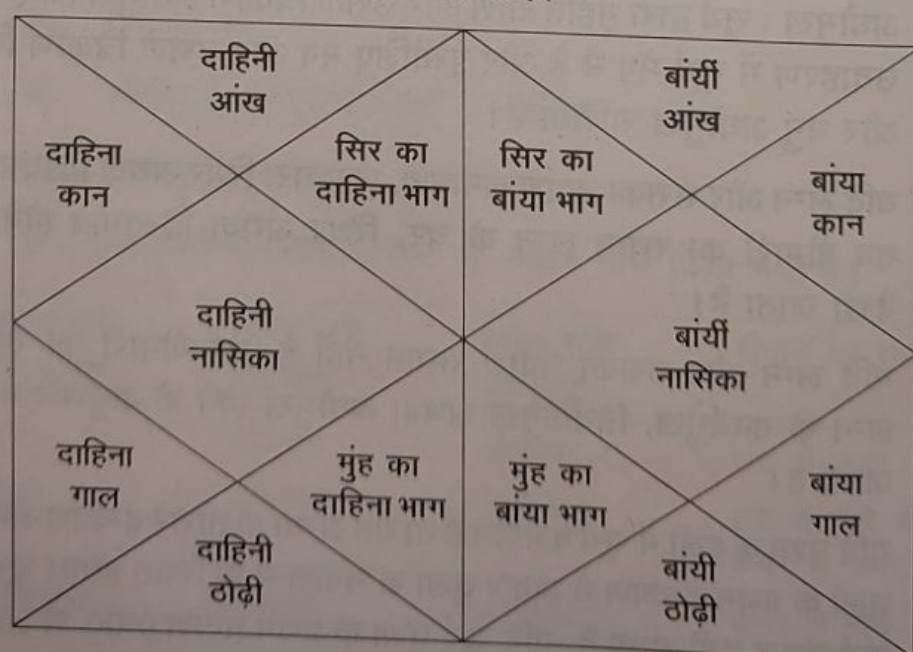
में स्थित है तब यह बीमारी का स्थान सिर के बाएं भाग में सूचित करेगा। जबकि यदि पीड़ित षष्ठेश 8° और 30° के बीच लग्न में स्थित है तब बीमारी सिर के दाहिने भाग में है। यद्यपि सप्तम भाव में यह स्थिति विपरीत है। सप्तम भाव का व्यतीत भाग शरीर के दाहिने हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि सप्तम भाव का शेष भाग शरीर के बायें हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।

कंठ और कमर के बीच

कमर से नीचे

द्रेष्काण से बीमारी का स्थान निर्धारित करने की उपर्युक्त योजना का एक प्रकार निम्नलिखित आरेख में दिया गया है, जिसमें प्रारंभिक द्रेष्काण को '1' अंकित किया है। लग्न के उदित द्रेष्काण से प्रारम्भ करें। अब हम उदाहरण लेते हैं। अध्याय –17 का उदाहरण संख्या –2 कैंसर से पीड़ित एक रोगी का मामला है जो एक दांत की जड़ से प्रारम्भ हुआ था और बाद में पूरे दाहिने जबड़े में फैल गया। उदित लग्न 9°42' पर वृश्चिक के प्रथम द्रेष्काण में है। इस द्रेष्काण को संख्या 1 के रूप में रखें, फिर शरीर के अंगों को बताने वाले द्रेष्काण भागों के साथ आरेख को पूर्ण कर दें। अब प्रश्न कुंडली के ग्रहों को उनके द्वारा गृहीत द्रेष्काणों में स्थित कर दें।

उदाहरण संख्या : 1

बीमारी का स्थान रखने वाले शरीर के अंगों को निर्धारित करने में द्रेष्काण का उपयोग

	केतु 3°47'		
शनि (व) 28°33'	उदाहरण : 1 दोपहर 12:33 बजे 1 सितम्बर 1995 दिल्ली		
			सूर्य 14°36' शुक्र 17°41'
	लग्न 9°42' चन्द्र 0°27' बृहस्पति 13°02'	मंगल 2°15' राहु 3°47'	बुध 10°20'

अब ऊपर किए गए विवेचनानुसार द्रेष्काण चार्ट को पूर्ण कर दें। और प्रश्न कुंडली के ग्रहों का स्थान उनके अलग-अलग द्रेष्काणों में स्थित कर दें। छठे भाव में शनि और मंगल द्वारा दृष्ट केतु बीमारी को संकेतित कर रहा है जो 16वें द्रेष्काण से दाहिने जबड़े को सूचित करता है। षष्ठेश मंगल बारहवें भाव में 34वें द्रेष्काण पर है जो बायीं आंख बताता है। यह व्यक्ति अपने दाहिने जबड़े के कैंसर से पीड़ित रहा है जो एक दाढ़ की जड़ से फैलना शुरू हुआ था। अपनी मृत्यु से पहले वह अपनी दृष्टि खो बैठा जिसमें उसकी बायीं आंख अधिक प्रभावित थी। इसलिए बीमारी का स्थान रखने वाले शरीर के अंग की पहचान करने के लिए द्रेष्काण का उपयोग प्रचुर रूप से संगत है। यह विधि समान रूप से जन्म कुंडली एवं प्रश्न कुंडली के लिए भी उपयोगी है और अनेक मामलों में मेरे द्वारा प्रयोग की गई है।

विश्लेषण के आधारभूत सिद्धान्त

बीमारियों के विश्लेषण के लिए प्रश्न कुंडली के आधारभूत सिद्धान्त हैं और उनका उपचार लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा के बलाबल और शुभ अथवा अशुभ ग्रहों की स्थिति और प्रभाव के चारों ओर घूमता है।

यदि प्रश्न के समय चर लग्न उदय हो रहा है तब पद में परिवर्तन होगा और स्थिति शीघ्र बदलेगी। यदि स्थिर लग्न है तब पद में कोई परिवर्तन नहीं है अथवा ऐसी स्थिति लगातार बनी रह सकती हैं। स्थिर लग्न होने पर बीमारी भी प्रायः वही होती है जिसका संदेह हो। यदि द्विस्वभाव लग्न है तब हमें यह देखना है कि यह चर की ओर है अथवा स्थिर की ओर जो तदनुसार परिणाम बताएगा। द्विस्वभाव लग्न के मामले में और विशेषतः इसके अतिरिक्त जब सप्तम भाव में वक्री ग्रह स्थित है तब संदिग्ध बीमारी की अपेक्षा कोई और बीमारी होती है।

शीघ्र उपचार का एक आधारभूत सिद्धान्त यह है कि केन्द्र, त्रिकोण और आठवां भाव (1,4,7,10,5,9 और आठवां भाव) शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हों, चन्द्रमा उपचय भावों (3,6,10 11वां भाव) में हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इस तथ्य के बावजूद कि सामान्यतः कोई भी ग्रह आठवें भाव में स्थित नहीं होना चाहिए लेकिन रोगी के स्वास्थ्य लाभ से संबंधित प्रश्नों में यह एक अपवाद के रूप में लिया जा सकता है।

शुभ प्रभाव

1. लग्न, केन्द्रों और त्रिकोणों में स्थित शुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा शुभ कर्तरी में लग्न रोगी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं। इसी स्थिति में क्रूर ग्रह शीघ्र लाभ को सूचित नहीं करते।
2. लग्न में एक बलवान शुभ ग्रह बीमारी के उपचार के लिए उत्तम है।
3. यदि लग्न और लग्नेश बली हों और शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो बीमारी शीघ्र ठीक होगी।
4. 3,6,9,11वें भावों में शुभ ग्रह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देते हैं।
5. 1,5,7,8वें भावों में शुभ ग्रह और 3,6,10,11वें भावों में शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट चन्द्रमा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दर्शाता है।
6. लग्न में शुभ ग्रह अथवा बिना अशुभ प्रभावों अथवा दृष्टि के बली और ठीक प्रकार से सुव्यवस्थित लग्न बताता है कि निदान ठीक है।
7. 4थे भाव में शुभ ग्रह दर्शाते हैं कि रोगी को दी जाने वाली दवाई उपयुक्त है।
8. यदि लग्नेश केन्द्र में बली होकर स्वराशि, उच्च अथवा मूल त्रिकोण राशि में स्थित है तो रोगी का स्वास्थ्य लाभ तेजी से होगा और कुछ अशुभ नहीं घटेगा।
9. जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि लग्न चिकित्सक को, 4था भाव चिकित्सा को, 7वां भाव बीमारी को, और 10वां भाव रोगी को सूचित करता है। 7वें भाव के अतिरिक्त बीमारी के लिए 6ठे भाव और कन्या राशि को भी रोग स्थान होने और प्राकृतिक भचक्र का छठा भाव होने के कारण महत्त्व दिया जाना चाहिए।

अशुभ प्रभाव

1. यदि लग्न में क्रूर ग्रह है तो चिकित्सक सुयोग्य नहीं है अथवा निदान ठीक नहीं है और निर्णय लेने में त्रुटि है। बीमारी चिकित्सक से ठीक नहीं हो सकती।
2. यदि 4थे भाव और 7वें भाव में क्रूर ग्रह हैं तब जटिलताएं उत्पन्न होंगी।
3. यदि 4था भाव पीड़ित है तब गलत दवाइयां दी जा रही है।
4. यदि 7वां भाव पीड़ित है तब बीमारी एक जटिल बीमारी है।
5. यदि 10वां भाव पीड़ित है तब बीमारी स्वयं रोगी की गलती के कारण बढ़ जाएगी।

6. 3, 6,9,12 अथवा आपोक्लीम भावों में क्रूर ग्रह हों तो बीमारी वंशानुगत है। यदि ये क्रूर ग्रह स्वयं भी पाप ग्रहों से दृष्ट हैं तब दुःखद परिस्थितियों में मृत्यु हो सकती है।

इसके विपरीत लग्न, 4थे भाव, 7वें भाव और 10वें भाव पर शुभ प्रभाव हो, अथवा दूसरे शब्दों में लग्न, 4थे भाव, 7वें भाव और 10वें भाव पर अशुभ प्रभाव की अनुपस्थिति बीमारी के उपचार के लिए ठीक है। रात्रि समय के प्रश्न में लग्न में क्रूर ग्रह रोगी को बचाते हैं। बीमारी में मंगल और शनि का भिन्नाष्टक देखें। जब लग्न बलहीन है तब वहां समस्याएं हो सकती हैं विशेषतः जब मंगल और शनि षष्ठेश अथवा अष्टमेश भी हों।

वक्री ग्रह

1. लग्न में वक्री ग्रह - चिकित्सक का बदलाव।
2. 4थे भाव में वक्री ग्रह - चिकित्सा में बदलाव।
3. 7वें भाव में वक्री ग्रह - बीमारी संदिग्ध बीमारी की अपेक्षा दूसरी है। इस मामले में, 7वें भाव में वक्री ग्रह के साथ उदित द्विस्वभाव लग्न एक प्रारंभिक संदिग्ध बीमारी की अपेक्षा दूसरी बीमारी होना निश्चित रूप से सूचित करता है।
4. 4थे भाव अथवा 7वें भाव में स्थित एक वक्री ग्रह भी बीमारी का पुनः प्रकट होना बताता है।
5. यदि चन्द्रमा एक वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल में है तो यह एक असाध्य बीमारी बताता है।
6. केन्द्रों में शुभ ग्रह कुछ राहत देते हैं लेकिन यदि ये शुभ ग्रह वक्री हैं तब कुछ प्रारंभिक राहत के बाद बीमारी पुनः प्रकट होगी। केन्द्रों में क्रूर ग्रह खराब हैं जबकि वक्री क्रूर ग्रह अत्यंत खराब हैं।
7. चन्द्रमा द्वारा शासित राशि कर्क में एक वक्री ग्रह गलत दवा दिए जाने के कारण बीमारी का पुनः प्रकट होना दर्शाता है।

राहु और केतु

यदि प्रश्न लग्न में राहु है तो बीमारी ठीक नहीं हो सकती। केतु की 6ठे/8वें भाव में अथवा षष्ठेश/अष्टमेश के साथ स्थिति निदान कठिन बनाता है। लग्न, लग्नेश, चन्द्र और 6ठे भाव/षष्ठेश के साथ राहु और केतु की युति भूत अथवा भविष्य की घटना दर्शाते हुए अपरम्परागत इलाज जैसे आयुर्वेद अथवा होम्योपैथी आदि का आश्रय लेना बताती है।

चन्द्रमा की स्थिति

स्वराशि अथवा उच्च राशि में बली स्थिति में शुभ ग्रहों से युत और शुभ ग्रहों के बीच या शुभ कर्तरी योग में चन्द्रमा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दर्शाता है जबकि इसके विपरीत रोगी के ठीक न होने की आशंका रहती है। पुनः यदि 4थे भाव अथवा 8वें भाव में क्रूर ग्रहों के बीच पाप कर्तरी योग में चन्द्रमा है तो बीमारी बढ़ जाती है। यह विशेषतः 8वें भाव में होता है जहां रोगी का जीवन संकट में पड़ सकता है।

शुक्ल पक्ष और रात्रि के समय अथवा कृष्ण पक्ष और दिन के समय के प्रश्न में यदि चन्द्रमा 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में भी स्थित हो तो भी मां भगवती रोगी की रक्षा अवश्य करती है।

6ठा भाव और 8वां भाव

6ठा भाव बीमारी और पीड़ा बताता है जबकि 8वां भाव विपत्तियां बाधाएं और सामान्यतया जीवन मृत्यु की स्थिति बताता है। 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में शुभ ग्रह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ सूचित करता है।

यदि लग्नेश 6ठे भाव में स्थित है अथवा षष्ठेश लग्न में स्थित है तब बीमारी लम्बी है और रोगी को अत्यधिक पीड़ा होगी। जब इस योग में एक क्रूर ग्रह का प्रभाव भी जुड़ जाए तब मृत्यु हो सकती है। लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश की युति रोगी की मृत्यु दर्शाती है। जब कभी षष्ठेश और अष्टमेश केन्द्रों में क्रूर दृष्टि अथवा युति के अधीन स्थित हों तब भी रोगी की मृत्यु होती है। इस प्रकार लग्नेश, चन्द्रमा, षष्ठेश और अष्टमेश का योग देखा जाना चाहिए। इस संबंध में किसी पाप ग्रह का प्रभाव मृत्यु का फल देने के लिए अनिवार्य है। यह योग लग्न में बने, ऐसा अनिवार्य नहीं है बल्कि कहीं भी घटित होकर समान परिणाम दे सकता है। यदि यह लग्न, 6ठे या 8वें भाव के अतिरिक्त कहीं और घटित हो रहा है तो मृत्यु दर्शाने के लिए पाप प्रभाव की अधिकता अनिवार्य है। अष्टमेश के साथ लग्नेश का इत्थसाल भी रोगी की मृत्यु देता है। ऐसा माना जाता है कि षष्ठेश और अष्टमेश में परिवर्तन योग से रोगी को तुरन्त स्वास्थ्य लाभ होता है और पीड़ा लम्बी नहीं होती। परन्तु मैने अपने अनुभव में प्रायः ऐसा पाया है कि षष्ठेश और अष्टमेश का परिवर्तन स्वास्थ्य लाभ न देकर लम्बी बीमारी देता है। अतः इस योग को समझने के लिए और परीक्षण की आवश्यकता है।

बीमारी की अवधि

जब लग्नेश और षष्ठेश चर राशियों में स्थित है तब उपचार तेजी से होता है। यदि स्थिर राशियों में है तो बीमारी की अवधि लम्बी होती है और यदि द्विस्वभाव राशियों में है तो बीमारी की अवधि मध्यम होती है।

विश्लेषण के सूक्ष्म सिद्धान्त

प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में लग्नेश की षष्ठेश के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि बीमारी, विवाद, मुकद्दमेंबाजी आदि को व्यक्त करती है। दूसरी ओर, लग्नेश की अष्टमेश के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि जीवन - मृत्यु की स्थिति सूचित करती है जहां स्वयं रोगी का जीवन संकट में होता है। पुनः यदि चन्द्रमा का नक्षत्रेश षष्ठेश अथवा अष्टमेश है अथवा 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में स्थित ग्रह है तो उपरोक्त संकेत क्रमशः यथाकथित फल देते है।

प्रश्न के गंभीर अध्येताओं के लिए यहां सूक्ष्म सिद्धान्त अलग से दिए गए हैं, लेकिन इन्हें पहले विवेचित आधारभूत सिद्धान्तों के साथ संयुक्त रूप से देखना चाहिए, स्वतंत्र रूप से नहीं।

रोगी का शीघ्र स्वास्थ्य लाभ

लग्न अथवा लग्नेश

1. लग्न में स्थित बलवान ग्रह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देता है।
2. यदि लग्नेश और दशमेश मित्र हों अथवा इत्थसाल बना रहे हों तब बीमारी का इलाज उपयुक्त है।
3. इसी प्रकार, यदि चतुर्थेश और सप्तमेश के बीच मित्रता है अथवा इत्थसाल है तब रोगी शीघ्र ठीक होता है।
4. लग्नेश का चन्द्रमा के साथ इत्थसाल हो और चन्द्रमा शुभ ग्रहों के प्रभाव में, केन्द्र में स्थित हो।
5. शुभ ग्रहों के प्रभाव के अंतर्गत केन्द्र में लग्नेश और चन्द्रमा की स्थिति शीघ्र लाभ बताती है। इस योग में सप्तमेश वक्री नहीं होना चाहिए और सप्तमेश सूर्य या अष्टमेश से प्रभावित नहीं होना चाहिए।
6. शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए लग्नेश, अष्टमेश की अपेक्षा बलवान होना चाहिए।
7. यदि लग्नेश त्रिकोण में स्थित हो और 9वां भाव शुभ गृहों से दृष्ट हो तो बीमारी शीघ्र ठीक होती है।

चन्द्रमा

1. अपनी राशि अथवा उच्च राशि में बलवान चन्द्रमा एक शुभ ग्रह के साथ इत्थसाल योग बनाए।
2. चन्द्रमा चर अथवा द्विस्वभाव राशि में हो जबकि लग्न और लग्नेश शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हों।

3. चन्द्रमा अपनी राशि में 4थे भाव अथवा 10वें भाव में स्थित हो।
4. शुभ ग्रहों के प्रभाव में चन्द्रमा हो और लग्नेश शुभ ग्रहों के साथ इत्थसाल में हो।
5. शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा अथवा सूर्य 1,4,7 भावों में स्थित हो।

नोट: यह पहले ही उल्लिखित किया जा चुका है कि 4थे भाव में अशुभ प्रभाव के अंतर्गत चन्द्रमा उपचार के लिए अच्छा नहीं है। इसकी तुलना में चन्द्रमा की शुभ ग्रहों के प्रभाव में 4थे भाव में स्थिति शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देती है।

देरी या कोई स्वास्थ्य लाभ नहीं

1. यदि लग्नेश और दशमेश के बीच अथवा चतुर्थेश और सप्तमेश के बीच शत्रुता है तब बीमारी बढ़ जाएगी। यह सभी विषम लग्नों में सत्य होगा जबकि सम लग्नों में वे मित्र होंगे।
2. षष्ठेश बीमारी सूचित करता है और यदि किसी प्रश्न कुंडली में षष्ठेश का अष्टमेश अथवा द्वादशेश के साथ संबंध हो तो बीमारी में गंभीर जटिलताएं आ जाती हैं और स्वास्थ्य लाभ की संभावनाएं दूर हो जाती हैं।
3. लग्नेश और षष्ठेश में या तो युति/दृष्टि अथवा एक ताजिक योग के द्वारा परस्पर संबंध हो तो यह स्वास्थ्य लाभ सूचित नहीं करता।
4. यदि 6ठा भाव अथवा 8वां भाव क्रूर ग्रहों द्वारा गृहीत अथवा दृष्ट हो तब वहां स्वास्थ्य लाभ की संभावनाएं नहीं होतीं।
5. लग्नेश का 8वें भाव अथवा अष्टमेश के साथ संबंध स्वास्थ्य लाभ सूचित नहीं करता और इसके अतिरिक्त यदि इस संबंध में षष्ठेश और द्वादशेश अथवा केवल मंगल शामिल हो तब यह मृत्यु दर्शाता हैं। 8वें भाव में लग्नेश और अष्टमेश के साथ मंगल की स्थिति घातक मृत्यु अथवा शल्यचिकित्सा के बाद आकस्मिक मृत्यु बताती है।
6. 8, 9, अथवा 12वें भावों में स्थित क्रूर ग्रह स्वास्थ्य लाभ में देरी अथवा कोई स्वास्थ्य लाभ नहीं होना बताते।
7. लग्न में चन्द्रमा अथवा शुक्र हों।
8. प्रश्न कुंडली में लग्नेश एवं मंगल की युति।
9. 12वें भाव में लग्नेश स्थित हो।
10. यदि लग्नेश 6, 8 अथवा 12वें भावों में स्थित हो और अष्टमेश केन्द्र में स्थित हो।

11. स्वास्थ्य लाभ में देरी का एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि चन्द्रमा अथवा लग्नेश बलहीन अथवा पीड़ित होना चाहिए।
12. यदि लग्न/12वें भाव में मंगल स्थित हो और कुंडली रोगी का स्वास्थ्य लाभ अन्य संकेतों द्वारा दिखाए तब यह स्वास्थ्य लाभ लग्न में अथवा 12वें भाव में मंगल के कारण बहुत दुःख भोगने के बाद होगा।
13. यदि लग्नेश और दशमेश में इशराफ योग हो तो बीमारी बढ़ती है। यह योग, और आगे शोध की अपेक्षा रखता है क्योंकि लग्नेश और दशमेश के बीच इत्थसाल उपयुक्त इलाज और शीघ्र ठीक होना दिखाता है।
14. यदि रोगी और बीमारी को संकेतित करने वाले दशमेश और सप्तमेश क्रमशः निकट अंशों, योग स्थापन अथवा दृष्टि द्वारा युत हों तो बीमारी ठीक नहीं हो सकती।

रोगी की मृत्यु

यद्यपि अनेक योग रोगी की मृत्यु बताते हैं तथापि प्रश्न कुंडली का संपूर्ण परीक्षण आवश्यक है और एक ज्योतिषी को जल्दबाजी में मृत्यु की भविष्यवाणी करने की सलाह नहीं दी जाती। क्योंकि इससे रोगी एवं उसके परिवार को अत्यधिक दुःख सहना पड़ सकता है।

लग्न और लग्नेश से संयुक्त योग

1. इत्थसाल योग में लग्नेश और अष्टमेश।
2. लग्नेश अथवा चन्द्रमा केन्द्र अथवा 8वें भाव में स्थित होकर अस्त और क्रूर ग्रहों के साथ इत्थसाल बनाएं।
3. लग्नेश सप्तमेश से 4,6 अथवा 7वें भाव में स्थित हो।
4. अष्टमेश की अपेक्षा लग्नेश बलहीन हो।
5. अष्टमेश की अपेक्षा लग्नेश का बलहीन होने के साथ-साथ चन्द्रमा 6, 8 अथवा 12वें भाव में स्थित हो।
6. लग्नेश केन्द्र में स्थित हो और वक्री अथवा अस्त ग्रह के साथ इत्थसाल बना रहा हो।
7. इसी प्रकार अष्टमेश केन्द्र में स्थित हो और वक्री अथवा अस्त ग्रह के साथ इत्थसाल बना रहा हो।
8. लग्नेश और अष्टमेश इत्थसाल योग में हों, क्रूर ग्रहों से पीड़ित होकर केन्द्र में स्थित हों।

9. मृत्यु दर्शाने वाले योगों में से एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण योग यह है जब लग्न सूर्य के द्वादशांश में स्थित हो। इस स्थिति में, यदि लग्न में चर राशि है तो प्रारम्भ में तो रोगी ठीक होता प्रतीत होता है लेकिन बीमारी के पुनः उभरने के कारण अचानक मृत्यु हो जाती है।

चन्द्र से संयुक्त योग

1. लग्न में चन्द्रमा और 7वें भाव में सूर्य हो। अर्थात पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय पूछा गया प्रश्न रोगी की मृत्यु दर्शाता है।
2. लग्न में चन्द्रमा, 12वें भाव में शनि, 8वें भाव में सूर्य और 7वें भाव में मंगल हो (कुछ लोग 12वें भाव में मंगल मानते हैं)। इस योग में लग्न एवं चन्द्रमा मंगल के प्रभाव में आ जाएंगे। चन्द्रमा, लग्न और सूर्य पिछले भाव से (वक्री शनि) के प्रभाव में भी आ जाएंगे, जब गोचर में शनि वक्री होगा।
3. चन्द्रमा 8वें भाव में पृष्ठोदय राशि (1,2,4,9 और 10 राशियां) में हो और केन्द्र क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो।
4. केन्द्र में स्थित एक वक्री ग्रह का चन्द्रमा के साथ इत्थसाल हो।
5. 6ठे भाव में स्थित चन्द्रमा सप्तमेश से इत्थसाल करे।
6. सिंह राशि लग्न में, चन्द्रमा द्वादशेश के रूप में 6ठे भाव मकर में हो और षष्ठेश और सप्तमेश शनि के साथ इत्थसाल बना रहा हो।
7. यदि सभी ग्रह 1,4,5,8 और 12वें भावों में हों तो आयु कम होती है।
8. प्रश्न कुंडली के लग्न में एक अशुभ ग्रह षष्ठेश के रूप में स्थित होकर जन्मकालीन चन्द्रमा पर दृष्टि डाले।

बीमारी के आरम्भ होने और ठीक होने का समय

बीमारी के प्रारम्भ होने का समय निश्चित करने के लिए निम्नलिखित विधियां प्रयुक्त की जाती हैं :

नक्षत्र

प्रश्न लग्न के नक्षत्र की गणना करें। प्रश्न कुंडली का चन्द्र नक्षत्र भी प्राप्त करें। लग्न नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनते हुए उन दोनों के बीच की दूरी मालूम करें। मान लें, प्रश्न के समय पर, लग्न नक्षत्र आर्द्रा है और चन्द्रमा मूल में है तो दोनों के बीच दूरी 14 नक्षत्रों की है। अब

प्रश्न कुंडली के चन्द्र नक्षत्र 'मूल' से 14 नक्षत्रों को गिनते हुए हमें 'मृगशिरा' प्राप्त हुआ। अतः जब चन्द्रमा 'मृगशिरा' नक्षत्र पर संचरण कर रहा था, तब बीमारी शुरू हुई थी।

मांदि

मांदि के भोगांश को 9 से गुणा करने पर नवांश स्फुट प्राप्त हुआ जिसे 'क' कहें। इसी प्रकार मांदि के भोगांश को 12 से गुणा करने पर द्वादशांश स्फुट प्राप्त हुआ जिसे 'ख' कहें। अब मांदि के भोगांश में प्रश्न चन्द्रमा का भोगांश जोड़े जिसे 'ग' कहें।

जब चन्द्रमा इन तीनों में से किसी एक भोगांश अर्थात 'क' 'ख' या 'ग' से संचरण करता हुआ गुज़रा था जब बीमारी शुरू हुई। इन तीनों में से किस के संचरण पर बीमारी शुरू हुई, इसके लिए इन तीनों भोगांशों ('क' 'ख' एवं 'ग') को नक्षत्रों में बदलें। जो नक्षत्र जन्म नक्षत्र से तीसरा, 5वां अथवा 7वां हो अथवा दूसरे शब्दों में विपत, प्रत्यरि और वध तारा या इन नक्षत्रों में से जो जन्मकालीन चन्द्रमा से 8वीं राशि में हो, तब उस नक्षत्र में चन्द्रमा के संचरण के दौरान बीमारी आरम्भ हुई।

दिन अथवा रात के समय बीमारी का प्रारम्भ

बीमारी के प्रारम्भ का समय ज्ञात करने के लिए षष्ठेश अथवा 6ठे भाव में स्थित ग्रह में से बलवान को देखिए। उन दोनों में से बलवान और दिन चर अथवा रात्रि चर द्वारा गृहीत राशि के अनुसार बीमारी दिन अथवा रात्रि के समय प्रारम्भ हुई होगी।

ताजिक योग

ताजिक योग पर आधारित समय-निर्धारण की विधि घटनाओं का समय वाले अध्याय में विवेचित की गई है। यह प्रश्न कुंडली से घटनाओं के समय-निर्धारण की विधियों में से सर्वाधिक शुद्ध विधि है।

एक राशि में ग्रह का प्रवेश

मेरे अनुभव के अनुसार, बीमारी के प्रारम्भ होने और उसके ठीक होने का लगभग समय (यदि वहां ठीक होने की संभावना हो) निर्धारित करने की विधि के लिए उस ग्रह को देखिए जिसने अभी प्रश्न कुंडली में एक राशि में प्रवेश किया है। यह ग्रह राशि बदलते हुए या तो षष्ठेश या अष्टमेश होकर और या लग्न/लग्नेश को पीड़ित करते हुए निश्चित रूप से बीमारी देने की प्रवृत्ति रखेगा।

गोचर में देखिए कि ग्रह ने कब उस राशि में प्रवेश किया है। यह बीमारी शुरु होने का समय देता है और जब तक वह ग्रह उस राशि में संचरण करेगा, बीमारी भी साथ-साथ चलेगी जब तक कि गोचर में कुछ दूसरे शुभ प्रभाव, शुभ योग के द्वारा पीड़ा को कम न करें।

इस विश्लेषण में यदि बीमारी देने वाला ग्रह (जिसने अभी एक राशि में प्रवेश किया है) एक तीव्र गति ग्रह है तो बीमारी की अवधि छोटी होगी और यदि यह एक मंद गति ग्रह है जैसे शनि, राहु अथवा केतु तो यह बीमारी ठीक होने में अधिक समय लेगी। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उस ग्रह का गोचर में उस राशि से कब प्रस्थान हो। ग्रह के भुक्त भोगांश से प्रायः ऐसा भी देखा गया है कि बीमारी बहुत पहले शुरू हुई हो और उस राशि में शेष भोग्य भोगांश पर निर्भर समयावधि पर शीघ्र ठीक हो जाए।

चन्द्रमा का गोचर

बीमारी के शुरू होने का समय षष्ठेश पर चन्द्रमा के संचरण से देखा जा सकता है। जब चन्द्रमा चतुर्थेश पर संचरण करेगा तो बीमारी ठीक होगी। कुछ ज्योतिषी चन्द्रमा का 4थे भाव पर गोचर होने से बीमारी का उपचार मानते हैं। चन्द्रमा के संचरण की यह विधि तब प्रयुक्त होती है, जब बीमारी के शीघ्र ठीक होने के योग उपस्थित हों।

लग्न के नवांश स्फुट अथवा 'क' प्राप्त करने के लिए लग्न के भोगांश को 9 से गुणा कीजिए। 'ख' अथवा लग्न द्वादशांश स्फुट प्राप्त करने के लिए लग्न के भोगांश को 12 से गुणा कीजिए। जब चन्द्रमा का संचरण इन दो स्फुटों 'क' अथवा 'ख' की राशि पर होगा तो बीमारी ठीक होगी।

लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा पर गोचर में कोई अशुभ प्रभाव बीमारी शुरू होने का कारण बनता है और क्रूर प्रभाव के हटने अथवा शुभ प्रभाव के बढ़ने से बीमारी ठीक हो जाती है। अतः चन्द्रमा पर मंद गति ग्रहों का अशुभ संचरण एक लम्बी बीमारी देता है और निश्चय ही यदि वे षष्ठेश अथवा अष्टमेश भी हों।

तारामंडल में नक्षत्र और तारे

वराहमिहिर ने बृहत जातक में नक्षत्र पर आधारित बीमारी के उपचार में लगने वाले समय के संबंध में एक सूत्र प्रदान किया है जिसमें बीमारी आरम्भ हुई और उस तारामंडल में तारों की संख्या तदनुसार नक्षत्रों के निम्नलिखित समूहों द्वारा सूचित अवधि के बाद बीमारी का उपचार समाप्त होने की आशा की जा सकती है।

नक्षत्र, जिसकी अवधि में बीमारी शुरू हुई	*दिनों की संख्या*
मृगशिरा, उत्तराषाढ़ा	एक माह
मघा	20 दिन
हस्त, विशाखा, धनिष्ठा	15 दिन
भरणी, चित्रा, श्रवण, शतभिषा	11 दिन
अश्विनी, कृतिका, मूल,	9 दिन
पुनर्वसु, पुष्य, उत्तर फाल्गुनी, उत्तर भाद्रपद, रोहिणी	7 दिन
अनुराधा, रेवती	लम्बी बीमारी जिसमें ठीक होना निश्चित नहीं है
आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्व फाल्गुनी स्वाती, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वभाद्रपद + बीमारी यदि अशुभ वार और अशुभ तिथियों में शुरू हुई हो। अशुभ वार : रविवार, मंगलवार, शनिवार अशुभ तिथियां (रिक्त एवं छिद्र) दोनों पक्षों में रिक्त तिथियां 4,9,14 और छिद्र तिथियां 6,8,12	मृत्यु

इसे और अधिक समझने की आवश्यकता है। यदि मृत्यु सूचित करने वाले इन 7 नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र, जन्म से तीसरा, 5वां अथवा 7वां (विपत, प्रत्यरि अथवा वध तारा) और अशुभ वार एवं अशुभ तिथि तथा प्रश्न कुंडली का चन्द्रमा जन्म राशि से 8वें स्थान पर है तब इससे मृत्यु होती हैं। यद्यपि आसन्न मृत्यु के कठोर निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व प्रश्न कुंडली के सामान्य संकेतों का भली-भांति परीक्षण कर लेना चाहिए।

सूत्र

प्रश्न के सामान्य सिद्धान्त अध्याय में जीव, रोग और मृत्यु नामक तीन सूत्र विवेचित किए गए हैं जो बीमारियों के संदर्भ में निम्नलिखित संकेत देते हैं।

जीव, बीमारी से स्वास्थ्य लाभ और सामान्यतः एक स्वस्थ विन्यास बताता है। बीमारी में यह शीघ्र ठीक होना सूचित करता है। रोग, बीमारी और पीड़ाओं का बढ़ना बताता है जबकि मृत्यु, विपत्तियों, मृत्यु तुल्य कष्ट यहां

तक कि मृत्यु तक दर्शाता है। सूत्रों को उनकी गणना के स्रोत के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में बांटा गया है-

सूत्र का अधिपति	*सूत्र का प्रकार*	*गणना का स्रोत*	*तत्त्व*	*समय*
बुध	सामान्य सूत्र	उदय लग्न एवं आरुढ़ लग्न से	पृथ्वी	भूत
शुक्र	अधिपति सूत्र	उदय लग्न एवं आरुढ़ के स्वामी से	जल	वर्तमान
मंगल	नवांश सूत्र	लग्न एवं आरुढ़ के नवांश से	अग्नि	भविष्य
शनि	नक्षत्र सूत्र	उदय लग्न के नक्षत्र और जन्म नक्षत्र से	वायु	वर्तमान
बृहस्पति	महासूत्र	आरुढ़ और उससे 10वीं राशि से	आकाश	भविष्य

बीमारी से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण सदैव केवल उपयुक्त सूत्र और उससे संकेतित तत्त्व को जान लेने के बाद ही करना चाहिए। बीमारी के प्रश्नों में सूत्र का प्रकार और उसके तत्त्व का आपसी संबंध, किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अनिवार्य है।

मानव शरीर को तत्त्वों पर आधारित निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है।

सूत्र का प्रकार	*नवांश सूत्र*	*सामान्य सूत्र*	*अधिपति सूत्र*	*नक्षत्र सूत्र*	*महासूत्र*
तत्त्व	*अग्नि*	*पृथ्वी*	*जल*	*वायु*	*आकाश*
अधिपति	*मंगल*	*बुध*	*शुक्र*	*शनि*	*बृहस्पति*
मानव शरीर के हिस्से	शारीरिक बल और व्यक्तित्व, रूप-रंग, प्यास, नींद, मंद बुद्धि, भूख	हड्डियाँ, बाल, त्वचा, नसें,	खून, वीर्य, पसीना कफ, सभी तरल पदार्थ	शरीर का काँपना, जिस प्रकार लकवे में काँपता और थरथराता है	भय, वृद्धावस्था, प्रेमानुराग और घृणा

सूर्य और चंद्र को क्रमशः अग्नि और जल के तत्त्व आवंटित किए गए हैं।

विश्लेषण की विधि

ऊपरलिखित पांच सूत्रों से जीव, रोग और मृत्यु की गणना करें जैसा कि अध्याय 3 में समझाया गया है। शरीर के किस भाग में बीमारी है इसे जानने के लिए, जीव, रोग और मृत्यु का संबंध उस सूत्र के तत्त्व से करें।

यह जानने के लिए कि कौन सा ग्रह पीड़ा दे रहा है या पीड़ित है, जीव, रोग एवं मृत्यु का संबंध उस सूत्र के स्वामी से करें। इस से यह भी सूचित होगा कि किस ग्रह की स्तुति करने की आवश्यकता है। अन्त में यह सुनिश्चित करें कि यह संकेत भूत, वर्तमान या भविष्य के लिए है। इसे एक उदाहरण से समझ लेते हैं। मान लीजिए कि किसी प्रश्न कुंडली में अधिपति सूत्र 'जीव' दर्शाता है। इसका अभिप्राय यह है कि शारीरिक तरल एवं खून स्वास्थ्यवर्धक हैं। यदि यह रोग दर्शाए तो इस जलीय तत्त्व से संकेतित शारीरिक तरलों से संबंधित बीमारी है। समयावधि के अनुसार यह सूत्र वर्तमान की घटना दर्शाता है अतः यह रोग वर्तमान में है। प्रश्न में नवांश सूत्र एवं महासूत्र, दोनों भविष्य की घटना बताते हैं। जब यह जीव दर्शाएं तो भविष्य में रोग से मुक्ति और स्वास्थ्य लाभ इंगित है। इस विश्लेषण का एक और उपयोग भी है। उदाहरण के तौर पर अगर कोई व्यक्ति एक प्रश्न पूछे कि मेरी वृद्धावस्था कैसी होगी। तब आरुढ़ और आरुढ़ से दशम स्थान से महासूत्र ज्ञात करने से जीव, रोग या मृत्यु की गणना करें। इस सूत्र के स्वामी बृहस्पति की स्थिति भी जानिए क्योंकि आकाश तत्व वृद्धावस्था भी दर्शाता है अतः जीव, रोग एंव मृत्यु से तथा उपरोक्त विश्लेषण से प्रश्न का विचार करें।

विभिन्न ग्रहों द्वारा संकेतित बीमारियाँ

6ठे भाव पर दृष्टि डालने वाले अथवा गृहीत करने वाले ग्रह, अपने कारकत्त्वों से संबंधित बीमारी को सूचित करते हैं। यदि 6ठे भाव को कोई ग्रह नहीं देखता अथवा गृहीत करता तब समान संकेतों के लिए पीड़ित षष्ठेश को देखना चाहिए। इसी प्रकार मृत्यु का कारण अष्टमेश अथवा 8वें भाव को गृहीत करने वाले अथवा दृष्टि डालने वाले ग्रहों से देखना चाहिए। लग्न के द्रेष्काण को अष्टम भाव में स्थापित करें जो 22वें द्रेष्काण कहलाएगा। मृत्यु का कारण इस 22वें द्रेष्काण, 64वें नवांश अथवा 85वें द्वादशांश से भी देखना चाहिए। यह एक सामान्य नियम है तथापि यह ग्रह जब त्रिस्फुट राशियों में स्थित हों तो निश्चित रूप से बीमारी का प्रकार बताते हैं। त्रिस्फुट राशियों की गणना इस अध्याय में, आगे व्याख्यायित की गई है। विभिन्न ग्रहों के कारण होने वाली बीमारियां इस प्रकार हैं।

सूर्य

ज्वर, गिरना, मिरगी, आंतरिक गर्मी, सिर में और पूरे शरीर में दर्द, आंख से संबंधित बीमारियां, हृदय, पित्तप्रकोप, पेट, त्वचा, हड्डी, क्षयरोग, कोढ़, ज्वरग्रस्त शिकायतें, अग्नि, विष, शस्त्रों, चोरों और शासकों से पीड़ा।

चन्द्र

शीत और कफ (बलगम) के साथ ज्वर, अतिसार, अपचन, पेचिश, शरीर पर फोड़े, उनींदापन, रक्तहीनता, खून में विकार, पीलिया, जल, जल में रहने वाले प्राणियों से खतरा।

ऊर्ध्वमुख राशि में	उल्टी, मिचली
तिर्यकमुख राशि में	मूत्राशय में रुकावटें अथवा अवरोधन
अधोमुख राशि में	अतिसार, मधुमेह, अत्यधिक प्यास

मंगल

रक्त की बीमारियां, रक्त में अशुद्धियां, पित्त के कारण ज्वर, रक्तचाप, कोढ़, फोड़े और घाव, नासूर, ट्यूमर, मिरगी, चोट और अंग विच्छेदन, चोरों, अग्नि, विष, घावों और शस्त्रों से खतरा।

बुध

बोलने में असमर्थता, प्रदूषित वाणी और प्रदूषित सोच, मानसिक बीमारियां (बुद्धि का कारक होने के कारण), त्वचा की बीमारियां, खुजली, सफेद दाग अथवा धवल रोग, तंत्रिका तंत्र, अनुचित भाषा, नाक में दर्द, गला, आंत्र ज्वर, शीत अथवा निमोनिया के कारण ज्वर।

बृहस्पति

मधुमेह, कफ के कारण होने वाली बीमारियां, आंतों में अनियमितता, ज्ञान का कारक होने के कारण मानसिक अस्वस्थता, ट्यूमर, कान की बीमारियां, ज्वर।

शुक्र

आंख की बीमारियां (दृष्टि का कारक होने के कारण), कफ, सूजन के साथ शरीर में दर्द, फोड़ा, मूत्रीय भाग, लैंगिक संचारित बीमारियां, गठिया का दर्द, थकावट, चेहरे की शारीरिक चमक से संबंधित विपत्तियां, कामुक प्रकृति के कारण होने वाली बीमारियां, वस्तुओं का खोना अथवा जीवन की खुशी से संबंधित चीजों की हानि, मूर्च्छा, अपच, प्यास।

शनि

वायु और कफ के कारण होने वाली बीमारियां, हानियां, विपत्तियां, शारीरिक पीड़ा, विशेषतः पैरों में चोट, पैरों और हाथों में विकार, नसों की बीमारियां, थकावट, अवरोधन से जुड़ी हुई बीमारियां (जैसे धमनियों, मूत्रीय भाग,

स्नायुओं), पेट, आंतें, जलन की अनुभूति (हृदय में जलन अथवा अम्लता), भूख न लगना, अनुचित संबंध अथवा गिरना, अंग-विच्छेदन।

राहु अथवा केतु

कोढ़, आंत्र ज्वर, जलने से होने वाला दर्द, वायुजनित बीमारियां, फोड़े, भोजन में विषाक्तीकरण, पैर की चोट अथवा पीड़ा, प्रदूषण, छूत की बीमारियां, सर्पो और प्रेतात्माओं से कष्ट, एक ऊंचे स्थान से अचानक गिरना।

मांदि

हिचकियां, अनकही बीमारियां तथा लक्षण।

ग्रहों की स्थिति से विशिष्ट बीमारियां

योग	*रोग*
1. छठे भाव में क्रूर ग्रह	उदर की बीमारियां
2. लग्न में मंगल	पाचन में अनियमितता
3. छठे अथवा बारहवें भाव में शुभ प्रभाव से रहित मंगल और शनि	कंठ में सूजन अथवा अल्सर
4. 5वें भाव में लग्नेश के रूप में क्रूर ग्रहों से दृष्ट मंगल	सिर में चोट
5. बिना किसी शुभ प्रभाव के वृश्चिक में मंगल	तेज़ बुखार
6. 7वें अथवा 8वें भाव में मंगल	नासूर
7. लग्न में राहु/केतु के बीच मांदि	विष से खतरा
8. लग्न में मंगल और 7वें भाव में बृहस्पति अथवा शुक्र	सिर की बीमारी
9. लग्न में षष्ठेश और सूर्य	घाव अथवा सिर में चोट
10. 6, 8, 12वें भाव में लग्नेश और मंगल	चोट के कारण दर्द और पीड़ा अथवा दुर्घटना अथवा शस्त्र से घाव
11. 6, 8, 12वें भाव में लग्नेश और क्रूर ग्रह	घावों के कारण पीड़ा
12. 7वें भाव में शनि और केतु	मलाशय में बवासीर अथवा फोड़ा
13. लग्न अथवा 8वें भाव में चन्द्रमा और षष्ठेश	चेहरे अथवा मुंह की बीमारियां
14. लग्न अथवा 8वें भाव में मंगल और षष्ठेश	कंठ की बीमारियां

योग	रोग
15. लग्न अथवा 8वें भाव में बृहस्पति और षष्ठेश	उदरीय गुहिका की बीमारियां
16. लग्न अथवा 8वें भाव में बुध और षष्ठेश	हृदय और वाल्व (कपाट) की बीमारियां
17. लग्न अथवा 8वें भाव में शुक्र और षष्ठेश	आंख की बीमारियां
18. लग्न अथवा 8वें भाव में शनि और षष्ठेश	पैर की बीमारियां
19. लग्न अथवा 8वें भाव में राहु अथवा केतु और षष्ठेश	होंठ की बीमारियां
20. 10वें भाव में शनि	पिशाचों और प्रेतों से विपत्तियां
21. पापकर्तरी में चन्द्रमा और 7वें भाव में शनि	जलोदर
22. 7वें भाव में राहु से दृष्ट शनि	मूत्रीय अवरोधक
23. शनि, शुक्र, सूर्य का संयुक्त रूप से स्थित होना	हृदय की बीमारियां
24. 8वें भाव में पीड़ित शनि	पीलिया
25. 8वें भाव में शनि, मंगल और सूर्य की युति	मिरगी
26. 10वें भाव में स्थित मंगल पर शनि की दृष्टि	गठिया
27. धनु अथवा मीन में स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि	मूत्राशय में पथरी
28. विवाह के समय पर 4थे भाव में शनि	स्तनों में दूध की कमी
29. सिंह में क्रूर ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा	दांत, पेट की बीमारियां
30. 6ठे भाव में चन्द्रमा	खराब पाचन-शक्ति, आलसी
31. 8वें भाव में चन्द्रमा	कीड़े
32. प्रश्न कुंडली अथवा नवांश में वृश्चिक में चन्द्रमा	हकलाना
33. सिंह में चन्द्रमा	मूर्च्छा अथवा प्यास
34. कर्क में मंगल द्वारा दृष्ट चन्द्रमा कर्क में चन्द्र द्वारा दृष्ट मंगल	उदरशूल अथवा मरोड़
35. i) 8वें भाव में राहु, सूर्य और मंगल ii) 8वें भाव में सूर्य और राहु iii) मंगल के घर में शनि द्वारा दृष्ट सूर्य	कोढ़
36. कर्क में मंगल से दृष्ट सूर्य और राहु	गुप्तांगों की बीमारियां
37. मीन में शनि से दृष्ट सूर्य	अण्डकोषों की वृद्धि, जलसंग्रह, हर्निया
38. वृश्चिक में शुक्र	जननेंद्रियों की बीमारियां
39. कर्क में शनि से दृष्ट सूर्य	बवासीर, गठिया की बीमारियां

योग	रोग
40. कर्क में बुध के साथ सूर्य	कफ और जुकाम
41. लग्न में मंगल और 8वें भाव में सूर्य	तेज़ ज्वर
42. 8वें भाव में बृहस्पति	गठिया
43. कर्क में मंगल, मंगल और चन्द्रमा की युति	गठिया

त्रिस्फुट

त्रिस्फुट प्राप्त करने के लिए लग्न, चन्द्रमा और मांदि के भोगांशों को जोड़िए। कर्क, वृश्चिक अथवा मीन में स्थित त्रिस्फुट, बढ़ते क्रम में प्रश्नकर्ता को आकस्मिक विपत्तियां देता है। इन त्रिसुफट राशियों में भी निम्नलिखित नक्षत्रों में स्थित ग्रहों का दुष्प्रभाव बढ़ते क्रम में होता है। पुनर्वसु, विशाखा और पूर्व भाद्रपद नक्षत्रों में अस्वथता कम होगी, पुष्य, अनुराधा और उत्तर भाद्रपद में मध्यम तथा आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में अधिक होगी। इसी प्रकार कर्क के आखिरी नवांश में एक वर्ष में, वृश्चिक के अंतिम नवांश में एक माह में और मीन के अंतिम नवांश में एक दिन में मृत्यु सूचित होती है।

विनाशकारी राशियों (9, 10, 11, 12) और विनाशकारी नक्षत्रों (जो तीन से विभाज्य हैं), संधियों, 22वें द्रेष्काण, 64वें नवांश और 85वें द्वादशांश, जन्म नक्षत्र से तीसरे, 5वें अथवा 7वें नक्षत्र तथा इनसे त्रिकोण स्थानों में स्थित त्रिस्फुट, यह सभी रोगी के लिए अत्यधिक खतरनाक एवं कार्य सिद्धि के लिए प्रतिकूल हैं। दूसरी ओर मेष, सिंह अथवा धनु में पड़ने वाला त्रिस्फुट नवांश रोगी का शीघ्र ठीक होना बताता है।

नक्षत्रों में पड़ने वाला त्रिस्फुट	परिणाम
अश्विनी, मघा, मूल	झगड़े के बाद 3 दिनों के भीतर मृत्यु
भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा	एक ब्राह्मण का आगमन
कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	आग का भय
रोहिणी, हस्त, श्रवण	संपत्ति की हानि
मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा	घायल, बीमार व्यक्ति अथवा झगड़े में परास्त व्यक्ति का आगमन
आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा	एक सर्प का शीघ्र दृष्टिगोचर होना
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	एक विख्यात ब्राह्मण का आगमन
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	पशुधन की हानि
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	परिचित अथवा पड़ोसी का आगमन अथवा मृत्यु

त्रिदोष

आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथ सुश्रुत संहिता, एक व्यक्ति के स्वस्थ होने के लिए कुछ अनिवार्य शर्तों को परिभाषित करता है। निम्नलिखित में से कोई भी असंतुलन रोग स्थिति दर्शाता है। अतः उनका सकारात्मक संतुलन एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।

1. वात, पित्त और कफ को त्रिदोष कहा जाता है।
2. अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश पांच आधारभूत तत्व अथवा पंच महाभूत कहे गए हैं।
3. रस, रक्त, मांस, मेधा, अस्थि, मज्जा और शुक्र सात धातुएं कही गई हैं।
4. पेट में पाचन के लिए अग्नि अथवा जठराग्नि आवश्यक है।
5. एक स्वस्थ उत्सर्जन तंत्र।
6. इन्द्रियों, मन और आत्मा की प्रफुल्ल स्थिति।

स्वास्थ्य शब्द दो शब्दों स्वा+स्थित के योग से बना है। जब एक व्यक्ति स्व अथवा आत्म में स्थित है तो वह स्वस्थ है। अत: स्वास्थ्य मन की एक अवस्था है। आयुर्वेद शारीरिक रूप से एक व्यक्ति को स्वस्थ मानता है, यदि उसकी मानसिक स्थिति और आत्मिक स्थिति संयुक्त रूप से प्रमुदित और स्वस्थ है, जिसे स्वस्थिति कहा जाता है।

तत्व, जो शरीर को निर्मित करते हैं, धातु कहलाते हैं, और जो बीमारी दर्शाते हैं दोष कहे जाते हैं। जब वात, पित्त और कफ शरीर में अनुकूल और संतुलित अवस्था में हों तो वे धातु कहे जाते हैं और जब वे असंतुलित होते हैं तो वे दोष कहे जाते हैं और ये तीनों संयुक्त रूप से त्रिदोष कहे जाते हैं।

वात : इसे वायु कहा जाता है और इसका असंतुलन गैस अथवा बादी, जोड़ों मे दर्द, हिचकियां और डकार, गठिया, वायु के कारण शरीर में दर्द आदि देता है। यह तीन दोषों में सर्वाधिक प्रधान है और अन्य दो, पित्त और कफ नामक दोष केवल वात की सहायता से शरीर में वाहित होते है, अन्यथा वे दोनों स्थानिक रहते हैं।

पित्त : इसे अग्नि भी कहा जाता है और इसका असंतुलन अम्लता, भोजन-नलिका अथवा उदर की आंतों में जलन की अनुभूति, मुंह में खट्टापन, सिरदर्द, आंखों और पेट में जलन, उलटी आदि देता है।

कफ : यह दोष जुकाम और कफ, भूख की कमी, आलसीपन, शरीर में भारीपन आदि देता है।

किन्हीं दो अथवा सभी तीनों दोषों के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियां होती हैं। आयुर्वेद विभिन्न दोषों के निवारण के लिए इलाज एवं असंतुलनों से बचने की विधि व्याख्यायित करता है। विभिन्न दोषों के असंतुलनों को ठीक करने के लिए निम्नलिखित रूप में रस अथवा स्वाद से समाविष्ट भोजन की सलाह दी जाती है। मीठा, खट्टा और नुनखरा भोजन वात दोष के असंतुलन को, गर्म और मीठा भोजन पित्त के असंतुलन को तथा गर्म और तिक्त भोजन शरीर में कफ दोष के असंतुलन को सुधारता है।

विभिन्न ग्रह बीमारी देने के लिए विभिन्न दोषों का संकेत करते हैं, जो इस प्रकार हैं।

सूर्य : सूर्य पित्त का असंतुलन संकेतित करता है। अपने बलवान या निर्बल होने की स्थिति से यह न केवल व्यक्तित्व बल्कि सामान्य स्वास्थ्य को भी दर्शाता है। सूर्य दाहिनी आंख, हृदय, उदर और हड्डियों का कारक है। आंख की बीमारियां, रक्त के वितरण में अनियमितता, शस्त्रों के कारण चोट और ऊंचाई से गिरना, हड्डियों की अव्यवस्था, त्वचा, पेट, सूजन, सिरदर्द, जलना, गंजापन, दर्द, जिगर को प्रभावित करने वाली पित्त की अव्यवस्था, सूर्य से जुड़ी हुई अग्नाशय बीमारियां हैं।

चन्द्रमा : प्रधानतः कफ लेकिन वात दोष भी है। चन्द्रमा मन का कारक है और इसीलिए मानसिक, भावुक और आत्मिक अव्यवस्था को संकेतित करता है। चन्द्रमा एक जलीय ग्रह भी है और शारीरिक तरलों का प्रतिनिधित्व करता है। यह अतिसार, बायीं आंख, ज्वर, पीलिया क्षयरोग, अपच की बीमारियां देता है। मंगल के साथ इसकी युति रक्त की अनियमितता जैसे एनीमिया, विषाक्तीकरण, रजोधर्म संबंधी अनियमितता तथा स्त्रीरोग संबंधी बीमारियां आदि देता है।

मंगल : यह शरीर में पित्त दोष बताता है। अपनी आधारभूत प्रकृति-विद्रोही, शक्तिशाली और हठी होने के नाते इन्हीं प्रवृत्तियों के संकेत देता है और झगड़ों और शस्त्रों के कारण चोटें बताता है। मंगल को सिर का कारकत्व प्राप्त है अतः यह सिर की चोटें और दुर्घटनाएं देता है। मंगल रक्त, हड्डी मज्जा से रक्तनिर्माण, हीमोग्लोबीन (लाल रक्त कणिकाओं), उच्च रक्तचाप, गर्भपात, गर्भस्त्राव, ज्वर के साथ शरीर पर घावों, शल्यक्रिया आदि की बीमारियां भी बताता हैं। सूर्य के साथ यह अत्यधिक गर्मी, प्यास, त्वचा की जलन की अनुभूति और आग से जलना भी सूचित करता है।

बुध : यह सभी तीन दोषों-वात, पित्त और कफ के योग को सूचित करता है। बुध त्वचा का कारक है और इसीलिए त्वचा की बीमारियां, जैसे श्वेत

धब्बे देता हैं। वाणी का कारक होने के कारण यह वाणी में दोष और अनुचित भाषा देता है। बुद्धि और ज्ञान का कारक होने के कारण यह तंत्रिका की अव्यवस्था, मन की अस्थिरता, दुःस्वप्न, चक्कर, कान, नाक, गला और फेफड़ों की बीमारियां देता है।

बृहस्पति : कफ दोष को संकेतित करता है। यह शरीर के ऊपर चर्बी, जिगर, अग्नाशय, पित्ताशय और तिल्ली पर शासन करता है। इसीलिए यह ज्वर, अग्नाशय, पित्ताशय, तिल्ली, मधुमेह, मूर्च्छा, शरीर पर चर्बी का कारक होने के कारण स्थूलता और पुरानी असाध्य बीमारियां प्रदान करता है। बृहस्पति ज्ञान अथवा बुद्धि का कारक हैं। मन, बुद्धि और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने वाले चन्द्रमा, बुध एवं बृहस्पति पर कोई दुष्प्रभाव बढ़ती मात्रा में स्नायु की अव्यवस्था दर्शाता है। बढ़ते क्रम में ये दुष्प्रभाव स्नायु रोग, स्नायु-विकृति और मानसिक विक्षिप्ति दर्शाते हैं। आयुर्वेद में, यह पागलपन अथवा उन्माद, वातोन्माद, पित्तोन्माद अथवा कफोन्माद विभिन्न दोषों वात, पित्त अथवा कफ के कारण बनते हैं। यदि त्रिदोषों के कारण उन्माद है, तो यह सन्निपातोन्माद कहलाता है। अतः पागल व्यक्ति से संबंधित प्रश्न कुंडली में इन तीनों ग्रहों - चन्द्र, बुध और बृहस्पति पर अशुभ प्रभावों की अधिकता होती है।

शुक्र : वात और कफ दोषों का सम्मिश्रण बताता है। प्रश्न कुंडली में इसका बल अथवा दुष्प्रभाव परिवर्तित मात्रा में लैंगिक अभिरुचि, काम विकृतियों, लैंगिक रूप से हस्तांतरित बीमारियों और यहां तक कि एड्स की बीमारी देता है। शुक्र के इन दोषों और दुष्प्रभाव का असंतुलन लैंगिक अंगों की अव्यवस्था, मूत्रीय विपत्तियों, मूत्राशय और गुर्दों में पथरी, आन्त्र ज्वर, चेहरा, आंख की दृष्टि, आंतपुच्छशोध, अग्नाशय को सूचित करता है। शुक्र शरीर के अंतःस्त्रावों के ऊपर शासन भी करता है और इसीलिए हार्मोनों (अंतःस्त्रावों) की अव्यवस्था को सूचित करता है। बृहस्पति और शुक्र दोनों के दुष्प्रभाव से मधुमेह होता है।

शनि : प्रधान रूप से वात को और कुछ कफ दोष को संकेतित करता है। शनि नसों का कारक है और इसीलिए स्नायु तंत्र, लकवा, लसीका तंत्र, मलाशय, गिल्टियां, टयूमर, कैंसर, तनाव से उत्पन्न पागलपन को दर्शाता है। एक मंद गति ग्रह होने के कारण यह असाध्य बीमारियां देता है।

राहु : यह कोढ़, भय, फोड़ों और नासूर, विषाक्तीकरण, सांप का काटना, गंदी बनावट और असाध्य बीमारियां देता है।

केतु : ऐसी बीमारियां जिनका ठीक रूप से निदान नहीं हो सकता, जैसे-संक्रमण, विष की गांठें, वाणी के अंग, और बहरापन। यह शल्यक्रिया कराता है जैसा कि मंगल के मामले में है।

यदि बुध बलवान है तब बीमारी अभिचार के कारण होती है लेकिन यदि लग्न बलवान है तब बीमारी त्रिदोषों के कारण होती है। इसी प्रकार यदि षष्ठेश बलवान है तब बीमारी शत्रुता के कारण होती है और यदि अष्टमेश बलवान है तब बीमारी त्रिदोषों की अव्यवस्था के कारण होती है।

उदाहरण संख्या : 2

शरीर को रक्त की आपूर्ति करने वाली ह्रदय की मुख्य रक्त नलिका, महाधमनी की शल्यक्रिया

शनि (व) 0°42'	केतु 7°33'	चंद्रमा 29°46'	शुक्र 29°28'
	उदाहरण : 2 प्रातः 11:45 बजे 24 जुलाई 1995 नई दिल्ली		बुध 2°39' सूर्य 7°6'
	बृहस्पति (व) 11°53'	राहु 7°33'	लग्न 18°25' मंगल 7°54'

इस प्रश्न कुंडली में लग्न द्विस्वभाव और एक शीर्षोदय राशि है। एक द्विस्वभाव लग्न शीघ्र अथवा संपूर्ण उपचार के लिए अनुकूल नहीं है क्योंकि यह एक लम्बी बीमारी दिखाता है यदि अन्य अशुभ प्रभाव भी उपस्थित हों।

लग्न अष्टमेश मंगल द्वारा गृहीत है और सातवें भाव से षष्ठेश शनि द्वारा दृष्ट होकर एक जटिल बीमारी के कारण जीवन और मृत्यु की स्थिति दिखा रहा है। 7वें भाव में क्रूर वक्री षष्ठेश होने के कारण स्थिति अत्यधिक खराब है।

चन्द्रमा 9वें भाव में उच्च का है और वक्री षष्ठेश शनि और वक्री सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि द्वारा पुनः बीमार होना और जटिलताएं दिखा रहा है। चन्द्रमा अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में है। चन्द्रमा और मंगल का संबंध खून से संबंधित बीमारी दर्शाता है, जब कि दोनों षष्ठेश शनि से दृष्ट हों। लग्नेश 11वें भाव में द्वादशेश सूर्य द्वारा पीड़ित है जो ह्रदय का कारक होकर पीड़ित षष्ठेश शनि के नक्षत्र में स्थित है।

हृदय से जुड़ी बीमारी के लिए हमें 5वां भाव, पंचमेश और कारक सूर्य को देखना चाहिए। यहां पंचमेश शनि अष्टमेश मंगल से दृष्ट होकर बीमारी के भाव सप्तम भाव में स्थित है। यह षष्ठेश होने के कारण बीमारी की स्थिति भी संकेतित कर रहा है। कारक सूर्य का लग्न में स्थित अष्टमेश मंगल के साथ निकट इत्थसाल है और वक्री षष्ठेश शनि के साथ इशराफ है। सर्वाधिक चौंकाने वाला तथ्य 8वें भाव में राहु-केतु के साथ सूर्य के समान अंश होना है। वास्तव में, सूर्य राहु/केतु और अष्टमेश मंगल के बीच नक्त योग बनाते हुए इन तीनों के बीच पूर्ण इत्थसाल की स्थिति बना रहा है।

लग्नेश बुध का षष्ठेश शनि के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि से इशराफ योग और अष्टमेश मंगल के साथ इत्थसाल योग बन रहा है। लग्नेश का षष्ठेश अथवा अष्टमेश के साथ इत्थसाल योग खराब है जबकि इशराफ बहुत खराब है। पुनः यदि षष्ठेश अथवा अष्टमेश क्रूर होने के साथ-साथ वक्री भी हों तो यह अत्यंत खराब है और एक संकटपूर्ण स्थिति सूचित करता है जैसा कि प्रस्तुत कुंडली में है। लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश के बीच इशराफ योग भी है जो पुनः एक संकटपूर्ण स्थिति है। 7वें भाव में क्रूर वक्री ग्रह और एक द्विस्वभाव लग्न सोची गई बीमारी की अपेक्षा दूसरी बीमारी दर्शाता है। 7वें भाव में एक क्रूर ग्रह एक असाध्य बीमारी भी देता है।

यहां मंगल की निर्णायक भूमिका शल्यक्रिया बताती है जो न केवल अनिवार्य बल्कि जटिल भी है। केतु द्वारा गृहीत मंगल की एक राशि जटिलताएं और उचित निदान की कमी दिखा रही है जबकि बृहस्पति द्वारा गृहीत दूसरी राशि लग्न को सुरक्षा प्रदान कर रही हैं। लग्नेश बुध पर बृहस्पति की दृष्टि कुछ ईश्वरीय रक्षा भी दे रही है। षष्ठेश शनि बृहस्पति से दृष्ट है, इसलिए इसके दुष्प्रभाव को न के बराबर कम कर रहा है। मैंने न के बराबर कहा क्योंकि बृहस्पति अष्टमेश मंगल की राशि में है और वक्री होकर चतुर्थेश और सप्तमेश है। यह भी बीमारी का पुनः होना दिखाता है। सप्तम भाव में वक्री ग्रह से भी बीमारी की आवृत्ति सुनिश्चित होती है।

7वें भाव में षष्ठेश वक्री शनि बीमारी की आवृत्ति बता रहा है (7वां भाव बीमारी है)। वक्री चतुर्थेश और सप्तमेश न केवल रोग लक्षण की स्थिति अथवा बीमारी का पुनः उभरना दिखाता है बल्कि सूचित करता है कि बीमारी लगातार रोगी के लिए विपत्तियां लाएगी और रोगी को चैन नहीं लेने देगी। शनि ने अभी एक राशि में 0°42' पर प्रवेश किया है तथा लग्न और चन्द्रमा पर अपनी प्रत्यक्ष दृष्टि द्वारा तथा लग्नेश बुध और अष्टमेश मंगल को इशराफ योग के कारण प्रभावित कर रहा है। षष्ठेश शनि ने अभी अपनी राशि बदर्ल

है और लग्न अक्ष को पीड़ित कर रहा है। यह लगभग ढाई वर्ष तक ऐसी ही स्थिति निरंतर बनाए रखेगा। षष्ठेश शनि बृहस्पति की राशि और नक्षत्र में स्थित है और बृहस्पति से दृष्ट भी है। जटिलताओं के बावजूद रोगी के जीवन के लिए कुछ ईश्वरीय सुरक्षा भी मौजूद है।

रोगी के जीवित रहने के लिए दूसरा योग 9वें और 10वें भाव में दो बलवान शुभ ग्रहों, क्रमशः उच्च का चन्द्रमा और शुक्र का समान अंशों में स्थापन है, यद्यपि यह दूसरा अर्थ भी रखता है। एकादशेश चन्द्रमा अपनी उच्चावस्था में अंतिम अंशों पर मंगल के नक्षत्र में है। द्वितीयेश शुक्र 10वें भाव में पुनः अंतिम अंशों में है। 11वां भाव लग्नेश और द्वादशेश (व्यय) द्वारा गृहीत है, द्वितीय भाव द्वादशेश की तरह समान अंशों में राहु द्वारा गृहीत है (पुनः हानि)। व्यक्ति अपने जीवन और मृत्यु की संकटपूर्ण स्थिति में इस असाधारण शल्य क्रिया में चार लाख रुपये से ऊपर व्यय कर चुका था।

इस कुंडली के पुनर्निरीक्षण करने और शुभाशुभ प्रभावों को संतुलित करने के प्रयास के बीच आप देखेंगे कि रोगी को अपने जीवन की आपात् रक्षा के लिए एक जटिल शल्यक्रिया से गुजरना पड़ा। 9वें भाव में बृहस्पति से दृष्ट उच्च का चन्द्रमा है। यह बृहस्पति संयोगवश षष्ठेश और साथ ही साथ लग्नेश को भी देख रहा है जो व्यक्ति को शल्यक्रिया के दौरान बचाएगा। लेकिन यह बृहस्पति स्वयं वक्री है और बीमारी के पुनः होने के अन्य योग उपस्थित हैं। अतः बीमारी का उपचार पूरी तरह नहीं किया जा सकता।

बीमारी का स्थान मालूम करने के लिए इस अध्याय में यह पहले ही कहा जा चुका है कि लग्न में स्थित बुध और षष्ठेश अथवा अष्टमेश हृदय अथवा वाल्व की बीमारी बनाते हैं। अब यहां हम इस योग को और उदारता से देखते हैं। यह योग 6ठा भाव/षष्ठेश, अष्टमेश/8वां भाव, लग्न और बुध के सम्मिलन से बन रहा है। इस उदाहरण में लग्नेश बुध, अष्टमेश मंगल के साथ इत्थसाल और षष्ठेश शनि के साथ इशराफ में है जो आपस में (शनि और मंगल) एक इशराफ योग बना रहे हैं।

इस व्यक्ति को एक संकटपूर्ण स्थिति में, जो अकस्मात् विकसित हुई थी, नई दिल्ली के एस्कॉर्ट हृदय संस्थान में ले जाया गया। उसकी महाधमनी (रक्त की प्रमुख नलिका) को बदलने की शल्य क्रिया हुई जो हृदय से शरीर को रक्त की आपूर्ति करती है।

चिकित्सीय रूप में यह अवस्था महाधमनी दीवार की नाड़ी स्फीति के कारण निर्मित होती है जिसमें एक दरार दीवार को विच्छेदित कर सकती है और रोगी का जीवन संकट में पड़ सकता है। नाड़ी-स्फीति से रक्तचाप के बढ़ने पर नलिका की दीवार फट सकती है, जिसके विभिन्न कारण हो सकते हैं

जैसे कि जन्मजात त्रुटियां या उपार्जित कारण जिनकी चिकित्सा शल्यक्रिया से ही हो सकती है।

शल्यक्रिया के आठ माह के भीतर, एक दिन वह बेहोश होकर गिर गया और तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। 8वें भाव में पीड़ित केतु का स्थापन है जो रोग के चिकित्सीय निदान को कठिन बनाता है। 7वें भाव में एक वक्री ग्रह की उपस्थिति है, तथा चतुर्थेश/सप्तमेश भी वक्री है जो बीमारी का पुनः उभरना दर्शाता है। षष्ठेश शनि अगले ढाई वर्ष तक लग्न अक्ष को निरंतर पीड़ित करेगा। सिद्वान्त को याद रखें कि एक ग्रह जिसने किसी राशि में अभी प्रवेश किया है जब कभी प्रश्न का कारण बनता है वह परिस्थिति को तब तक नहीं बदलने देता जब तक कि वह उस राशि में संक्रमण करेगा।

उदाहरण संख्या : 3
आंख की शल्यक्रिया

लग्न 15°53' चन्द्रमा 7°51'	केतु 13°04'		
सूर्य 18°15' शनि 20°52'	उदाहरण : 3 प्रातः 8:05 बजे 3 मार्च 1995 नई दिल्ली		मंगल (व) 22°21'
शुक्र 6°26' बुध 21°12'			
	बृहस्पति 20°17'	राहु 13°04'	

उभयोदय लग्न प्रश्न में इतना बुरा नहीं है तथापि प्रश्न में कार्य सिद्धि के लिए शीर्षोदय की भांति उतना अच्छा भी नहीं है। फिर भी, यथोचित अनुकूल परिणामों को देने के लिए पर्याप्त शुभ है। लग्नेश बृहस्पति का षष्ठेश सूर्य के साथ निकट इत्थसाल है जो 12वें भाव में द्वादशेश के साथ स्थित है और मंगल द्वारा दृष्ट हैं। एक द्विस्वभाव लग्न तुरन्त समाधान नहीं दिखाता विशेषकर जब यह द्विस्वभाव राशि के ठीक मध्य में 15°53' पर है। यह भी देखिए कि षष्ठेश सूर्य और मंगल परस्पर ताजिक दृष्टि में नहीं हैं लेकिन दोनों लग्नेश बृहस्पति द्वारा निर्मित यमया योग के द्वारा अत्यधिक निकट संयुक्त हैं।

केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रहों की प्रधानता बीमारी का शीघ्र ठीक होना बता रही है। लग्नेश बृहस्पति 9वें भाव, एक त्रिकोण भाव से चन्द्रमा को देख रहा है और उसे अत्यधिक बल प्रदान कर रहा है जबकि पंचमेश

चन्द्रमा, दूसरे त्रिकोण का स्वामी होकर लग्न में स्थित है जो प्रश्न के लिए अत्यंत अनुकूल है।

लग्नेश बृहस्पति 9वें भाव में स्थित है और 12वें भाव से, द्वादशेश शनि से समान अंशों में पाराशरी दृष्टि से दृष्ट है। यह केवल 0°35′ की दूरी पर एक पूर्ण इत्थसाल है जो रोगी की अस्पताल में आकस्मिक चिकित्सा दिखा रहा है।

चन्द्रमा शनि के नक्षत्र में है। शनि द्वादशेश होकर षष्ठेश सूर्य के साथ 12वें भाव में स्थित होकर प्रश्नकर्ता के मन में बीमारी की चिन्ता और अस्पताल में आकस्मिक चिकित्सा दिखा रहा है। लग्न में स्थित चन्द्रमा बृहस्पति की राशि में है और लग्नेश बृहस्पति से दृष्ट है। यह पुनः प्रश्न के लिए अनुकूल है। लग्नेश बृहस्पति मंगल की राशि में मंगल से अत्यंत निकट इशराफ योग में है। मंगल चन्द्रमा की राशि में है जो लग्न में स्थित है। दोनों रोगी की शल्य क्रिया का संकेत करते हैं। केतु दूसरे भाव में अपने नक्षत्र में स्थित है और मंगल की राशि में है।

अब हम बीमारी के स्थान को अनावृत करने का प्रयास करते हैं। कुंडली का सक्रिय अक्ष लग्नेश का 12वें भाव में स्थित द्वादशेश शनि से निकटतम अंशों का संबंध है।

अतः 12वां भाव बीमारी का एक स्थान हो सकता है। 12वां भाव बार्यी आंख सूचित करता है। इसमें अभी और पुष्टिकरण की आवश्यकता है। शनि और सूर्य क्रमशः द्वादशेश और षष्ठेश होकर 12वें भाव में संयुक्त हैं। पुनः सिद्धान्तों के अनुसार, षष्ठेश द्वारा गृहीत भाव बताता है कि वह भाव बीमारी से सक्रिय है। षष्ठेश सूर्य है जो दाहिनी आंख का कारक भी है। लग्नेश का राशि अधिपति मंगल क्रमशः षष्ठेश और द्वादशेश सूर्य और शनि को देख रहा है और 12वें भाव द्वारा संकेतित अंग की बीमारी और शल्यक्रिया बता रहा है।

हम जानते हैं कि 12वां भाव अन्य चीजों के अलावा बार्यी आंख भी सूचित करता है। हमें दाहिनी आंख भी देखनी चाहिए। दाहिनी आंख दूसरे भाव एवं सूर्य से भी सूचित होती है। दूसरा भाव मंगल की राशि में, अपने नक्षत्र में स्थित केतु द्वारा गृहीत और 12वें भाव से शनि द्वारा दृष्ट होकर अत्यधिक पीड़ित है। अतः दूसरा भाव और सूर्य, दोनों पीड़ित हैं। सूर्य दाहिनी आंख का कारक और षष्ठेश होकर दाहिनी आंख की बीमारी भी व्यक्त कर रहा है।

इस संकेत की पुष्टि, दृष्टि के कारक शुक्र से करनी चाहिए। यहां शुक्र षष्ठेश सूर्य के नक्षत्र में, मंगल से दृष्ट होकर पुनः बीमारी सूचित कर रहा है। सूर्य 12वें भाव में स्थित है। शुक्र की एक राशि मंगल द्वारा दृष्ट राहु द्वारा गृहीत है अतः बार्यी आंख की कमजोरी एवं दृष्टि की कमी इंगित होती है।

केतु भी अपने नक्षत्र में, दूसरे भाव में मंगल की राशि में स्थित है और शनि से दृष्ट होकर दाहिनी आंख की कमजोरी प्रकट करता है। वास्तव में दाहिनी आंख का कारक सूर्य बायीं आंख के कारक चन्द्रमा की अपेक्षा अधिक पीड़ित है। चन्द्रमा लग्न में लग्नेश बृहस्पति से दृष्ट होकर और क्रूर ग्रहों से प्रभाव रहित होकर स्थित है। यह विश्लेषण निश्चित करता है कि यद्यपि बीमारी में दोनों सम्मिलित हैं तथापि दाहिनी आंख की आकस्मिक चिकित्सा एवं शल्य क्रिया की आवश्यकता है। इस प्रश्न कुंडली में, शनि की प्रमुख भूमिका है। शनि रुकावट या बाधा का कारक है जो आंखों की बीमारियों में दृष्टि में बाधा अथवा रुकावट बताता है। रोगी स्वाभाविक रूप से अधिक आयु में होने वाली प्रक्रिया से पीड़ित है जिसे मोतियाबिंद कहा जाता है।

इस रोगी का मामला अत्यंत दिलचस्प है। आठ वर्ष की आयु में वह एक दुर्घटना में सिर की चोट से पीड़ित हो गया। उसके कारण उसकी दृष्टि का कोण बदल गया। वह व्यवहारतः अपनी दाहिनी आंख की दृष्टि खो बैठा। प्रश्न कुंडली में उपस्थित योग इस मामले के इतिहास को यथातथ्य प्रदर्शित करते हैं। वह साठ वर्षों से व्यवहारतः एक आंख पर जीवित है। अब आंखों में मोतियाबिंद विकसित हो गया। चिकित्सक ने मोतियाबिंद को हटाने के लिए इस आंख की शल्य क्रिया करने का निर्णय किया और कहा कि यदि संभव हुआ तो वह दृष्टि के कोण को बदलने का प्रयास करेगा। चिकित्सक ने यह भी कहा कि दृष्टि की पुनः प्राप्ति की संभावना मात्र 20% है।

अब हम कार्य सिद्धि के लिए प्रश्न कुंडली में उपस्थित सकारात्मक योगों को देखते हैं।

1. लग्नेश, बृहस्पति/लग्न, चन्द्र और द्वितीयेश मंगल को देख रहा है। मंगल न केवल द्वित्तीयेश होकर दाहिनी आंख बता रहा है बल्कि शल्य क्रिया का कारक भी है और उस पर एक शुभ ग्रह की दृष्टि एक सफल ऑपरेशन सूचित करती है।

2. केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रहों की प्रधानता है।

3. सौभाग्य से राहु/केतु अक्ष लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा, 6ठे भाव, षष्ठेश और नेत्र दृष्टि के कारक शुक्र को पीड़ित नहीं कर रहा है।

4. लग्नेश बृहस्पति, त्रिकोण में बलवान होकर स्थित है और इसका बुध के साथ पूर्ण और मित्र इत्थसाल है (दोनों शुभ ग्रह हैं)। यह इत्थसाल लग्नेश/दशमेश बृहस्पति का चतुर्थेश/सप्तमेश बुध के साथ है। चतुर्थेश और दशमेश के बीच इत्थसाल चिकित्सा और रोगी को संकेतित

कर रहा है तथा अनुकूल है जबकि दशमेश और सप्तमेश के बीच इत्थसाल क्रमशः रोगी और बीमारी को संकेतित कर रहा है जो बीमारी के उपचार के लिए बिल्कुल ठीक नहीं है। यद्यपि तकनीकी रूप से यह 1° अंश के भीतर पूर्ण इत्थसाल की स्थिति है तथापि इत्थसाल अलग हो रहा है और थोड़ी देर में एक इशराफ योग बनाकर बीमारी की भूतकाल की स्थिति दिखाएगा। तीव्र गति ग्रह बुध मंद गति ग्रह बृहस्पति से 0°55' आगे है और थोड़ी देर में 1° दूरी से अलग हो जाएगा।

5. लग्न और लग्नेश से यहां चिकित्सक संकेतित है जो बहुत सक्षम है और ऑपरेशन के सफलतापूर्वक संचालन करने के योग्य है। चिकित्सक दिल्ली का एक विख्यात नेत्र चिकित्सक था।

रोगी को ऑपरेशन करवाने की सलाह दी गई और यह आश्वासन दिया गया कि डाक्टर द्वारा बताई गई सफलता की प्रतिशतता के बावजूद वह प्रभु की कृपा से साठ वर्ष के अंतराल के बाद आंख से देख पाएगा।

दूसरे दिन रोगी को अस्पताल में दाखिल किया गया और लगभग अंधी दाहिनी आंख का ऑपरेशन हुआ। जब पट्टियां खोली गई तो रोगी संसार को इस प्रकार देख पाया जैसे पहले कभी नहीं देखा था।

क्या आंख की रोशनी की इस हद तक, डाक्टर के अनुमान से बढ़कर आश्चर्यजनक वापसी का पहले से भविष्य कथन किया जा सकता था शायद हां, इस अदभुत् एवं विस्मयकारी ज्ञान की ज्योति से जिसे ज्योतिष कहा जाता है, जो इस संसार को अंधेरे से उजाले में लाने में सक्षम है।

उदाहरण संख्या : 4
मूर्च्छा में रोगी

(18-5-1996 को विश्लेषण लिखा गया)

शनि 10°37' केतु 22°43'	मंगल17°50' बुध (व) 28°46'	सूर्य 3°53' चन्द्रमा 14°01'	शुक्र 4°25'
	उदाहरण : 4 दोपहर 2:25 बजे 18 मई 1996 नई दिल्ली		
बृहस्पति (व) 23°33'			लग्न 4°09' राहु 22°43'

18-5-1996 को भारतीय विद्या भवन में हमारी ज्योतिष की कक्षाएं सांय 3:00 बजे प्रारम्भ होनी थी। इससे थोड़ी देर पहले एक शोधकर्ता छात्र मेरे पास आया और इस प्रश्न को पूछा। मैंने इस प्रश्न कुंडली का ज्योतिष आचार्य की कक्षा में विवेचन करने का निर्णय लिया और छात्रों को इस कुंडली का विश्लेषण करने को कहा। इसके दो उद्देश्य थे। अंतिम परीक्षाओं से पूर्व जिसके बाद छात्र ज्योतिष आचार्य की उपाधि प्राप्त करने वाले हैं, मैं प्रश्न की उनकी समझ को जांच लेना चाहता था और दूसरे मैं अपने अध्यापन के प्रभाव और प्रणाली-विज्ञान का आत्म-निरीक्षण करना चाहता था जिसे प्रत्येक अध्यापक को अवश्य करना चाहिए।

जैसे ही मैंने इस प्रश्न कुंडली को श्यामपट्ट पर लिखा, कक्षा सक्रिय हो गई। धीरे-धीरे, वे व्यवस्थित रूप से कुंडली पर टिप्पणियां देने लगे, जिसे नीचे लिखा जा सकता है :

उदित द्विस्वभाव लग्न में एक क्रूर ग्रह बैठा है। राहु/केतु के अक्ष में स्थित लग्न क्रूर ग्रहों से दृष्ट है। सप्तम भाव से पंचमेश/षष्ठेश शनि की दृष्टि एक जटिल बीमारी को सूचित करती है जिसमें रोगी की अवस्था सकंटपूर्ण बनी रह सकती है। 7वें भाव में एक वक्री ग्रह के साथ उदित द्विस्वभाव लग्न बताता है कि बीमारी सोची गई बीमारी की अपेक्षा कोई दूसरी है। यहां क्या हम केतु को 7वें भाव में वक्री ग्रह के रूप में ले सकते हैं? निस्संदेह हां। यदि नहीं, तो सप्तमेश बृहस्पति भी वक्री है और समान परिणाम प्रदान कर रहा है। 4°9' पर लग्न स्थिर की ओर है और कोई प्रगति नहीं बताता, पीड़ा के साथ स्थिति के बने रहने की संभावना है। जैसे ही हम इस प्रश्न कुंडली का और विश्लेषण करने के लिए अग्रसर होते हैं तो हम अनुभव करते हैं कि स्थिति पूर्णतः खराब है।

लग्नेश बुध अष्टमेश मंगल के साथ 8वें भाव में स्थित है और वक्र गति में वृष से मेष में पदावनत है। कोई ग्रह ऐसी स्थिति में हीन कहलाता है और अत्यधिक बलहीन होकर, प्रायः नीच ग्रह की भांति अशुभ परिणाम देता है। जहां एक हीन ग्रह बैठता है वह उस भाव के लिए अशुभ परिणाम देता है। इस मामले में, यह न केवल कमजोर है बल्कि अष्टमेश की पकड़ में भी है।

लग्न 4°9' पर सूर्य के नक्षत्र में है और द्वादशेश सूर्य (अस्पताल) और 9वें भाव में लग्न के समान अंश में स्थित है। चन्द्रमा द्वादशेश सूर्य के साथ स्थित है और षष्ठेश शनि से दृष्ट है। शनि राहु/केतु अक्ष में स्थित होकर अशुभ प्रभाव को बढ़ा रहा है। द्वादशेश सूर्य अपने ही नक्षत्र में नवम भाव में तथा नवमेश शुक्र दशम भाव में लग्न के समीप अंशों में स्थित है।

केन्द्रों और त्रिकोणों में सम्मिश्रित प्रभाव हैं और यह एक सिद्धान्त है कि यदि शुभ ग्रह वक्री होकर केन्द्र में स्थित हों तब कुछ शीघ्र लाभ देने के बाद जटिलताएं उत्पन्न कर सकते हैं। यहां चतुर्थेश और सप्तमेश वक्री बृहस्पति (क्रमशः चिकित्सा और बीमारी) पुनः बीमारी की आवृत्ति बता रहा है। बीमारी के पुनः होने पर इलाज का प्रकार अवश्य बदलना चाहिए। लेकिन 7वें भाव में क्रूर ग्रहों के कारण जटिलताएं बनी रह सकती हैं।

लग्नेश बुध 8वें भाव में अष्टमेश के साथ स्थित होकर रोगी की मृत्यु दिखाता है। लग्नेश की केन्द्र में स्थित वक्री ग्रह के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि पुनः रोगी की मृत्यु दिखा रही है। यह सिद्धान्त का रूपान्तरण है कि केन्द्र में स्थित लग्नेश का वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल मृत्यु दर्शाता है। यहां, वास्तव में यह बहुत खराब है। लग्नेश 8वें भाव में अष्टमेश के साथ स्थित होकर केन्द्र में स्थित वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल बना रहा है।

लग्नेश की बृहस्पति के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि है जो वक्री होने के कारण और राहु और केतु के समान अंशों के कारण अत्यंत पीड़ित है।

चन्द्रमा एवं जीवन प्रदाता सूर्य षष्ठेश शनि से दृष्ट हैं। चन्द्रमा शनि के साथ एक इशराफ योग बना रहा है जबकि सूर्य इत्थसाल योग बना रहा है।

प्रश्न अमावस्या के दिन पूछा गया जो अत्यंत अशुभ है।

यहां लग्नेश की अपेक्षा अष्टमेश बलवान है। यदि प्रश्न कुंडली में मृत्यु के अन्य संकेत उपस्थित हों तो यह एक पुष्टिकारक योग है।

दशम भाव में एक शुभ ग्रह शुक्र स्थित है, इस आभासी शुभता को अवश्य देखा जाना चाहिए। 10वां भाव रोगी को संकेतित करता है। शुक्र अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में है। शुक्र द्वादशेश सूर्य की भांति लग्न के समान अंशों में है। शनि एक नक्त योग द्वारा शुक्र और सूर्य को दुहरे इत्थसाल योग से जोड़ रहा है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, रोगी अस्पताल में अपनी मृत्यु-शैया पर है। प्रश्न कुंडली दर्शाती है कि रोगी यंत्रणा से पीड़ित है। क्या यह परिवार के लिए पीड़ा है। आइये देखें :

यह महिला लगभग 10 दिन पहले गर्भपात से पीड़ित हुई। लग्नेश बुध और अष्टमेश मंगल का योग मृत्यु का खतरा संकेतित करता है और शनि पंचमेश (संतान) और षष्ठेश (रोग) होकर लग्न को देख रहा है। बच्चा गर्भाशय में मर गया और मां को अत्यधिक और अनियंत्रित रक्तस्राव के साथ चिकित्सालय ले जाया गया। पांच दिनों के बाद, स्वास्थ्य लाभ की कुछ प्रारंभिक प्रतिक्रिया के साथ उसको पीलिया हो गया और दो दिनों के बाद वह मूर्च्छा में चली गई। केन्द्रों में वक्री शुभ ग्रह प्रारंभिक लाभ के बाद पुनः

बीमारी देते हैं और दूसरी जटिलताओं की ओर ले जाते हैं। उसे दूसरे अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। लग्न में क्रूर ग्रह चिकित्सक की अयोग्यता बताता है और चौथे भाव में वक्री ग्रह इलाज का परिवर्तन दिखाता है। 7वें भाव में एक क्रूर वक्री ग्रह के साथ उदित द्विस्वभाव लग्न दिखाता है कि बीमारी संदिग्ध बीमारी की अपेक्षा कोई दूसरी है। यहां द्विस्वभाव लग्न है और सप्तमेश वक्री है। क्या वास्तविक बीमारी जिगर के रोग से शुरू हुई जिसने जटिलताओं में परिवर्तित होकर पहले गर्भपात और फिर असली बीमारी पीलिया को उभारा। वह पिछले तीन दिन से मूर्च्छा में है।

मेरे पास यह दिखाने के लिए चिकित्सक की रिपोर्ट उपलब्ध नहीं है कि पीलिया का कारण यकृत था अथवा अयकृत। गर्भपात के बाद विकसित पीलिया का एक कारण अयकृतीय हो सकता है जो संभवतः मस्तिष्क को आपूर्ति करने वाले रक्त की कमी और अत्यधिक रक्तस्राव के साथ हुआ और परिणामस्वरूप केन्द्रीय स्नायु तंत्र प्रभावित हुआ। कारण जो कुछ भी हो, पीड़ित बृहस्पति द्वारा सूचित होता है कि जैसे ही पीलिया विकसित हुआ, तभी जिगर भी प्रभावित हुआ और क्षतिग्रस्त हुआ। इस प्रश्न कुंडली में रोग कारक शनि षष्ठेश है और बीमारी के भाव में स्थित है जो नसों में भी बीमारी दर्शाता है। बीमारी, जिसने अंततः केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र को नष्ट कर दिया जिससे रोगी मूर्च्छावस्था में जिन्दगी और मौत से जूझ रहा है।

चिकित्सीय रूप से, मूर्च्छा की ओर ले जाने वाला यह यकृतीय पीलिया का एक निराशाजनक मामला है। एक अयकृतीय कारण जैसे आघात, संक्रमण अथवा कुछ दवाइयों के कारण यकृत विनाश से पीलिया का होना अंततः यकृत को प्रभावित करता है अतः कारण जो कुछ भी हो, यह मूर्च्छा का मामला है जहां नष्ट केन्द्रीय स्नायु-तंत्र जीवन के लिए कठिनाई पैदा कर रहा है।

अतः हम अपनी ज्योतिषीय चर्चा और मामले के निष्कर्षों पर वापस आते हैं। हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि रोगी एक बहुत ही संकटपूर्ण स्थिति में है और उसका जीवित रहना कठिन है। मैंने कक्षा में चर्चा करते हुए केवल एक टिप्पणी दी कि यदि लग्नेश बुध वक्री अवस्था में अष्टमेश मंगल से युति करेगा अथवा उसके निकट आ जाएगा तो रोगी मर जाएगा। यदि बुध मंगल से आगे मार्गी होकर अतिचारी होगा तो रोगी जीवित रहेगा। एक छात्र ने पंचाग देखने के बाद मुझे बताया कि बुध 28 मई 1996 को 25°51' पर मार्गी होगा जब मंगल 1°03' की दूरी पर 24°54' पर होगा। मार्गी होने के बावजूद, मंगल बुध को तीव्र गति से पकड़ लेगा और अंततः

दोनों 29 मई 1996 को संयुक्त हो जाएंगे। यदि वे संयुक्त न भी हों तो भी 1° की दूरी हमारे विश्लेषण के लिए विवेचनात्मक है। क्या यह 0°3' जीवन के लिए केवल प्रकाश की महीन हल्की रेखा है जिसकी कि हम आशा कर रहे हैं।

एक निराशाजनक स्थिति में भी ज्योतिषी केवल उम्मीद का आश्वासन ही दे सकता है। रोगी की मृत्यु 21 मई 1996 को हो गई।

उदाहरण संख्या : 5

पित्ताशय की पथरी से उत्पन्न पेचीदगी

शनि 8°11' केतु 23°10'	मंगल 0°02' सूर्य 10°47'	बुध 0°47' शुक्र 24°01'	चन्द्रमा 26°19'
	उदाहरण : 5 सायं 6:00 बजे 24 अप्रैल 1996 नई दिल्ली		
बृहस्पति 23°41'		लग्न 0°39'	राहु 23°10'

यह एक महिला का मामला है जो पेट में दर्द के कारण अस्पताल में दाखिल हुई। शीर्षोदय लग्न के होते हुए भी, जो अनुकूल है, एक चर लग्न स्थिति में परिवर्तन दिखाता है। स्थिति के इस आसन्न परिवर्तन को यह देखने के लिए सदैव आलोचनात्मक रूप से विश्लेषित करना चाहिए कि क्या परिवर्तन उसके लिए अच्छा है अथवा बुरा। सिद्धान्ततः कोई अकेला सिद्धान्त तुरन्त निष्कर्षों को प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त नहीं करना चाहिए।

लग्न मंगल के नक्षत्र में 0°39' पर संधि में है और मंगल ने अभी अपनी राशि मेष में प्रवेश किया है और 0°02' पर संधि पर भी है। यह मंगल 7वें भाव से पूर्ण पाराशरी दृष्टि से लग्न को देख रहा है। मंगल केतु के नक्षत्र है जो बीमारी के घर, 6ठे भाव में स्थित है। यहां न केवल लग्न और मंगल ने अभी राशि में प्रवेश किया है बल्कि द्वादशेश/नवमेश बुध ने भी अभी 8वें भाव में प्रवेश किया है और लग्नेश शुक्र के साथ स्थित है। लग्न और ये दो ग्रह, जो क्रमशः राशि के प्रारम्भ पर, संधि पर स्थित होकर लग्न और लग्नेश को पीड़ित कर रहे हैं तथा एक लम्बी बीमारी दिखा रहे हैं, प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है। लग्नेश शुक्र 8वें भाव में गया है, द्वादशेश बुध के साथ है और बीमारी

के घर से, प्राकृतिक रूप से रोग के कारक शनि से दृष्ट होकर जीवन और मृत्यु की एक संकटपूर्ण स्थिति दिखा रहा है। शुक्र न केवल 6/12 अक्ष में स्थित राहु और केतु के सम अंशों में है बल्कि षष्ठेश बृहस्पति के भी सम अंशों में है। यद्यपि शुक्र पर बृहस्पति की कोई दृष्टि नहीं है तथापि षष्ठेश बृहस्पति और अष्टमेश शुक्र, जो कि लग्नेश होकर 8वें भाव में स्थित है, के बीच निकटतम अंशीय संबंध कोई स्वास्थ्य लाभ नहीं दिखा रहा। लग्नेश शुक्र स्थिर राशि में भी स्थित है जो स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं देता।

शुक्र मंगल के नक्षत्र में स्थित होकर शल्य क्रिया दिखा रहा है जबकि 7वें भाव से एकादशेश सूर्य के साथ मंगल लग्न को देख रहा है जो बहुविध शल्यक कार्यविधियां दिखा रहा है। लग्नेश शुक्र और दशमेश चन्द्र के बीच तथा चतुर्थेश शनि और सप्तमेश मंगल के बीच कोई ताजिक दृष्टि नहीं है और इसलिए अनुकूल परिणामों को देने का कोई संभावित संबंध अस्तित्व में नहीं दिखाई देता।

चन्द्रमा द्वादशेश बुध की राशि में स्थित है जिसका राशि अधिपति 8वें भाव में चला गया है। चन्द्रमा न केवल षष्ठेश बृहस्पति के नक्षत्र में स्थित है बल्कि इससे दृष्ट होकर निकटतम इशराफ योग यह दर्शा रहा है कि बीमारी आरम्भ हो चुकी है। चन्द्रमा षष्ठेश के नक्षत्र में स्थित होकर बीमारी से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है जबकि चन्द्रमा का राशि अधिपति 8वें भाव में पीड़ित होकर एक संकटपूर्ण स्थिति यहां तक कि मृत्यु भी दे सकता है।

6ठा भाव राहु/केतु अक्ष में होने के कारण अत्यधिक पीड़ित है और बिना किसी शुभ दृष्टि के शनि वहां स्थित है। कुल मिलाकर स्थिति बहुत सकारात्मक नहीं है। 8वें भाव में स्थित लग्नेश के षष्ठेश के साथ निकट अंश जो बिना किसी शुभ प्रभाव/दृष्टि के है तथा राहु केतु अक्ष में 6ठा भाव रोगी की मृत्यु भी दे सकता है।

प्रश्न कुंडली में 6ठे और 7वें भाव में क्रूर ग्रह उदरीय क्षेत्र में बीमारी का स्थान दिखाता है। बीमारी 16 और 17 अप्रैल 1996 को आरम्भ हुई और दो दिन पूर्व रोगी को अस्पताल में भर्ती किया गया। यह न केवल चतुर्दशी, एक रिक्ता तिथि है बल्कि उस तिथि का क्षय भी है। बीमारी रेवती नक्षत्र में आरम्भ हुई, जो वराहमिहिर के सिद्धान्तों के अनुसार न केवल बिना स्वास्थ्य लाभ के साथ एक लम्बी बीमारी वरन् मृत्यु भी दिखाता है।

19 अप्रैल 1996 को रोगी को उपचार-गृह में दाखिल कराया गया और 4 जून 1996 को उसकी शल्य क्रिया की गई। पित्ताशय की पथरी ने अग्नाशय को नष्ट कर दिया था जिससे अत्यधिक मवाद का निर्माण होने लगा। इस बीच, रक्तचाप में कमी होने और अन्य संबंधित जटिलताओं के

कारण शल्य क्रिया रोक दी गई, यद्यपि वे मवाद को निकालने की नलिका प्रवेश कराने में सफल रहे।

जैसा स्पष्ट है कि लग्नेश शुक्र का किसी भी ग्रह के साथ कोई ताजिक योग नहीं है। अतः घटनाओं का समय जानने के लिए चन्द्रमा का विश्लेषण अनिवार्य रूप से करना पड़ता है। चन्द्रमा षष्ठेश बृहस्पति के साथ 2°38' की दूरी पर निकटतम इशराफ योग में है। ये दोनों ग्रह द्विस्वभाव राशियों और आपोक्लिम भावों में हैं और एक चर लग्न के साथ जुड़कर महीनों को बताते हैं। इस शोध आधारित विधि के विस्तार के लिए घटनाओं का समय नामक अध्याय देखिए। महीनों और दिनों के रूपान्तरण में 2°38', 2 माह और 19 दिनों को संकेतित करते हैं। अब प्रश्न के दिन 24 अप्रैल 1996 से 2 महीने और 19 दिन गिनिए, हम 11 जुलाई 1996 पर पहुंचते हैं। दो ग्रहों के बीच इशराफ योग एक दुर्भाग्यशाली घटना दिखाता है। सामान्यतया, एक इशराफ योग पिछली घटना को सूचित करता है लेकिन कभी-कभी यह भविष्य में घटित होने वाली अशुभ घटना भी दर्शाता है। इस विरोधाभास के निर्णय के लिए और शोध एवं परीक्षण की आवश्यकता है।

7 जुलाई 1996 को जब रोगी सघन चिकित्सा कक्ष में कोमा में था तो संयोग से जिस नलिका के जरिये मवाद बाहर निकाला जा रहा था, वह हट गई। यह उस दिन घटित हुआ जब लग्नेश शुक्र षष्ठेश बृहस्पति (बीमारी) के साथ अंशीय युति में था और मंगल (नलिका का आकस्मिक निष्कासन) के साथ निकट इत्थसाल में था। 11 जुलाई 1996 को चन्द्रमा गोचर में 8वें भाव पर पहुंचा जहां लग्नेश शुक्र स्थित था।

11 जुलाई 1996 को कोमा में ही रोगी की मृत्यु हो गई।

उदाहरण संख्या : 6
पेशी-दुर्बलता की बीमारी

शनि (व०) 13°28' केतु 16°10'	आरूढ़ लग्न 13°20' से 16°40' तक		शुक्र 0°04' मंगल 9°23'
	उदाहरण : 6 सायं 6:00 बजे 30 जुलाई 1996 नई दिल्ली		सूर्य 13°47'
चन्द्रमा 14°56'			बुध 2°40'
बृहस्पति (व) 15°52'			राहु 16°10'

पृष्ठोदय के साथ एक चर लग्न स्थिति में परिवर्तन दिखाता है। लग्न शुक्र के नक्षत्र में है जिसने अभी अपनी राशि परिवर्तित की है और लग्नेश मंगल के साथ स्थित है तथा नवमेश/द्वादशेश वक्री बृहस्पति से दृष्ट है। यद्यपि रोगी अस्पताल में है (द्वादशेश), वह स्पष्ट रूप से एक अनुकूल स्थिति में है (नवमेश) क्योंकि एक बली ग्रह के रूप में बृहस्पति 9वें भाव से देख रहा है। लग्नेश मंगल और नवमेश/द्वादशेश बृहस्पति के बीच इत्थसाल भी है। लग्नेश मंगल का 12वें भाव में स्थित पीड़ित शनि के साथ निकटतम इत्थसाल दिखा रहा है कि रोगी अस्पताल में एक संकटपूर्ण स्थिति में है। लेकिन लग्नेश और दशमेश का इत्थसाल रोगी के स्वास्थ्य-लाभ के लिए एक प्रमुख योग है। इस प्रकार लग्नेश दो सकारात्मक इत्थसाल योगों में एक बृहस्पति के साथ और दूसरे शनि के साथ शामिल है।

चन्द्रमा 10वें भाव में अपने नक्षत्र में स्थित है और चन्द्रमा की राशि में स्थित पंचमेश (त्रिकोणाधिपति) सूर्य से दृष्ट है। यह पूर्णिमा का प्रश्न है जो दूसरे सहायक योग उपलब्ध होने पर सदैव अनुकूल परिणामों को प्रदान करता है। चन्द्रमा किसी भी प्रकार 6ठे भाव अथवा षष्ठेश से संबंधित नहीं है। लग्नेश मंगल षष्ठेश के साथ इत्थसाल में है, लेकिन यह निकटतम इत्थसाल नहीं है। 6ठा भाव और षष्ठेश बीमारी दर्शाता है और षष्ठेश बुध द्वितीयेश/सप्तमेश शुक्र के साथ निकटतम इशराफ योग में है और पिछली घटना दिखा रहा है जिसमें उसके इलाज पर अधिकांश धन व्यय किया गया। केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह हैं जो इच्छाओं की पूर्ति और बीमारी से संबंधित प्रश्नों में, रोगी के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हैं।

यह एक 13 वर्षीय लड़की का मामला है जो धीरे-धीरे अपनी मांसपेशियों का बल खो चुकी है। चिकित्सा, जो पिछले कुछ महीने से लगातार चल रही थी, ने कोई प्रगति नहीं दिखाई और उसकी स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ रही थी। वह कुछ पकड़ नहीं सकती थी, अपने पांवों से चल नहीं सकती थी और अत्यधिक मांसपेशीय कमजोरी प्रकट हो चुकी थी। उसकी पलकें गिरना शुरू हो गईं और उसकी वाणी भी प्रभावित हो गई थी।

24 जुलाई 1996 को उसने अचानक सांस न आने की शिकायत की। उसे तुरन्त एक संकटपूर्ण स्थिति में निकटस्थ उपचार गृह ले जाया गया और जैसे ही उसे कैज्युलटी वार्ड में ले जाया गया तो उसमें सांस नहीं थी। वह कृत्रिम श्वास पर जीवित थी और इस प्रश्न के समय तक उसके परीक्षण चल रहे थे।

इस प्रश्न कुंडली में, जैसा कि ऊपर विवेचित किया गया है अनेक सकारात्मक संकेत तीव्र स्वास्थ्य लाभ और एक उपयुक्त इलाज दिखाते हैं।

एक चर लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ संयुक्त है। केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह हैं। चन्द्रमा और लग्नेश 6ठे भाव और षष्ठेश के प्रभाव से मुक्त हैं और दशमेश और लग्नेश के बीच इत्थसाल है। ये सब तीव्रता से स्वास्थ्य लाभ दिखाते हैं। इस बालिका के पिता को आश्वासन दिया गया कि कुछ अप्रिय नहीं घटेगा और वह शीघ्र ठीक हो जाएगी।

मुझे बाद में सूचित किया गया कि पेशी-दुर्बलता के रूप में उसका रोग-निदान किया गया। एक बीमारी, जो तंत्रिका-पेशी की एवं पेशी-दुर्बलता की अव्यवस्था, पलक गिरना, नासिक्य वाणी और सांस लेने में कठिनाई जैसी विशिष्टताओं द्वारा स्पष्ट होती हैं।

इस रोग के निदान के लिए उपयुक्त इलाज आवश्यक है। यदि चिकित्सकों के निर्णय में गलती के कारण परीक्षण में चूक हो जाए, जैसा इस बच्ची के इलाज में घटित हुआ था, तब रोगी की स्थिति तेजी से बिगड़ सकती है।

यह बालिका अब ठीक हो रही है। उसने अपने पैरों पर विद्यालय जाना प्रारम्भ कर दिया है। उसकी बीमारी के दूसरे लक्षण जैसे, नासिक्य वाणी, पलक गिरना और पेशी-दुर्बलता धीरे-धीरे विलुप्त हो रहे हैं।

8
यात्री अथवा लापता व्यक्ति

एक व्यक्ति, जो यात्रा पर गया हुआ है और उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, एक व्यक्ति जिसने अपनी वापसी यात्रा प्रारम्भ की है लेकिन वापस नहीं पहुँचा तथा विदेश गये व्यक्ति की स्थिति अथवा सकुशलता आदि। अपने निकट संबंधियों के लिए प्रश्न पूछते समय व्यक्ति के मन में ये सब तथा इनसे सम्बद्ध अनेक प्रश्नों से उत्पन्न चिंता रहती है। ये सब चिंताएं तब अधिक थीं जब प्राचीन समय में वर्तमान युग की तुलना में संप्रेषण के माध्यम इतने उन्नत नहीं थे। वर्तमान युग में यातायात के साथ-साथ संप्रेषण की प्रणालियों में एवं सूचना तकनीक में उन्नति के साथ सशक्त परिवर्तन आया है लेकिन फिर भी ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जहाँ यात्रा पर गया व्यक्ति न तो अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचा है और न ही उसके बारे में कोई सूचना उपलब्ध है।

आधुनिक संसार में अपराध की घटनाओं में वृद्धि हो रही है जहाँ या तो राजनीतिक अथवा सामाजिक आंतकवाद या धन ऐंठने के लिए अपहरण आदि अत्यां क होते हैं। अपहरण अथवा प्रवासी व्यक्ति के मामलों में यह चिंता कि क्या लापता व्यक्ति जीवित है अथवा मर गया? क्या वह वापस आने वाला है? क्या उसके साथ हिंसा या मारपीट हुई है? क्या उसकी सुरक्षित वापसी का समय आने वाला है, आदि रहस्य से ढके क्षेत्र हैं। ऐसी स्थिति में जब कि परिवार एक सदमें की चपेट में हो, इस प्रकार के प्रश्नों का संचालन अत्यधिक सावधानी से करना चाहिए।

किस भाव से क्या देखें

लग्न लापता व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो यात्री अथवा ऐसे व्यक्ति, को भी शामिल करता है जिसकी वापसी प्रत्याशित है। 4था भाव लापता व्यक्ति की अथवा पथिक की प्रसन्नता एवं सकुशलता दर्शाता है तथा

7वां भाव उसका रास्ता या मार्ग है। 7वां भाव उस मार्ग पर पथिक द्वारा सामना की गई कठिनाइयां, अथवा उपलब्धियां भी दर्शाता है।

प्रश्न की विषय वस्तु क्या है

यदि यह पूछा जाए कि मेरा प्रश्न क्या है जैसे कि मूक प्रश्न में स्थिर लग्न, शनि अथवा बृहस्पति (दोनों मंद गति ग्रहों) द्वारा दृष्ट हो तब प्रश्न लापता व्यक्ति या पथिक की कुशलता और वापसी से संबंधित होता है।

विश्लेषण के सामान्य सिद्धान्त

1. लग्न में उदित चर राशि अथवा नवांश बदस्तूर एक ऐसी स्थिति दिखाता है जो परिवर्तित होने को है। एक व्यक्ति जो यात्रा पर गया है, यात्रा करेगा। एक व्यक्ति जिसे वापस आना है, वह वापस आएगा। इसके विपरीत उदित स्थिर राशि, स्थिति का यथावत होना बताती है। कोई यात्रा नहीं, कोई वापसी नहीं। लग्न में द्विस्वभाव राशि चर अथवा स्थिर की ओर उदित अंशों में जिसके निकट होगी तदनुसार परिणाम प्रदान करेगी।
2. सामान्य नियम के अनुसार 3, 6, 11 भावों में पाप ग्रह और केंद्रों तथा त्रिकोणों में शुभ ग्रह प्रश्न की कार्य-सिद्धि दर्शाते हैं और लापता व्यक्तियों की वापसी से संबंधित प्रश्नों में भी यह सामान्य नियम पूरी तरह प्रयुक्त होता है।
3. लग्न में उदित शीर्षोदय राशि कार्य सिद्धि के लिए अनुकूल है जबकि पृष्ठोदय लग्न निराशा ही देता है। उदित उभयोदय लग्न पृष्ठोदय राशि की भांति इतना बुरा नहीं है लेकिन शीर्षोदय राशि की भांति उतना अच्छा भी नहीं है।
4. 7वें भाव में शुभ ग्रह बताता है कि लापता व्यक्ति सुरक्षित है जबकि लग्न में और 7वें भाव में पाप ग्रह बताता है कि वह समस्याएं झेल रहा है।
5. सदैव चन्द्रमा, लग्न, लग्नेश और कार्येश, उनके नक्षत्रेश, और उनका स्थापन ध्यान में रखें। यदि इनमें से कोई पाप ग्रहों के नक्षत्र में, पाप अधिपतित्व में या राहु अथवा केतु के अक्ष में स्थित हों तो यह प्रश्न की असफलता दर्शाता है।
6. लग्नेश और चंद्रमा की कार्येश से निकटतम ताजिक दृष्टियों और उनके द्वारा बनने वाले ताजिक योगों को भी ध्यान में रखें।

कोई यात्रा नहीं अथवा कोई वापसी नहीं

4थे भाव अथवा 10वें भाव में स्थित शुभ ग्रह कोई यात्रा नही दर्शाता। 4था भाव व्यक्ति की खुशहाली बताता है। इसलिए 4थे भाव में स्थित अथवा दृष्टि डाल रहा शुभ ग्रह कोई यात्रा नहीं बताता। दूसरी ओर, 4थे भाव अथवा 10वें भाव में पाप ग्रह लापता व्यक्ति की तुरन्त वापसी सूचित करता है। यहां एक प्रतिवाद है। 4थे भाव में शुभ ग्रह लापता व्यक्ति की तुरन्त वापसी सूचित करता है इसलिए 10वें भाव में ही शुभ ग्रह की उपस्थिति से समझना चाहिए कि कोई वापसी नहीं है न कि 4थे भाव में, जैसा ऊपर उल्लिखित है, ऐसा मेरा विचार है। यात्रा न होने के लिए शास्त्रीय ग्रंथों में विभिन्न योग दिए गए है, जिन्हें निम्न प्रकार से संक्षेपित किया जा सकता है।

1. यदि लग्न, चंद्रमा अथवा 7वां भाव ग्रहों से घिरा हुआ है चाहे यह कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह शुभ ग्रह हों अथवा अशुभ ग्रह, तो यात्रा नहीं होती। यदि वे शुभ ग्रहों द्वारा घिरे हुए हैं तब व्यक्ति खुश है, जहाँ कहीं भी वह है और यदि अशुभ ग्रहों से घिरे हुए हैं तब वह विपत्ति में है और इन दोनों स्थितियों में यात्रा नहीं होती।
2. यदि चंद्रमा 7वें भाव में शुभ ग्रहों से घिरा (जैसा कि ऊपर है) होकर शुभ दुरुधरा योग बना रहा है तो व्यक्ति अपने मित्रों अथवा शुभ चिंतकों, जो उसके निकट हैं, के फुसलाने पर यात्रा नहीं करता। ऐसी ही स्थिति में पाप ग्रहों द्वारा निर्मित अशुभ दुरुधरा योग चोरी, बीमारी अथवा कुछ ऐसी ही प्रतिकूल परिस्थितियों द्वारा यात्रा में रुकावटें बताता है।
3. 2सरे भाव अथवा 8वें भाव में स्थित लग्नेश का 4थे भाव अथवा 7वें भाव में स्थित ग्रह के साथ इत्थसाल वापसी न होने की ओर इशारा करता है। यद्यपि यह ज्योतिष शास्त्रों में दिया गया नियम है तथापि 2रे या 8वें भाव में स्थित लग्नेश का 7वें भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल निर्मित नहीं हो सकता क्योंकि दोनों में ताजिक दृष्टि संबंध नहीं है, जो इत्थसाल योग के लिए एक अनिवार्य शर्त है।
4. सूर्य अथवा तीन स्वाभाविक शुभ ग्रहों बृहस्पति, शुक्र और बुध की 12वें भाव में स्थिति वापसी नहीं दर्शाती।
5. 11वें से 4था भाव वापसी रास्ते को दर्शाने वाले भाव हैं। चाहे लग्नेश 11वें से 4थे भाव में स्थित हो फिर भी यदि केन्द्रों में पाप ग्रह स्थित हों तो यात्री की वापसी नहीं होती।

6. अशुभ दृष्टि से प्रभावित स्थिर लग्न और 5, 6 अथवा 7वें भावों में स्थित पाप ग्रह भी वापसी न होना बताते हैं।
7. 10 वें भाव में चंद्रमा स्थित हो, जहाँ से वह 4थे भाव को देखेगा, तब भी यात्रा नहीं होती।
8. कोई ग्रह जो पहले वक्री होकर 8वें भाव से 7वें भाव में हीन होने के बाद अब मार्गी होकर 8वें भाव में स्थित हो तो भी वापसी नहीं।

सकुशल वापसी

किसी भी प्रेच्छक की कामना पथिक या गुमशुदा व्यक्ति की वापसी ही है, इसीलिए कार्यसिद्धि के योग ही वांछित फल देते हैं। सुरक्षित वापसी के अन्य योग निम्नलिखित हैं :

1. 2सरा भाव पत्नी सहित परिवार का है, 3सरा भाव सहोदरों को और 5वां भाव बच्चे संकेतित करता है। इन भावों में शुभ ग्रहों की स्थिति, इन संबंधों के प्रेम एवं अनुराग के परिणाम स्वरूप व्यक्ति को सकुशल वापिस लाती है। विशेषतया 2सरे अथवा 3सरे भाव में बृहस्पति अथवा शुक्र सुरक्षा के लिए अत्यंत बलवान घटक हैं। 4था भाव घर है। बृहस्पति अथवा शुक्र 2सरे अथवा 3सरे भाव से 4थे भाव में शीघ्र प्रवेश करने वाले हैं (4थे भाव में उनके वास्तविक गोचर के निरपेक्ष)। इस पर 'घटनाओं का समय' नामक अध्याय में अलग से व्याख्या की गई है। 4थे भाव में ये शुभ ग्रह पथिक की तुरन्त वापसी बताते हैं। यदि एक प्रश्न कुंडली में, चंद्रमा 4थे भाव में अन्य अनुकूल संकेतों के साथ स्थित हो तो प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति को घर जाने को कहना चाहिए क्योंकि लापता व्यक्ति लगभग घर वापस पहुँच चुका होगा। सामान्यतः 2, 3, 5वें भाव में सभी ग्रह अथवा शुभ ग्रहों की स्थिति शीघ्र वापसी के अनुकूल है।
2. लग्नेश की 11वें से 4थे भाव में तथा केंद्रों में शुभ ग्रहों की स्थिति यात्री की वापसी दर्शाती है।
3. केंद्रों में शुभ ग्रह की पाप ग्रहों से रहित स्थिति कार्य सिद्धि एवं यात्री की सुरक्षित वापसी का एक सशक्त योग है यहां तक कि जब चंद्रमा 8वें भाव में भी स्थित हो तो भी यात्री सुरक्षित वापस आता है अथवा कार्य सिद्धि होती है।
4. चंद्रमा 7वें भाव में और सप्तमेश किसी राशि की 2सरी होरा में (15 से 30 अंशों के बीच हो तो व्यक्ति अपने वापसी के मार्ग पर अग्रसर हो

चुका है। एक अत्यधिक उदारवादी सिद्धांत, जिसे मैंने अत्यंत प्रभावी पाया है, यदि अनुकूल संकेत स्थित हैं तब चंद्रमा 7वें भाव में स्थित न भी हो और सप्तमेश राशि के दूसरे भाग में हो तब व्यक्ति अपने वापसी के रास्ते पर है।

5. 7वें भाव में चर राशि में चंद्रमा यात्री को वापस लाता है। यद्यपि कुछ विद्वान् मानते है कि 7वें भाव में केवल चंद्रमा का स्थापन बताता है कि यात्री अपने वापसी मार्ग पर है।

6. 2, 3, 8, 9वें भाव में चर राशि में शुभ ग्रह स्थित हों इसका अर्थ यह है कि इनमें से किसी भाव में जहां कहीं भी एक शुभ ग्रह स्थित हो, वह चर राशि होनी चाहिए।

7. चंद्रमा लग्न में, चर राशि अथवा चर नवांश में हो तो यात्री शीघ्र सफलता के साथ वापस आता है। इसी प्रकार, यदि चंद्रमा 4थे भाव में चर राशि अथवा चर नवांश में हो तब भी सुरक्षित और शीघ्र वापसी की भविष्यवाणी की जा सकती है।

8. 11वें भाव में सूर्य अथवा शुभ ग्रहों-बृहस्पति, शुक्र अथवा बुध में से कोई, शीघ्र सुरक्षित वापसी बताता है।

9. केंद्रों अथवा त्रिकोणों में शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र अथवा बुध) और 6ठे अथवा 7वें भाव में कोई ग्रह। यह एक उदारवादी दृष्टिकोण है। यद्यपि, षटपंचासिका के अनुसार, निम्नलिखित योग शीघ्र वापसी सूचित करते हैं:

   क) 6ठे भाव अथवा 7वें भाव में कोई ग्रह और केंद्र में बृहस्पति।

   ख) त्रिकोण भावों में शुक्र और बुध।

10. लग्नेश 3सरे भाव अथवा 9वें भाव में स्थित होकर लग्न में स्थित ग्रह के साथ इत्थसाल बना रहा हो तो यात्री अपनी वापसी यात्रा लगभग प्रारंभ कर चुका है।

11. 2सरे अथवा 8वें भाव में स्थित लग्नेश 10वें भाव में स्थित ग्रह के साथ इत्थसाल बना रहा हो।

12. लग्न में वक्री लग्नेश के साथ चंद्रमा अथवा लग्न में स्थित चन्द्रमा का किसी वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल (यहाँ चंद्रमा का वक्री लग्नेश के साथ

अथवा अन्य किसी वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल हो सकता है) अविलम्ब शीघ्र वापसी बताता है। इस योग में सुरक्षित वापसी के लिए चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा शुभ ग्रहों के साथ युत होना चाहिए।

13. 12वें भाव में स्थित लग्नेश का चंद्रमा से इत्थसाल हो तो शीघ्र वापसी होती है।

14. कोई ग्रह वक्री गति में हीन होकर 7वें भाव में स्थित हो तो व्यक्ति वापिस आता है।

यात्री की सकुशलता

1. हम देख चुके है कि 4था भाव यात्री की स्थिति बताता है। 4थे भाव में शुभ ग्रह अथवा 4थे भाव को दृष्ट करने वाला शुभ ग्रह बताता है कि यात्री किसी कठिनाई के बिना आनंद की स्थिति में है। 5 वें से 10वां भाव उसकी बाह्य यात्रा बताता है और 11 से 4था भाव उसकी वापसी यात्रा बताता है। उसकी वाह्य यात्रा पर ग्रहों द्वारा संकेतित शुभ प्रभाव उसकी सकुशलता की स्थिति की भविष्यवाणी करता है। अतः 5, 6, 7, 8, 9 अथवा 10वें भावों में से किसी में शुभ ग्रहों के साथ स्थित चंद्रमा अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट चंद्रमा उसकी सकुशल स्थिति और सुरक्षित वापसी बताता है।

2. 8वां भाव बाधाओं और रुकावटों का भाव है। जब शुक्र अथवा बुध 8वें भाव को गृहीत करता हो (अथवा 11वें भाव को जो अत्यधिक तार्किक है) तो यात्री प्रसन्न है। मेरी राय में, 8वां भाव कार्यों के निर्विघ्न समापन के लिए खाली होना चाहिए क्योंकि 8वें भाव में स्थित शुभ ग्रह भी रुकावट का कारण बन सकते हैं।

3. 4थे भाव में स्थिर राशि में स्थित शुभ ग्रह स्थिति में बदलाव नहीं देता तथा यात्री वापिस नहीं आता, परन्तु वह जहाँ कहीं भी है सकुशल एवं सुखी है।

यात्री की कठिनाइयाँ

1. लग्न पृष्ठोदय हो, अशुभ दृष्ट और 5, 7, 9 भावों में अशुभ ग्रह स्थित हों तो यात्री कठिनाइयों का सामना कर रहा है। विशेष रूप से यदि इस योग में 7वें भाव में क्रूर ग्रह हों।

2. 8वें भाव में युति अथवा दृष्टि द्वारा पीड़ित मंगल अथवा शनि यात्री के लिए कठिनाइयाँ अथवा खतरा बताता है। दोनों जीवन प्रदाता प्रकाश

पुंज चंद्रमा और सूर्य 8वें भाव में स्थित हों और शनि से दृष्ट हों तो शस्त्रों से यात्री को खतरा हैं।

यात्री रास्ते में है

1. 7वें भाव में चंद्रमा स्थित हो।
2. सप्तमेश एक राशि की दूसरी होरा में हो।
3. लग्नेश 3सरे अथवा 9वें भाव में स्थित होकर लग्न में स्थित ग्रह के साथ इत्थसाल में हो।
4. लग्नेश 2सरे अथवा 8वें भाव में स्थित होकर 10वें भाव में स्थित ग्रह के साथ इत्थसाल में हो।

यात्री को बीमारी से पीड़ा

1. 9वें भाव में अशुभ दृष्ट शनि यात्री की बीमारी की ओर संकेत करता है। शनि प्राकृतिक रोग कारक है और 9वें भाव से यह बीमारी के भाव 6ठे भाव को देखता है। मेरे विचार में 9वें, 12वें अथवा 4थे भाव से शनि की दृष्टि, ये सभी यात्री की बीमारी बताते हैं। क्योंकि शनि इन सभी स्थानों से 6ठे भाव को देखता है।
2. पृष्ठोदय लग्न, केंद्रों अथवा त्रिकोणों में अशुभ ग्रह हों और 9वें भाव में सूर्य हो तो यात्री ज्वर से पीड़ित है।
3. पाप ग्रहों द्वारा 6ठे भाव अथवा 7वें भाव में निर्मित दुरुधरा योग बताता है कि व्यक्ति बीमारी अथवा चोरों से पीड़ित है।

बंदी स्थिति या बंधन

यदि लग्न या लग्नेश का चन्द्रमा से संबंध हो अथवा चन्द्रमा 7वें भाव या 12वें भाव में स्थित होकर लग्नेश से संबंध स्थापित करे तो गुमशुदा व्यक्ति स्वेच्छा से घर छोड़ के गया, ऐसा मानना चाहिए। शनि एक ऐसा ग्रह है जो बंधन का कारक है। 4, 5, 8 अथवा 9वें भाव में पाप ग्रह की राशि में स्थित और पाप ग्रहों से दृष्ट शनि लापता व्यक्ति को बंदी-स्थिति में होना बताता है। उपरोक्त शनि का पाप ग्रह की राशि में गोचर बहुत जरूरी नहीं है क्योंकि इस स्थिति में शनि ढाई वर्ष एक ही राशि में भ्रमण करेगा। इस योग में, यदि शुभ ग्रह लग्न को देखे अथवा गृहीत करे तब उदित लग्न को देखें। एक चर लग्न अस्थायी कैद बताता है जबकि स्थिर लग्न स्थायी कैद बताता है। यहाँ स्थायी अथवा अस्थायी बंदी स्थिति बताती है कि कैद की

अवधि छोटी है अथवा बड़ी है। एक द्विस्वभाव लग्न का परिणाम चर अथवा स्थिर राशि के निकट होने पर निर्भर करेगा।

उपरोक्त योगों का एक उपसिद्धान्त यह है कि जब पीड़ित पाप ग्रह 4, 5, 8 अथवा 9वें भाव को गृहीत करें अथवा जब पाप ग्रह लग्न अथवा 7वें भाव को गृहीत करें तब लापता व्यक्ति कैद में है।

एक संस्थापित बन्धन योग इस प्रकार है जब लग्न या 7वें भाव को समान संख्या में ग्रह दोनों ओर से घेरे हुये हों जैसे 2रे और 12वें भाव में एक-एक ग्रह या 3रे और 11वें भाव में दो-दो ग्रह आदि।

कुंडली से बंधन का विश्लेषण करने के लिए बंधन सहम की भी गणना करनी चाहिए। अष्टम भाव में पाप ग्रहों की स्थिति या दृष्टि बंधन के लिए अनिवार्य है क्योंकि बंधक को अधिकतर यातनायें ही दी जाती हैं और उसे एक अतिथि की तरह नहीं रखा जाता।

यात्रा के दौरान स्थिति

1. 7वां भाव रास्ता है जिस पर यात्री अग्रसर है वहाँ पर शुभ ग्रह की स्थिति उसकी यात्रा की सकुशलता बताती है जबकि अशुभ ग्रह बाधाओं का कारण है। न केवल शुभ ग्रहों की स्थिति बल्कि 7वें भाव पर उनका सम्पूर्ण प्रभाव मूल्यांकित करना चाहिए। लग्न में स्थित पाप ग्रह भी 7वें भाव को पीड़ित करते हैं और यात्रा की विपत्तियों को बताते हैं।

2. लग्न अथवा लग्नेश से 7वें भाव में शुभ ग्रहों की संख्या उसके मार्ग की प्रसन्नता, सकुशलता अथवा उपलब्धियों की संख्या बताता है। यह उसकी प्राप्तियाँ अथवा समृद्धि भी सूचित करता है। इसके विपरीत लग्न अथवा लग्नेश से नवें अथवा 12वें भाव में पाप ग्रहों की संख्या उसकी यात्रा के दौरान मार्ग पर उतनी ही बाधाओं, विपत्तियों और हानियों को बताता है। उपलब्धियों के लिए लग्न अथवा लग्नेश से 7वां भाव तथा विपत्तियों के लिए लग्न अथवा लग्नेश से 9वां या 12वां भाव क्यों देखते हैं यह विवादास्पद है। यद्यपि कुछ ज्योतिषी लग्न अथवा लग्नेश से 9वें भाव और 12वें भाव में स्थित शुभ ग्रहों की संख्या से मार्ग में मिलने वाली उपलब्धियों की संख्या मानते हैं।

3. 7वें भाव में शुभ दुरुधरा योग मार्ग में सकुशलता दर्शाता है जबकि पाप दुरुधरा योग पीड़ा, चोरों से डर अथवा हानियां सूचित करता है। चन्द्रमा से घिरा हुआ पाप दुरुधरा या पाप कर्तरी योग सर्वदा मानसिक चिंताएं देता है।

4. केंद्रों में पाप ग्रह बताते हैं कि यात्री अपनी यात्रा के दौरान लूटा गया है।
5. 7वें भाव और/अथवा 8वें भाव में पाप ग्रहों की स्थिति बताती है कि व्यक्ति को कैद में यंत्रणा दी जा रही है।
6. 3रे भाव में बिना शुभ ग्रहों की दृष्टि के पाप ग्रहों की स्थिति बताती है कि यात्री उस स्थान से, जहां वह मूलतः गया था, आगे किसी दूसरे स्थान अथवा देश में चला गया है।

यात्री की मृत्यु

8वां भाव न केवल बाधाओं को बताता है बल्कि दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु के मामलों में भी इसका योग स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। मृत्यु को दर्शाने वाले कुछ प्रमुख योग निम्नलिखित है।

1. पृष्ठोदय लग्न केवल पाप ग्रहों से दृष्ट हो और 6ठे भाव में पाप ग्रह हों, तब यात्री की मृत्यु हो जाती है।
2. पृष्ठोदय लग्न पाप ग्रहों के प्रभाव में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो और 6ठा भाव पीड़ित बुध द्वारा गृहीत हो।
3. प्राकृतिक क्रूर ग्रह शनि दूसरे पाप ग्रहों के साथ अथवा दृष्ट होकर 8वें भाव में स्थित हो।
4. यदि क्रूर ग्रहों से दृष्ट होकर 6, 8 अथवा 12वें भावों में शुभ ग्रह गए हों और यदि सूर्य और चंद्रमा भी क्रूर ग्रहों में प्रभाव में आते हों तो यात्री मर जाता है।
5. बिना किसी शुभ दृष्टि अथवा युति के लग्न और/अथवा 8वें भाव में पाप ग्रह स्थित हों।
6. लग्नेश अथवा चंद्रमा, नीच अथवा अस्त होकर 6, 8 अथवा 4थे भाव में स्थित हो और अष्टमेश के साथ इत्थसाल रखता हो। तथापि इस तरह के योग शुभ ग्रहों से प्रभाव रहित होने चाहिए।
7. चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो और 1,2 अथवा 3रे भाव में स्थित हो और वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल करे तो यात्री की मृत्यु व्यक्त होती है। एक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि चंद्रमा पर शुभ ग्रहों के प्रभाव की अनुपस्थिति अथवा पाप ग्रहों के प्रभाव की उपस्थिति हो।

8. इसी प्रकार 4थे भाव में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न होकर चंद्रमा एक वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल करे तो यात्री की मृत्यु सूचित होती है।

9. उपरोक्त योगों की उपस्थिति में अष्टमेश, लग्नेश या चन्द्रमा से अधिक बली हो तो मृत्यु की प्रबल संभावनाओं को उजागर करता है। यदि लग्नेश और अष्टमेश एक ही ग्रह हो जैसे कि मेष और तुला लग्नों में मंगल और शुक्र तब षष्टेश और द्वादशेश का पीड़ित लग्नेश से बली होना मृत्यु दर्शाता है। इन दोनों लग्नों में षष्टेश एवं द्वादशेश विलोमतः बुध एवं बृहस्पति होंगें। इस स्थिति में यह नैसर्गिक शुभ ग्रह होते हुए भी कुछ हद तक अपनी शुभता खो देते हैं। विशेष रूप से मेष लग्न के लिए बुध एवं तुला लग्न के लिए बृहस्पति यदि वह पाप ग्रहों की युति या दृष्टि से स्वयं पीड़ित हो।

वापसी का समय

यात्री की वापसी का समय जानने के लिए निम्नलिखित सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता है :

1. 4थे भाव में बृहस्पति, शुक्र, बुध अथवा चंद्रमा हों, तो यात्री बिना किसी विलंब के तुरंत वापस आता है।

2. जब बृहस्पति अथवा शनि लग्न को देखता हो, तो वापसी में विलंब होता है।

3. लग्न से किसी ग्रह द्वारा गृहीत प्रथम राशि तक गिनें और बारह से गुणा करें। यात्री उतने दिनों में लौटेगा। लग्न से गिनने पर, यदि पहली राशि एक वक्री ग्रह द्वारा गृहीत है तब यात्री उतने दिनों में वापस आएगा। इस स्थिति में बारह से गुणा न करें। मेरी राय में, यह विधि तब कार्य करती है जब यात्री की वापसी के योग उपस्थित हों और उदित लग्न चर हो।

4. लग्न से उस राशि तक गिनें, जहाँ प्रश्न कुंडली का बलवान ग्रह स्थित है। यात्री इतने महीनों में वापस आएगा। यदि वह ग्रह चर नवांश में है तब इतने महीनों में वापस आएगा। यदि स्थिर नवांश में है तब दो से गुणा करें और यदि द्विस्वभाव नवांश में है तो तीन से गुणा करें। पुनः मेरी दृष्टि में, यह विधि तब कार्य करती है जब यात्री की वापसी के योग उपस्थित हों और उदित लग्न स्थिर हो। द्विस्वभाव लग्न में अवधि सम्भवतः सप्ताहों द्वारा सूचित होती है।

5. जब सप्तमेश गोचर में वक्री होगा तब यात्री वापस आएगा। यह ज्योतिषियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सामान्य नियम है। यद्यपि, इस नियम के अनेक प्रकार भी प्रचलित हैं। यदि सप्तमेश एक चर राशि में है तो यात्री तब वापस आएगा जब सप्तमेश वक्री होना प्रारंभ करेगा। यदि स्थिर राशि में है तब मध्यवर्ती समय को दो से गुणा करें और यदि द्विस्वभाव राशि में है तब तीन से गुणा करें। यह सिद्धांत प्रयोग नहीं होगा जब सूर्य अथवा चंद्रमा सप्तमेश हों क्योंकि वे अपनी गति में कभी वक्री नहीं होते। इस संदर्भ में एक रूचिकर अवलोकन, जिस के परीक्षण की अभी और आवश्यकता है कि पथिक तब वापिस आता है जब सप्तमेश सूर्य अथवा चन्द्रमा का नक्षत्रेश वक्री होना प्रारम्भ करें।
6. गोचर में जब सप्तमेश लग्न में पहुँचता है, यात्री वापस आता है।
7. जब सप्तमेश लग्नेश के साथ इत्थसाल बनाएगा तो वह वापसी का समय हो सकता है।
8. चंद्रमा का पणफर भावों में प्रवेश, जिसका अर्थ है कि जब चंद्रमा गोचर में 2, 5, 8 अथवा 11वें भावों में प्रवेश करेगा तो यात्री वापस आएगा। 8वें भाव में चंद्रमा प्रमुखतः अन्य संबंधित संकेतों की उपस्थिति होने पर कुछ बाधाओं अथवा यहाँ तक कि मृत्यु बताता है। यद्यपि कुंडली में अन्य अनुकूल योगों की उपस्थिति में, जैसे केंद्र और त्रिकोण भावों में शुभ ग्रह हों तब 8वें भाव में भी चन्द्रमा इतना अशुभ नहीं माना जाता।
9. जहाँ यात्री की सुरक्षित वापसी के संकेत उपस्थित हों वहां सप्तमेश की किसी राशि की दूसरी होरा अथवा उत्तरार्ध में स्थिति बताती है कि वह अपने घर वापसी के मार्ग पर है। कुछ लोग मानते हैं कि चंद्रमा 7वें भाव में और नवमेश एक राशि के उत्तरार्ध में हो तो यात्री वापसी के मार्ग पर है।
10. गोचर में, जब चंद्रमा 4थे भाव में प्रवेश करने वाला है तो यात्री की वापसी का समय आ गया है। जैसे ही यह गोचर में 4थे भाव में प्रवेश करेगा तो यात्री वापस आएगा।
11. 4थे भाव में प्रवेश करने के लिए एक ग्रह को जितने अंशों की आवश्यकता है, उतने दिन में यात्री वापिस आएगा।
12. लग्न से चन्द्र स्थित राशि तक गिनें जब दोनों के बीच कोई मध्यवर्ती ग्रह न हो। यात्री उतने दिनों में वापस आएगा जितना दूर लग्न से चन्द्रमा है।

13. जब कोई ग्रह 8वें भाव से, वक्री गति में हीन होकर 7वें भाव में प्रवेश करेगा तो पथिक वापिस आएगा।

उदाहरण संख्या : 1

फिरौती के लिए बच्चे का अपहरण

केतु 26°31'	चन्द्र 1°07'		
शुक्र19°58' शनि27°44'	उदाहरण : 1 अपराह्न 6:20 26 जनवरी 1996 नई दिल्ली		लग्न 18°42'
सूर्य 12°02' मंगल 20°25'			
बृ० 11°19' बुध (व) 26°21'			राहु 26°31'

लग्न 18°42'
3 2
राहु 26°31' 6 5
4
7 1
10
चन्द्र 1°07'
12
केतु 26°31'
सूर्य 12°02'
मंगल20°25'
8
9
11
बृ० 11°19'
बुध (व) 26°21'
शुक्र 19°58'
शनि 27°44'

नवांश

शुक्र	सूर्य चन्द्र		शनि
केतु	नवांश		मंगल बृहस्पति
			राहु
लग्न	बुध		

नवांश

लग्न पृष्ठोदय है जो प्रश्न के अनुकूल परिणामों के लिए ठीक नहीं है। लग्न चर राशि में है जो बताता है कि स्थिति में परिवर्तन होगा। केंद्रों और त्रिकोणों में पाप ग्रहों की प्रधानता है जो कार्य सिद्धि के लिए अनुकूल नहीं है।

लग्नेश चंद्रमा, मंगल, षष्ठेश बृहस्पति और अष्टमेश शनि द्वारा पाराशरी दृष्टियों से दृष्ट है। लग्नेश चंद्रमा, मंगल की राशि में और केतु के नक्षत्र में स्थित है जो दोनों किसी प्रकार की हिंसा को व्यक्त कर रहे हैं। पुनः केतु द्वादशेश बुध के नक्षत्र में है जो 6ठे भाव में वक्री है और षष्ठेश के

साथ स्थित है। बुध की दूसरी राशि राहु द्वारा गृहीत है। यहां निम्नलिखित चार कारणों से बुध अत्यधिक अशुभ है।

i) यह राहु और केतु के समान अंशों में है।

ii) इसकी अपनी राशि राहु द्वारा गृहीत है।

iii) यह वक्री है और षष्ठेश के साथ स्थित है जो स्वयं एक शुभ ग्रह होते हुए भी शुभ प्रभाव देने में समर्थ नहीं है।

iv) बुध अंशों में अष्टमेश शनि से अत्यंत निकट है और केवल 1°23' की दूरी पर अष्टमेश के साथ इत्थसाल योग बना रहा है।

7वें भाव में स्थित पाप ग्रह मंगल और सूर्य बताते हैं कि लापता व्यक्ति कैद में है। 10वें भाव में शुभ ग्रह कोई यात्रा नहीं बताता। यहाँ लग्नेश चंद्रमा 10वें भाव में है। क्या लापता बच्चे के लिए पहले कोई यात्रा नहीं थी अथवा उसके लिए भविष्य में कोई यात्रा नहीं है, आइए देखें।

कैद के लिए कारक शनि अष्टमेश है और 8वें भाव में मंगल और केतु के बीच पापकर्तरी योग में घिरा हुआ है।

यहाँ शनि एक शुभ ग्रह शुक्र के साथ स्थित है लेकिन यह शायद ही कोई राहत देगा क्योंकि शुक्र स्वयं राहु के नक्षत्र में है। यद्यपि शनि बृहस्पति के नक्षत्र में स्थित है, तथापि बृहस्पति षष्ठेश है और बृहस्पति की दूसरी राशि केतु द्वारा गृहीत होते हुए बृहस्पति अपनी शुभता खो चुका है।

चंद्रमा पिछली राशि में केतु से 5 अशों की दूरी पर अगली राशि के प्रारम्भ में स्थित है, इसलिए केतु (यद्यपि कोई दृष्टि नहीं है) के साथ निकटतम अंशों में है। लेकिन, जैसा कि हम राश्यंत पर ग्रह को अगले भाव से प्रभाव प्रदान करने के लिए लेते है, इसी प्रकार हम एक राशि के प्रारंभ पर स्थित ग्रह को पिछली राशि के अंतिम अंशों में प्रभाव देने के लिए भी ले सकते हैं।

लापता व्यक्ति की सकुशलता अथवा प्रसन्नता 4थे भाव से देखी जाती है। यहाँ चतुर्थेश शुक्र 8वें भाव में अष्टमेश के साथ पाप कर्तरी योग में है और कोई शुभ दृष्टि नहीं है।

लग्नेश की निकटतम ताजिक दृष्टि बृहस्पति के साथ है जो षष्ठेश होकर 10°12' की दूरी पर दीप्तांश सीमा के भीतर इत्थसाल योग बना रहा है। यह भी संघर्ष और शत्रुता बताता है।

कैद, जेल और यंत्रणा संकेतित होती है जब लग्न में पृष्ठोदय राशि पाप ग्रहों से दृष्ट हो। यहाँ पृष्ठोदय लग्न मंगल और सूर्य दोनों से दृष्ट है। पुनः लापता व्यक्ति मारा-पीटा हुआ और कैदी कहा जाता है, यदि 7वें भाव, 8वें

भाव और 9वें भाव को पाप ग्रह गृहीत करते हों। यहाँ सूर्य, मंगल शनि और केतु प्रधानतः वहाँ स्थित होकर अन्य ग्रहों को भी पीड़ित कर रहे हैं। वास्तव में ये सभी ग्रह इस कुंडली के लिए निर्णायक प्रभाव देने में सक्षम हैं।

बलहीन शुभ ग्रह 6ठे या 8वें भाव में पाप ग्रहों से पीड़ित हों और सूर्य व चन्द्रमा भी पाप ग्रहों के प्रभाव में हों तब गुमशुदा व्यक्ति की मृत्यु का योग बनता है। यहाँ तीनों शुभ ग्रह - बृहस्पति, बुध और शुक्र 6ठे और 8वें भाव में स्थित हैं। चन्द्रमा मंगल व अष्टमेश शनि से दृष्ट है और सूर्य मंगल के साथ स्थित है।

यहाँ एक अन्य शास्त्रीय सिद्धान्त पूरी तरह विद्यमान है। पापग्रहों से दृष्ट और शुभ ग्रहों के प्रभाव से रहित पृष्ठोदय लग्न तथा 6ठे भाव में पीड़ित बुध लापता व्यक्ति की मृत्यु बताता है।

मृत्यु का एक संकेत पीड़ित शनि का 8वें भाव में होना भी है। शनि किस प्रकार पीड़ित है, जबकि यह स्पष्टतः अपने भाव में स्थित है।

i) पाप कर्तरी योग में है।

ii) द्वादशेश बुध के साथ निकटतम दृष्टि में है जो 6ठे भाव में षष्ठेश के साथ वक्री है। बुध की दूसरी राशि राहु द्वारा गृहीत है, जो पीड़ा को बढ़ा रहा है।

iii) शनि, राहु और केतु के साथ निकटतम अंशों पर है, यद्यपि वहाँ कोई दृष्टि नहीं है, लेकिन ये 6ठे भाव से द्वादशेश बुध के साथ एक अत्यंत निकट नक्त योग द्वारा संबद्ध है।

iv) शनि षष्ठेश बृहस्पति के नक्षत्र में है। बृहस्पति की दूसरी राशि केतु द्वारा गृहीत है, जो पीड़ा को बढ़ा रहा है।

v) शनि शुक्र के साथ स्थित है और शुक्र राहु के नक्षत्र में है। शुक्र 1° अंश के भीतर मंगल के साथ निकटतम अंशों में है (यद्यपि दोनों में दृष्टि नहीं है) और मंगल 1°43' के भीतर लग्न को देखता है।

मृत्यु दर्शाने वाला, यंत्रणा और हिंसा का क्रूर कारक मंगल, लग्न को अत्यंत निकट अंशों से देख रहा है। यहाँ मंगल लग्नेश चंद्रमा के नक्षत्र में है।

यह पहले कहा गया है कि लग्नेश चंद्रमा और एक शुभ ग्रह 10वे भाव में स्थित होकर बताता है कि कोई यात्रा नहीं है। लापता लड़का अपने घर से दूर नही गया। यह पाया गया कि लड़के का अपहरण हुआ और उसे उसके अपने घर में ऊपरी मंजिल पर एक कर्मचारी के कमरे में बोरी में बांधकर बंदी व्यक्ति के रूप में रखा गया था।

यद्यपि इस विश्लेषण में नवांश का प्रयोग सीमित है और शास्त्रीय ग्रंथ वर्गीय कुंडलियों के प्रयोग के बारे में, सिवाय कुछ मामलों को छोड़कर, मौन भी हैं तथापि हम नंवाश पर भी दृष्टि डालते हैं। नवांश कुंडली में लग्नेश बृहस्पति 8वे भाव में द्वादशेश मंगल के साथ स्थित है और शनि और राहु के बीच पाप कर्तरी योग में है। लग्न पर शनि की दृष्टि है। शनि की अपनी एक राशि केतु द्वारा गृहीत है और दूसरी राशि 8वें भाव से मंगल और बृहस्पति से दृष्ट है। पुनः अष्टमेश चंद्रमा नीच मंगल की राशि में है जो 8वें भाव में बैठा है। मंगल न केवल द्वादशेश है बल्कि प्राकृतिक भचक्र के 8वें भाव का स्वामी भी है। 8वें भाव में मंगल और चंद्रमा के बीच राशि परिवर्तन योग है। अतः पंचमेश अष्टम भाव में और अष्टमेश पंचम भाव में होकर संतान के लिए जीवन मृत्यु का जोखिम दर्शा रहा है। चंद्रमा सूर्य के साथ है जिसकी राशि राहु द्वारा गृहीत है, और राहु शनि से दृष्ट है।

ये सभी योग स्पष्ट रूप से लापता व्यक्ति के दुर्भाग्य की ओर संकेत करते हैं। हम देख भी चुके हैं कि कैसे शनि 8वें भाव में बुरी तरह पीड़ित है और कैसे यह लग्नेश चंद्रमा के साथ अन्य ग्रहों को प्रभावित कर रहा है। यद्यपि एक सिद्धांत है कि जब सप्तमेश एक राशि के 2सरे भाग में हो तो लापता व्यक्ति घर वापसी के मार्ग पर होगा। हां, यहाँ सप्तमेश दूसरे भाग में है लेकिन अष्टमेश भी है और 8वें भाव में पीड़ित होकर स्थित है। क्या यह योग यह बताता है कि लापता लड़का घर वापस आने के मार्ग पर है? उसके शीघ्र बाद उसका मृत शरीर बरामद हो गया।

उदाहरण संख्या : 2

पिछले सात वर्षों से लापता किशोर

लग्न संधि में है जो प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है। लग्न द्विस्वभाव लेकिन स्थिर राशि के निकट है इसलिए यहाँ स्थिति यथावत है और स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा। संधि का लग्न प्रश्न की असफलता बताता है और लापता व्यक्ति की, जहाँ वह है, वहाँ से कोई वापसी नहीं है। लग्न एकदम संधि पर है और इसलिए यह पृष्ठोदय लग्न के परिणाम भी दे सकता है।

लग्न अष्टमेश शनि के अत्यंत निकट अंशों में जीवन और मृत्यु की स्थिति दिखा रहा है। प्रश्न अमावस्या के दिन पूछा गया जिस तिथि का प्रश्न के दिन क्षय है, जो एक अत्यधिक अशुभ संकेत है।

लग्नेश बुध 8वें भाव में स्थित है और पंचमेश/द्वादशेश के साथ निकटतम इत्थसाल में है। व्यक्ति ने अपने पुत्र (पंचमेश) के बारे में जानने के लिए प्रश्न पूछा था जो पिछले सात वर्षों से लापता (द्वादशेश) है। यहाँ पंचमेश शुक्र राहु/केतु

शनि 0°12' शुक्र 17°01' केतु 24°24'			लग्न 0°01'
सूर्य 5°07' मंगल 8°26'	उदाहरण : 2 अपराह्न 1:7:5 18 फरवरी 1996 नई दिल्ली		
बुध 10°0' चन्द्र 25°56'			
बृहस्पति 15°52'			राहु 24°24'
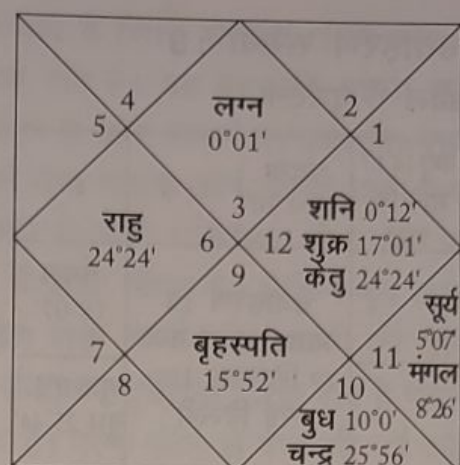
अक्ष में है और अष्टमेश शनि के साथ एक दुर्घटना दिखा रहा है जो उतनी गंभीर हो सकती है जितनी कि मृत्यु, जिसे हमें अभी पुष्ट करना है।

चंद्रमा 8वें भाव में स्थित है और राहु और केतु के निकटतम अंशों में है। यहाँ चंद्रमा षष्ठेश मंगल के नक्षत्र में है और केतु लग्नेश बुध के नक्षत्र में है जो 8वें भाव में स्थित है। यह योग मृत्यु की ओर ले जाने वाली यंत्रणा दिखा रहा है। दूसरा जीवन प्रदाता सूर्य, अष्टमेश शनि की राशि में है। सूर्य षष्ठेश मंगल के साथ निकट इत्थसाल में स्थित है, जो हिंसा और यंत्रणा के लिए उत्तरदायी ग्रह है।

लग्नेश बुध 8वें भाव में स्थित है और अभी अष्टमेश शनि के साथ इशराफ योग से निकला है। यह एक पिछली घटना दिखा रहा है जो दुर्भाग्यपूर्ण है। शनि कैद का कारक भी है। यह बहुत पुरानी भूतकाल की घटना है क्योंकि इशराफ योग भी समाप्त हो चुका है। लड़का पिछले सात वर्षों से लापता है। लापता व्यक्ति की सुरक्षित वापसी का एक योग है कि यदि चंद्रमा 8वें भाव में स्थित हो और पाप ग्रहों के प्रभाव से मुक्त शुभ ग्रह केंद्रों में हो। लेकिन यहाँ शुभ ग्रह पीड़ित हैं और इसलिए वहाँ कोई सुरक्षित वापसी नहीं है। शुक्र अष्टमेश शनि के साथ राहु/केतु अक्ष में है और बृहस्पति अष्टमेश शनि से दृष्ट है।

दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि यदि लग्नेश और/अथवा चंद्रमा 4, 6 अथवा 8वें भाव में स्थित है और बिना किसी शुभ दृष्टि के अष्टमेश के साथ इत्थसाल में है, तो लापता व्यक्ति की मृत्यु अनुमानित है। यहाँ लग्नेश बुध के साथ-साथ चंद्रमा बिना किसी शुभ दृष्टि के 8वें भाव में स्थित है और लग्नेश बुध ने अष्टमेश शनि के साथ अभी अपना इशराफ योग समाप्त किया है। क्या हम लड़के की मृत्यु का निष्कर्ष निकाल सकते हैं जो कैद में रखा गया मारा-पीटा गया और तब मार दिया गया।

उदाहरण संख्या : 3

झील में दुर्घटना

केतु 14°10' शनि (व) 9°58'	चंद्रमा 10°04'30"		
	उदाहरण : 3 प्रातः 10:42 बजे 29 सितम्बर 1996 नई दिल्ली		मंगल 18°07'
			शुक्र 0°32' बुध 25°44'
बृहस्पति 15°02'	लग्न 9°51'		सूर्य 12°31' राहु 14°10'

27-28 वर्ष का एक युवा जोड़ा छुट्टी मनाने के लिए उत्तरी भारत के एक सुरम्य पर्वतीय स्थान गया था। जब झील में वे नौका विहार कर रहे थे तो नाव उलट गई। झील से पत्नी तो बचा ली गई लेकिन उसका पति लापता था।

स्थिर लग्न, स्थिति में परिवर्तन नहीं दिखा रहा। कोई यात्रा नही, कोई गति नहीं; लापता व्यक्ति की वापसी भी नहीं। लग्न शीर्षोदय भी है जो लाभदायक है। कैसे? हमें परीक्षण करना है। लग्न शनि के निकटतम अंशों में स्थित है जो जलीय राशि मीन में पीड़ित है। लग्नेश मंगल दूसरी पीड़ित जलीय राशि कर्क में नीच होकर स्थित है। लग्नेश का राशि अधिपति चंद्रमा, मंगल की राशि और केतु के नक्षत्र में 6ठे भाव में स्थित है। ये सभी जल में दुर्घटना बताते हैं जो न केवल त्रासद बल्कि घातक भी हो सकती है। लग्न शनि के नक्षत्र में है और शनि की तरह समान अंशों में भी है। पुनः शनि राहु/केतु के अक्ष में है और सूर्य द्वारा दृष्ट होकर अत्यधिक पीड़ित है।

चंद्रमा नीच मंगल की राशि में है, जो चंद्रमा की राशि है। दोनों में परिवर्तन योग है। चंद्रमा अत्यधिक पीड़ित केतु के नक्षत्र में है।

10वें भाव में दो शुभ ग्रह शुक्र और बुध स्थित हैं जो 4थे भाव को देख रहे हैं और लापता व्यक्ति की वापसी नहीं बताते। नीच लग्नेश मंगल 9वें भाव में स्थित है जिसका स्वामी चंद्रमा 6ठे भाव में स्थित है। लग्नेश मंगल न केवल किसी शुभ प्रभाव से रहित है बल्कि अष्टमेश बुध के नक्षत्र में स्थित होकर जीवन और मृत्यु की स्थिति दिखा रहा है जिसमें व्यक्ति के लिए बहुत खतरा है।

प्रत्यक्षतः बलवान ग्रह बृहस्पति 6ठे भाव में स्थित चन्द्रमा, 10वे भाव में स्थित बुध और शुक्र पर भी दृष्टि डाल रहा है। यह बृहस्पति इतना शुभ नहीं है क्योंकि राहु/केतु से 1° के भीतर है और सप्तमेश/द्वादशेश शुक्र के नक्षत्र में स्थित है। बृहस्पति शुक्र को देख रहा है और उसके द्वारा कुछ ईश्वरीय रक्षा प्राप्त है। सप्तमेश (पत्नी) ने अभी 10वें भाव में 0°32' पर अष्टमेश बुध के साथ पाप कर्तरी योग में प्रवेश किया है। लेकिन बुध अंशों में बहुत दूर है। परिणामस्वरूप सप्तमेश शुक्र से संकेतित पत्नी की मृत्यु नहीं होगी। यद्यपि शुक्र, केतु के नक्षत्र में होकर दुर्घटना दिखा रहा है परन्तु बृहस्पति से दृष्ट होकर बचाव भी दे रहा है। पत्नी झील से बचा ली गई और मृत्यु के अत्यंत निकट होते हुए भी बाल-बाल बच गई। शीर्षोदय लग्न ने उनमें से कम से कम एक को बचा लिया। पति अभी तक लापता है।

सप्तमेश की तुलना में लग्नेश मंगल पर कोई ईश्वरीय रक्षा नहीं है। मंगल पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है। इसका राशीश चंद्रमा, यद्यपि दुर्घटना के कारक मंगल की राशि में बृहस्पति से दृष्ट है परन्तु केतु के नक्षत्र में होकर मंगल की भांति समान रूप से अशुभ है। ये सभी योग लापता व्यक्ति की मृत्यु की ओर संकेत करते हैं।

अगला विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या उसका शरीर मिल पाएगा अथवा नहीं। इसे सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। शरीर न केवल लग्न और लग्नेश द्वारा सूचित किया जाता है बल्कि देह के कारक सूर्य द्वारा भी संकेतित होता है। सूर्य, अष्टमेश बुध की राशि में स्थित होकर राहु/केतु के अक्ष में है और वक्री शनि द्वारा दृष्ट होकर अत्यधिक पीड़ित है। सूर्य पीड़ित वक्री शनि के साथ निकटतम इशराफ योग में है और इसीलिए शरीर की स्थिति पिछले निष्कर्ष की भाँति पूर्वानुमानित है। सूर्य के साथ-साथ राहु, दोनों, संयुक्त रूप से चंद्रमा के नक्षत्र में स्थित हैं जो पुनः मंगल और केतु की भूमिका द्वारा पीड़ित हैं। शरीर की अप्राप्ति के मामलों में, जहाँ शरीर क्रूर स्थलीय जीवों द्वारा खा लिया गया है, मंगल की भूमिका स्पष्ट रूप से उभरती है।

यहां सूर्य, राहु, शनि, चंद्रमा, मंगल और केतु की भूमिका है। चंद्रमा के जलीय ग्रह होने पर ये सभी ग्रह मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। चंद्रमा जलीय जीवों को भी बताता है। सूर्य और राहु चंद्रमा के नक्षत्र में हैं, मंगल चंद्रमा की राशि में है और चंद्रमा केतु के नक्षत्र में है जो शनि के साथ स्थित है और यह सब जलीय राशियों की बहुमत में हैं। क्या शरीर अपक्षय की प्रक्रिया में हो सकता है (राहु, केतु और शनि) अथवा क्या जलीय जीवों ने शरीर को खा लिया है (मंगल और चंद्रमा), यह कहना मुश्किल है। यद्यपि हमें याद

रखना है कि सूर्य बृहस्पति के साथ इत्थसाल में है। सूर्य का नक्षत्रेश चंद्रमा बृहस्पति से दृष्ट भी है जो शरीर की प्राप्ति दिखा रहा है। लेकिन सूर्य के साथ राहु/केतु की निकटतम अंशों में युति इसके प्राप्त होने से पहले शरीर का संपूर्ण क्षय भी बताती है। दुर्घटना लगभग 13 दिन पहले घटित हुई थी और इस विश्लेषण को लिखने की तिथि तक शरीर पुनः प्राप्त नहीं हुआ था।

उदाहरण संख्या : 4

लापता लड़का

शनि 12°39' केतु 20°54'		बुध 7°35' मंगल 7°57' चन्द्र 19°21' शुक्र (व) 23°32'	लग्न 26°36' सूर्य 0°26'30"
	उदाहरण : 4 प्रातः 7:23 बजे 15 जून 1996 नई दिल्ली		
बृहस्पति (व) 21°20'			राहु 20°54'

लग्न शीर्षोदय लेकिन द्विस्वभाव है, जो न राहत दे रहा है और न शीघ्र समाधान। लग्न बृहस्पति के नक्षत्र में है और बृहस्पति द्वारा पूर्ण पाराशरी दृष्टि से दृष्ट भी है। मूक प्रश्न में जब मंद गति बृहस्पति अथवा शनि लग्न को देखता है तो प्रश्न लापता व्यक्ति से संबंधित होता हैं।

लग्नेश बुध 12वें भाव में वक्री द्वादशेश/पंचमेश शुक्र, द्वितीयेश चंद्रमा और षष्ठेश/ एकादशेश मंगल के साथ स्थित तथा अष्टमेश शनि से दृष्ट है। 12वें भाव में लग्नेश बुध का षष्ठेश मंगल के साथ पूर्ण इत्थसाल हिंसा और विवाद बताता है। 12वें भाव में द्वितीयेश चंद्रमा बताता है कि बहुत अधिक धन खर्च किया गया। 12वें भाव में पीड़ित लग्नेश, अष्टमेश शनि द्वारा दृष्ट है जो केतु के साथ स्थित होकर पुनः हिंसक रूप और आक्रामक गुणों को दर्शाता है।

केंद्रों और त्रिकोणों में पापग्रहों की प्रधानता है। एक मात्र शुभ ग्रह जो लग्न को देखता है वह बृहस्पति है जो इस कुंडली में रहस्यात्मक भूमिका अदा कर रहा है। लेकिन पुनः यह बृहस्पति 12वें भाव में स्थित, द्वादशेश वक्री शुक्र के नक्षत्र में स्थित है और अत्यंत निकट अंशों में एवं शत्रु दृष्टि में राहु और केतु के साथ है। बृहस्पति षष्ठेश मंगल और अष्टमेश शनि द्वारा

दृष्ट होकर पीड़ित है। बृहस्पति की दूसरी राशि मीन, राहु/केतु के अक्ष में अष्टमेश शनि की स्थिति द्वारा अत्यधिक पीड़ित है। अतः लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि और बृहस्पति के नक्षत्र में लग्न का होना भी पर्याप्त सहायता नहीं कर रहा।

एक कॉलेज टूर पश्चिमी तट पर स्थित कोचीन गया था। 11 जनवरी 1995 को समुद्र तट पर पिकनिक मनाते हुए तीन लड़के समुद्र में डूब गये। दो मृत शरीर प्राप्त हो गए और तीसरा शरीर लापता था। यह संदेश लापता लड़के के मां-बाप को मिला। इस दुर्घटना का समाचार मिलने पर वे कोचीन दौड़े और तीन दिनों की वेदना और विलाप, पूछताछ करने और पूर्णतः निरुत्साहित होने के बाद उन्हें समुद्र से प्राप्त एक अपरिचित शरीर दिखाया गया। चेहरा पहचानने योग्य नहीं था और शोक व सदमें में, उन्होंने शरीर का अंतिम संस्कार कर दिया। अब लगभग एक वर्ष पांच महीने बाद, जिसके दौरान वे असंख्य मंदिरों, पीरों, ज्योतिषियों के पास गये और अधिकाधिक समय तथा धन का व्यय किया, अपने मन में संदेह रखे वे मेरे पास आए कि क्या शरीर उनके बेटे का था, जिसका उन्होंने दाह-संस्कार कर दिया था और जैसा कि मैं उनके मौन अश्रुओं के पीछे देख पाया, एक आशा की किरण विद्यमान थी कि उनका बेटा अभी जीवित है और एक दिन घर अवश्य लौट आएगा। संतान का कारक पंचमेश, कार्येश शुक्र जो द्वादशेश भी है, द्वादश भाव में लग्नेश के साथ है और वक्री है। 6, 8, 12वें भाव के स्वामी यदि वक्री और पीड़ित भी हों, जैसा कि इस मामले में है, तो अत्यंत अशुभ होते हैं। शुक्र, राहु और केतु के साथ निकट अंशों में है। इशराफ की यह स्थिति एक पिछली घटना दिखा रही है। लग्नेश बुध, षष्ठेश मंगल के साथ पूर्ण इत्थसाल में है और दोनों अत्यधिक पीड़ित अष्टमेश शनि द्वारा दृष्ट होकर बता रहे हैं कि उसके साथ मार-पीट और हिंसा हुई और तब उसे समुद्र में फेंका गया।

अतः इस दुर्भाग्यशाली लड़के की मृत्यु हिंसा द्वारा घटित प्रतीत होती है, न कि डूबने के द्वारा। सूर्य, जिसने अभी लग्न में 0°26' में प्रवेश किया है, मंगल के नक्षत्र में स्थित है। अतः मंगल न केवल लग्नेश को बल्कि लग्न को भी प्रभावित कर रहा है। मैंने अपने अध्ययन से उसकी मां को जब ये तथ्य बताए तो उसने उद्घाटित किया कि उसके पुत्र के सहपाठी इस संपूर्ण घटना के बारे में मुंह बंद किए हुए हैं और उनके समुद्र की सैर पर जाने से पूर्व स्थानीय कॉलिज के कुछ लड़कों से झगड़ा होने की अवश्य बात करते हैं। तृतीयेश सूर्य जिसने अभी लग्न में प्रवेश किया है, मंगल के नक्षत्र में स्थित होकर स्थानीय लड़कों से झगड़ा और हिंसा दिखा रहा है,

जैसा कि तृतीयेश द्वारा सूचित है। 3सरा भाव अन्य चीजों के बीच स्थानीय निवासियों को भी संकेतित करता है। मंगल भी तृतीयेश सूर्य के नक्षत्र में है। मंगल षष्ठेश और एकादशेश है। जब भी 11वें भाव का स्वामी किसी योग से सम्बद्ध हो या कार्येश 11वें भाव में हो तो बहुलता या बहुसंख्या दर्शाता है।

एकादशेश मंगल द्वारा दिखाया जाने वाला विवाद अथवा झगड़ा बताता है कि एक से अधिक व्यक्ति इस झगड़े में शामिल थे। लड़का समुद्र तट पर लिए गए समूह चित्रों में प्रत्यक्षतः नदारद था जबकि अन्य दोनों लड़के, जो डूब गए थे, चित्रों में शामिल थे।

इस सब रहस्यमयी घटनाओं में पुलिस की भूमिका क्या थी मैंने कुंडली के संकेतों को पुष्ट करने के लिए जाँच पड़ताल की। अष्टमेश शनि 10वें भाव में केतु के साथ है। 10वां भाव अधिकारी वर्ग अथवा पुलिस बताता है और दशमेश बृहस्पति केतु के साथ निकट अंशों में होकर अपराधियों को बचाने में पुलिस की सांठ-गांठ दिखा रहा है। मृत शरीर के दाह-संस्कार के दो दिनों के भीतर और उनके मानसिक संतुलन के संभलने से पहले, पुलिस ने उन्हें कोचीन छोड़ने पर बल दिया। भावनात्मक रूप से उन्हें विश्वास दिलाते हुए कि एक दुर्भाग्यपूर्वक घटना में और अधिक जांच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं है।

9

चोरी और लापता वस्तुओं की पुनः प्राप्ति

प्रश्न कुंडली के प्रमुख क्षेत्रों में से एक क्षेत्र चोरी, लापता वस्तु, पुनः प्राप्ति की संभावना, चोर की पहचान आदि से संबंधित प्रश्नों का है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे जन्मकुंडली से बिल्कुल शुद्ध रूप से फलित नहीं किया जा सकता और इसीलिए इन जैसे सवालों में प्रश्न अंतिम साधन होता है। चोरी के मामले में चिंताओं के तार्किक क्रम की व्याख्या नीचे विस्तार से की गई है।

प्रश्न का विषय या प्रारूप

प्रश्न की विषयवस्तु मूक प्रश्न के अध्याय में वर्णित सिद्धांतों से देखी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, विशिष्ट सिद्धांत निम्नलिखित हैं-

यदि लग्नेश अथवा सप्तमेश 3, 6, 8 अथवा 12वें भावों में स्थित है तो प्रश्न किसी खोई हुई वस्तु से संबंधित है। पुनः यदि प्रश्न कुंडली में शनि 7, 8 अथवा 12वें भावों में स्थित है तो इसे शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार एक चोर प्रश्न कहा जाता है।

भट्टोत्पल कृत 'प्रश्न ज्ञान' के अनुसार भगवान शिव ने कहा कि यदि मंगल अथवा शनि 3, 6, 8 अथवा 12वें भावों में हो, जहाँ लग्न, वृष, कर्क, सिंह अथवा तुला हो तो प्रश्न वस्तुओं की चोरी से संबंधित होता है। यह योग बृहस्पति की दृष्टि अथवा युति से रहित होना चाहिए।

प्रश्न की इस विषयवस्तु को सूचित करने वाले कुछ अन्य सिद्धांत इस प्रकार हैं :

1. 6, 8, 12वें भावों के स्वामी केंद्र अथवा अपने भाव में हों।
2. मंगल अथवा शनि 7वें भाव में हों अथवा सप्तमेश होकर मंगल अथवा शनि 3, 6, 8 अथवा 12वें भाव में स्थित हो।
3. द्वितीयेश और द्वादशेश 6ठे भाव में हो अथवा इन तीन ग्रहों का योग किसी अन्य भाव में बन रहा हो।

4. सप्तमेश 12वें भाव में अथवा द्वादशेश 7वें भाव अथवा ये दोनों ग्रह (सप्तमेश और द्वादशेश) केंद्रों में स्थित हों।
5. सप्तमेश 6, 8 अथवा 12वें भाव में हो।
6. कर्क, वृश्चिक अथवा मीन के नवांश में ग्रह केंद्रों अथवा 6ठे भाव में हों और 10वें भाव में क्रूर ग्रह हों।
7. ऊपरलिखित योगों में अधिकतर 6, 8, 12वें भाव अथवा स्वामियों का 7वें भाव या स्वामी से संबंध है। यह योग निश्चित रूप से हानि दर्शाते हैं। अतः ऐसे प्रश्नों में जहां चोरी हुई वस्तु की प्राप्ति की सम्भावनाएं कम हों, ऊपरलिखित योग उपयुक्त हैं लेकिन जहां यह सम्भावनाएं अधिक हों यह योग उपयुक्त नहीं हैं। ऐसी स्थितियों में मूक प्रश्न के सिद्धांतों से प्रश्न का विषय या प्रारूप जानना अधिक उचित है।

चोरी हुई वस्तु - धातु, मूल अथवा जीव

खोई हुई वस्तु की प्रकृति जानने के लिए कि वह धातु, मूल अथवा जीव है, मूक प्रश्न पर लिखे गए अध्याय को देखें। यदि धातु, मूल एवं जीव के विश्लेषण में दो तरह का सम्मिश्रण हो तो परिणाम क्या होगा। यदि लग्न, लग्नेश, नवांश लग्न, नक्षत्र और लग्न में स्थित ग्रह धातु, मूल अथवा जीव में विभिन्न परिणाम दें तो निम्नलिखित का अनुसरण करें।

लग्न संकेत करता है	*अन्य संकेत करते हैं*	*टिप्पणी - चोरी का समान*
धातु	मूल	पृथ्वी की सतह के नीचे दबाई गई वस्तु अथवा भूमिगत खज़ाना
धातु	जीव	कोई धातु की बनी मूर्ति
मूल	धातु	कपड़े, लकड़ी, इमारती लकड़ी, प्राकृतिक वानस्पतिक स्त्रोतों से निर्मित संसाधित उत्पादन
मूल	जीव	मवेशी, पशु, लकड़ी की बनी मूर्ति
जीव	धातु	जीवित प्राणियों के अवशेषों से बनी वस्तुएं, जैसे हाथी दांत, हड्डियाँ आदि से बनी वस्तुएँ
जीव	मूल	लकड़ी, कपड़े पशुओं की खाल और चमड़े आदि के योग से निर्मित वस्तुएं

इसी प्रकार धातु के साथ विभिन्न ग्रहों का योग निम्नलिखित प्रकृति की वस्तुएँ सूचित करता है। यहाँ हम देखते हैं कि या तो लग्न में ग्रह स्थित

हो, यदि कोई ग्रह वहाँ स्थित न हो तब एक बलवान ग्रह, लग्न को देखता हो।

प्रश्न संबंधित है	*लग्न को युति अथवा दृष्टि से प्रभावित करने वाला ग्रह*	*टिप्पणी*
धातु	बली शुक्र अथवा चंद्रमा	धातु अथवा चांदी आदि
धातु	बली बुध	स्वर्ण
धातु	बृहस्पति	बहुमूल्य रत्नों से जड़ित स्वर्णाभूषण
धातु	सूर्य	मोती अथवा मोती के आभूषण
धातु	मंगल	लाल रत्न, मूंगा, तांबा, सीसा
धातु	शनि	लोहा
धातु	राहु/केतु	हाथी दाँत, हड्डियाँ

क्या वस्तु चोरी हुई है, गलत स्थान पर रखी है या खो गई है

प्रारंभ में यह पुष्ट करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि क्या वास्तव में वस्तु चोरी हुई है अथवा नहीं? यह हो सकता है कि एक वस्तु न मिल रही हो और केवल किसी गलत स्थान पर रखी हो। निम्नलिखित योग बताते हैं कि वस्तु केवल दूसरे स्थान पर रखी है :

1. प्रश्न कुंडली में, यदि एक ग्रह अपनी राशि अथवा अपने नवांश में स्थित होकर लग्न को देखता है तब वस्तु चुराई नहीं गई बल्कि केवल दूसरे स्थान पर है।
2. यदि चतुर्थेश लग्न में है अथवा चतुर्थेश से दृष्ट चंद्रमा लग्न में है तो वस्तु प्रत्याशित स्थान पर मिल जाएगी।
3. i) यदि चंद्रमा लग्न में है और 7वें भाव से मंगल द्वारा दृष्ट है।

   ii) यदि चंद्रमा लग्न में, शनि और मंगल 11वें भाव में हैं तब चोरी नहीं हुई है और वस्तु कहीं गिर गई है, जो पुनः प्राप्त नहीं हो सकेगी।
4. यदि द्वितीयेश और चोर ग्रह (अगले पृष्ठ पर व्याख्यायित है) स्थिति, दृष्टि, अथवा युति द्वारा परस्पर संबंधित हैं अथवा सप्तमेश चोर ग्रहों में एक होकर 11वें भाव में है तब भी वस्तु केवल दूसरी जगह पर रखी हुई है।
5. जब लग्नेश और सप्तमेश के बीच परिवर्तन है अथवा दोनों के बीच इत्थसाल है तो खोयी हुई वस्तु प्रत्याशित स्थान पर मिल जाएगी।

6. चंद्रमा पृष्ठोदय राशियों (1, 2, 4, 9, 10) में स्थित हो और शनि से दृष्ट हो तो खोई हुई वस्तु उच्च स्थान पर पड़ी है जबकि यदि यह मंगल द्वारा दृष्ट हो तो वह ऐसे स्थान पर पड़ी है जो नेत्र-दृष्टि के समतल है।

चोर ग्रह

शास्त्रीय ग्रंथों ने सप्तमेश और केंद्रों में स्थित ग्रहों और 11वें भाव में स्थित बलवान ग्रह को चोर ग्रह बताया है। विशेषतः जब 10वां भाव किसी क्रूर ग्रह द्वारा गृहीत हो। अतः चोर ग्रह सप्तमेश, केंद्रों में स्थित ग्रहों के बीच बलवान ग्रह और 11वें भाव में स्थित बलवान ग्रह है। विभिन्न योगों में सप्तमेश को चोर ग्रह के रूप में विशेष महत्त्व दिया गया है, भले ही, ये केंद्र में स्थित न हो। ये ग्रह चोरी में शामिल व्यक्तियों की संख्या भी सूचित करते हैं। केंद्र में स्थित इन ग्रहों में से बलवान ग्रह चोर का प्रतिनिधित्व करता है। यदि सप्तमेश 1, 5, 6, 7, 9 और 10वीं राशियों में स्थित है तब केवल एक ही व्यक्ति चोरी के लिए उत्तरदायी है। यदि सप्तमेश 4, 8 और 12वीं राशियों में स्थित है तब एक से अधिक व्यक्ति चोरी में शामिल हैं। मैंने प्रायः ऐसा पाया है कि यदि सप्तमेश 2, 3 या 11वीं राशि में हो तो अपराध में कोई चोर का सहयोगी अवश्य होता है हालांकि वह स्वयं चोर नहीं होता।

चोरी का समय

चोरी का समय उदित लग्न से देखना चाहिए। यदि रात्रिबली राशि उदित हो तब चोरी रात में हुई और यदि दिवाबली राशि उदित हो तब चोरी दिन के समय हुई। 1, 2, 3, 4, 9 और 10 रात्रिचर अथवा रात्रिबली राशियाँ हैं। जबकि 5, 6, 7, 8 और 11 दिनचर अथवा दिनबली राशियां हैं। सारावली के अनुसार मीन दिन के साथ-साथ रात्रिबली अथवा सर्वबली है जो यह सूचित करती है कि चोरी सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय की गई है जिसे दिन और रात का संधि काल कहा जाता है।

चोरी हुई वस्तु की प्रकृति

लग्न में स्थित ग्रह को देखें और यदि वहां कोई ग्रह स्थित नहीं है तब लग्न को देख रहे बलवान ग्रह को देखें। वस्तु की प्रकृति ग्रह की प्रकृति से संबंधित है जो लग्न को प्रभावित करता है, जैसा कि पिछले पृष्ठों में वर्णित किया गया है।

चोरी हुई वस्तु का आकार

वस्तु का आकार उदित लग्न से निर्धारित किया जाता है जो लग्न की राशियों के लघु राशि मान, मध्यम राशिमान अथवा दीर्घ राशिमान पर आधारित है। उदित राशि की अवधि को राशिमान कहा जाता है। ये अक्षांशों के साथ-साथ उत्तर अथवा दक्षिणी गोलार्द्ध पर निर्भर करते हैं। किस स्थान पर प्रश्न किया गया है राशिमान इस तथ्य पर आधारित होगा। इसे समझने के लिए पाठक किसी 'खगोल एवं गणित ज्योतिष' की पुस्तक को देखें।

भूमध्य रेखा और नई दिल्ली के अक्षांशों के लिए उदित लघु, मध्यम अथवा दीर्घ राशिमान निम्नलिखित हैं।

वस्तु के आकार का संकेत करने वाली अवधि	*भूमध्य रेखा पर लग्न में राशियां*	*नई दिल्ली पर लग्न में राशियाँ*
लधु राशिमान	1, 6, 7, 12	1, 2, 11, 12
मध्यम राशिमान	2, 5, 8, 11	3, 10
दीर्घ राशिमान	3, 4, 9, 10	4, 5, 6, 7, 8, 9

चोरी हुई वस्तु का रूप

रंग उस ग्रह द्वारा भी सूचित होता है जो प्रश्न लग्न पर अत्यधिक प्रभाव रखता है। इसके संबंध में मूक प्रश्न पर लिखे अध्याय में व्याख्या की गई है।

चोरी हुई वस्तु का रंग

उदित लग्न में भचक्र की विभिन्न राशियों के विभिन्न रंगों के आरोपण से चोरी हुई वस्तु का रंग देखा जा सकता है :

राशि	*रंग*	*राशि*	*रंग*
मेष	लाल	तुला	काला
वृष	सफेद	वृश्चिक	काला
मिथुन	हरा	धनु	पीला
कर्क	गुलाबी	मकर	मिश्रित चितकबरा
सिहं	हल्का सफेद अथवा धूमिल	कुंभ	गहरा भूरा
कन्या	चितकबरा	मीन	हल्का नीला

चोरी की विधि

चोर ने कैसे घर के अंदर प्रवेश किया, यह इन सिद्धांतों में व्याख्यायित है। मुख्यतया सप्तमेश चोर ग्रह है जो चोरी की विधि बताता है।

चोर ग्रह	प्रवेश की विधि	कारण
सूर्य अथवा मंगल	छत के पार, झरोखे से, दीवार के ऊपर छलांग लगाकर	ऊर्ध्वमुख
बुध अथवा शुक्र	जाली को, दीवारों को तोड़कर सलाखों आदि को काटकर	तिर्यकमुख
चंद्रमा अथवा बृहस्पति	घर के मुख्य द्वार से	अग्रमुख
राहु अथवा शनि	बिलों, भूमिगत सुरंगों के माध्यम से	अधोमुख

उपरोक्त सिद्धांतों के रूपांतरण इस प्रकार हैं :

1. 7वें भाव में मंगल स्थित हो और चंद्रमा से दृष्ट हो तो चोर ने दीवार, जंजीर अथवा छत को तोड़कर प्रवेश किया।

   यह सिद्धान्त उस सिद्धान्त के अनुरूप है जिसमें वस्तु चोरी नहीं हुई बल्कि कहीं रख दी गई है और मिल नहीं रही। इन दोनों सिद्धान्तों में भेद किस प्रकार जानें? आइए इसे और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखें। यदि मंगल सातवें भाव में हो तो चोर ग्रह होते हुए उर्ध्वमुख है। इसी तरह से चन्द्रमा लग्न केन्द्र में चोर ग्रह होते हुए अग्रमुख है। इन दोनों का मेल ऊपरलिखित योग में त्रियंकमुख के फल दे रहा है क्योंकि चोर के प्रवेश की विधि दीवार, जंजीर अथवा छत तोड़कर है। इस तरह के परिणाम देने के लिए, मेरे विचार में, लग्न त्रियंकमुख होना चाहिए जब सूर्य 4, 8, या 12वें भाव में हों। अतः लग्न में चन्द्रमा तथा 7वें भाव में मंगल हो जब सूर्य 4, 8, 12वें भाव में हों तो ऊपर लिखित योग लागू होता है। अन्यथा लग्न में चन्द्रमा तथा 7वें भाव में मंगल यह दर्शाता है कि वस्तु चोरी नहीं हुई केवल अन्यत्र रख दी गई है और मिल नहीं रही है।

2. क्रूर सप्तमेश चोरग्रह होते हुए जब लग्नेश द्वारा दृष्ट हो, तब अपराध खुले आम किया गया। ऐसे ही परिणाम प्राप्त होते हैं जब प्रश्न कुडंली में लग्नेश सूर्य से 8वें भाव में स्थित हो।

सप्तमेश सप्तम भाव में स्थित ग्रह तथा सप्तमेश पर दृष्टि द्वारा अन्य संकेत इस प्रकार हैं :

सप्तमेश को देखने वाले ग्रह	चोरी की विधि
बृहस्पति	चोरी खुले आम की गई
मंगल	वस्तु भूमिगत गर्त्त में छिपाई गई
शुक्र	दूसरी चाबी प्रयोग की गई
बुध	अतिथि ने अपराध किया है

चोर का रूपरंग

यह प्रश्न के महत्त्वपूर्ण पक्षों में से एक है। चोर के रूप-रंग से उसकी पहचान द्वारा चोरी हुई वस्तु की पुनःप्राप्ति के अवसरों में वृद्धि हो जाती है। चोर के रूप रंग को निश्चित करने के लिए विभिन्न नियमों को उपयोग में लाया जाता है, जो निम्नलिखित हैं :

द्रेष्काण पर आधारित

चोर का रूप रंग लग्न में उदित द्रेष्काण द्वारा सूचित किया जाता है। वराहमिहिर ने अपनी "बृहत जातक" में न केवल रूप रंग को व्याख्यायित किया है बल्कि चोर के बारे में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण संकेत दिए हैं जिनकी सहायता से उसकी पहचान की जा सकती है। ये शामिल करते हैं कि चोर पुरुष है अथवा स्त्री, कपड़े अथवा आभूषण, जो उसने पहने हुए हैं, उसका सामान्य रूप रंग और अन्य विविध पहचान के संकेत व्यक्ति की अपने व्यवसाय में निपुणता अथवा कुशलता, चोरी के दौरान जो कार्य कर रहा है या चोरी के बाद जो कार्य करने जा रहा है, इत्यादि। इन प्रचलित संकेतों द्वारा चोर की पहचान की जा सकती है। ये द्रेष्काण स्वरूप पर लिखे गए अलग अध्याय में व्याख्यायित किए गए हैं। उदाहरणार्थ, लग्न में उदित मिथुन का दूसरा द्रेष्काण बताता है कि व्यक्ति ने एक कवच पहना हुआ है और एक धनुष तथा बाण ले जा रहा है। इस युग में इस प्रकार के व्यक्ति का पता लगाना कठिन होगा। अतः 36 द्रेष्कोणों के सभी प्रकार उनके मूल प्राचीन रूप में व्याख्यायित किए गए हैं और जहाँ संभव है, उनका वर्तमान संदर्भ जोड़ा गया है।

ऐसा माना जाता है कि यदि लग्न बलवान है तब द्रेष्काण स्वरूप उचित परिणाम देता है अन्यथा 7वें भाव में स्थित ग्रह या केंद्रों में स्थित बलवान ग्रह अपने कारकत्वों के अनुरूप चोर का रंग-रूप व्यक्त करता है।

चोर की जाति

चोर की जाति लग्नेश से निश्चित की जाती है। यदि यह बृहस्पति अथवा शुक्र है तो चोर एक ब्राह्मण है। यदि मंगल अथवा सूर्य है तो वह एक क्षत्रिय है। यदि चंद्रमा है तब वैश्य है। यदि बुध है तब शूद्र है और यदि शनि है तब वह एक विजातीय है।

चोर का लिंग

सप्तमेश चोर को सूचित करता है। चोर का लिंग सप्तमेश से, 7वें भाव में स्थित ग्रह से, राशि/भाव में सप्तमेश के स्थापन से और सप्तमेश को देखने वाले ग्रह से निश्चित किया जाता है। पुरुष अथवा स्त्री प्रभाव की प्रधानता चोर

के लिंग की ओर संकेत करती है। उदाहरणार्थ, यदि सप्तमेश एक स्त्री ग्रह है, स्त्री राशि में स्थित है और पुनः स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट है तब हम निश्चित रूप से परिणाम निकाल सकते हैं कि चोर एक स्त्री है। इस विश्लेषण में, जैसा कि अन्यत्र कहा गया है कि नपुंसक ग्रहों के सम्मिलन को तटस्थ की भाँति मानना चाहिए। जब चोरी में एक व्यक्ति से अधिक लोग शामिल हों और नपुसंक ग्रह 7वें भाव और सप्तमेश के साथ शामिल हों तब चोरी में पुरुष और स्त्री दोनों शामिल होते हैं।

पुरुष ग्रह	:	सूर्य, मंगल, बृहस्पति, केतु
स्त्री ग्रह	:	चंद्रमा, शुक्र, राहु
नपुंसक अथवा तटस्थ ग्रह	:	बुध, शनि

षट्पंचासिका के अनुसार लिंग का पृथक्करण उदित नवांश से मानना चाहिए। यदि यह एक विषम राशि है तब एक पुरूष और एक सम राशि है तब एक स्त्री चोर है।

चोरी हुई वस्तु कहाँ पर है

इस प्रश्न का तीन प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है। दिशा, दूरी और संभावित स्थान अथवा पास-पड़ोस की स्थिति से यह जाना जा सकता है कि चोरी हुई वस्तु कहाँ रखी गई है। हम इनका एक के बाद एक विश्लेषण करते हैं।

वस्तु की दिशा

केंद्रों में स्थित ग्रहों को देखें। इनमें से बलवान ग्रह दिशा संकेतित करता है जिस दिशा में चुराई वस्तु गई है। ग्रहों द्वारा संकेतित दिशाएं निम्न प्रकार से हैं।
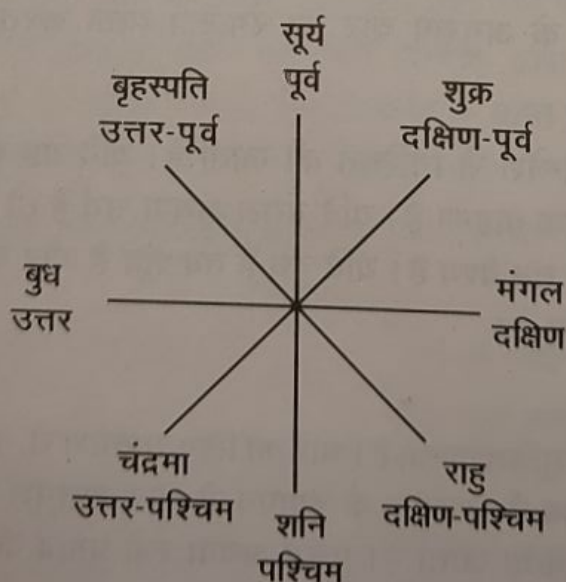
यदि केंद्रों में कोई ग्रह नही है तब उदित लग्न की राशि से दिशा का पता लगा सकते हैं जो निम्नलिखित हैं :

मेष, सिंह, धनु	पूर्व
वृष, कन्या, मकर	दक्षिण
मिथुन, तुला, कुंभ	पश्चिम
कर्क, वृश्चिक, मीन	उत्तर

चोरी हुई वस्तु की दूरी

चोरी हुई संपत्ति की दूरी उदित लग्न अथवा आरूढ़ लग्न से देखी जाती है। चर राशि में यह बहुत दूर गयी है, स्थिर राशि में यह दूर नहीं गई लेकिन पास-पड़ोस में है और एक उदित द्विस्वभाव राशि में वस्तु की दूरी इन दोनों के बीच अन्यत्र है।

प्राचीन समय में, दूरी को कोस में मापा जाता था। साधारणतः एक कोस दो मील के बराबर होता था। चार कोस एक योजन के बराबर था, जो लगभग आठ मील के बराबर अथवा 13 किलोमीटर के बराबर है। लग्न 5 नवांशों तक है तब चोरी हुई वस्तु केवल उसी स्थान पर 13 किलोमीटर अथवा एक योजन के भीतर है। यदि उदित राशि 5 नवांशों से अधिक है तब चोरी हुई वस्तु पांच नवांश से आगे प्रत्येक नवांश के लिए एक योजन अथवा 13 किलोमीटर दूर है।

चोरी हुई वस्तु कहां पर रखी है

यह उदित राशियों के साथ-साथ लग्न में स्थित अथवा दृष्टि डालने वाले ग्रहों द्वारा संकेतित होता है। विभिन्न राशियों और ग्रहों का निवास-स्थान चोरी हुई वस्तु का स्थान संकेतित करते हैं। इसे प्रारंभिक अध्याय 'ज्योतिष से परिचय' में दिया गया है। यहाँ उसकी पुनरावृत्ति अपेक्षित है।

1. उदय लग्न

स्थान, जहाँ चोरी हुई वस्तु रखी गई है, उदय लग्न अथवा आरूढ़ से प्राप्त कर सकते हैं, जैसा कि मामले में संभव है। भचक्र की विभिन्न राशियाँ निम्नलिखित स्थानों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मेष : घास के मैदान, चारागाह, भेड़, बकरी आदि से बसा हुआ एक जंगल अथवा घास का मैदान।

वृष : बैल और मवेशी के भ्रमण के क्षेत्र, साथ ही चरने के लिए घास के मैदान।

मिथुन : एकाकी स्थान, शयन कक्ष, ग्राम।

कर्क : तालाब, एक दरार, जहाँ केकड़े रहते हैं।
सिहं : पहाड़ियों, गुफाओं और वनों में।
कन्या : सुंदर वनस्पति के साथ सिंचित भूमि।
तुला : बाज़ार, दुकानों, कस्बा।
वृश्चिक : श्मशान घाट, गुफा, बाँबी के साथ खोखला मैदान।
धनु : देश की राजधानी, राजा का महल अथवा दरबार, युद्व क्षेत्र, हलचल का स्थान।
मकर : नदी तट, वन, घुमंतु जनजातियों के अस्थायी घर।
कुंभ : रसोईघर, खाना बनाने का स्थान, कुम्हार का घर अथवा कार्य स्थान।
मीन : जल के निकट के स्थान, जैसे महासागर, झील। ब्राह्मण, अकेले व्यक्ति का घर, मंदिर, पूजा स्थान, तीर्थ यात्रा का केंद्र।

उपरोक्त कारकत्वों को ध्यानपूर्वक देखने से पाठक को यह अनुभव होता है कि ये प्राचीन समय में संभावित थे। इन राशियों में से अधिकांश राशियाँ, वनों, चारागाहों, वीरान और ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं और नगरीय जीवन के एकात्मीकरण का प्रत्यक्ष अभाव बताती हैं। ये हजारों वर्षो पहले हमारे ऋषियों द्वारा लिखे गए शास्त्रीय ग्रंथों से चुने गए हैं। अतः शोधार्थियों से निवेदन है कि भचक्र की राशियों के कारकत्वों का आधुनिक संदर्भ में परीक्षण करें।

2. ग्रह

लग्न में स्थित अथवा दृष्टि डालने वाले ग्रह निम्नलिखित स्थानों को दर्शाते हैं जहाँ चोरी हुई वस्तु प्राप्त हो सकती है :

लग्न सम्बद्ध अथवा दृष्ट है	*विभिन्न भागों में लग्न का विभाजन*	*प्रत्येक भाग के कारकत्व, जहाँ उदित लग्न पड़ता है*
सूर्य	तीन भागों में	1. झगड़ालू महिला का घर। 2. एक युवा और सुंदर महिला का घर। 3. जल के निकट के स्थान।
चंद्रमा	तीन भागों में	1. सुंदर नृत्यांगना, गायिका का घर। 2. जल के तालाब के निकट। 3. पानी के नीचे।
मंगल	दो भागों में	1. खाना बनाने का स्थान अथवा भट्ठी। 2. कार्यशाला, जैसे लुहार की।
बुध	एक भाव में	1. एक बंगला, जहाँ कपड़ों और आभूषणों से पूर्णतः अलंकृत सुंदर स्त्री रहती है।

बृहस्पति	चार भागों में	1. गऊशाला अथवा ऐसा ही स्थान 2. एक पादरी का घर। 3. मंदिर अथवा पूजा का स्थान। 4. एक धार्मिक महिला का घर।
शुक्र	छः भागों में	1. शयन कक्ष। 2. बगीचा। 3. सरोवर अथवा तालाब। 4. एक नृत्यांगना का घर। 5. एक स्थान, जहाँ सुगंधित पदार्थ अथवा लोबान आदि रखा जाता है। 6. फूलों से भरा हुआ स्थान।
शनि	तीन भागों में	1. एक वृद्ध महिला का घर। 2. टूटे वर्तनों का स्थान अथवा टूटे बर्तनों या पात्रों में गुप्त रूप से रखा हुआ। 3. स्थान, जहाँ झाड़ू रखा जाता है अथवा दलदल के स्थान।

3. चंद्रमा पर दृष्टि

चंद्रमा पर दृष्टि	*स्थान जहाँ चुराई हुई वस्तु रखी गई है*
सूर्य, मंगल अथवा बुध	भूमिगत गाढ़ा गया है।
बृहस्पति	ऊँचे अथवा उभरे स्थान पर रखी है।
शुक्र	पानी के अंदर।
शनि	खुले स्थान में रखी है।
किसी भी ग्रह द्वारा दृष्ट नहीं	उदित राशि पर आधारित धातु, मूल अथवा जीव से निर्मित डिब्बे में छिपाई गई है।

4. उदय लग्न का द्रेष्काण

स्थान, जहां चोरी हुई वस्तु रखी गई है, लग्न में उदय द्रेष्काण से निश्चित किया जा सकता है।

लग्न में उदय द्रेष्काण	*घर में वस्तु की स्थित*
प्रथम द्रेष्काण	द्वारपर अथवा घर के प्रवेश द्वार के निकट
द्वितीय द्रेष्काण	घर के मध्यभाग में
तृतीय द्रेष्काण	घर के पिछले भाग में

5. 4थे भाव में ग्रह अथवा चतुर्थेश

4थे भाव में ग्रह अथवा चतुर्थेश	चोरी की संपत्ति की स्थिति
सूर्य	संपत्ति के मालिक के पास
चंद्रमा	पानी, तालाब, सरोवर
मंगल	आग अथवा रसोईघर
बुध	अध्ययन कक्ष
बृहस्पति	पूजा का स्थान अथवा बगीचा
शुक्र	शयन कक्ष
शनि	एक गंदा स्थान

विश्लेषण के आधारभूत सिद्धान्त

लग्न में उदित राशि, लग्न में स्थित ग्रहों अथवा लग्न को देखने वाले ग्रहों की प्रकृति देखें। लग्न अथवा आरूढ़ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केंद्र बिंदु है जिसके चारों ओर संपूर्ण विश्लेषण घूमता है। एक उदित क्रूर राशि, एक क्रूर ग्रह द्वारा गृहीत अथवा दृष्ट है तो वह चोरी हुई वस्तु की पुनःप्राप्ति नहीं बताती। पुनः उदित पृष्ठोदय लग्न चोरी हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति का संकेत नहीं करता। केंद्रों और त्रिकोणों में क्रूर ग्रहों का प्रभाव भी अनुकूल नहीं है। दूसरी ओर, लग्न में शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत अथवा शुभ दृष्ट राशि, शीर्षोदय लग्न, केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रहों का प्रभाव और 11वें भाव में एक बली शुभ ग्रह स्थित हो तो ये चोरी हुई वस्तु की पुनर्प्राप्ति का संकेत करते हैं। पहले की तरह अनुकूल परिणामों के लिए, लग्न, लग्नेश, चंद्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

किस भाव से क्या देखें

लग्न व चंद्रमा	प्रश्नकर्त्ता अथवा वह व्यक्ति जिस की संपत्ति खोई है
4था भाव	चोरी हुई संपत्ति
7वाँ भाव	चोर (कुछ 6ठे भाव/षष्ठेश को चोर के रूप में मानते हैं)
10वाँ भाव	अधिकारी वर्ग अथवा पुलिस

सूर्य और चंद्रमा से भी खोई हुई संपत्ति देखी जाती है। चोर का व्यवसाय अष्टमेश से निश्चित किया जाता है।

चोर कौन है

उदय लग्न

यदि लग्न में एक चर राशि उदय होती है तो एक बाहरी व्यक्ति चोर है।

यदि एक स्थिर राशि अथवा एक स्थिर नवांश उदय होता है तब घर के किसी सदस्य द्वारा चोरी की गई है। यदि एक द्विस्वभाव राशि उदय होती है तो ऐसा व्यक्ति जिसका घर में आना जाना है अथवा वह जिसे घर में प्रवेश की अनुमति है, चोर है।

ग्रह

1. यदि सूर्य और चंद्रमा दोनों लग्न को देखते हैं तब एक पारिवारिक सदस्य चोर है जबकि यदि केवल उनमें से एक लग्न को देखता है तब पड़ोसी चोर है। सूर्य और चन्द्रमा की लग्न पर दृष्टि यह भी सूचित करती है कि चोर एक प्रभावशाली व्यक्ति के साथ रह रहा है।
2. यदि लग्न में लग्नेश और सप्तमेश संयुक्त रूप से स्थित हैं तब भी एक पारिवारिक सदस्य चोर है।
3. यदि सप्तमेश और मंगल इशराफ योग से पिछली घटना बता रहे हैं तब चोर पहले भी ऐसे अपराध में शामिल हुआ और दोषी पाया गया है।
4. यदि प्रश्न कुंडली में बृहस्पति शनि से दृष्ट है तब चोर कुख्यात है तथा अपने आपराधिक इतिहास के लिए जाना जाता है।
5. यदि चंद्रमा और शुक्र 7वें भाव में स्थित अथवा दृष्टि से संबद्ध है तब चोर ने चोरी पहली बार की है और उसका कोई पिछला रिकार्ड नहीं है। जबकि यदि चंद्रमा और बुध 7वें भाव के साथ संबद्ध हैं अथवा चंद्रमा शनि से पीड़ित है तो चोर पाखंडी है अर्थात् वह एक कपटी, धोखेबाज, ढ़ोंगी अथवा झूठा है।

सप्तमेश के रूप में ग्रह

सप्तमेश के रूप में ग्रह	*चोर की पहचान*
सूर्य	वह बहुत वृद्ध है
चंद्रमा	युवा, आकर्षक, बुद्धिमान, गोल-मटोल कुछ इसे 70 वर्ष के आसपास का वृद्ध मानते हैं
मंगल	युवा व्यक्ति अथवा भाई
बुध	मित्र अथवा जवान लड़का
बृहस्पति	एक मध्य आयु का व्यक्ति
शुक्र	एक जवान महिला
शनि	वृद्ध अथवा नौकर

सप्तमेश की स्थिति

आधारभूत रूप से हम सप्तमेश को चोर अथवा चोर ग्रह मानते हैं। प्रश्नकुंडली में इसका स्थापन चोर की पहचान की ओर संकेत करता है।

सप्तमेश स्थित है	*चोर कौन है*
3सरे भाव अथवा 12वें भाव में	नौकर
उच्च अथवा स्वराशि में	पेशावर अथवा विशिष्ट व्यक्ति

7वें भाव में स्थित ग्रह

7वें भाव में स्थित ग्रह अथवा यदि एक से अधिक ग्रह हैं तब उनमें से बलवान ग्रह चोर की पहचान में सहायता करता है। यदि 7वें भाव में कोई ग्रह नहीं है तब चोर ग्रहों में से बलवान ग्रह चोर की विशेषताएँ सूचित करता है।

ग्रह	*विशेषताएँ*
सूर्य	अच्छा सुगठित शरीर, बलवान, प्रभावशाली, सिर पर विरल बाल, चिड़चिड़ा स्वभाव और शहद के रंग की आँखें।
चंद्रमा	गोल मटोल और आकर्षक शरीर, बहुत सुंदर और बुद्धिमान, आकर्षक आँखे, मधुर संभाषण में प्रभावी।
मंगल	आयु में युवा और क्रूर स्वभाव, उदार आकर्षक, छरहरा व्यक्तित्व तथापि चंचल।
बुध	बहुत अच्छा संवादपटु, चतुराई भरी वाणी, प्रभावशाली और विनोदी।
बृहस्पति	विशाल शरीर और बड़ी आँखे, उच्च पद और आत्मसम्मान।
शुक्र	अत्यंत आकर्षक शरीर, सुंदर आँखें और बाल, एक व्यक्तित्व, जो मज़ाक पंसद करता है और जीवन के सभी सुखों का आनंद भोगता है।
शनि	अकर्मण्य और आलसी स्वभाव, पतला और लंबा शरीर, शरीर पर रूखे बाल और सिर पर विरल अथवा बड़े भद्दे दाँत, काली अथवा भूरी आँखें और मैली शारीरिक संरचना रखता है।

चोर कहाँ है

यदि सप्तमेश केंद्र में है तो चोर स्वतः चोरी के स्थान पर है और यदि सप्तमेश अन्यत्र है (केंद्र के अतिरिक्त) तो वह भाग गया है। यदि सप्तमेश 3सरे अथवा 9वें भाव में है तो वह कस्वा अथवा शहर छोड़ चुका है और उसकी दूरी क्रमशः 3सरे अथवा 9वें भाव से निर्धारित की जा सकती है। 3सरा भाव बताता है कि चोर निकट है और 9वां भाव स्थान से दूर उसका पलायन बताता है।

चोर द्वारा पहने हुए वस्त्र

चोर ग्रह	पहने हुए वस्त्रों का रंग
सूर्य	केसरिया अथवा बनावट में मोटा
चंद्रमा	सफेद अथवा नए वस्त्र
मंगल	लाल अथवा दग्ध वस्त्र
बुध	हरा अथवा बिना धुले वस्त्र
बृहस्पति	पीला, न तो पुराना और न नया
शुक्र	चमकीला और रंग-बिरंगा अथवा उत्तम गुणवत्ता के वस्त्र
शनि	काला अथवा गहरा, पुराना और फटा वस्त्र

चोर की आयु

जो ग्रह चोर ग्रह है, उस पर चोर की आयु का निर्धारण निर्भर करता है यद्यपि अन्य विधियाँ भी हैं, जो निम्नलिखित हैं :

चोर ग्रह	आयु
मंगल	बच्चा
बुध	लड़का
शुक्र	16 वर्ष
बृहस्पति	30 वर्ष
सूर्य	50 वर्ष
चन्द्रमा	70 वर्ष
शनि, राहु, केतु	100 वर्ष

ये आयु करीब-करीब और संकेतात्मक हैं और निश्चित नहीं हैं। चोर की अनुमानित आयु को निश्चित करने के लिए सूर्य की स्थिति भी देखी जाती है।

के बीच सूर्य की स्थिति	अनुमानित आयु
10वें भाव और लग्न	बच्चा
7वें भाव और 10वें भाव	युवा से व्यस्क
4थे भाव और 7वें भाव	प्रौढ़ से वृद्ध
लग्न और 4थे भाव	अत्यंत वृद्ध

सम्पत्ति की पुनःप्राप्ति

निम्नलिखित योग खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति को बताते हैं। देखें कि क्या उदित राशि शीर्षोदय अथवा पृष्ठोदय आदि है। लग्न में शीर्षोदय और

चर राशि पुनःप्राप्ति के लिए अनुकूल है जबकि पृष्ठोदय और स्थिर अथवा द्विस्वभाव राशियाँ अनुकूल नहीं हैं। द्विस्वभाव राशि में यह देखना चाहिए कि उसका झुकाव चर की ओर है अथवा स्थिर की ओर। यह लग्न में उदित अंशों पर निर्भर करता है। केद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह अनुकूल है। निम्नलिखित योग खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति बताते हैं :

1. लग्नेश 7वें भाव में और सप्तमेश लग्न में हो।
2. लग्नेश अथवा चंद्रमा शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो। यहाँ युति का अर्थ इत्थसाल योग भी है।
3. लग्नेश, लग्न अथवा 2सरे भाव को देखे।
4. लग्न शुभ ग्रहों से घिरा हो, जैसे शुभ कर्तरी योग अथवा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो।
5. जब चंद्र राशि का अधिपति चंद्रमा को देखता हो।
6. जब चंद्रमा 7वें भाव में स्थित हो।
7. जब लग्नेश अथवा चंद्रमा द्वितीयेश के साथ इत्थसाल रखते हों अथवा जब वे संयुक्त रूप से स्थित हों तो सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है।

संपत्ति की अप्राप्ति

जब पुनः प्राप्ति के उपरोक्त वर्णित सामान्य सिद्धान्त उपस्थित न हों जैसे, जब लग्न पाप ग्रहों से दृष्ट हो, वह पाप कर्तरी योग में हो, केंद्रों और त्रिकोणों में पाप ग्रहों की प्रधानता हो तो खोई हुई वस्तु पुनः प्राप्त नहीं होगी। इसी प्रकार जब पृष्ठोदय और स्थिर राशि उदित होती हो तो पुनः प्राप्ति के अवसर वहां नहीं होते। इन जैसी स्थितियां इच्छाओं की अपूर्णता और यथावत स्थिति को सूचित करती हैं। अप्राप्ति के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

1. जब लग्न अथवा दूसरे भाव का लग्नेश अथवा चंद्रमा से स्थिति, दृष्टि अथवा ताजिक योग के द्वारा कोई संबंध न हो।
2. जब लग्नेश 7वें भाव में स्थित हो और सप्तमेश का लग्न अथवा लग्नेश के साथ संबद्ध न हो।
3. जिस प्रकार 8वां भाव और अष्टमेश स्थायी हानि सूचित करते हैं उसी प्रकार चोर की संपत्ति भी बताते हैं। जब अष्टमेश या तो 7वें भाव में अथवा 8वें भाव में हो तो चोरी हुई वस्तु पुनः प्राप्त नहीं होती।
4. इसी प्रकार 2सरा भाव प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति की समृद्धि और संपत्ति का भाव है। जब द्वितीयेश 7वें भाव में अथवा 8वें भाव में स्थित हो तो

इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति की समृद्धि चोर के पास चली गई है और यह कभी भी पुनः प्राप्त नहीं हो सकेगी।

5. लग्न में सूर्य और 7वें भाव में चंद्रमा भी संपत्ति की हानि बताता है। इसी प्रकार, जब सूर्य अथवा चंद्रमा, लग्न, 2सरे अथवा 3सरे भाव में स्थित हो तो सम्पत्ति की पुनः प्राप्ति नहीं होती। यदि वे 4थे भाव में स्थित हो तो पुनः प्राप्ति के अवसरों में वृद्धि होती है बशर्ते पुनः प्राप्ति के अन्य संकेत भी उपस्थित हों।

विश्लेषण के सूक्ष्म सिद्धान्त

इन सिद्धान्तों को प्रयोग तब किया जाता है जब खोई हुई संपत्ति के मामले में प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में एक ज्योतिषी गहराई में जाने की इच्छा रखता है। ये पहले कहे गए आधारभूत सिद्धान्तों के साथ प्रयुक्त किए जाते हैं और पृथकता में नहीं। ये विश्लेषणात्मक सिद्धान्त हैं जो इस विषय की गहन अंत दृष्टि होने पर ही ज्योतिषी प्रयोग कर सकते हैं।

चोर की पहचान

1. यदि सप्तमेश अपने नवांश में है तब परिवार का एक सदस्य चोर है। इसी प्रकार यदि स्थिर लग्न अथवा स्थिर नवांश उदित होता है तब भी परिवार का एक सदस्य चोर है।
2. यदि लग्नेश अथवा चंद्रमा सप्तमेश के साथ इशराफ योग बनाए, तो व्यक्ति जो इस अपराध में संदिग्ध माना गया है, पहले भी चोरी में शामिल हो चुका है।
3. संदिग्ध व्यक्ति के बारे में जारी रखते हुए, कई बार प्रश्न पूछते समय व्यक्ति चोर के बारे में अपना शक अथवा संशय रखता है। यदि चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ इत्थसाल बनाए तो संदिग्ध व्यक्ति चोर है। इसके विपरीत शुभ ग्रह के साथ चंद्रमा का इत्थसाल बताता है कि संदिग्ध व्यक्ति निर्दोष है।
4. 7वें भाव से किसी ग्रह की दृष्टि के बिना लग्न में पूर्ण चंद्रमा अथवा बलवान चंद्रमा सूचित करता है कि कोई बाहरी व्यक्ति चोर हो सकता है।
5. चोर ग्रह की स्थिति से (जो इस मामले में केवल सप्तमेश हो सकता है और केंद्रों में स्थित ग्रह नहीं) परिवार के सदस्य का संबंध, कारण और अन्य विवरण प्राप्त कर सकते हैं लेकिन चोर ग्रह अशुभ प्रभाव में होना चाहिए।

चोर ग्रह की स्थिति	कारकत्व
लग्न में	प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति स्वयं चोर है।
2सरे भाव में	परिवार का सदस्य।
3सरे भाव में	भाई अथवा बहन।
4थे भाव में	माता।
5वें भाव में	बच्चा।
6ठे अथवा 8वे भाव में	चोर बाहरी व्यक्ति है और चोरी शत्रुता के कारण हुई है।

संपत्ति की पुनः प्राप्ति

1. जब द्वितीयेश 2सरे अथवा 4थे भाव में हो तो धन अथवा खोई हुई संपत्ति पुनः प्राप्त होती है जबकि 4थे भाव पर पाप प्रभाव अप्राप्ति बताता है।
2. लग्नेश 7वें भाव में और/अथवा सप्तमेश लग्न में अथवा उनका परस्पर इत्थसाल, चाहे वे लग्न अथवा 7वें भाव के अपेक्षा दूसरे भावों में स्थित हों तो भी संपति की पुनःप्राप्ति होती है। जबकि यदि लग्नेश और सप्तमेश (वे लग्नेश और कार्येश हैं) के बीच ऐसा कोई संबंध अनुपस्थित हो तो पुनः प्राप्ति संदिग्ध है। इस सिद्धान्त का रूपांतरण प्रायः देखने में आता है। यदि सप्तमेश लग्न में स्थित हो तो चोर स्वयं चुराई हुई संपत्ति वापस कर देता है जिसका कारण कुंडली में अन्यत्र देखा जाना चाहिए। उदाहरणार्थ, जब दशमेश, लग्नेश और सप्तमेश के बीच इत्थसाल में शामिल है तो चोर पुलिस अथवा जांच संस्थाओं के डर के कारण संपत्ति वापस कर देता है।
3. दूसरा भाव प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति की समृद्धि का भाव है और 8वां भाव चोर की समृद्धि का भाव है क्योंकि वह 7वें से 2रा भाव है। यदि अष्टमेश लग्न में स्थित है तो चोर स्वयं संपत्ति वापस कर देता है।
4. इसी प्रकार द्वितीयेश और अष्टमेश इत्थसाल योग में हों तो संपत्ति पुनः प्राप्त होती है। यह एक ऐसा योग है जिसे और परीक्षित करने की आवश्यकता है। मेरे विचार में द्वितीयेश और अष्टमेश के बीच इत्थसाल स्थाई हानि दर्शाता है जिसमें चोरी हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति नहीं होती। इस योग में मैंने ऐसा ही पाया है।
5. लग्नेश और दशमेश परस्पर युति, दृष्टि अथवा इत्थसाल द्वारा सम्बद्ध हों तो चोरी हुई संपत्ति पुलिस की सहायता से पुनः प्राप्त होती है जबकि दशमेश का अष्टमेश के साथ इत्थसाल हो तो पुलिस चोर का पक्ष लेती है।

6. यदि चंद्रमा अथवा बृहस्पति अपनी राशि में हो अथवा 4, 7, 8 अथवा 10वें भाव (केंद्र और 8वें भाव) में स्थित हों तब संपत्ति पुनः प्राप्त होती है। लेकिन इसके लिए अन्य अनुकूल योग उपस्थित होने चाहिएं। यह योग शुभ ग्रहों, विशेषतः केंद्रों और 8वें भाव में चन्द्रमा और बृहस्पति की भूमिका दिखाता है।
7. द्वितीयेश नवमेश के साथ इत्थसाल में हो अथवा चतुर्थेश एकादशेश के साथ इत्थसाल में हो तो चोरी हुई संपत्ति पुनः प्राप्त होती है।

संपत्ति की अप्राप्ति

1. मंगल 7वें अथवा 8वें भाव में न केवल एक पाप ग्रह होकर बल्कि प्राकृतिक भचक्र के 8वें भाव का स्वामी होकर स्थित हो तो वस्तु की पुनः प्राप्ति नहीं होती। कारण, चोरी हुई संपत्ति दूसरे हाथों में चली गई है।
2. लग्नेश 7वें भाव में और सप्तमेश लग्न में हो तो पुनः प्राप्ति का योग कहा गया है। यदि सप्तमेश लग्न में वक्री हो तो संपत्ति पुनः प्राप्त नहीं हो सकेगी चाहे उस सम्पत्ति का पता लग गया हो।
3. लग्न में राहु (लग्न-7वें भाव में राहु/केतु अक्ष की भूमिका देखें) और 8वें भाव में सूर्य की स्थिति से सम्पत्ति की पुनः प्राप्ति नहीं होती।
4. दशमेश अष्टमेश के साथ इत्थसाल बना रहा हो तो पुलिस चोर का पक्ष लेती है और संपत्ति पुनः प्राप्त नहीं होती। इस योग के अनुसार संपत्ति का एक भाग पुलिस के हिस्से में गया है या आपस में बांटा गया है।
5. जब लग्नेश लग्न, द्वितीय भाव अथवा द्वितीयेश को नहीं देखता तो संपत्ति पुनःप्राप्त नहीं होती चाहे वह चोर से पुनःप्राप्त हो गई हो।
6. यदि प्रश्न कुंडली में नवांश लग्न का स्वामी नीच है अथवा 7वें भाव में है तब संपत्ति सदा के लिए खो चुकी है।

चोरी हुई संपत्ति और चोर कहां है

1. द्वितीयेश 3सरे भाव या 9वें भाव में अथवा तृतीयेश/नवमेश के साथ इत्थसाल में हो तो यह दिखाता है कि संपत्ति कितनी दूर ले जाई गई है। शर्त यह है कि लग्न अथवा चंद्रमा चर राशि में होना चाहिए।
2. 4था भाव चोरी हुई संपत्ति बताता है और 4थे भाव में अग्नि, पृथ्वी, वायु और जलीय राशियाँ चोरी हुई सम्पत्ति की स्थिति दर्शाती हैं।

4थे भाव में राशि	चोरी हुई सम्पत्ति कहां है
अग्नि	रसोईघर की आग के निकट
पृथ्वी	फर्श पर, कुछ इसे भूमि के अंदर मानते है
वायु	भूमि के ऊपर, उभरे स्थान पर
जलीय	पानी अथवा पानी के तालाबों के निकट

चोर पकड़ा जाएगा कि नहीं

इस विश्लेषण में, अस्त ग्रहों की अत्यधिक भूमिका रहती है। जब द्वितीयेश अस्त हो तो चोर पकड़ा जाता है लेकिन संपत्ति पुनः प्राप्त नहीं होती। लेकिन जब सप्तमेश अथवा मंगल अस्त हो अथवा जब चंद्रमा सूर्य से 12 अंशों के भीतर हो तो चोर पुलिस द्वारा पकड़ा जाएगा। ऐसे मामलों में अनुसरण करने के लिए एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि 7वें भाव में पाप ग्रह की उपस्थिति देखें, जो बताता है कि पुलिस चोर को पकड़ लेगी। यदि दशमेश और पंचमेश की लग्नेश और द्वितीयेश के साथ परस्पर मित्र ताजिक दृष्टि हो (3, 5, 9 और 11वीं दृष्टि) तो चोर पकड़ा जाता है और संपत्ति पुनः प्राप्त होती है।

नवांश का प्रयोग

ऊपर व्याख्यायित कुछ सिद्धान्तों में नवांश का उपयोग बताया गया है। खोई हुई वस्तु की पहचान करने में नवांश एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ज्योतिष के सामान्य सिद्धान्तों से लग्न और नवांश लग्न में कौन अधिक बलवान है यह मालूम करें। लग्न अथवा नवांश लग्न राशि में से बलवान से चोरी हुई वस्तु के रूप रंग का उद्घाटन होता है। भचक्र की राशियों के रंगों के कारकत्व, रूप रंग और अन्य विवरण प्रथम अध्याय में दिए गए हैं।

यदि लग्न कमजोर है तो चोरी हुई वस्तु पुरानी और घिसी पिटी है। लग्न के साथ संयुक्त शनि भी बताता है कि वस्तु पुरानी है। यह भी बताता है कि वस्तु में एक सुराख है। जैसे, एक अंगूठी अथवा चूड़ियाँ आदि। दूसरी ओर जब लग्न बलवान है तो वस्तु ठोस और मजबूत है। कुछ दृष्टिकोण वस्तु की आयु, मूल्य और आकार बताते हैं। यह नवांश राशि से मालूम करना चाहिए जहां प्रश्न कुंडली का लग्नेश स्थित है। यदि प्रश्न कुंडली का लग्नेश वर्गोत्तम है अथवा नवांश में उच्च राशि में है तो वस्तु बहुमूल्य है। दूसरी ओर, यदि यह कमजोर है, अस्त अथवा नवांश में 6, 8, 12वें भावों में स्थित है तब यह बहुमूल्य नहीं है। विभिन्न राशियों का आरोहण अथवा राशिमान चोरी हुई वस्तुओं के बारे में इन तथ्यों को बताता है। यद्यपि षट्पंचासिका के अनुसार, यदि उदित नवांश का स्वामी बलवान है तो चोरी हुई वस्तु स्पर्श करने में

कठोर हैं और यदि उदित नवांश का स्वामी बलहीन है तो चोरी हुई वस्तु स्पर्श करने में कोमल है।

चोर के साथी या सह-अपराधी

लग्न, 7वें भाव अथवा 10वें भाव में उच्च अथवा स्वराशि में स्थित ग्रह अपने कारकत्वों के अनुसार चोर के साथी को दर्शाता है।

क्या परिवार का सदस्य ही चोर है?

यदि लग्न 7वाँ भाव अथवा 10वाँ भाव निम्नलिखित ग्रहों में से किसी की नीच राशि है, तब उस ग्रह द्वारा सूचित किसी संबंधी ने चोरी की है।

ग्रह	*संबंधी*
सूर्य	पिता
चंद्रमा	माता
मंगल	भाई अथवा बेटा (पुत्र)
बुध	संबंधी अथवा मित्र
बृहस्पति	घर का विशिष्ट सदस्य
शुक्र	पत्नी
शनि	पुत्र

यदि एक से अधिक ग्रह द्वारा परिवार का सदस्य चोर बनता हो तो केन्द्र में स्थित बलवान ग्रह से सूचित संबंधी चोर होता है। इस कथन की पुष्टि करने के लिए पुण्य सहम की गणना अवश्य करनी चाहिए। इसे ताजिक योगों के अध्याय में अलग से व्याख्यायित किया गया है। यदि पुण्य सहम, पुण्य सहम से सप्तम भाव या सप्तमेश क्रूर ग्रहों के प्रभाव में हो केवल तभी उपरोक्त कथन निर्णायक है, अन्यथा नहीं।

कृष्णीयम पर आधारित चोरी हुई वस्तु

केरल के प्रसिद्ध नम्बूदरी ज्योतिषी कृष्णीय ने विभिन्न ग्रहों द्वारा गृहीत अथवा दृष्ट उदित राशि पर आधारित चोरी हुई वस्तु की विशेषताओं का वर्णन किया है।

उदय लग्न	*लग्न में स्थित ग्रह*	*लग्न को देखने वाला ग्रह*	*परिणाम/चोरी हुई वस्तु की विशेषताएं/चोर की पहचान*
1, 8	चंद्रमा		बच्चे का कंगन
	बुध		बाग में, सोने की चूड़ी या गले का हार

उदय लग्न	लग्न में स्थित ग्रह	लग्न को देखने वाला ग्रह	परिणाम/चोरी हुई वस्तु की विशेषताएं/चोर की पहचान
	शुक्र		माँ अथवा बहन द्वारा लिया गया सोने की जरी वाला कपड़ा
	बृहस्पति		अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति में अग्नि, दुर्घटना और मृत्यु समारोह के दौरान स्वर्ण जड़ित आभूषण की चोरी
	शनि		एक नौकरानी द्वारा भूमि में छिपा कर रखे गए स्वर्ण के सिक्के
		बुध	खच्चर जो अगले दिन पाया जाएगा
		शुक्र	दो गाएँ और एक बैल, जो 8वें दिन पाएं जायेंगे
		शनि	4 दिन पहले खोई बकरियाँ, जो 9वें दिन पाई जाऐंगी
		चंद्रमा और शुक्र	सूचना आएगी कि 80 मवेशी भगा लिए गए
		चंद्रमा और मंगल	12 भैंसे खोई अगले दिन 11 पुनः प्राप्त हो जाएंगी
		मंगल और शनि	सोने और कांसे के बर्तन, जो 7वें दिन पाए जाएंगे
		बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा	नौकरानी द्वारा बिस्तर से चुराई गई शाल और कंगन
		बृह० और मंगल	गोलाकार स्वर्ण, वृद्ध नौकरानी द्वारा
		मंगल और बुध	चुराई गई सोने की जरी वाले कशीदा कारी वस्त्र और कांसे के बर्तन एक लिपिक द्वारा चुराए गए
1	4थे भाव में उच्च का बृहस्पति और 10वें भाव में उच्च का मंगल		आभूषणों का कलश एवं राज्याभिषेक समारोह के लिए धन, जो नहीं मिलेगा
	लग्न के प्रथम द्रेष्काण में चंद्रमा		सरकारी कर्मचारी चोर है
	लग्न के दूसरे द्रेष्काण में चंद्रमा		महिला चोर है
	लग्न के तीसरे द्रेष्काण में चंद्रमा		कलाकार चोर है
2, 7	कोई नहीं		चौपाया चोरी हुआ है
		शुक्र	कपड़े
		बृहस्पति	तांबा
		बुध	बहुमूल्य पत्थरों से जड़ित पात्र
		शनि	लोहा

उदय लग्न	लग्न में स्थित ग्रह	लग्न को देखने वाला ग्रह	परिणाम/चोरी हुई वस्तु की विशेषताएं/चोर की पहचान
		चंद्रमा	एक महिला
		सूर्य	बहुमूल्य अथवा मुकुट जवाहरात
		मंगल	करघनी
		बृहस्पति और शनि	स्वर्ण और कांच
		मंगल और शुक्र	चेहरे पर पहनने वाले आभूषण
		चंद्रमा और शुक्र	बहुमूल्य पत्थरों के साथ कशीदाकारी वस्त्र
3, 6		बुध	आभूषण, लेखक, संगीतकार, युगल
		शुक्र	कपड़े
		मंगल	स्वर्णाभूषण
		शनि	लोहा
		बृहस्पति	स्वर्ण जड़ित आभूषण
		सूर्य	पशु
		चंद्रमा	वर्दी और वस्त्र
4	कोई नहीं		स्वर्णाभूषण जो घर के बाहर बाग में, झील के निकट गिर गए, नौकरानी को मिले
	शुक्र		जल, झील आदि में खोया
	सूर्य और मंगल		जल रहित तालाब में खोया
	बुध		बाग में खोया
	चंद्रमा		शौचालय में खोया
		चंद्रमा	पानी में छूटा आभूषण
		शुक्र	एक स्त्री द्वारा चुराई गई
		बुध	एक पुरूष नौकर अथवा रसोइया द्वारा चुराई गई
		सूर्य	एक ब्राह्मण द्वारा चुराई गई
		बृहस्पति	एक मित्र द्वारा चुराई गई
5	सूर्य		स्वर्ण
	चंद्रमा		कांसा
	मंगल		तांबा
	बुध		रत्न
	बृहस्पति		चांदी
	शुक्र		सीसा
	शनि		लोहा
		सूर्य	स्वर्ण
		चंद्रमा	स्वर्ण

उदित लग्न	लग्न में स्थित ग्रह	लग्न को देखने वाला ग्रह	परिणाम/चोरी हुई वस्तु की विशेषताएं/चोर की पहचान
		मंगल	स्वर्णाभूषणों का संग्रह
		बुध	पन्ने के आभूषण
		बृहस्पति	स्वर्ण जड़ित आभूषण
		शुक्र	स्वर्ण
		शनि	मोती का गले का हार
9, 12	कोई नहीं		शिल्प-तथ्य, चौपाया, स्वर्ण रत्न और जवाहरात
	सूर्य		स्वर्ण अथवा शस्त्र
	मंगल		कवच, हाथी दांत आदि
	शनि		खजाना
	राहु		चोर-वृद्ध महिला/गुलाम/नौकर
10, 11	कोई नहीं		स्वर्ण, आभूषण, वस्त्र, लोहा
	बुध और शनि		तरल
	शनि और शुक्र		बर्तन
	शनि		लोहा
	चंद्रमा		हीरा
	बुध		हीरों जड़ित मर्तबान
	शुक्र		इत्र
	मंगल		लाख
	सूर्य		स्वर्ण

मकर अथवा कुंभ लग्न में उच्च का चंद्रमा बताता है कि उच्च वर्ग की महिला चोर है।

उपरोक्त संकेत, जैसे कि कृष्णीयम में व्याख्यायित किए गए हैं, विगत युग की चुराई गई निश्चित वस्तुओं को बताते हैं जैसे, खच्चर, बकरियाँ, मवेशी आदि। तथापि ये संकेत सूचनाओं की बहुलता का उल्लेख करते हैं जो शोधार्थियों और टिप्पणियों के लिए मेरु दण्ड की भूमिका निभा सकते हैं। यह देखा गया है कि विभिन्न ग्रहों द्वारा दिए गए संकेत कुछ निश्चित मामलों में हमारे सामान्य कारकत्वों से मेल नहीं खाते। क्या ग्रंथों में विकृति हुई है अथवा लेखकों द्वारा की गई व्याख्याओं, टीका टिप्पणियों अथवा हमारे वर्तमान समय में कारकत्वों का समयानुसार बदलाव हुआ है यह कहना मुश्किल है। तथापि यह कारकत्व प्रश्न के शोध में बहुत सहायक हो सकते हैं।

चोर की ओर से प्रश्न

संपूर्ण रूप से हमने उन व्यक्तियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों की स्थिति पर विचार किया है, जिनकी कोई वस्तु खो गई है लेकिन उनके बारे में क्या है जिन्होंने चोरी की है। यदि एक चोर किसी ज्योतिषी से अपने भविष्य के बारे में प्रश्न करता है, तब ज्योतिषी ऐसी एक संभावना से दूर नहीं भाग सकता।

इन मामलों में लग्न में स्थित एक पाप ग्रह चोर को अत्यधिक बल प्रदान करता है और लड़ाइयों, विवादों और उस जैसे संबंधित प्रश्नों के लिए यह एकसमान नियम है। जबकि लग्न पर एक पाप ग्रह की दृष्टि चोर के लिए अनुकूल नहीं है। सामान्य सिद्धान्तों के प्रयोग के अनुसार, लग्नेश की लग्न पर दृष्टि और केंद्रों और त्रिकोणों में इसका स्थापन चोर को अनुकूल परिणाम देता है।

यह कहना अनावश्यक न होगा कि 6, 8, 12 अथवा 2सरे भावों में स्थित लग्नेश चोर को चिंताएँ, हानियाँ, कारावास अथवा जेल देता है।

यदि चोर अपने प्रस्तावित अभियान का परिणाम जानना चाहता है तब भी उपरोक्त योग यथा कथित फल देंगे। लग्न में शुभ ग्रह उसके प्रयासों को असफलता देगा और वह अपने अभियान में सफल नहीं हो पाएगा, यद्यपि यह उसके शारीरिक अस्तित्व की रक्षा करेगा।

उदाहरण संख्या : 1

2,10,000 रुपये नकद और जवाहरात की चोरी

शनि 5°14' केतु 23°22' मंगल 10°43' सूर्य 16°12' बुध 18°25'		शुक्र 2°05'	
	उदाहरण : 1 सायं 4:05 30 मार्च 1996 नई दिल्ली		चन्द्रमा 23°10'
			लग्न 26°05'
बृहस्पति 21°59'			राहु 23°22'

लग्न शीर्षोदय है, लेकिन स्थिर है, जो स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं दिखा रहा और चोरी हुई संपत्ति पुनः प्राप्त नहीं होगी। लग्न शुक्र के नक्षत्र में है जो 10वें भाव में स्थित है। लग्नेश सूर्य भी द्वितीयेश/एकादशेश नीच बुध के साथ निकटतम इशराफ में 8वें भाव में स्थित होकर पिछली घटना

दिखा रहा है जिसमें संपत्ति स्थायी रूप से खो गई है। लग्नेश सूर्य 8वें भाव में द्वितीयेश/एकादशेश बुध, षष्ठेश/सप्तमेश शनि, मंगल के साथ और राहु/केतु के अक्ष में है। इस प्रकार 8वें भाव में लग्नेश सभी क्रूर ग्रहों के साथ है।

चंद्रमा व्यय और हानि के भाव 12वें भाव में बुध के नक्षत्र में है जो 8वें भाव में नीच का है, जैसा कि ऊपर कहा गया है। चंद्रमा 2/8वें भाव को पीड़ित करने वाले राहु/केतु के साथ अत्यंत निकट अंशों में है।

इस मामले में सप्तमेश शनि चोर ग्रह है और शुक्र केंद्र में स्थित है। जब सप्तमेश मीन में स्थित हो तब चोरी में एक से अधिक व्यक्ति शामिल होते हैं। उदित सिंह राशि, एक दिनचर राशि है, जो बताती है कि चोरी दिन के समय की गई। यह अनुमोदित किया गया कि चोरी दोपहर 1-30 से 4-00 बजे के बीच हुई।

लग्नेश एकादशेश (बहुलता का भाव) के साथ निकट अंशों में सम्बद्ध होकर सूचित कर रहा है कि अनेक वस्तुएँ चोरी हुईं। यह अनुमोदित किया गया कि 1,00,000 रुपये के मूल्य के कई स्वर्ण आभूषण और 1,10,000/- रुपये नकद चोरी हुए।

यद्यपि यहाँ लग्न में कोई ग्रह स्थित नहीं है न ही लग्न को देखता है, तथापि लग्न सिंह राशि है और लग्नेश सूर्य का प्रभाव है जो कृष्णीयम के कारकत्त्वों के अनुसार स्वर्ण की चोरी दर्शाता है।

सप्तमेश अनेक ग्रहों के साथ स्थित है और जब सप्तमेश मीन में हो तो चोरी में एक से अधिक व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। सप्तमेश पुरुष और स्त्री ग्रहों दोनों के साथ शामिल है, अतः दोनों स्त्री और पुरुष चोरी में शामिल हैं। सूर्य के लग्नेश होने के कारण सूचित होता है कि मुख्य चोर क्षत्रिय है और केंद्र में शुक्र बताता है कि चोरी हुई संपत्ति दक्षिण-पूर्ण दिशा की ओर ले जाई गयी है। सूर्य के लग्नेश होने और लग्न के तीसरे द्रेष्काण में होने तथा लग्न के साथ स्थिति अथवा दृष्टि द्वारा किसी अन्य ग्रह का शामिल न होना चोरी हुई संपत्ति को जल के निकट होना बताता है। 4था भाव में एक जलीय राशि भी है जो चोरी हुई संपत्ति को पानी के निकट होना बता रहा है।

चोर न केवल कुख्यात है बल्कि उसका एक पिछला आपराधिक इतिहास भी है क्योंकि बृहस्पति शनि से दृष्ट है और सप्तमेश शनि और मंगल के बीच इशराफ योग है। सप्तमेश के रूप में शनि एक वृद्ध व्यक्ति अथवा नौकरानी बताता है और केंद्र में स्थित बलवान ग्रह शुक्र बताता है कि स्त्री चोर है। नवांश लग्न एक सम राशि है और षट्पंचासिका के सिद्धान्त के अनुसार

सूचित होता है कि एक स्त्री चोर है। घर की नौकरानी का चरित्र भी संदिग्ध था।

जब चंद्रमा पाप ग्रह के साथ इत्थसाल में हो तो संदिग्ध व्यक्ति चोर है। इस मामले में प्रश्नकर्ता ने अपने नौकर पर शक किया। 2/8 भावों में स्थित राहु-केतु के साथ चंद्रमा अत्यंत निकट अंशों में है। अतः शक उचित प्रतीत होता है और यदि नौकरानी ने स्वयं चोरी न भी की हो तो भी निश्चय ही उसने एक सह-अपराधी की भांति भूमिका निभाई है।

चोरी हुई संपत्ति की पुनः प्राप्ति के लिए लग्नेश और चंद्रमा का द्वितीयेश के साथ इत्थसाल होना चाहिए। यहाँ सभी ग्रह स्थायी हानि के भाव, 8वें भाव में द्वितीयेश बुध के साथ इशराफ योग में है। अतः प्रश्नकर्त्ता चोरी हुई संपत्ति को पुनः प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाएगा। दशमेश शुक्र जो अधिकारी वर्ग अथवा पुलिस सूचित करता है, लग्नेश अथवा अष्टमेश बृहस्पति के साथ कोई संबंध नहीं रखता है। दोनों एक दूसरे से षडाष्टक 6-8 स्थिति में उदासीनता का रुख दिखा रहे हैं। इस मामले में पुलिस के द्वारा आगे कोई कार्यवाही नहीं की गई।

उदाहरण संख्या : 2

स्वर्ण जवाहरात की चोरी

शनि (व) 11°37 केतु 14°26'			चन्द्रमा 20°52'
	उदाहरण : 2 सायं 4:27 7 सितंबर 1996 नई दिल्ली		मंगल 4°41' शुक्र 6°27'
लग्न 11°39'			सूर्य 21°16'
बृहस्पति 14°02'			बुध (व) 9°08' राहु 14°26'

लग्न पृष्ठोदय है जो कार्यसिद्धि के लिए अनुकूल नहीं है। लग्न 6ठे भाव में स्थित सप्तमेश चंद्रमा के नक्षत्र में है। लग्न पाराशरी दृष्टि से नीच मंगल और शुक्र द्वारा दृष्ट है।

लग्नेश शनि लग्न के समान अंशों में है और 3सरे भाव में वक्री होकर, राहु/केतु अक्ष में, षष्ठेश/नवमेश वक्री बुध द्वारा दृष्ट और निकट इत्थसाल द्वारा पीड़ित है।

3सरे भाव में स्थित लग्नेश शनि खोई हुई वस्तुओं की चोरी से संबंधित प्रश्न दिखाता है। यह एक मामला है जहाँ वस्तु चोरी हुई है और वह दूसरे स्थान पर नहीं रखी हुई। चंद्रमा, मंगल और शुक्र चोर ग्रह हैं, जो चोरी में एक से अधिक व्यक्तियों का शामिल होना दिखा रहे हैं। यद्यपि सप्तमेश एक की अपेक्षा अनेक व्यक्तियों का संकेत करने वाली बहु संतान राशि में नहीं है तथापि 7वें भाव में इसी प्रकार कर्क राशि है। जब सप्तमेश 6ठे भाव में स्थित हो तो एक बाहरी व्यक्ति चोर होता है और चोरी शत्रुता के कारण की जाती है। उदित मकर लग्न मध्यम राशिमान की राशि है, इसीलिए चोरी हुई वस्तुएँ मध्यम आकार की हैं।

सप्तमेश चंद्रमा, बृहस्पति द्वारा दृष्ट है जो बताता है कि चोर घर के प्रमुख प्रवेश द्वार से आया। जब बृहस्पति सप्तमेश को देखता है तो चोरी खुले आम की जाती है। यह अनुमोदित किया गया कि ताले लगे हुए थे और स्वर्णाभूषण गायब थे।

लग्न में एक चर राशि और चर नवांश चोर का एक बाहरी व्यक्ति होना बताता है। लग्नेश के रूप में शनि बताता है कि चोर एक नीच जाति का व्यक्ति है और द्रेष्काण स्वरूप से स्वर्णाभूषण से सुसज्जित, कलाओं में प्रवीण, सुंदर,गहरा रूप रंग, अनेक वस्तुओं की शौकीन एक स्त्री का स्वरूप उभरता है जो दूसरों की संपत्ति को हड़प कर ले।

7वें भाव में मंगल और शुक्र एक क्रूर युवा महिला सूचित कर रहे हैं। चोर की आयु सामान्यतः सूर्य से ज्ञात करनी चाहिए, जो 8वें भाव में 35 से 40 वर्ष के व्यक्ति के बारे में बता रहा है। बृहस्पति से दृष्ट चंद्रमा दिखा रहा है कि चोरी हुई संपत्ति एक ऊँचे स्थान पर रखी गई है जबकि चतुर्थेश मंगल (जो पुनः चोरी हुई संपत्ति है) नीच है और जलीय राशि में बताता है कि यह एक पुराने जीर्ण-शीर्ण रसोई घर में रखी गई है जहाँ पानी रखा है और एक ऊँचा स्थान है।

चोरी हुई वस्तु की पुनःप्राप्ति की संभावना ज्ञात करने के लिए हम उपरोक्त विवेचित संकेतों का सार देखते हैं। इस प्रश्न कुंडली में केंद्रों और त्रिकोणों में पाप ग्रहों की प्रधानता है जो अनुकूल नहीं है। पृष्ठोदय लग्न, लग्नेश शनि का राहु/केतु अक्ष में होना और षष्ठेश बुध से दृष्ट होना ठीक नहीं है। लग्नेश शनि और षष्ठेश बुध दोनों वक्री हैं और एक निकट इत्थसाल योग में हैं। उसी प्रकार चंद्रमा 6ठे भाव में स्थित है और अष्टमेश के साथ पूर्ण इत्थसाल में पीड़ित है और द्वादशेश बृहस्पति से दृष्ट है। प्रश्नकर्त्ता की संपत्ति द्वितीयेश और एकादशेश द्वारा देखी जाती है। यहाँ द्वितीयेश शनि राहु/केतु अक्ष में पीड़ित है

और एकादशेश 7वें भाव में नीच है। ये सभी योग बिल्कुल भी अनुकूल नहीं हैं।

इस मामले में चोरी हुई संपत्ति की पुनःप्राप्ति न होने के अनेक योग उपस्थित हैं। सप्तमेश और अष्टमेश के बीच पूर्ण इत्थसाल स्थायी हानि बताता है। सूर्य 8वें भाव में स्थित है जो अप्राप्ति दिखा रहा है। लग्नेश का दशमेश के साथ इत्थसाल पुलिस का मामला दिखाता है, लेकिन दोनों पाप ग्रहों के साथ स्थित हैं। लग्नेश राहु/केतु अक्ष में वक्री हैं और दशमेश शुक्र पुलिस के कारक नीच मंगल के साथ स्थित होकर पुलिस की अयोग्यता और रद्द योग दिखा रहा है।

यदि नवांश लग्न का स्वामी प्रश्न कुंडली में नीच या सप्तम भाव में स्थित हो तो चोरी गई वस्तु का स्थाई नाश हो चुका है। यहा नवांश लग्न मेष है और उसका स्वामी मंगल प्रश्न कुड़ली में केवल नीच ही नहीं बल्कि सप्तम भाव में नीच है अतः चोरी गई वस्तु का स्थाई नाश दर्शा रहा है।

पंचांग के अंग भी अत्यधिक प्रतिकूल हैं। प्रश्न के समय पर आर्द्रा नक्षत्र चल रहा था, जिसका स्वामी विनाश का देवता रूद्र है। विष्टि करण और व्यतिपात योग दोनों अत्यधिक प्रतिकूल थे। कृष्ण पक्ष दशमी, एक पूर्णा तिथि जब रविवार के साथ आती है तो मृत्यु योग बनता है और न केवल प्रश्न के विश्लेषण में बल्कि मुहूर्त्त में भी निर्णायक है। निष्कर्षतः में प्रश्न चोरी हुए गहनों की पुनःप्राप्ति के लिए अनुकूल नहीं है।

उदाहरण संख्या : 3

एक यात्रा के दौरान ब्रीफकेस से जवाहरात की चोरी

चन्द्रमा 4°08'	केतु 21°05' पुन्य सहम 25°07'		
शनि (व) 12°21'	उदाहरण : 3 प्रातः 10:25 17 अक्तूबर 1994 नई दिल्ली		मंगल 13°06'
	लग्न 20°47'	बुध (व) 8°32' राहु 21°05' शुक्र (व) 23°54' बृहस्पति 24°34'	सूर्य 29°48'
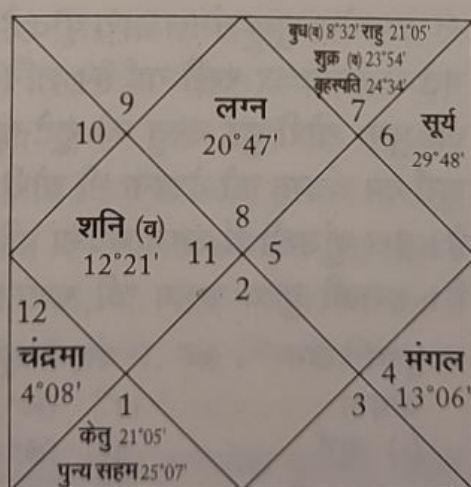
अष्टमेश बुध के नक्षत्र में उदित, स्थिर और पृष्ठोदय लग्न स्थायी हानि दिखा रहा है क्योंकि अष्टमेश बुध्र द्वादशेश शुक्र और नीच षष्ठेश

मंगल से दृष्ट होकर 12वें भाव में स्थित है। यह नीच षष्ठेश मंगल लग्नेश भी है।

यद्यपि बृहस्पति भी 12वें भाव में स्थित है। यह द्वितीयेश/पंचमेश होकर समृद्धि की हानि दिखा रहा है। यहाँ द्वितीयेश बृहस्पति का द्वादशेश शुक्र के बीच पूर्ण इत्थसाल से पुष्ट होता है। बृहस्पति और शुक्र दोनों राहु/केतु अक्ष में, अत्यंत निकट अंशों में हैं। स्थिर लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं बताता और चोरी हुई संपत्ति पुनः प्राप्त नहीं होगी। लेकिन जो आँखों को दिखाई देता है उससे भी कुछ अधिक है।

लग्नेश मंगल 9वें भाव में नीच है। लग्नेश मंगल और उसका राश्यधिपति चंद्रमा दोनों शनि के नक्षत्र में हैं जो केंद्र में स्थित अकेला बलवान ग्रह है और हमारे विश्लेषण के अनुसार एक बलवान चोर ग्रह है।

एक स्त्री ने यह प्रश्न अपनी पुत्री की चोरी हुई संपत्ति के बारे में पूछा। वे एक रात्रि ट्रेन में दिल्ली से इलाहाबाद की यात्रा कर रही थीं। जवाहरात एक डिब्बे में थे जो पूरी तरह बंद एक ब्रीफकेस में रखे थे। इलाहाबाद पहुँचने पर यह पाया कि जवाहरात रहस्यमय ढंग से गायब थे जबकि ब्रीफकेस सुरक्षित था।

उदित स्थिर लग्न का अर्थ हो सकता है कि परिवार का सदस्य चोर है। एक उदित दिनचर राशि दिखाती है कि चोरी दिन के समय की गई। यह मामले के तथ्य के विपरीत है कि चोरी ट्रेन में रात्रि यात्रा के दौरान की गई। इसका अर्थ है कि गहने डिब्बे को ब्रीफकेस में रखने से पूर्व निकाले जा चुके थे। सप्तमेश बृहस्पति के साथ पूर्ण इत्थसाल में है जो अप्रत्यक्षतः बता रहा है कि चोरी खुले आम की गई।

सप्तमेश शुक्र मंगल द्वारा दृष्ट है जो दिखाता है कि चोरी हुई वस्तु भूमिगत गढ़े में छिपाकर रखी गई है। शनि लग्न को देखता है और दूसरे भाग में है जो पुनः चोरी हुई वस्तु को टूटे-फूटे बर्तन में छिपा कर रखना बताता है। सूर्य का चंद्रमा को देखना भी चोरी हुई वस्तु को भूमि के नीचे दबाना बताता है। इस कुंडली में लग्न चंद्रमा की नीच राशि है जिसमें माँ चोर हो सकती है। इसकी पुण्य सहम की गणना द्वारा पुष्टि करनी चाहिए।

पुण्य सहम = चंद्रमा-सूर्य+लग्न (क-ख+ग)

चन्द्रमा	=	11$^{रा}$	04°	08'
(-) सूर्य		5$^{रा}$	29°	48'
		5$^{रा}$	04°	20'
(+) लग्न		7$^{रा}$	20°	47'
पुन्य सहम		0$^{रा}$	25°	07'

यहाँ सहम की गणना की शर्त्त पूरी होती है क्योंकि लग्न सूर्य और चंद्रमा के बीच पड़ता है, जैसे ग ,ख और क के बीच पड़ता है। अतः पुण्य सहम 6ठे भाव में है और पाप ग्रह शनि द्वारा दृष्ट है। पुण्य सहम की केतु के साथ निकट अंशों में युति है और 12वें भाव से बुध (अष्टमेश), शुक्र (द्वादशेश), बृहस्पति और राहु से दृष्ट है। पुण्य सहम से सप्तमेश शुक्र मंगल, शनि से दृष्ट है और राहु/केतु अक्ष में है। पुण्य सहम द्वादशेश शुक्र के नक्षत्र में है जो 12वें भाव में अष्टमेश बुध और राहु-केतु अक्ष में, षष्ठेश मंगल से दृष्ट होकर अत्यधिक पीड़ित है। पुण्य सहम का स्वामी मंगल हमारे विश्लेषण के सशक्त चोर ग्रह शनि के नक्षत्र में नीच है। सूर्य भी अपनी राशि बदलने के छोर पर है और प्रश्न कुंडली के साथ-साथ नवांश में भी नीच होगा। क्या इस विश्लेषण से यह अनुमोदित हो सकता है कि माँ चोर है। अब हम आगे परीक्षण करते हैं।

चोर का लिंग निम्नलिखित से निश्चित किया जाता है :

7वें भाव में राशि	स्त्री
सप्तमेश शुक्र	स्त्री
विषम राशि में सप्तमेश	पुरुष
सप्तमेश की युति अथवा सप्तमेश पर दृष्टि :	
बुध	तटस्थ
बृहस्पति	पुरुष
राहु	स्त्री
मंगल	पुरुष

हमें तीन संकेत स्त्री के, तीन पुरुष के और एक तटस्थ ग्रह के प्राप्त करते हैं। इसे पुष्ट करने के लिए, षट्पंचासिका के सिद्धांतों के अनुसार चन्द्रमा के स्थापन के साथ नवांश लग्न की राशि भी देखते हैं। चंद्रमा सम राशि में है और नवांश लग्न मकर है, दोनो स्त्री बता रहे हैं। शनि यहाँ एक बलवान चोर ग्रह होकर एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। लग्नेश और इसका राशीश चंद्रमा, दोनों शनि के नक्षत्र में हैं जो केंद्र में अकेला बलवान ग्रह होकर एक चोर ग्रह है। यह 4थे भाव में स्थित है, भाव, जो माँ को संकेतित करता है और मंगल से दृष्ट है। पहले वर्णित विश्लेषण से, यह निष्कर्ष दिया जा सकता है कि माँ चोर है।

क्या चोरी हुई वस्तु पुनः प्राप्त हो पाएगी? लग्न अष्टमेश बुध के नक्षत्र में है जो 12वें भाव में राहु/केतु अक्ष में द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है। बृहस्पति दिखा रहा है कि समृद्धि 12वें भाव में जा चुकी है। सप्तमेश शुक्र भी इसी के समान पीड़ित होकर संपत्ति की स्थायी हानि दिखा रहा है।

उदाहरण संख्या : 4

खोये हुए बछड़े की पुनः प्राप्ति

	लग्न 28°26'	केतु 27°55'	
	उदाहरण : 4 सायं 5:00 20 नवम्बर 1992 नई दिल्ली		मंगल 3°23'
शनि 19°06'			
शुक्र 14°35'	सूर्य4°39' बुध (व) 8°03' राहु27°55'		चन्द्र 14°13' बृहस्पति 14°14'

यह मामला एक आधुनिक शहर में रहने वाले ज्योतिषी के लिए असाधारण हो सकता है लेकिन देश के एक साधारण व्यक्ति के लिए बिल्कुल सामान्य है जहां 70% जनता ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। एक ग्रामवासी के लिए, मवेशी भंडार संचित की हुई संपत्ति है। यह प्रश्न यह जानने के लिए पूछा गया कि एक बछड़ा जो खो गया है, कहां है? और उसकी कब संभावित वापसी है?

इस उदाहरण के द्वारा, मैं अपने प्राचीन विद्वानों की विस्मयकारी प्रतिभा पर बल देना चाहता हूँ। कृष्णीयम पर आधारित चोरी हुई वस्तुओं का उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया गया है। विभिन्न लग्नों, लग्न में स्थित ग्रहों अथवा दृष्टि डालने वाले ग्रहों के द्वारा चोरी हुई वस्तु की प्रकृति और चोर की पहचान की जा सकती है। इस मामले में, मेष लग्न में न तो कोई ग्रह है अथवा न लग्न को कोई ग्रह देखता है। लेकिन मंगल लग्नेश के रूप में, राशि अधिपति के रूप में चन्द्रमा, जहाँ लग्नेश स्थित है और शनि जो लग्नेश को देखता है, ये सभी लग्न को अप्रत्यक्षतः प्रभावित करते हैं। कृष्णीयम के संकेतों के अनुसार यह पाया गया है कि जब मंगल, चंद्रमा और शनि लग्न को प्रभावित करते हैं तब चोरी हुई वस्तु "भैंसे खोई...... पाई जाएंगी....."और" बकरियाँ खोई .... पाई जाएंगी".... से संबंधित होते है। यह प्रश्न की शक्ति और सामर्थ्य है।

लग्न वर्तमान स्थिति में परिवर्तन दिखा रहा है। लग्न सूर्य के नक्षत्र में है, जो पंचमेश होकर 8वें भाव में स्थित है। लग्नेश मंगल एवं लग्न नक्षत्रेश सूर्य, उपलब्धियों के स्वामी शनि के नक्षत्र में है। 4थे भाव में लग्नेश स्थित है, उस पर शनि की दृष्टि प्रश्नकर्त्ता के लिए प्राप्तियाँ दिखा रही है। द्वितीयेश शुक्र, जो प्रश्नकर्ता के लिए प्राप्तियाँ दिखा रहा है, प्रश्नकर्ता का

धन है, जो 9वें भाव में स्थित है और चतुर्थेश चन्द्रमा नवमेश बृहस्पति के निकट अंशों में है। द्वितीयेश, चतुर्थेश और नवमेश का यह संबंध खोई हुई वस्तु की पुनःप्राप्ति के लिए सकारात्मक संकेत है। चतुर्थेश चंद्रमा 6ठे भाव में नवमेश/द्वादशेश बृहस्पति के साथ समान अंशों में है। 9वां भाव पूजा का स्थान है और नवमेश बृहस्पति पूजा और मंदिरों का कारक है। बछड़ा तीन दिनों के बाद एक मंदिर में पाया गया।

पुस्तक परिचय

प्रश्न ज्योतिष पर लिखी गई यह एक उच्च कोटि की पुस्तक है, जो प्रश्न ज्योतिष के व्यापक विषय को संपूर्ण रूप से अपने में समाए है। शास्त्रीय सिद्धान्तों को आधार मानकर इस पुस्तक में न केवल प्रश्न के संबंध में सामान्यतः उपयोग में लाई जाने वाली सभी तकनीकों पर अमल किया है बल्कि उन शोध पर आधारित अवधारणाओं को भी प्रदर्शित किया है जिन्हें लेखक ने पर्याप्त समय तक परखा है और अति उत्तम परिणाम प्राप्त किए हैं। इन सभी के अलावा इस पुस्तक में मूक प्रश्न, कर्म और दुरात्माएं, घटनाओं का समय, प्रश्न में चक्रों का प्रयोग तथा विविध विधियों के अध्यायों को विस्तार से लिया गया है। इस पुस्तक में अवधारणाओं और तकनीकों के विश्लेषणात्मक तर्कों को सरल और सुबोध भाषा में लिखा गया है तथा भरपूर उदाहरणों से समझाया भी गया है।

प्रश्न एक ऐसा विषय है जो सामान्यतः व्यापक द्वंद्वात्मक भाषांतरण से भरा पड़ा है। लेखक इस उलझे हुए जाल से बाहर निकलने में सफल हुआ है..... एक ज्योतिषी के लिए मूक प्रश्न ही प्रसिद्धि अथवा बदनामी का विषय होता है, लेखक ने इस विषय में सराहनीय एवं अत्यधिक मौलिकता का प्रदर्शन किया है। इस पुस्तक में जो बहुत ध्यान देने वाला और रचनात्मक भाग है, वह है प्रश्न के परिणामों में समय की क्रमबद्धता। दीपक कपूर ने अपने आपको ज्योतिष पर अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों के लेखक के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया है।

— के. एन. राव

लेखक परिचय

दीपक कपूर, एम.एस.सी., पी.जी.डी.पी.एम., डी.एल.टी., ज्योतिष विशारद, एक विख्यात ज्योतिषी हैं। वे भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में ज्योतिष संस्थान संकाय के एक प्रतिष्ठित सदस्य हैं। संस्थान में वह अनेक विषयों को पढ़ाते हैं लेकिन उनकी विशेषज्ञता प्रश्न ज्योतिष में है। उन्होंने खगोल विज्ञान और गणित ज्योतिष पर एक और लोकप्रिय पुस्तक लिखी है जो हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में पहले से ही प्रकाशित है।

ISBN 81-901047-1-3 (Set)

मूल्यः (भाग 1 और 2) सैट रुपये 400/-